दृष्टान्तों की अति उत्तम पुस्तक

दृष्टान्त माला

सत्संग कथाएँ

लेखक :
श्री श्री 108 स्वामी परमानन्द जी महाराज

प्रकाशक :
अर्जुन सिंह बुक सेलर्स - पब्लिशर्स
बड़ा बाजार, हरिद्वार
फोन :- 01334-221449(दुकान)
01334-225310(निवास)

मूल्य सजिल्द :- 150/-

द्रष्टान्त माला

(सत्संग कथाएं)

प्रथम संस्करण :

मूल्य १५०/-

लेखक :-
श्री श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज

-: प्रकाशक :-

अर्जुन सिंह बुक सेलर्स पब्लिशर्स
बड़ा बाजार, हरिद्वार
फोन नं० :– ०१३३४– २२१४४६ (दुकान)
०१३३४– २२५३१० (निवास)

अनुक्रमणिका

विषय पृष्ठ सं०

विषय पृष्ठ सं०

भावना

राम झरोखे बैठ के सब का मुजरा ले ।
जैसी जा की चाकरी तैसाही फल दे ।।

एक गरीब बेचारी विधवा माई का एक ही सात साल का बच्चा था, मेहनत मजदूरी करती परन्तु जब शाम को वापस घर लौटती, तो अपने बच्चे के लिए दूध बतासे जरूर ले जाती, एक दिन उस माई को बहुत थोड़ी मजदूरी मिली, जिस से वह दूध व बतासे न खरीद सकी, शाम को जब बालक पाठशाला से पढ़कर आया तो मां से बोला मां ! दूध बताशे दे ।

यह सूनकर मां की आंखों से आंसू बह निकले, बच्चे ने मां के गले से लिपट कर कहा...... मां! क्या तुम आज मेरे लिए दूध बतासे नहीं लाई हो? मां ने कहा बेटा! परमात्मा दे तो लाऊ नहीं ते कहां से पाऊँ? लड़के ने सोचा......मां को हर रोज दूध बतासे परमात्मा ही देता है, इसलिये बोला.....ऐ मां! अगर मै मागूँ तो मुझे भगवान् दे देगा ?

क्यों नहीं ? जरूर देगा.......मां ने कहा ।

लड़का बोला..... अच्छा मां ! मुझे उस का पता बता दे मै खूद मांग लूँगा ।

बेटा ! वह बैकुण्ठ में रहता है.......मां ने उत्तर दिया

बालक चुप हो गया । दूसरे दिन सोचने लगा, मै भगवान के पास कैसे जाऊँ ? थक जाऊंगा रास्ते का भी पता नही .... अच्छा एक उपाय है, उनको चिट्ठी लिख दूँ । डाकिया स्वयं उन तक पहुँचा देगा, ऐसा विचार करके उसने एक ख़त पर इस तरह लिखना

शुरू किया........

हे सब को दूध बतासे देने वाले भगवान् ! मै आप को नमस्कार करता हूँ। प्रार्थना यह है कि जैसे आज तक आप मेरी मां को मेरे लिये दूध बतासे देते रहे है, वैसे ही अब कृपा करके मेरे पास भेज दिया करें, माता जी बूढ़ी हो गई है, उन्हें आप से लाने में कष्ट होता है। मेरा विश्वास है कि आप मुझे निराश नहीं करेगें।

मै हूँ आप का वही......जिसे आप हर रोज दूध बतासे भेजते है और सरनामें पर लिखा.....

श्री बैकुण्ठ वासी भगवान् को मिले, बालक ने चिट्ठी लिखी, उसे डालने के लिये डाक घर पहुँचा और पोस्ट मास्टर से पूछा.. ....बाबू जी! चिट्ठी कहां डाले सामने वाले लैटर बक्स में डाल दो...पोस्ट मास्टर ने इशारा करते हुए कहा। लेटर बक्स ऊँचा था, लड़के ने पाओं के बल खड़ें होकर डालने की कोशिश की परन्तु फिर भी डाल न सका, उसकी इस लाचारी को देखकर पोस्ट मास्टर ने कहा...लड़के ! चिट्ठी हमें दे जा, हम डाल देंगे, लड़के ने चिट्ठी बाबू जी के हाथ दे दीं।

उन की नजर जूँ ही सरनामें पर पड़ी तो बोले...बेटा ! क्या तेरी चिट्ठी पढ़ सकता हूँ।

क्यों नहीं? आप बड़ी खुशी से पढ़ सकते है... लड़के की बाबूजी ने चिट्ठी पड़ी तो लड़के के भोलेपन और ईश्वर प्रेम पर बहुत प्रसन्न हुये। उसे गोद में लेकर बोले...आज तुम्हारी चिट्ठी भगवान तक पहुँच जायेगी और परसो तक जवाब भी आजायेगा, तुम परसों शाम को मेरे पास आना लड़के ने कहा......बहुत अच्छा।

परसों के दिन जब लड़का पहुँचा तो बाबूजी ने कहा...बेटा!

तुम्हारी चिट्ठी का जवाब आ गया है । भगवान तुम्हारे हर रोज दूध बतासे मेरे पास भेज दिया करेंगे और तुम इसी समय आकर पी जाया करना । भगवान् ने तुम्हारा सब प्रबन्ध हमारी मार्फत कर दिया है ।

बालक बहुत खुश हुआ । तब से वह नित्य प्रति शाम को बाबू जी के पास जाता और पेट भर कर दूध बतासे खा पी आता । यह है भावना का फल और इस को कहते है....

भोले भाय मिले रघुराया । चतुराई न चतुर भुजपाया ।।
निरमल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।

समय पर किया हुआ शुभ कर्म

का वर्षा जब कृषि सुखाने । समय चूकि पुनि का पछताने ।।

कहते है एक बार देश में अकाल पड़ गया और अनाज के अभाव में लोग भूखे मरने लगे । एक सेठ के पास बहुत से चने रखे थे, सेठ ने उन्हें बांटना शुरू कर दिया ।

प्रात:काल ही सेठ बहुत से चने उबाल कर और उनमें नमक मिर्च मसाला डाल कर अपने पास रख लेता और सूर्य उदय से लेकर सूर्यास्त होने तक उन चनों को बांटता रहता, पाओ भर चनें हर एक व्यक्ति को मिला करते थे, परन्तु सूर्यास्त होने के पश्चात चनों का मिलना बन्द हो जाता था, फिर अगले दिन ही मिलते । सेठ के पास चने मिलते है, इस खबर को पाकर दूर-दूर से लोग उस के पास आने लगे ।

एक गरीब माई को, जिसकी गोदी में दो साल का बच्चा था, जो तीन दिन से भूखी थी, किसी ने कहा--ऐ माई ! यहां से

चार मील की दूरी पर सेठ का मकान है और वह चने बांटता है, तूं भी उस से चने लेकर अपने प्राणों की रक्षा कर ले । यह सुनते ही माई ने बच्चे को गोदी में उठाया, पेरों में फटी हुई जूती डाली और सेठ के मकान की तरफ चल दी ।

अभी वह तीन मील का सफर ही तय कर पाई थी कि सूर्यास्त हो गया अब सेठ ने चने बाँटने बंद कर दिये थे । उधर से ऐन आखीर में एक आदमी चने लेकर आ रहा था । उसने देखा कि माई बच्चें को गोदी में उठाये लड़खड़ाती हुई इधर को आ रही है, समझ गया कि यह भी कोई मेरी तरह ही भूखी है । पास आने पर इस सज्जन ने पूछा-- मां! तू कहां से आ रही है और कितने दिन से भूखी है ?

उसने कहा, बेटा ! मै फलां गाँव से आ रही हूँ और तीन दिन से बिल्कुल भूखी हूँ । कहो बेटा ! सेठ के मकान पर चने बँट रहे है ना ? अब इस सज्जन ने विचार किया, अगर मै यह कहता हूँ कि अब चने मिलने बन्द हो गये है, तो यह बेचारी गम के मारे यहां ही प्राण छोड़ देगी और इस का बच्चा भी रुल खुल जायेगा ।

इसलिये बोला-हाँ माँ! चने तो मिल रहे है परन्तु बात यह है कि तूँ तीन दिन से भूखी है, बच्चा तेरी गोद में है और एक मील का सफर अभी बाकी रहता है । यह तेरे से नहीं हो सकेगा, ले माँ! यह मेरे वाले चने तूँ खाले, मै कल प्रात:काल और ले आऊँगा ।

ऐसा कहकर उस सज्जन ने (जो कि स्वयं भी अड़तालीस घण्टे का बिल्कुल भूखा था) वह सब चने उस माई की झोली में डाल दिये । और आप उसी तरह भूखा भाना अपने घर को चला गया ।

तवांगर कुछ नहीं देते, गदा कुछ दे भी देते है ।
गुलो से खार बेहतर है, जो दामन थाम लेते है ।।

तीन दिन की भूखी माई ने, वृक्ष के नीचे बैठकर उन चनों को खाया । ऊपर से ठड़ा पानी पिया और फिर आंखों को बन्द करके प्रेमाश्रु बहाती हुई तथा हाथ जोड़कर सच्चे हृदय से प्रार्थना करती हुई बोली......हे प्रभो! जिस सज्जन ने स्वयं भूखे होने पर भी अपने हिस्से के यह चने मुझको दिये है जितने यह चनों के दाने थे, उतनी बार उस सज्जन को इस पृथ्वी का चक्रवर्ती राजा बनाईयो । आह...

बात जो दिल से निकलती है असर रखती है ।
पर नहीं ताकते परवाज़ मगर रखती है ।।
जब सरे तस्लीम खंम हो यार की दर्गाह में ।
क्यों न फिर पैदा असर हो 'राम' अपनी आह में ।।
प्रभु से दिल तुम मिलाओ अपना, जबाँ को फिर तुम मिलाओ दिले तो
देख लेना कि पुर असर है, जबाँ से जो कुछ निकल रहा है ।।
सच्चे दिल से जो कोई अपने दुआ करता है,
उस को मंज़ूर यकीनन वह खुदा करता है ।
दिल से आई सदा मेरी दुआ के बदले तूँ तो इनसान है
वह योगी की अजा करता है ।

माई के हृदय से निकली हुई वह प्रार्थना परमात्मा की दर्गाह में मनजूर हुई (यह कथा महाभारत पुराण मे आई है) त्रिकाल दर्शी भगवान् वेद व्यास जी लिखते है, कि समय पर किये इतने से शुभ कर्म के प्रभाव से वह सज्जन इस पृथ्वी का कई बार चक्रवर्ती राजा बना और उसी प्रकार शुभ कर्म करता हुआ अन्त:करण की शुद्धि द्वारा अन्त काल में परम पद का भागी हुआ । तात्पर्य यह है कि समय पर किया हुआ थोड़ा सा शुभ कर्म भी बहुत महत्व रखता है ।

वक्त पर कतरा है काफी, अबरे खुश अंजाम का ।
जल चुका जब खेत-मेघ बरसा तो फिर किस काम का ।।

होनी (तक़दीर या प्रारब्ध)

जैसा होनी होती है, वैसी उपजे बुध ।
होनहार हृदय बसे, बिसर जात सब सुध ।।

बहुत दिनों की बात है, यह घटना अखबार में प्रकाशित हुई थी, लाहौर शहर से एक बरात मुल्तान को चली । लड़के वालों ने रेल गाड़ी के दो डिब्बे लाहौर से ही रिजर्व करा लिये, मगर यह डिब्बे गाड़ी के ऐन आखीर में लगे । बारात वालों के साथ छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जिन्हें प्रायः हर एक स्टेशन पर कुछ न कुछ खाने-पीने की जरूरत महसूस होती थी लेकिन डिब्बे आखिर में होने के कारण उन के वारसों को स्टेशन के सामने जाकर चीज खरीदनी पड़ती थी, कई बार वापिस आते-आते गाड़ी चल पड़ती ।

एक जंक्शन पर उन्होंने स्टेशन मास्टर से अपील की, कि हमारे डिब्बे रेलगाड़ी के बीच में लगा दिये जायें ताकि हम अपने बच्चों के लिये खाने पीने की चीज आसानी से खरीद सकें । परन्तु मास्टर न माना, तब उन्होंने पाँच रूपये स्टेशन मास्टर की तली पर रखे और कहा-हम इन रूपयों से आप के बच्चों को मिठाई खिलाते है, आप हमारे डिब्बे बीच में जोड़कर हमारे बच्चों को मिठाई खिलाये ।

'तमाँ तेल जाको मिले, नरम होय तत्काल'

स्टेशन मास्टर नरम हुआ हुआ बोला 'बीच में तो डिब्बो का लगाया जाना मुश्किल है, हाँ इंजन के साथ लग सकते है । बरात वालो ने कहा...अच्छा इंजन के साथ लगा दीजिये--डिब्बे पीछे से

काटकर आगे लगा दिये गये, अभी दो स्टेशन ही गाड़ी गयी थी कि एक माल गाड़ी के साथ इस की टक्कर हो गयी, परिणाम स्वरूप इंजन के साथ वाले यह दोनो डिब्बे फन्ना (चकनाचूर) हो गये और उन बरातियों में से एक भी सलामत न बचा।

तदबीर से मुझको इतना ही गिला है।
वह भी आंखर हामिये तकदीर निकली ।।
किसी की कुछ नही चलती, कि जब तकदीर फिरती है।
इधर तदबीर करता हूँ उधर तकदीर हंसती है ।।
दख़ज कब तदबीर को तकदीरे इन्सानी में है।
पेशआनी है वही जो कुछ कि पेशानी में है ।।
किस्मत से ही मजबूर हूँ ऐ जौक बगरना।
हर फन में मै माहर हूँ मुझे क्या नही आता
आदमी लाख करे कोशिश क्या होता है ?
वहीं होता है जो मनजूरे खुदा होता है ।।
होई है सोई जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढावहि शाखा ।।

भावी (होनहार)

दोहा–राम न जाते हरिन संग, सिय न रावण साथ।
जो 'रहिम' भावी कतहूँ होत आपनो हाथ ।।
श्लोक–अवश्यं भावी भावानां प्रतिकारो भवेत्यदा।
तदा दुःखेन लिप्यन् नलराम युधिष्टराः ।।

अर्थ–अवश्य होने वाली बात की यदि कोई रूकावट हो सकती तो फिर (महान् शक्ति शाली सम्राट) राजा नल, भगवान

राम और युधिष्ठरादि पांडव-दु:ख को प्राप्त न होते ।

एक बार श्री नारदजी ने यमराज से पूछा कि प्राणी मात्र के संहार का काम आप के जिम्मे है तो कभी आप भूल भी जाते होगें? या कभी किसी की मृत्यु में आप को संदेह भी हो जाता होगा?

यमराज बोले–भूल करने वाला नहीं हूँ जिस की मृत्यु जब, जहां और जैसी रीति से लिखी होती है, वैसी ही हो जाती है ।

हाँ...एक मृत्यु के विषय में मुझे अवश्य संदेह हुआ था वह इस तरह कि कैलाश में भगवान शंकर के पास ही किसी बिल में एक अंधा बिलाव (नेत्र हीन बिल्ला) रहता था । मुझे पता चला कि कल १२ बजे दोपहर को, एक लंगड़े रीछ के हाथ से यह मारा जायेगा और वह रीछ वहां से २५ हजार योजन (एक लाख कोस) की दूरी पर रहता था ।

तब मुझे संदेह हुआ कि यह बिलाव अंधा और वह रीछ लंगड़ा है और दोनों के बीच में २२ हजार योजन का फासला है फिर भला यह कल १२ बजे उसके हाथ से कैसे मर सकेगा? इस शंका को लेकर मैं कैलाश में शंकर भगवान के पास पहुँचा और सारी बात कह सुनाई ।

शंकर भगवान बोले...भाई! तुम विधि के लिखे में किसी प्रकार की शंका न करो...कल ठीक १२ बजे इस अंधे बिलाव की मृत्यु हो जायेगी ।

उस समय बिलाव अपने बिल में सोया पड़ा था, अकस्मात् उसकी नींद खुली और...कल ठीक १२ बजे इस अंधे बिलाव की मृत्यु हो जायेगी यह शब्द उसने सुन लिये ।

अचानक अपनी मृत्यु का समाचार पाकर बिलाव बहुत उदास हो गया और उसने खाना पीना छोड़ दिया ।

अगले दिन प्रात:काल ही भगवान विष्णु.....गरूड़ पर सवार

होकर भगवान शंकर को मिलने आये। गरुड़ की इस अंधे बिलाव के साथ मित्रता थी, जब कभी भी भगवान विष्णु भगवान शंकर जी के पास आया करते तब गरुड़ जी भी अपने मित्र को मिल जाया करते थे। अब भी वह अपने मित्र के पास पहुँचे। देखा कि खाना पीना छोड़कर उदास बैठा है। कारण पूछने पर बिलाव ने कहा.........भगवान् शंकर की जबानी सुना है कि आज १२ बजे मेरी मृत्यु हो जायेगी किसी निमित्त से।

गरुड़ जी बोले... तुम कोई फिकर न करो, मैं अभी तुमको बहुत दूर दूसरे टापू में छोड़ आता हूँ फिर तुम्हें १२ बजे कैसे मृत्यु आ सकेगी ?

संक्षेप रूपेण......गरूड़जी ने बिलाव को अपनी पीठ पर बैठाया। लेकर उड़े और दूर देश २२ हजार योजन की दूरी पर उसी लंगड़े रीछ के बिल के अन्दर जा कर उतार दिया और बोले.....लो मित्र! तुम यहां निश्चित होकर आराम करो। मृत्यु का निमित्त और समय टल जाने पर मैं तुमको फिर वहां ही ले जाऊंगा।

यह कहकर गरूड़जी तो वापस कैलाश को लौटे....इधर रीछ को बिलज में कुछ गंध सी आने लगी। वह घसीटता हुआ आगे बढ़ा। क्या देखा कि एक अंधा बिलाव बैठा है (वह बेचारा तो अंधा था ही, कहां जा सकता था ?) रीछ उस को मार कर खा गया उस समय दोपहर के ठीक १२ बजे थे।

नारद जी से यमराज बोले.....तब से मुझे किसी की मृत्यु में संदेह नही हुआ क्यों कि भावी अमिट हुआ करती है विधि के लिखे को कोई उलट नही सकता।

दोहा–सुनहु भरत ! भावी प्रबल निलखि कहेउ मुनि नाथ।
हानि लाभ जीवन मरन् जस अपजस विधि हाथ॥

दोहा- तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलई सहाई ।
आपनु आंवइ ताहि पहि ताहि तहाँ ले जाई ।।

फार्सी शेयर

दो चीज आदमी रा सतानन्द बजोर ।
पके आनो दाना, दिगर खाके गोर ।

अर्थ–दो चीजें आदमी को जबरदस्ती अपने पास खैंच लेती है । एक अन्न और जल दूसरे कबर की मिट्टी ।

कवित्त

शेष सुरेश महेश थके बिधि नाहिं किसी से लिखी उल्टी ।
रघुसों नृगसों बली वामन सों, नहीं रावण सो, तिनसों न हटी ।।
पुनि पाण्डव सो, दुर्योधन सो, कुछ नाहि चले जब की अवधि ।
घटी कंगना शिशुपाल के हाथ रह्यो, विधिना कछु और की और घटी ।।

मौत

मौत से किस को रूस्तगारी है ?
आज वह कल हमारी बारी है ।।

भारत के भूतपूर्व मिनिस्टर (गृहमंत्री) श्री गोबिन्द बल्लभपंत जब अर्धागं की बीमारी से मूर्छित हो गये तब राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद और प्रधानमंत्री पं० जवाहंर लाल जी, बम्बई और कलकत्ते से प्रतिदिन चार हजार रूपये की औषधी वायुयान द्वारा मंगवाते रहे परन्तु वह जिस दिन से मूर्छित हुये, आखिरी दम तक उन्होंने आँख तक नहीं खोली । मै नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती ।
कहता हूँ कि बे हुक्में खुदा कुछ नहीं करती ।
बीमारी की कजा हो तो अक्सीर क्या करे ।

तकदीर जब बुरी तो तो तदबीर क्या करे ।
नही जाता किसी से वह मरज़ है जो नसीबों का ।
न कायल हूँ दवा का और न कायल हूँ तबीबों का ।।
जान लेने की ही हिम्मत में तरक्की देखी ।
मौत के रोकने वाला कोई भी पैदा न हुआ ।।
जाते जाते कह गया लुक्मान सा दान हकीम ।।
सच पुछो तो यारो मौत की दवा कोई नही ।।
न पहुँचा कोई अपने पास पहुँचा तो यह पहुँची ।।

गोविन्द बल्लभ पंत का इलाज कराने वाले राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री भी आज हमारे बीच नहीं है ।

उठ जायेंगे खिलाड़ी सब एक-एक कर के ।
चोसर बिछी रहेगी बाज़ी वनी रहेगी ।
दुनियां के जो मज़े है, हर्गिज़ यह कम नहीं होंगे ।
चर्चे यूहि रहेगें अफसोस हम न होंगे ।।
कहता है मुआलज कि दवा भी है कोई चीज ।।
तकदीर यह कहती है कज़ा भी है कोई चीज़ ।।
तदबीर सदा रास जो आती नहीं अकसर ।।
इन्सान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज़ ।।
चला था कावे की सिमत्त को और मैकदे में हुआ गुजारा ।
खुला यह उस वक्त राज मुझ पर, किसी के मै इख्यार में हूँ ।।

आलम बे अमल

बहुत पढ़ने से क्या हासिल ? न होगा गर अमल उस पर है

थोड़ा ही इलम काफी, अगर वह बाअमल होगा।

एक आदमी ने एक तोते को पिंजरे में पाल रखा था, एकदिन उसके घर से थोड़ी दूरी पर नदी के किनारे किसी शिकारी ने ताते पकड़ने के लिए नलकियां लगा दी।

तब इस सज्जन ने दिल में सोचा–यदि कभी भूल से पिंजरि की खिड़की खुली रह गई, तो यह उड़कर नलकी पर न जा बैठे। इसलिये इस को अभी से सावधान कर देना चाहिये।

अतः तोते तो पढ़ाता हुआ बोला...मियां मिठ्ठू ! अगर पिंजरे की खिड़की खुली रह जाये तो उड़कर बाहर नहीं जाना। तोते ने याद कर लिया.......मियां मिठ्ठू ! अगर पिंजरे की खिड़की खुली रह जाये तो उड़कर बाहर नहीं जाना।

फिर उसने पढ़ाया...मियां मिठ्ठू ! अगर बाहर निकल भी जाओ तो नदी की तरफ न जाना। तोते ने याद कर लिया....मियां मिठ्ठू! अगर बाहर निकल भी जाओ तो नदी की तरफ नहीं जाना।

फिर उसने पढ़ाया.... अगर नदी की तरफ चले भी जाओ तो नलकी पर नहीं बैठना। तोते ने याद कर लिया.... अगर नदी की तरफ चले भी जाओ तो नलकी पर नहीं बैठना फिर उस ने पढ़ाया.... अगर नलकी पर बैठ भी जाओ तो उसे तुरंत छोड़ कर उड़ जाना। तोते ने याद कर लिया....अगर नलकी पर बैठ भी जाओ तो उसे तुरंत छोड़ देना।

इस प्रकार उस सज्जन ने तोते को सब कुछ पढा दिया और तोते ने सब कुद रट लिया।

दैव योग से एक दिन पिंजरे की खिड़की खुली रह गयी तब इस तोते ने पढ़ा.....मियां मिठ्ठू ! अगर पिंजरे की खिड़की खुली रह जाये, तो उड़कर बाहर नहीं जाना(और उड़कर बाहर चला

गया) ।

फिर बोला.....मियां मिठ्ठू ! अगर बाहर निकल भी जाओ तो नदी की तरफ न जाना (और उड़कर नदी की तरफ चला गया)

फिर बोला.....अगर नदी की तरफ चले भी जाओ तो-नलकी पर नही बैठना (और नलकी पर जाकर बैठ गया)

फिर बोला.....अगर नलकी पर बैठ भी जाओ तो उसे तुरंत छोड़कर उड़जाना (परन्तु स्वयं उसे छोड़ता नहीं बड़ी मजबूती से नलकी को पकड़े हुये है)

परिणाम यह हुआ कि शिकारी ने आकर उसे पकड़ लिया.....यही हाल उनका है जिन्होंने इलम तो बहुत पढ़ रखा है, किताबे तो बहुत रट रखी है परन्तु उन पर अमल नहीं करते । एक कण भर अमल एक मन भर इल्म से अच्छा है । नहीं तो कहना होगा....

न हो जिसमें अमल और हो किताबों से लदा फिरता ।।
'जफर' उस आदमी को हम तस्सवुर बैल कहते है ।
'इकबाल' बड़ा उपदेशक है, मन बातो से मोह लेता है ।।
गुफतार का गाजी बन तो गया, किर्दार का गांजी बन न सका ।।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।
आप करहिं ते नर न घनेरे ।।
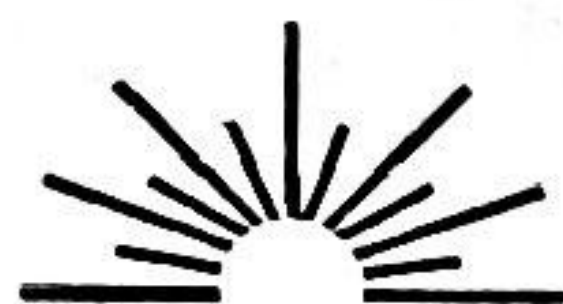
शराब

न ज़िन्दगी भर वह संभला, गिरा जो भी नादानी में ।
हजारो बह गये इन बोतलों के बन्द पानी में ।।

बादशाह 'अकबर' शराब पिया करता था । एक दिन बीरबल बगल में शराब की बोतल दबाये और उसे कपड़ें में छिपाये, अकबर के पास आया ।

अकबर भी जान गया और पूछा...बीरबल ! तुम्हारी बगल मे क्या है?

बीरबल ने कहा.......बादशाह सलामत! तोता है । अकबर ने कहा....बीरबल! ठीक-ठीक बता क्या है? बीरबल ने कहा.. ....हजूर! हाथी है ।

अकबर ने कहा.....कभी हाथी भी बगल में आ सकता है ?

बीरबल ने कहा......शेर है ।

शेर बगल में कैसे आ सकता है ।

बीरबल ने कहा.....जनाब गधा है ।

अकबर जानता तो था ही इसलिये झट कपड़ा परे हटा कर बोला.....बीरबल! यह तो शराब है! तुमने इसे तोता, हाथी, शेर और गधा कैसे कहा? बीरबल ने उत्तर दिया.....हजूर! मैंने सब ठीक ही कहा है क्योंकि जब इस की पहली प्याली पी जाती है तब चुपचाप रहने वाला आदमी भी तोते की तरह टां-टां करने लग जाता है । इसलिये ये यह तोता है ।

जब दूसरी प्याली पी जाती है, तब मनुष्य हाथी की तरह

मस्त, हो जाता है और इस का मन विषय की तरफ दौड़ता है इसलिये दूसरी प्याली में यह हाथी है ।

जब इसकी तीसरी प्याली पी जाती है तब यह शेर की तरह अहंकार से अकड़ जाता है । मूछों पर ताओं देता है फिर इस के सामने किसी को खांसी भी आ जाये तो यह उसे गालियां निकालता हुआ कहता है अरे तुम्हारी क्या मजाल है जो मेरे सामने खांसते हो । इस लिये तीसरी प्याली में यह शेर है ।

जब इसकी चौथी प्याली पीली जाती है । तब यह आदमी को बेसुध कर देती है और यह धक्के खाता हुआ गंदी नालियों में गिरता है तब इसकी बुद्धि बिल्कुल गधे जैसी हो जाती है । इसलिये चौथी प्याली में यह गधा है ।

बीरबल के मुँह से यह सुनकर अकबर ने शराब पीना छोड़ दिया ।

ऐ ज़ौक देखते जऱ को न मुहँ लगा ।
छटती नही यह काफर मुँह से लगी हुई ।।

लोभ (हवस)

हम पीर हुये मगर मेरी बू न गयी ।
दिल से तेरी आदत न गयी खू न गयी ।।
आँखे गयी दांत गये मगर तूँ न गयी ।
लेकिन गयी तू ऐ हवस तू न गयी ।।

एक भक्त के पास केवल पचास रूपये ही थे एक ठग को पता चला और वह उनके पास आया और बोला-भक्त जी ! आप मुझे- पचास रूपये उधार दे देवें, मै एक महीने तक आप को

वापिस लौटा दूँगा ।

भक्त ने कहा-भाई ! मेरे पास पचा र रूपये कहां से आये?

तब ठग ने पाँच रूपये भक्त के लड़के की जेब में डाल दिये और बोला- भक्त जी ! मै पाँच रूपये आपके बच्चे को इनाम देता हूँ आप मुझे एक महीने के लिये ५० रूपये उधार दें ।

'तमाँ तेल जा को मिले, नरम होय तत्काल'

भक्त ने सोचा यह तो बढिया सौदा है । भक्त ने ५० रूपये उसको दे दिये ।

अब भक्त के पास पाँच रूपये रह गये । किसी दूसरे ठग को पता चला कि भक्त के पास पाँच रूपये है । वह भी पहुँचा और बोला-भक्त जी! मुझे ५ रूपये उधार दे दीजिये, मै आपको एक महीने तक लौटा दूँगा ।

भक्त ने कहा-मेरे पास ५ रूपये कहाँ से आये ? तब ठग ने भक्त के लड़के की तली पर एक रूपया रखा और बोला- मै आप के लड़के को एक रूपये मिठाई खाने को देता हूँ । आप मुझे पाँच रूपये एक महीना के लिये उधार दे देवें ।

भक्त ने सोचा-यह सौदा भी नफे वाला है, भक्त ने ५ रूपये उस को दे दिये ।

अब भक्त के पास एक रूपया रह गया । किसी तीसरे ठग को पता चला कि भक्त के पास एक रूपया है । वह भी पहुँचा और बोला-भक्त जी! मुझे २ रूपये की जरूरत है आप मुझे उधार दे देवें मै आपको दस दिन तक लौटा दूँगा ।

भक्त ने कहा-मेरे पास १ रूपया कहाँ से आया ? तब इस ठग ने एक टका (दो पैसे) भक्त के लड़के की तली पर रखा और बोला.....यह टका मै आपके बच्चे को जेबखर्च के लिये देता हूँ आप मुझे एक रूपया जरूर उधार दे देंवे ।

भक्त ने सोचा यह सौदा भी अच्छा है भक्त ने एक रूपया भी दे दिया ।

अब भक्त के पास केवल एक टका रह गया । एक महीना गुजरा, दो गुजरे, तीन गुजर गये परन्तु न तो ५० वाला लौटा न ५ वाला और न एक रूपये वाला-तब भक्त के मुँह से निकला ।

पांच पचासे ले गया, पाँच को ले गया एक ।
टका एक को ले गया, तूँ बैठ तमाशा देख ।।

नर आशा

मोर दास कहाय नर आशा ।
करे तो कहो कहाँ विश्वासा? ।।

एक महात्मा जंगल में फल-फूल खाकर अपना शरीर निर्वाह करते थे ; और भजन में रत रहते थे । एक दफा उनको एक दुष्ट पुरुष ने बहुत दु:ख दिया और मारा पीटा ।

किसी ने इस बात को देख लिया और होते-होते यह बात राजा तक पहुँची । राजा ने मन में विचार किया ओह! तपस्वी जैसे महापुरुष को जिसने मारा है । उस दुष्ट को अवश्य सजा देनी चाहिये । राजा ने अपना एक खास आदमी महात्मा जी के पास भेजा कि उन्हें यहाँ बुला लावे ।

उसने जाकर महात्मा जी से कहा-महाराज ! आपको जिस दुष्ट ने मारा है । राजा साहिब उसे दण्ड देकर आप का इन्साफ करना चाहते है आप उनके पास जा कर दुष्ट का हुलिया और सब वार्ता कहें ।

महात्माजी ने जाने से इन्कार कर दिया । तब उस सज्जन ने

कहा–महाराज! आप एक आर अवश्य चले नहीं तो राजा साहिब मुझ पर नाराज़ होंगे।

महात्मा बोले–अच्छा भाई ! अगर तुम नहीं मानते तो हम चलते है।

महात्माजी उसके साथ हो लिये। रास्ते में एक जगह कोयलो की केरी पड़ी थी, महात्माजी ने कुछ केरी उठाकर अपने मुँह पर मल ली और राज दरबार में जा पहुँचे।

राजा ने महात्मा जी को नमस्कार की और सर्व प्रथम यही पूछा–महाराज! आप ने अपना मुँह काला क्यों कर रखा है ? महात्मा बोले–इसलिये कि परमात्मा की दरगाह में हमारा मुँह काला न हो।

वह किस तरह ?.......राजा ने पूछा !

महात्मा बोले...... राजन ! हम प्रभु के आश्रित हो कर, फिर अपना इन्साफ कराने के लिये तुम्हारे पास आये हैं। इसलिये परमात्मा की दर्गाह में हमारा मुँह काला होगा। परमात्मा मुझ से पूछेगा ऐ महात्मा ! क्यों तुझको मेरे पर–विश्वास नहीं था ? जो तूँ मेरा दास कहला कर फिर अपना न्याय कराने के लिये राजा के पास गया सो राजन ! हमारा मुँह परमात्मा के सामने काला न हो इस लिये हम पहले ही अपना मुँह काला करके तुम्हारे पास आये है। राजा......महात्मा जी के इस अटल ईश्वरीय विश्वास पर बहुत प्रसन्न हुआ और उन्हें अपना गुरूदेव मानने लगा।

भगवान का वचन अर्जुन से....

छोड़कर सब आश्रय, ले मुझ अकेले की शरण।
यह मेरा जिम्मा है अर्जुन ! तेरा बेड़ा पार है ॥

नकल से असल

झुट मुट खेले सचमुच होय ।
सचमुच खेले विरला कोय ॥

एक शिकारी जंगज में घूम रहा था–क्या देखता है कि एक महात्मा अपनी कुटिया के बाहर आसन जमा कर ध्यान में बैठे है और बुलबुल-कबूतर-चिड़ियाँ-तोते आदि पक्षी उनके बिल्कुल पास ही खेल रहे है। कोई-कोई पक्षी महात्मा के कधों और सिर पर भी बैठ जाते है। कुछ देर बैठे रहते है फिर जब मौज आती है उड़ जाते है।

शिकारी जब उनके समीप गया, तो उस को आते देखकर सब पक्षी एक दम उठारी मार गये। शिकारी ने सोचा.....जानवर पकड़ने का यह तरीका बहुत अच्छा है। कल मैं भी ऐसे ही करूँगा।

अगले दिन उसने महात्माओं वाला हुलिया बना लिया औरभगवे कपड़े की गाती बांधकर एक वृक्ष के नीचे ध्यान लगाकर बैठ गया। दो तीन दिन ऐसे ही करता रहा। आखिर उसे पता चला कि यद्यपि पक्षी अभी मेरे सिर और कंधों पर तो नही बैठते-फिर भी मेरे पास तो जरूर खेलने लग गये है।

चौथे दिन शिकारी के विचार बदले। उसने सोचा, जब–महात्मा के स्वांग में यह शक्ति है कि पक्षी तक मेरा विश्वास करने लग गये है और मेरे से भय नहीं करते तब यदि में सच्चे दिल से महात्मा बन जाऊँगा तो न मालूम मेरे में कितनी शक्ति आ जाये ? और यह पशु पक्षी मेरे कितने मित्र बन जाये ?

शिकारी ने नकल को छोड़कर असल में प्रवेश किया। सच्चे दिल से महात्माओं का भेस धारण कर परमात्मा का भजन करने लगा-परिणाम यह निकला कि उस महात्मा की तरह जंगल के पशु-पक्षी इसके भी कंधो और सिर पर बैठने लगे। यहां तक कि भेड़िये और शेर भी इस के पास आते और नमस्कार कर के चले जाते एवं यह भी पूर्ण महात्मा बनकर परम गति को प्राप्त हुआ–

जिस कदर है तुझ को है मालिक से प्यार।
उस से ज्यादा तुझ को वह करता है प्यार॥

सत्संग

किये सत्संग अनेक सुख चढयो शिवां के सीस।
अब तो मित्र मोहे जान दे गंग धार के बीच॥

एक भँवरा गंगा जी के किनारे फल्वाड़ी में रहता था। सायंकाल को वह अपनी फल्वाड़ी से निकल कर किसी दूसरी जगह पर घूम रहा था कि–अन्धेरा हो गया और वह अपने स्थान पर न पहुँच सका। सोचने लगा–अब रात्री कहां गुजारे ?

थोड़ी दूरी पर एक काबली भिड़ (डेमूँ) गोबर पर चक्कर लगा रहा था। इस ने समझा शायद कोई मेरा साथी दूसरा भंवरा है। झट उसके पास जा पहुँचा। जूहिं गोबर की दुर्गंध उसके नाक में चढ़ी, कि बेहोश हो कर गिर पड़ा।

भिड़ ने सोचा–ओहो ! बहुत बुरा हुआ, बेचारा भँवरा रात्री व्यतीत करने के लये मेरे पास आया था परन्तु गोबर की दुर्गन्ध से बेहोश हो गया। भिड़ ने धीरे से उसे परे किया, तब कहीं उसे होश आयी।

जैसें-कैसे रात्री गुजिरी ! जब ज़रा उजाला हुआ तो भवंरे ने भिड़ से कहा... भाई ! तुम्हारी संगत का फल मैने देख लिया, अब तुम मेरे साथ चलो और मेरी संगत का फल देखो ।

भंवरा उसे अपने साथ फुल्वाड़ी में ले गया । पहले तो जल से उस के मुख की दुर्गंध को दूर किया, फिर उसे एक गुलाब फूल पर बैठा दिया । भिड़ उसके अन्दर बैठ कर फूल की सुगन्ध लेने लगा ।

एकादशी का दिन था । एक भक्त आया, उसने स्नान करके लोटे में थोड़ा जल लिया, कुछ दूध और मिसरी मिलाई । फिर फुल्वाड़ी मे आकर दो चार फूल तोड़े उनमें वह फूल भी था जिसमें बैठा भिड़ आनन्द ले रहा था । भक्त ने फूलों को लोटे में डाला और महादेवजी के मंदिर में आ गया । जल चढ़ाकर उस फूल को शिव जी के मस्तक पर रखकर नमस्कार कर के चला गया ।

कोई आध घण्टा भर वह भिड़ शिवजी के मस्तक पर फूल के अन्दर बैठा रहा । फिर एक दूसरे भक्त ने आकर जल चढ़ाया । तब वह भिड़ फूल के साथ बहकर नाली के रास्तें गंगा जी में आ पहुँचा और तैरने लगा । इतने में सूर्य नारायण भी उदय हो आये । गर्मी लगने से भिड़.....फूल के अन्दर से निकल कर उसके ऊपर बैठ गया और गंगा जी के परवाह के साथ बहने लगा ।

इधर जब भंवरे ने देखा कि मेरा मित्र जिस फूल पर बैठा था वह फूल नहीं है, तो बहुत उदास हुआ कि मेरा मित्र कहां चला गया । इधर-उधर ढूढ़ने लगा उसने देखा कि वह तो गंगा जी में बहे जा रहे फूल पर बैठा है । तब जोर से आवाज देकर बोला.....मित्र! तू मुझें छोड़कर कहां जा रहा है ? कुछ देर मेरे पास ठहर ताकि मे तेरी कुछ सेवा तो कर लूँ ।

भिड़ ने कहा......मित्र ! अब और तू मेरी सेवा क्या करेगा ? सुन ! सब से पहले मै काफी देर तक फूल का रस चूसता रहा फिर एक भक्त ने उसे तोड़ लिया मै भी साथ ही चला गया। फूल को उसने अपने लोटे में डाला जिसमें जल दूध और मिस्री मिली हुई थी, तब उसका सवाद लेता रहा फिर उसने जा कर फूल सहित मुझे शिवजी के मस्तक पर चढ़ा दिया। कोई आध घण्टा भर मै शिव जी के मरतक पर बैठा रहा।

तब एक दूसरा भक्त आया और उसने जल चढ़ाया तब मैं जल के साथ बहकर गंगा जी मे पहुँच गया और अब आनन्द से बहा जा रहा हूँ। आप की कृपा से मेरा जन्म मरण खत्म हो गया है। मुझे मुक्ति की प्राप्ति होगयी। अब शिवजी के मस्तक पर बैठकर फिर चरणों को छूकर और श्री गंगा जी का दर्शन करके अब मेरा जन्म मरण कहाँ रहा ? मित्र ! मै तेरी एक घड़ी की संगत से कृत्य-कृत्य हो गया। अब तू मेरी कोई चिन्ता न कर और मुझे आनन्द से गंगा जी में बहा जाने दे।

किये सत्संग अनेक सुख चढयो शिवां के सीस।
अब तो मित्र मोहे जान दे गंग धार के बीच ।।

रंका, बंका

उस्तत निन्दया नाहिं जेहि, कंचन लोह समान ।।
कहु 'नानक' सुन रे मना ! मुक्त नाहिं तै जान ।।

रंका बंका नाम के एक स्त्री पुरुष भगवान के परम भक्त हुए है। यह दोनों प्रतिदिन जंगल से लकिड़यां लाया करते थे, और उससे जो पैसे मिलते, उन से अपना निर्वाह किया करते थे।

एक दिन वह लकिड़यां लेने जा रहे थे। रंका कुछ आगे और बंका कुछ पीछे थी।

अकस्मात् रंका को सामने अशरफियों का ढेर पड़ा हुआ दिखायी दिया। तब उस ने सोचा.....बंका स्त्री है और स्त्री जाति का स्वर्ण मे अधिक स्नेह होता है। कही ऐसा न हो कि उसका मन भ्रमित हो जाये और हमारी भक्ति मे बाधा पड़ जाये। ऐसा विचार कर रंका ने जल्दी से उस ढेर पर मिट्टी डालनी शरू कर दी ताकि बंका उसे देख न पाये।

इतने मे बंका भी आगई। उसने पूछा नाथ ! आप यह क्या कर रहे है?

रंका चुप हो गये, जब इसने दूसरी बार पूछा तब उसने कहा...प्रिय ! रास्ते मे यह अशरफियों का ढेर पड़ा हुआ था। मै इस लिये इस पर मिट्टी डाल रहा हूँ कि कहीं इन पर तुम्हारा मन मोहित न हो जाये ?

बंका बोली....पतिदेव ! आप मेरे लिये यह व्यर्थ का कष्ट कर रहे है। भला मिट्टी पर मिट्टी डालने से क्या लाभ ?

तब रंका समझ गये कि मेरी स्त्री तो मेरे से भी अधिक ज्ञानवान है। मै तो अभी सोने और मिट्टी मे भेंद समझता हूँ परन्तु इस की दृष्टि मे तो सोना और मिट्टी समान ही है।

पर धन पत्थर मानिये, पर तिय मात समान।
इतने मे हरि न मिलें, तुलसी दास जमान ॥

सच्ची लगन

लागी लागी सब कहें लागी बुरी बलाय।
लागी तब ही जानिये, हृदय छेद कर जाय ॥

एक बार 'हीर' अपने प्रीतम रांझा को मिलने जा रही थी,

रास्ते में एक मौलवी नमाज़ पढ़ रहा था। हीर तो अपने प्यारे के प्रेम में इतनी मग्न थी कि उसे अपने शरीर की भी कुछ सुधि न थी, वह मौलवी के आगे से गुजर गयी।

मौलवी तो नमाज़ भी पढ़ रहा था और आंखे फाड़-फाड़ कर इधर-उधर देख भी रहा था। मौलवी बिगड़ कर बोला क्यों री ! क्या तू अंधी है ? देखती नहीं, जो मै नमाज पढ़ रहा हूँ और तूँ मेरे आगे से गुजर गयी, मेरी नमाज़ कज़ा कर दी।

तब हीर ने उत्तर दिया........

नर रांचयो लख्यो नहीं, तैय कत लख्यो सुजान।
पढ़ कुरान बौरा भयो, नहीं जान्यो रहमान॥

अर्थात् ऐ मौलवी ! मेरे अन्दर तो एक संसारी पुरुष ने घर किया हुआ है। मै उसके प्रेम में इतनी मग्न हुई जा रही हूँ कि मुझे कुछ पता नहीं कि तूँ कहां बैठा है और क्या कर रहा है। परन्तु मै तुझसे पूछती हँ कि यदि तूँ वास्तव मे नमाज़ पढ़ रहा था अर्थात् खुदा के प्रेम में मग्न हो रहा था, तो तेरे को कैसे पता चला कि मै तेरे आगे से गुजर गयी ? इस से ज्ञात होता है कि कुरान पढ़कर तूँ ने केवल मगज पच्ची ही की है परमात्मा तत्व की प्राप्ति कैसे होती है इस बात को तूँ समझने नहीं पाया।

सच्च है केवल माला हाथ में पकड़कर राम-राम करने से ही काम नहीं चलता। जब तक कि मन भी प्रभु प्रेम में लीन न हो जाये।

माला तो कर में फिरे और जिहवा मुख माहि।
मनुआ तो दह दिस फिरे, यह तो स्मिरण नाहि॥

लागी उसकी जानिये, जाकी तोड़ निभे

जैसी उपजे आदि में, तैसी निभहे न तोड़ ।
हीरा किस का बापुरा, पुत्रे न रत्न करोड़ ॥

किसी नगर के बाहर जंगल में एक वृद्ध महात्मा रहते थे । वह दोपहर को भिक्षा के लिये नगर में आया करते थे । रास्ते में एक वैश्या का मकान पड़ता था । तब वह बेश्या महात्मा जी से प्राय: पूछा करती...महात्मा जी ! आपकी दाढ़ी अच्छी है या मेरे कुत्ते की दुम ? महात्मा कह दिया करते देवी! इसका उत्तर हम तुम्हें फिर कभी देंगे ।

समय पाकर महात्मा जी बहुत बीमार हो गये, उनके बचने की कोई आशा न रही । आखरी दर्शन करने के लिये नगर के लोग उनके पास जाने लगे । तब वह वैश्या भी जा पहुँची । काफी भीड़ थी, वैश्या ने आगे बढ़कर कहा....महाराज ! मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये .....महात्मा जी ने अपनी छाती पर हाथ मार कर कहा–बेटी ! हमारी दाढ़ी अच्छी है, तुम्हारे कुत्ते की दुम अच्छी नहीं ।

वैश्या ने कहा.... महाराज! यही उत्तरआप मुझे पहले दिन ही दे सकते थे । फिर इतने वर्ष क्यों टालते रहे ?

महात्मा बोले ....सुनो देवी! उस पुरुष की दाढ़ी वास्तव में दाढ़ी है, जो समस्त आयु पर्यन्त सदाचार सदविचार में रहता है । और जो पुरुष अपने धर्म को खो बैठता है । उसकी दाढ़ी से

कुत्ते की पूंछ अच्छी है ।

यदि हम उस समय कह देते कि हमारी दाढ़ी अच्छी है, और जीवन के किसी क्षण में अपने मन के पीछे लगकर धोका खा लेते । तो हमारा कहना गलत हो जाना था । अब हमारी जीवन यात्रा समाप्त हो चुकी है । और हम ने आदि से लेकर अन्त तक अपनी तमाम आयु भजन पाठ सदाचार और सत्विचार में गुजारी है । इस लिये अब हम फखर से कहते है कि हमारी दाढ़ी तुम्हारे कुत्ते की दुम से सौगुणा नही लाख गुणा अच्छी है ।

मनुष्य को अपने जीवन में अपने जप,तप, संयम वैराग्य आदि का कभी अहंकार नही करना चाहिये ....

'कबीरा' गर्व न कीजिये, रंचन हसिये कोय ।
अभी तो नाओ समुद्र में, क्या जानां, क्या होय ।।
प्रीत प्रीत सब को कहे, कठिन प्रीत की रीत ।
आद अन्त पूरी निभे, तभी जानिये प्रीत ।।

हिम्मत

वह कौनसा उक़दा है, जो वा हो नहीं सकता ।
हिम्मत करे इन्सान, तो क्या हो नहीं सकता ।।

एक गीदड़ ने कहीं से यह सुन लिया......हिम्मते मरदां मद्दे खुदा उस दिन से हर काम के आदि में वह यह शब्द कहता और झट पट उस काम को कर डालता ।

समय पाकर गीदड़ की स्त्री गर्भवती हुई । जब उसके प्रसूत होने का समय आया । तब उसने स्यार से कहा कि अब आप मुझे किसी सुरक्षित स्थान पर ले चलें । जहाँ मै आराम से बच्चे दे

सकूँ । स्यार ने कहा.... 'हिम्मते मरदाँ मददे खुदा' यहाँ पास ही शेर की गुफा खाली है । उसी में चल कर रहना चाहिये । जब शेर आयेगा, देखा जायेगा ।

दोनो शेर की गुफा में चले गये, और वहां ही स्यारन ने बच्चे दिये । उसके पाँच सात दिन बाद उन्हें दूर से शेर दहाड़ता हुआ आता दिखाई दिया । तब स्यारन ने कहा! चलो बच्चों को लकर कही भाग चलें, नही तो किसी की खैर नहीं होगी । स्यारन ने कहा.... क्या आज 'हिम्मते मरदाँ, मददे खुदा' वाली बात भूल गये ? स्यार लज्जित हो गया, और फिर सावधान होकर बोला 'अच्छी बात, हिम्मते मरदां मददे खुदा' डटे रहो जो होगा देखा जायेगा ।

जब शेर नजदीक आ गया, तो स्यार अपने पिछले दो पाओं पर खड़ा होकर बोला......अरी वन की रानी ।

स्यारन ने कहा.......कहो वन के राजा !

इस शब्द को सुनकर और इस प्रकार खड़े हुये स्यार को देखकर शेर हैरान होकर सोचने लगा यह कौन जानवर है ? आज तक तो वन का राजा मै ही था, मालूम होता है, मेरे चले जाने पर किसी दूसरे राजा ने इस वन को संभाल लिया है । कही यह मुझे मार ही न दे ऐसा विचार कर शेर दुम दबा वहां से उल्टे पाओ भाग निकला ।

दैव योग से पास वाले वृक्ष पर बैठा हुआ एक बन्दर यह सब तमाशा देख रहा था । उसने शेर के पास जाकर कहा... महाराज ! वह तो स्यार है, गीदड़ है, आप व्यर्थ में डर गये, चलिये, वह तो स्वयं ही भाग जायेगा ।

शेर बोला...भाई ! स्यार तो मैंने भी बहुत देखे है । वह तो निश्चय ही और कोई बलवान जानवर है । जब बन्दर ने बहुत

समझाया तो शेर ने कहा...अच्छा आगे-आगे तुम चलो, पीछे-पीछे मै चलूँगा। बन्दर ने कहा...भले तब बन्दर आगे और शेर पीछे चला।

इधर जब गीदड़ ने फिर शरे को आते देखा, तो फिर उल्टे पाओ खड़े होकर बोला....अरी वन की रानी।

स्यारन ने कहा......कहो वन के राजा !

गीदड़ ने कहा..... आज बच्चे क्यों रोते है ? स्यारन ने कहा.... आज बच्चे शेर खाने को मांगते है। इस बात को सुनते ही शेर फिर पिछले पाओ भागा और बन्दर देखता ही रह गया।

उसने फिर जाकर समझाया, कि आप व्यर्थ ही भाग आये, वह तो गीदड़ है। शेर ने कहा.... कहीं तूँ उनका जासूस बन कर मुझे मरवाने के लिये ही न ले जा रहा हो। इस लिये यदि तूँ अपनी पूँछ मेरी पूँछ के साथ बांध ले, तो मैं तेरे साथ चलूँगा, ताकि मरे तो दोनों मरे। बन्दर को तो उसके गीदड़ होने में कुछ संदेह था ही नहीं, इस लिये उसने शेर की पूछँ के साथ अपनी पूँछ बाँध ली, और दोनों चले।

स्यारन ने जब फिर उनको आते देखा, तो फिर उसी प्रकार खड़े होकर बोला.....अरी वन की रानी ?

स्यारन बोली....कहो वन के राजा ? स्यार ने कहा ...तेरे बच्चे क्यों रोते है ? स्यारन ने कहा ...यह शरे खाने को मांगते है। स्यार ने कहा.... शेर तो आ गया है, अब तूँ क्यों घबरा रही है।

सयारन ने कहा...और कोई बात नहीं मुझे तो इस नालायक बन्दर पर क्रोध आ रहा है। जो मैंने इसको दो शेर लाने को भेजा था और यह एक ही लाया है। अब एक शेर से किस-किस का पेट भरेगा ?

बस फिर क्या था, इस बात को सुनते ही कि सचमुच बन्दर तो मुझे मरवाने के लिये ही साथ लाया, शेर बेतहाशा भाग उठा, और उसे यह भी सुधि न रही कि मेरी पूँछ के साथ बन्धर बंधा हुआ है। वह बेचारा दो चार घसीटखाने से ही मर गया और शेर सदा के लिये उस वन को छोड़ गया।

स्यार दम्पत्ति अपने बच्चों समेत सुख से वहाँ रहने लगे। इसको कहते है।

'हिम्मते मरदां मद्दे खुदा'

'अकबर' अगर है हिम्मत, आसान हर सफर है।
मंज़िल मुसाफिरों के, कदमों को चूमती है॥

जब शेर नजदीक आ गया, तो स्यार अपने पिछले दो पाओं पर खड़ा होकर बोला......अरी वन की रानी।

स्यारन ने कहा.......कहो वन के राजा !

इस शब्द को सुनकर और इस प्रकार खड़े हुये स्यार को देखकर शेर हैरान होकर सोचने लगा यह कौन जानवर है ? आज तक तो वन का राजा मै ही था, मालूम होता है, मेरे चले जाने पर किसी दूसरे राजा ने इस वन को संभाल लिया है। कही यह मुझे मार ही न दे ऐसा विचार कर शेर दुम दबा वहां से उल्टे पाओ भाग निकला।

दैव योग से पास वाले वृक्ष पर बैठा हुआ एक बन्दर यह सब तमाशा देख रहा था। उसने शेर के पास जाकर कहा... महाराज ! वह तो स्यार है, गीदड़ है, आप व्यर्थ में डर गये, चलिये, वह तो स्वयं ही भाग जायेगा।

शेर बोला...भाई ! स्यार तो मैनें भी बहुत देखे है। वह तो निश्चय ही और कोई बलवान जानवर है। जब बन्दर ने बहुत समझाया तो शेर ने कहा...अच्छा आगे-आगे तुम चलो, पीछे-पीछे मै चलूँगा। बन्दर ने कहा...भले तब बन्दर आगे और शेर पीछे

चला ।

इधर जब गीदड़ ने फिर शेर को आते देखा, तो फिर उल्टे पांव लौट गया ।

बिना विचार का काम

बिना सोचे बिना समझे, बशर जो काम करता है ।
वह अपने हाथों से अपना, बुरा अंजाम करता है ।।

एक ब्राह्मण दम्पत्ति के यहां सन्तान न थी, उन्होंने एक न्योला पाल रक्खा था और उसी से पुत्रवत प्यार करते थे, वह न्योला भी सारा दिन उनकी गोदी में और आस पास खेलता रहता था ।

समय पार कर उनके घर एक लड़का पैदा हुआ । तब वहउससे प्यार करने लगे और न्याले से मोह कम हो गया ।

एक दिन ब्राह्मणी की स्त्री अपने बच्चे को छोटी सी चारपाई पर सुलाकर आप बाहर कुयें पर पानी भरने चली गयी । ब्राह्मण घर नहीं था, न्योला बच्चे के पास खेल रहा था ।

इतने में घर के अन्दर से एक सांप निकला और बच्चे को काटने के लिये उसकी चारपाई के पास जा पहुँचा । न्यौले की नजर उस पर पड़ गयी और वह साँप पर टूट पड़ा और उसे लहूलुहान कर के मार डाला ।

इस प्रकार बच्चे की रक्षा करने पर न्योले को बहुत प्रसन्नता हुई और वह खुशी जताने के लिये घर के दरवाजे के बाहर जाकर ब्राह्मणी का इन्तजार करने लगा ।

जब ब्राह्मणी जल भर कर आयी, और उसने न्योले के मुँह और जिस्म को खून से लथपथ देखा तो समझी कि इस दुष्ट ने मेरे

बच्चे को मार खाया है । तब उसके गुस्से की कोई सीमा न रही, झट एक पत्थर पकड़ा और न्योले पर दे मारा, न्योला मर गया ।

जब यह बच्चे के समीप गयी तो क्या देखती है कि उसके पास एक सांप मरा पड़ा है और बच्चा सही सलामत सो रहा है । तब तो बहुत पश्चाताप करने लगी कि हाय ! जिस न्योल ने सांप से मेरे बच्चे की रक्षा की, मैंने व्यर्थ में उसे मार डाला । परन्तु अब क्या हो सकता था...

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताये ।
काम बिगाड़े अपना, जग में होत हंसाय ।।
जग में होत हंसाये, चित्त में चैन न आवे ।
खान पान रस राग, कोई भी मन नहीं भावें ।।
कह गिरधर कवि राय, नित्त चिंता तन जारे ।
खटकत है जिये माहें, करे जो बिना विचारे ।।

बुरी आदत

बुरी बात जम जात है, जब स्वाभाव के मोहि ।
मरते दम तक वह फिरे, टारे टरती नाहिं ।।

सांयकाल हो चुका था, दरया के किनारे पर कुछ अहीर लोग गाय चरा रहे थे । इतने में एक रीछ तैरता हुआ आ गया । कुछ अंधेरा हो जाने के कारण उनको ऐसा जान पड़ा कि कोई काला कम्बल बहता आ रहा है । सब ने कहा–यदि इसको निकाल लिया जाये, तो सर्दी में बहुत काम देगा ।

तब एक बूढ़ा, जो उन अहीरों का बाप था, बोला....बेटा ! तुम जरा ठहरो, मैं अभी इनको निकाल लाता हूँ । इतना कह कर

उसने दरया में छलांग लगा दी । और जल्दी -जल्दी तैरकर कंबल के धोके में रीछ को पकड़ लिया । जब रीछ ने देखा कि यह तो मेरा शिकार ही मेरे पास आ गया है, तब उन ने भी बूढ़े को अच्छी तरह अपनी लपेट में ले लिया । अब तो बूड़ा घबरा गया और उससे छुटकारा पाने के लिये हाथ पाओं मारने लगा, परन्तु बेकार! अब तो गोते खाने लगा ।

इधर जब लड़को ने देखा, कि इतनी देरी हो गयी, बूढ़ा अभी तक नहीं लौटा, आगे ही आगे चला जा रहा है । तो ऊँची आवाज देकर बोले.....बाबा! जाने दे, अगर कम्बल लेकर नहीं आया जाता, तो इसे छोड़कर आजा । तब बूढ़े ने उत्तर दिया... बच्चो ! क्या करूँ ? चाहता हूँ पर यह कम्बल मुझे नहीं छोड़ता । बस फिर क्या था, थोड़ी दूर जाकर उसने प्राण दे दिये ।

यही हाल संसार के व्ययसनों का है । पहले तो इन्सान इन को पकड़ने का यत्न करता है, परन्तु यह इस के बस में नहीं आते । इस के शरीर के साथ मेल नहीं खाते । परन्तु कुसंग के कारण बारबार के अभ्यास से जब यह किसी प्रकार इनको पकड़ लेता है और यह इसकी आदत में शामिल हो जाते हैं । तब यह व्ययसन भी इसको ऐसा मजबूत जप्फा डाल लेते है कि मरते दम तक इसका पीछा नहीं छोड़ते । जो तागों का बना रस्सा, तो उसका टूटना मुश्किल ।

जो आदत हो गयी पक्की, तो उसका छूटना मुश्किल ।।
बुरी अगर हो कोई आदत, उसे बद्ल डालो ।
न आदतों के कभी भूल कर गुलाम बनो ।।
,तुम उनको तर्क करो और नेक नाम बनों ।।
तुम्हारा फायदा इसमें है, शाद काम बनों ।।
बुरा अगर हो कोई शौक, उसे बदल डालों ।

वरना एक न इक दिन, बलायें आयेंगी ।।
बलाये आयेंगी, रंग आनकर दिखायेगी ।
अजीब नाच तुम्हें दोस्तों ! नचायेगी ।।

माया

चलन-चलन सब को कहे, विरला पहुँचे कोय ।
इक कनक इक कामनी, दुर्गम घाटी दोय ।।

एक बार श्री नारद जी भगवान् श्री कृष्ण जी के पास आये और ब्रह्म विद्या का उपदेश करने को कहा । भगवान बोले । नारद ! अभी तुम्हें पूर्ण वैराग्य नहीं हुआ, अभी तुम्हारा मन मोह माया वाला है ।

नारद बोले...महाराज! मुझ में मोह माया कहां ? आप मुझे उपदेश कीजिये ।

भगवान् बोले....अच्छा नारद ! चलो कुछ सैर कर आवें ।

भगवान आगे-आगे जा रहे थे और नारद जी पीछे-पीछे आ रहे थे । काफी दूर जाकर भगवान् एक स्थान पर रुक कर बोले....नारद! हमें प्यास बहुत लगी है । यह सामने नगर के बाहर जो कुआँ है, वहां से जल ले आओ । प्यास बुझाकर फिर हम तुम्हें ब्रह्म ज्ञान का उपदेश करेंगे ।

भगवानतो जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठ गये । और नारद जी जल ले के लिये उधर को चल दिये नारद जी के वहाँ पहुँचने से पहले ही उस नगर की कुछ जवान युवतियां अपनी बगल में घड़ो को दबाये पानी भरने के लिये वहाँ आ पहुँची और अपने-अपने बर्तनों मे पानी भरने लगी ।

इतने में नारद जी भी आ पहुँचे और कुऐ के पास खड़े हो गये। तब एक सुन्दरी ने नारद के कमंडल में जल डाल कर दिया। नारद जी ने जब नजर उठाकर उस सुन्दरी की ओर देखा तो बस देखते ही रह गये।

नारद जी जल लेकर वापिस भगवान् के पास नहीं लौटें बल्कि उस कन्या के पीछे-पीछे हो लिये। घर जाने पर उस कन्या ने मुड़कर देखा तो दरवाजे पर नारद जी को खड़े पाया। समझी...ब्रह्मचारी को भूख लगी है, इसलिये बोली.....ब्रह्मचारी जी ! मेरे मात-पिता तो पास वाले नगर में गये है। थोड़ी देर तक आयेगें परन्तु यदि आप को भूख हो तो यहां बैठ कर भोजन पा लीजीये।

नारद जी मन ही मन में बहुत प्रसन्न हुये। कन्या ने घर के आंगन में एक आसन बिछा दिया नारद जी उस पर विराजमान हो गये, कन्या ने भोजन परोस कर आगे रखा और नारद जी आनन्द से खाने लगे। इतने में उसके माता-पिता भी आ गये। अपने घर में अतिथि रुप में आये हुये ब्रह्मचारी को भोजन करते देखकर बहुत प्रसन्न हुये और दोनों ने उन्हें नमस्कार किया।

भोजन पा लेने पर नारद जी ने उनके साथ भगवत चर्चा शुरु कर दी, जिस से उन को बहुत कुछ संतोष हुआ और उन्होंने हाथ जोड़कर कहा-भगवन् ! यदि आप कुछ दिन आप हमारे पास ठहरे तो आप की अति कृपा होगी। ब्रह्मचारी जी तो यह चाहते ही थे। अतः वह रहकर उन्हें भगवत् कथा का रस पान कराने लगे।

एक दिन कन्या के पिता ने नारद जी से प्रसन्न होकर कहा भगवान ! यदि हमारे योग्य और कोई विशेष सेवा हो तो आज्ञा कीजिये। यह घर आपका ही है। अब तो नारद जी की खुशी का

कुछ ठिकाना न रहा । परन्तु कुछ दबी जबान से बोले...हमारी प्रसन्नता तो इसी में है कि आप अपनी लड़की की शादी.....कर दें ।

स्त्री पति दोनों धर्मात्मा थे, उन्होंने सोचा । हमने कन्या के लिये कोई वर तो ढूढ़ना ही था प्रभु ने बड़ी कृपा की जो ऐसा जवान विद्वान और रुपवान् वर स्वयं ही हमारे घर भेज दिया ।

तब उन्होंने बड़ी धूम-धाम के साथ अपनी कन्या की शादी नारद जी के साथ कर दी, और साथ ही यह भी प्रार्थना की, कि अब अप को कहीं जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारे यहां और कोई संतान नहीं है । इस लड़की और आप के यहां रहने से हमारा दिल लगा रहेगा ।

भगवान का बस फिर क्या था, नारद जी घर जवाई बनकर वहां ही आनन्द से रहने लगे और इस बात को भूल गये कि प्यास लगी थी और मैं पानी लेने आया था ।

होते-होते नारद जी के यहां दो लड़के और एक कन्या का जन्म हुआ । अब तो नारद जी एक अच्छे गृहस्थी बन गये । समय पाकर उनके सास और ससुर का देहान्त हो गया और नारद जी घर के पूर्ण मालिक बन गये ।

इधर भगवान ने दिल में सोचा, गजब हो गया, हम ने तो नारदजी को पानी लेने के लिये भेजा था परन्तु यह तो वहां ही घर जवाई बनकर बैठ गये । अब उन्हें किसी प्रकार इस माया जाल सें छुड़ाना चाहिये ।

प्रभु की प्रेरणा से उस नगर में मूसलाधार वर्षा शुरु हो गयी । तीन चार दिन इतनी भयानक वर्षा हुई कि उस नगर में और उसके इर्द-गिर्द दो-दो मील तक पानी ही पानी दिखाई देने लगा, जिसके जिधर जिसने सुरक्षित स्थान देखा चला गया, तमाम नगर खाली हो गया ।

नारद जी भी अपनी स्त्री और बाल बच्चो को साथ लेकर पानी में चले, परन्तु उनकी स्त्री तो एक गड्ढे में गिर गयी और दोनों लड़के और लड़की पानी की रो में बह गये, बड़ी मुश्किल से नारद जी की जान बची और वह जल को पार कर स्थल पर पहुँचे।

अभी उन्होंने ने स्थल पर पैर रखा ही था कि सामने भगवान को उसी वृक्ष के नीचे खड़े पाया, अब न वहां कोई जल था न नगर था, भगवान बोले ....कहो नारद ! जल ले आये ? तुम तो घर से उपदेश लेने चले थे फिर किस उलझन में पड़ गये नारद जी बहुत लज्जित हुये और बोले महाराज आप की माया को तरना कोई सहल बात नहीं जिस पर आप की कृपा हो वही तर सकता है।

माया मंदिर स्त्री, धरती और व्यवहार।
यह संतन को तब मिले, जब कोये करतार॥

संस्कार

हंसा थे सो चल बसे, कागा भये प्रधान
जाओ विप्र घर अपने, सिंह किसके यजमान॥

एक ब्राह्मणी अपने पति को सदा कहा करती थी, घर में बच्चे भूखे मरते हैं, इनके खाने पीने के लिये कहीं से धन लाओ।

ब्राह्मण उत्तर देता...देवी ! यजमानी पुरोहिती की कृत से जो मुझे मिलता है, मै तेरे आगे ला कर रख देता हूँ। चोरी ठगी करना मैं जानता नहीं फिर और धन लाऊँ तो कहां से ?

ब्राह्मणी कहती....अगर धन नहीं कमा सकते थे तो शादी क्यों की थी, और तुमको बच्चों का बाप बनने का शौक तो आ गया, परन्तु उनके पालन पोषन की भी कुछ अकल चाहिये थी। इस प्रकार से वह नित्य प्रति ब्राह्मण से कहा करती।

एक दिन उस ने विचार किया, ऐसी कुलहनी की कटु वाक्यता सुनते रहने से तो मर जाना अच्छा है ।

नारि कुलहनी ग्राम घर, देह दुखी नृप नीच ।
पर वश पांचो नरण को जीवत ही है मीच ।।

उसने विचार किया, जंगल में फला स्थान पर एक शेर रहता है, आज अपने आपको उसके हवाले कर देना चाहिये ताकि नित्य के दुर्वचन तो न सुनने पड़ें ।

ब्राह्मण जंगल की ओर चल दिया, जिधर शेर रहता था । दैव योग से शेर अपने स्थान पर न था, शिकार की तलाश में गया हुआ था, उसका प्रधान मंत्री हंस वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ था । उसने देखा कि थोड़ी दूरी पर एक ब्राह्मण चला आ रहा है । अपनी दूर दर्शिता से समझ गया कि स्त्री के हाथों दुःखी हो कर प्राण त्यागने आया है....इस विचारे की सहायता करनी चाहिये ।

शेर की गुफा के निकट आने पर हंस ने ब्राह्मण को नमस्कार किया और कहा कि आप किसी की चिन्ता न करें । मै शेर से आपका हर प्रकार से सम्मान कराऊँगा, आप थोड़ी देर यहां विराजिये ।

ब्राह्मण को वहां बैठाकर हंस उड़ा और शेर के पास जा कर बोला....राजन! चलिये, स्थान पर आप के कुल गुरु पुरोहित पधारे है । आप बहुत छोटे थे तब वह आये थे उसके बाद आज ही आना हुआ है, उनके दर्शन कीजिये और सेवा कर के जीवन को सफल बनाइये । हंस शेर को साथ लेकर चला....ब्राह्मण ने भी देखा कि शेर चला आ रहा है परन्तु धीरज से बैठा रहा । शेर ने निकट आकर ब्राह्मण के चरणो पर अपना सिर रख दिया ब्राह्मण देवता ने काँपते हुये हाथ को उठाकर आशीर्वाद दिया ।

ब्राह्मण को हंस ने कुछ जलपान कराया और फिर बोला.... राजन ! अब आप के कुल गुरु घर जाना चाहते है अतः पत्र पुष्प द्वारा इन्हें विदा कीजिये ।

गुफा के पास ही पृथ्वी में काफी धन गड़ा था । शेर अपने पंजे से पृथ्वी को खोद कर बोला महाराज ! जितना धन आप उठा सकते है, उठा लीजिये....ब्राह्मण जितना धन उठा सकता था गठड़ी में बांध लिया....बाकी धन पर शेर ने फिर मिट्टी डाल दी ।

इस प्रकार काफी धन देकर शेर ने उसे आदर पूर्व विदा किया ।

ब्राह्मण ने घर आकर अपनी पत्नी से सब बात कह सुनाई और खूब आनन्द से रहने लगे । समय पाकर वह धन समाप्त हो गया । तब उसकी स्त्री ने कहा....शेर के पास जाकर धन लाना चाहिये, यजमानी पुरोहिती का सिलसिला मिलने मिलाने से ही बना रहता है । तुम नहीं जाओगे तो शेर और किसी को पुरोहित बना लेगा ।

ब्राह्मण बोला.....वह तो हंस की कृपा से सम्मान हो गया था अब तूँ इस बात को जाने दे । जब स्त्री ने नहीं माना तो उसने सोचा....मरने के लिये तो पहले ही गये थे । जितने दिन और जी लिया, उतना ही सही.....ऐसा विचार कर ब्राह्मण फिर जंगल को शेर की तरफ चल दिया ।

देव योग से शेर आज भी बाहर शिकार को गया हुआ था । हँस मर चुका था अब उस का पद एक कौए ने संभाल रखा था । वृक्ष पर बैठे हुए कौए ने जब एक मनुष्य को अपनी तरफ आते देखा तो मुँह में पानी भर आया सोचने लगा कई दिन से इन्सान का मांस खाने को नहीं मिला, इसका शिकार हो जाये तो

मेरा कई दिन तक भंडारा चलेगा । इतने में ब्राह्मण भी चुपचाप शेर की गुफा के पास आकर बैठ गया ।

तब तो कौआ काँए-काँए करता हुआ उड़ा और शेर के पास जा कर बोला.....राजन ! शीघ्र चलिये आज तो घर पर ही एक मोटा ताजा शिकार आ गया है ।

शेर भी उतावला हुआ उस के साथ हो लिया, ब्राह्मण ने देखा कि कौआ शेर को लिये आ रहा है । और शेर के नेत्र वक्र कुछ और प्रकार के दिखाई देते है पर धीरज से बैठा रहा ।

शेर अपना पंजा मार कर उसे खत्म करने वाला ही था कि अकस्मात उस की निगाह ब्राह्मण के मुँह पर पड़ गयी । तब उसे स्मृति आई ओह यह तो वही ब्राह्मण है जिसके संबंध में मेरे पूर्व भूत प्रधानमंत्री हंस ने कहा था कि यह तुम्हारे कुल गुरु है । और मैंने धन देकर सन्मान पूर्वक विदा किया था ।

शेर ने पंजे को रोक लिया, मारा नहीं....नमस्कार तो नहीं किया पर साधारणतया: थोड़ा सत्कार किया और कुछ धन भी दिया परन्तु एक बात कह दी ।

ब्राह्मण देवता! जब तुम पहले आये थे तब मेरा प्रधान मंत्री धर्मात्मा हंस था उसी ने मेरी बुद्धि में सद्भावना भर कर तुम्हारा सत्कार कराया था । परन्तु अब वह शरीर छोड़ चुका है, अब उस पर पर यह दुष्ट काग बैठा है, अब यह प्रधानमंत्री है अब हंस के संस्कार मेरे हृदय में प्रवेश करते जा रहे है । हंस के डाले हुए संस्कार के कुछ अंश में अन्दर अभी बाकी थे, जिससे तुम्हारी जान बच गयी । अब फिर नहीं आना, नहीं तो मारे जाओगे । कभी शेर भी किसी के यजमान हुये है यह तो हंस की कृपा से तुम्हारी पुजा हो गयी थी ।

हंसा थे सो चल बसे , कागा भये प्रधान ।
जाओ विप्र घर अपने, सिंह किसके यजमान ।।

एक पैसा ईमानदारी का अच्छा या सौ पैसे बेईमानी के

प्राचीन काल में एक गाँव में एक गरीब बहेलिया रहता था जो चिड़ियों को पकड़कर अपने परिवार का निर्वाह करता था। पर समय के फेर से उसकी गरीबी ने जोर पकड़ा और उसे गुजर करने के लाले पड़ गये। इसलिये उसने परिस्थितिवश अपने जाल और फन्दे बेच डाले, किन्तु फिर भी भूखों मरने लगाा। अतः मजबूर होकर एक दिन उसने अपने पड़ोसी बहेलिये से जाल और फन्दे दो-एक दिन के लिए माँग लिये, और चिड़ियों को पकड़ने के लिए जंगल की ओर चल दिया।

रास्तें में गाँव के बाहर एक साधू रहता था। वह साधू तपस्वी और परमार्थी था। गाँव के सभी स्त्री-पुरुषों की उसपर विशेष श्रद्धा होने के कारण गाँव की ओर से उसके पास अनेक प्रकार के खाने-पीने का सामान और रुपया-पैसा भेंटस्वरूप आया करता था। एक दिन वह साधू बैठा हुआ ईश्वर-चिन्तन कर रहा था कि इतने में ही फन्दे लेकर जा रहे उस बहेलिये को देखा। उसने तुरन्त उस बहेलिये को आवाज देकर बुलाया और बड़े प्रेम के साथ उसे अपने पास बैठने का संकेत किया। बहेलिये ने बड़ी श्रद्धापूर्वक साधू को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और बैठ गया। साधू ने बहेलिये से पूछा कि तुम कौन हो और क्या करने जा रहे हो ? बहेलिये ने बड़ी नम्रतापूर्वक साधू से कहा कि बाबा मै बहेलिया हूँ और चिड़ियाँ पकड़ने जा रहा हूँ। मै इतना गरीब हो गया हूँ कि जाल और फन्दे भी पड़ोसी से माँगकर लाया हूँ। दो-तीन दिन से

सपरिवार भूखों मर रहा हूँ । जब कुछ चिड़ियाँ हाथ लग जायेगी तो उन्हें बेचकर बच्चों के लिये कुछ अन्न का प्रबन्ध करूँगा ।

साधू ने बहेलिये की बातें सुनकर झोपड़ी से कुछ भोजन-सामग्री निकालकर बहेलिये को दी और कहा कि देखो आज तुम चिड़िया पकड़ने मत जाओं । यह बहुत सा खाने का सामान है । इससे दो-चार दिन तक तुम्हारे परिवार का काम खूब अच्छी तरह से निकल जायेगा । जब यह अन्न समाप्त हो जाय, तब तुम फिर मेरे पास आ जाना, मैं तुम्हारा पुन प्रबन्ध कर दूँगा । लेकिन तुमको मेरी एक बात का जवाब देना पड़ेगा कि, 'एक पैसा ईमानदारी का अच्छा होता है या सौ पैसे बेईमानी के अच्छे होते है ।' साधू की इस बात को सुनकर बेहेलिया बड़े सोच में पड़ गया और वह साधू की इस बात का ठीक तौर से उत्तर न दे सका । अन्त में वह साधू से विनयपूर्वक बोला कि 'बाबा, मै कई दिन का भूखा हूँ इसलिये इस समय मेरी बुद्धि ठीक काम नहीं कर सकेगी, घर जाकर जब खाना खा लूँगा, तब मै स्त्री के साथ बैठकर आपकी बात को अच्छी तरह से सोचूँगा । तभी आपको सही उत्तर दूँगा ।'

बहेलिये कि इस बात को सुनकर साधू बड़ा प्रसन्न हुआ । और बोला, बेटा मुझे मेरी बात का उत्तर पाने की जल्दी नही है । जब तुम्हारी मर्जी हो मुझे उत्तर दे जाना । इस प्रकार बहेलिया साधू से बहुत सा अन्न-मिठाई लेकर विदा हो गया । और सांयकाल होते ही वह अपने घर पर पहुँच गया । घर जाकर उसने अपना सब सामान स्त्री के सुपुर्द करते हुए साधू का पूरा वृत्तान्त उसे समझा दिया । तदुपरान्त उसकी स्त्री ने भोजन तैयार कर लया और बहेलिये के समस्त परिवार ने पेट भरकर भोजन किया । बाद में सभी लोग सो गये ।

प्रात:काल होते ही बहेलिये ने जाल और फन्दे अपने पड़ोसी

को वापस कर दिये और अपने जरूरी कामों से निवृत्त होकर बहेलिया अपनी स्त्री के पास बैठकर साधू की पूछी हुई बात का उत्तर सोचने लगा, ये दोनों स्त्री-पुरुष अनपढ़ थे। किन्तु जितनी भी बुद्धि थी, उसके अनुसार गम्भीरता पूर्वक दोनों ने काफी देर तक खूब विचार किया।

कभी सोचते थे कि, एक पैसा ईमानदारी का अच्छा है, कभी सोचते थे कि सौ पैसे बेईमानी के अच्छे हैं। अन्त में उन दोनों ने अपने समस्त जीवन के अनुभव द्वारा यही तय किया कि 'एक पैसा ईमानदारी का अच्छा है। किन्तु सौ पैसे बेईमानी के बुरे हैं। क्योंकि हमने और हमारे बाप-दादों ने, हमेशा से चिड़ियों को बन्दीगृह में डालने के फलस्वरूप हम लोग भी हमेशा से ही दुखी और गरीब रहते चले आ रहे हैं। इस प्रकार से इन दोनों स्त्री-पुरुषों ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि एक पैसा ही ईमानदारी का अच्छा है।

दूसरे दिन बहेलिया साधू के पास गया और हाथ जोड़कर दंडवत् किया। साधू ने प्रसन्न होकर उसे अपने पास बैठा लिया। साधू ने बहेलिये से कहा कि क्या तुम मेरी बात का जवाब लाये हो या अभी तक विचार ही नही किया? तब हाथ जोड़कर बहेलिये ने कहा कि, बाबा मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार स्त्री से सलाह करके आपकी बात का यह जवाब लाया हूँ कि एक पैसा ईमानदारी का अच्छा है किन्तु बेईमानी के सौ पैसे बुरे है। बहेलिये की इस बात को सुनकर साधु अपने मन में बड़ा प्रसन्न हुआकि, इस नीच कर्म को करते रहने पर भी बहेलिये की बुद्धि ने सच्चा निष्कर्ष निकाला है। साधू ने अपनी झोपड़ी से दो रुपये निकाल कर बहेलिये को दिये और कहा कि, बेटा तुम ये दो रुपये ले जाओ। इनसे तुम्हारे इस-पाँच दिन की, गुजर हो जायेगी। जब तुम्हारे ये

दो रुपये समाप्त हो जायँ तब तुम फिर मेरे पास आ जाना, मै तुम्हारा पुनः प्रबन्ध कर दूँगा। किन्तु अब तुम चिड़िया पकड़ने का काम सदा के लिये बन्द कर दो।

साधु की इस बात को सुनकर बहेलिये ने प्रतिज्ञा कर ली और कहा कि बाबा मै शपथ-पूर्वक कहता हूँ कि भविष्य में कभी भी अब चिड़िया नही पकड़ूँगा। इस प्रकार बहेलिया साधू से दो रुपये लेकर दंडवत् करके सांयकाल होते ही अपने घर की ओर चल दिया।

जब बहेलिया गाँव के नजदीक पहुँचा तो गाँव के बाहर जंगली हिस्से में दो नादान लड़कों को बड़े जोरों से लड़ते देखा। जिन्होंने आपस में लड़ते-लड़ते एक-दूसरे के कपड़े फाड़ डाले थे और दोनों के शरीर से खून निकल आया था। दोनों एक दूसरे की जान लेने पर आमादा हो रहे थे तथा बेतहाशा हाँफ रहे थे। बहेलिये ने इन दो लड़कों को खतरनाक लड़ाई लड़ते देखा तो एकदम झपटकर दोनों को कसकर पकड़ लिया और दोनों को अलग-अलग करते हुए पूछा कि तुम दोनों आपस में क्यों लड़ रहे हो। तब उन दोनों लड़कों में से एक ने कहाकि, यह एक काँच का टुकड़ा है जो मेरा है। क्योंकि इसको पहिले मैंने देखा था और मैंने ही अपने साथी को बताया था। यह मुझे मिलना चाहिये। तब दूसरा लड़का जल्दी से बोल उठा कि, यह काँच पहिले मैंने ही उठाया था और मैंने ही इसे पहले देखा था। इसलिये यह काँच मुझे ही मिलना चाहिये। यह मेरा साथी लड़का मुझसे जबरदस्ती छीनना चाहता है। दोनों लड़कों की बातें सुनकर बहेलिया मन में विचार करने लगा, कि इस जरा से काँच के टुकड़े पर नादान बच्चे लड़कर मर जायेंगे। मगर समझाने से हरगिज नहीं मान सकते है। इसलिए दोनों की जान बचाने के दृष्टिकोण से बहेलिये ने उन

दोनों लड़कों से कहा कि, 'अगर हम तुमको एक रुपया दे दें, तब तो तुम आपस में नहीं लड़ोगे ? बहेलिये की इस बात को सुनकर दोनों लड़के तुरन्त राजी हो गये । बहेलिये ने दोनों बच्चों को एक-एक रुपया दे दिया और उस काँच के टुकड़े को अपने घर ले जाकर एक कोने में डाल दिया ।

इसके बाद उसने अपनी स्त्री से संक्षेप में उस साधू के पास से लाये हुए उन दोनों रुपयों का किस्सा आदि से अन्त तक कह सुनाया । बहेलिये की इस बात को सुनकर स्त्री कहने लगी कि यह तुमने बड़ी गलती की; क्योंकि उन दो रुपयों से तो हमारी गृहस्थी का कई दिन का काम चल जाता । उधर साधू का तो हमारे ऊपर अहसान हुआ और रुपये बेकार चले गये । हम लोग इतने बड़े आदमी भी नहीं है कि दूसरो की मदद करते फिरें । दुनियाँ सब अपने मतलब की बातें सोचती है । स्त्री की इस बात को सुनकर बहेलिया कहने लगा कि तू नहीं समझती है । मैंने साधू के थोड़े से सत्संग से जो कुछ सीखा है, उस नाते उन दो बच्चों की जान बचाने के मुकाबले में उन दो रुपयों का कुछ भी मूल्य नहीं है । हमारा क्या है । यदि दो-एक दिन और भूखों रहना पड़ेगा तो रह लेगें । ऐसे सुकर्म में पैसा लगाने का मौका बार बार नहीं मिला करता । इस प्रकार अनेकों तरीकों से कह-सुनकर उसनअपनी स्त्री को संतोष करा दिया ।

रात प्रारम्भ हो चुकी थी और बरसात भी जोरों से चालू हो गई थी । इसी अवसर पर एक बुड्डा जौहरी उस गाँव से होकर गुजर रहा था । किन्तु अचानक बरसात के आ जाने से उस जौहरी ने पास वाले मकान में ही घुसकर कुछ समय बिताना उचित समझा और तुरन्त उसी बहेलिये के मकान में घुस गया । बहेलिये ने बरसात की परेशानी से बचने वाले उस आगन्तुक बुड्ढे का स्वागत

करते हुए कहा कि, आओ बाबा! आज की रात इस गरीब की झोपड़ी में ही गुजर कर लीजीये, सुबह होते ही आप अपने घर चले जाइये। जौहरी ने बहेलिये की इस बात को सुनकर मन मे यही उचित समझा कि रात का समय है और बरसात हो रही है। इसलिये इसी के घर पर रात बिताना ठीक रहेगा। ऐसा विचार करके जौहरी उसी के मकान में लेट गया। कुछ समय के बाद बहेलिया भी अपने परिवार सहिता सो गया।

आधी रात के बाद एकाएक जौहरी की आँखे किसी कारणवश खुल गई तो उसको सामने की ओर से कुछ प्रकाश नजर आया और वह सोचने लगा कि इसकी झोपड़ी में प्रकाश आने का कोई कारण तो नजर नहीं आता है। उसने अपनी बुद्धि पर बहुत कुछ जोर लगाया; परन्तु वह प्रकाश के मूल कारण को समझ ही नही सका। प्रातःकाल होते ही जोहरी की नजर झोपड़ी के उसी कोने पर गई जहाँ उसने रात में प्रकाश देखा था। सूर्य के प्रकाश में भी, जब उसे उस कोने में कुछ नजर नहीं आया तो जौहरी ने नजदीक जाकर उसे बड़े गौर से देखा तो मालूम हुआ कि यह एक बेश कीमती मणि है जो कि इतनी लापरवाही के साथ झोपड़ी मे पड़ी हुई है। जौहरी ने आश्चर्य से बहेलिये से पूछा कि मित्र, तुम्हारे घर में यह क्या चीज पड़ी हुई है। बहेलिये ने कहा कि, यह एक काँच का टुकड़ा है। इसको कल ही मैंने जंगल से लाकर रखा है। भोले बहेलिये की इस बात को सुनकर जौहरी ने कहा कि तुम इस काँच के टुकड़े को हमें दे दो। और इसके बदले मे तुम कितना रुपया लेना चाहते हो वह हमें बतला दो। बहेलिये ने तुरन्त उस काँच के टुकड़े को जौहरी के हाथ पर रखते हुए कहा कि, आप इसे ले लीजिये। मुझे इसकी कुछ भी कीमत नही चाहिये। मै इसे बड़ी प्रसन्नता से आपको देना चाहता हूँ। क्योकि यह मेरे किसी भी

काम की वस्तु नही है । इस पर जौहरी ने कहा कि, भाई तुम बड़े सज्जन और भोले आदमी हो । तुम इसे मुफ्त में दे रहे हो; किन्तु तुम्हारी सज्जनता का मै बेजा फायदा उठाना नहीं चाहता । तुमने मुझे अतिथि के रूप में रात भंर आश्रय देकर बड़ा भारी उपकार किया है । किन्तु भाई मेरे पास इस समय सिर्फ एक सौ अशर्फियों है इससे ज्यादा नहीं है । इसलिये मै यह चाहता हूँ कि तुम इन सौ अशर्फियों को इस काँच के बदले में ले लो तभी मै तुम्हारे इस काँच को ले सकूँगा । अन्यथा मुझे यह काँच यही छोड़ देना पड़ेगा, जिससे मेरी आत्मा को बड़ा क्लेश एवं दु:ख होगा । यदि तुम मुझे प्रसन्न करना चाहते हो तो मुझसे यह सो अशर्फियाँ प्रसन्नता पूर्वक ले लो । जौहरी की इस बात को सुनकर बहेलिया बड़े आश्चर्य ओर असमंजस में पड़ गया कि यह आदमी कितना बेवकूफ मालूम पड़ता है कि, जरासी चीज के लिए सौ अशर्फियाँ जबरदस्ती दे रहा है । और यदि मै लेने से इन्कार करता हूँ तो इसकी आत्मा बड़ा भारी दु:ख अनुभव करेगी । अस्तु, बहेलिये ने मीठे शब्दों में जौहरी को हर सम्भव यह समझाने की पूरी कोशिश की कि, वह किसी भी प्रकार बगैर अशर्फयाँ दिये ही इस काँच के टुकड़े को ले जाय । मगर इस बात पर जौहरी कतई राजी नही हुआ और अन्त में मजबूर होकर बहेलिये को सौ अशर्फियाँ लेनी पड़ी । थोड़ी देर के बाद जौहरी उस मणि को लेकर प्रसन्नता के साथ बहेलिये के घर से विदा हो गया ।

जौहरी के चले जाने के बाद उन दो लड़ने वाले बच्चों के बाप, दस दस रुपये लेकर उस गरीब बहेलिये के घर आये और रुपये देते हुए उन्होंने बहेलिये से कहा कि भाई, तुम्हारे जैसे गरीब आदमी ने एक रुपया देकर हमारे बच्चो की जान बचाई है । अन्यथा यह बच्चे उस जंगल में लड़कर मर जाते । तुम्हारे इस

उपकार का बदला हम लोग जिन्दगी भर भी नहीं भूल सकतें। उन दोनो की बाते सुनकर बहेलिये ने रुपये लेने से हरचन्द इन्कार किया; किन्तु उन्होंने ने नही माना और दोनों बच्चों के बाप बहेलिये को अनेको प्रकार के आशीर्वाद देते हुए अपने-अपने घर को चले गये।

बहेलिये ने बाद में विचार किया कि, यह तमाम रुपया केवल साधू बाबा की कृपा से ही प्राप्त हुआ है। अन्यथा मेरे बाप-दादों ने इतने रुपयों के कभी दर्शन तक नही किये थे। आज दिन बाबा की कृपा से मै खूब आनन्दित हूँ और आगे भी यदि बाबा की कृपा बनी रही तो, न मालूम किस प्रकार के कौन-कौन से अनुपम लाभ मुझको और प्राप्त होते रहेंगे। ऐसा विचार करके बहेलिया कुछ जरूरी कामों से निवृत्त हो उस समस्त धनराशी को लेकर साधू के पास गाया।

वहाँ पहुँच कर उसने साधू को बड़ी श्रद्धा से दंडवत् किया और शांत भाव से बैठते हुए उसने समस्त धनराशी साधू के सन्मुख रख दी, बाद मे बहेलिये ने उस धनराशी के प्राप्ति होने का समस्त वृत्तान्त साधू को कह सुनाया। साधू ने बहेलिये की बात सुनकर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक कहा कि यह सब तुम्हारी ईमानदारी और सद्भावनाओं का फल है। क्योकिं जिस दिन तुमने अन्तरात्मा से यह निश्चय कर लिया था कि, एक पैसा ईमानदारी का अच्छा होता है और सौ पैसे बेईमानी के बुरे होते है उसी दिन से तुम्हारा भाग्य बदल गया था। अब ईश्वर की कृपा से जो कुछ तुम्हे यह धन मिला है उसे अपने घर ले जाओ। और बाल-बच्चों का पालन-पोषण करों।

बहेलिये ने कहा कि बाबा, यह धन मै नही ले जाऊँगा। यह तो सब आपकी भेंट करने लाया हूँ। क्योंकि यह तो केवल

आपकी कृपा से मिला है । मै तो इसे आपका ही मानता हूँ । मुझे तो आपसे दो रोटी का सहारा मिल रहा है वही सब कुछ है । इस धन को मै वापस नहीं ले जाऊँगा । तब साधु ने बहेलिये को समझाकर कहा कि बेटा तुम बड़े पगाल हो । मै साधू हूँ । मुझे इस धन से क्या करना है । मेरे पास तो सारे गाँव का इतना सामान आता है जिसे मै स्वयं खर्च नहीं कर पाता हूँ और दूसरों को देता रहता हूँ । इसलिये मेरी आज्ञा को तुम्हें अवश्य मानना होगा और इस धन को तुम्हे वापस भी ले जाना होगा । यह धन मेरे किसी भी मतलब का नही है ।

साधू की इस जबरदस्त आज्ञा को सुनकर बहेलिया बहुत गिड़-गिड़ाकर तथा बड़े अनुनय-विनय के साथ हाथ जोड़कर कहने लगा कि बाबा यदि आप इसमें से कुछ भी नहीं लेगे तो मेरी आत्मा को बड़ा दु:ख होगा । इसलिये चाहे आप आधा ही धन ले लीजिये । मुझको संतोष हो जायेगा । इस बात को सुनकर साधू ने उसे अनेक प्रकार से समझाकर इस बात पर राजी कर लिया कि, तुम मेरे नाम पर इस धन में से दसवाँ हिस्सा निकलाकर साधू और फकीरों को भोजन करा देना और जो धन शेष रह जाय, उससे तुम खेती कर लेना । साधू की बातों से बहेलिये को पूर्ण संतोष हो गया और फिर साधू को बड़ी श्रद्धापूर्वक दण्डवत् करके चरण छुए और साधू का आशीर्वाद लेकर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक बहेलिया अपने घर वापस आया ।

घर आकर बहेलिये ने उस धनराशी में से दसवाँ हिस्सा निकाल कर साधू और फकीरों को भोजन करा दिया और बचे हुए धन में से उसने खेती करना शुरू कर दिया । कुछ समय बाद जब खेती पककर तैयार हो गई तो समस्त गाँववालों की खेती के मुकाबले में इसकी खेत में दस गुना ज्यादा पैदावार हुई । बहेलिये

ने अपनी खेती की ऐसी जबरदस्त पैदावार देखकर अपने मन में सोचा कि, यह साधू की कृपा का ही परिणाम है। अत: बहेलिया बड़ी भारी प्रसन्नता के साथ साधू के आश्रम में गया और दंडवत् प्रणाम करने के बाद बोला कि बाबा, आपकी कृपा से इस बार खेती में बड़ी जबरदस्त पैदावार हुई है। आप चलकर अवश्य देखिये, मेरे ऊपर आपकी बड़ी कृपा होगी और मेरा स्थान पवित्र हो जायेगा।

बहेलिये की प्रार्थना पर साधू राजी हो गया और उसके साथ जाकर उसकी खेती को अपनी आँखो से स्वयं देखा। साधू को बड़ा आश्चर्य हुआ कि, इसकी खेती के मुकाबले में किसी भी दूसरे की खेती में इतना अन्न पैदा नहीं हुआ है। अस्तु, साधू की सराहना करते हुए बहेलिया बार-बार कहने लगा कि बाबा, यह सब केवल आपके आशीर्वाद और कृपा का फल है। तब साधू कहने लगा कि बेटा, इसमें मेरा कुछ नहीं है। यह तो तेरी शुभ निष्ठा का ही परिणाम है। अब तू अपने समस्त जीवन में इस बात को कभी मत भूलना कि एक पैसा ईमानदारी का अच्छा है, और सौ पैसे बेईमानी के बुरे है।

इस प्रकार साधू ने बहेलिये को अनेक प्रकार से समझाकर अपने आश्रम की ओर प्रस्थान किया।

उस समय से लेकर अन्त तक बहेलिये का जीवन बड़ा सुखी और सम्पन्न हो गया। तथा उसके घर पर आतिथ्य-सत्कार यथाशक्ति सदैव चालू रहने लगा और बहेलिये की गणना उस गाँव के इज्जतदार आदमियों में हो गई।

झूठ छोड़ो या चोरी छोड़ो

एक गाँव के बाहर जंगल में एक उच्च कोटि के साधू महात्मा रहते थे। एक दिन गाँव के नजदीक रहने वाले दो चोरों को जब कहीं से कुछ माल हाथ न लागा तो उन दोनों ने सोचा कि आज के दिन यदि खाली हाथ घर चलेंगे तो अनेठ हो जायेगी और शकुन बिगड़ जायेगा, इसलिये कुछ न कुछ लेकर ही घर चलना चाहिये। ऐसा विचार करने पर उन्हें ध्यान आया कि गाँव के नजदीक ही जंगल में एक साधू रहता है। चलो, उसके यहाँ कुछ न कुछ अवश्य ही मिल जायेगा। ऐसा निर्णय करके वे दोनों चोर आधी रात के बाद उस साधू की कुटिया में घुस गये और जो कुछ उन्हें मिला उसकी उन्होंने पोटली बाँध ली और चलने लगे। चोरों को पोटली बाँधते समय साधू ने देख लिया था। साधू ने मन में दया करके सोचा कि मेरे जैसे गरीब साधू की चोरी करने से इनको क्या मिल सकेगा। न मालूम ये दोनों कितनी देर से चलकर आये है। इनकी एक दिन की गुजर भी इस चोरी के माल से नहीं हो सकेगी, अतः मेरी कुटिया में एक लुटिया और रह गई है वह भी इनको अवश्य दे देनी चाहिये। ऐसा विचार करके साधू ने उन दोनों चोरों को अवाज देकर अपने पास आने का संकेत किया। साधू की आवाज सुनकर चोरों को पहले तो कुछ भय उत्पन्न हुआ, पर उन्होंने सोचा कि अरे यह तो बूढ़ा साधू है, इसमें एक थप्पड़ का भी दम नहीं है। यह हमारा क्या कर सकता है, ऐसा विचार करके चोरों ने साधू से कहा के बाबा क्या माल वापस लेना चाहते हो ?

साधू ने उत्तर देते हुए कहा कि नहीं, मै माल वापस नही लेना चाहता हूँ, बल्कि आप लोगो ने जितना परिश्रम किया है, उसके मुताबिक आपको कुछ माल प्राप्त नही हो सका इसलिये भाई मेरी कुटिया में एक लुटिया और रह गई है इसे भी लेते जाओ, ताकी आपको कुछ तो और नफा हो जायेगा ।

साधु की इस बात को सुनकर दोनों चोर लौट पड़े और आपस में कहने लगे कि हम लोगों ने हमेशा से ही चोरी का धन्धा किया है । किन्तु आज तक हमको कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, जोकि अपने बचे हुए सामान को भी स्वयं राजी-खुशी देने को तैयार हो जाय । ऐसा सोचते-सोचते दोनों के ध्यान में यह बात आयी कि यार, चोरी तो हम जिन्दगी भर करेगे, मगर ऐसा साधू फिर कभी भी नहीं मिल सकता । इसलिये इसको गुरू बना लेना चाहिये । इस विचार को पक्का करके दोनों चोर साधू के नजदीक गये और उसके सामान की बाँधी हुई पोटली को वापस करते हुए कहा कि, बाबा, हम तुम्हारा सामान नहीं ले जायेंगे, क्योंकि हमने आपके जैसा महात्मा अपनी जिन्दगी में कहीं नहीं देखा है, और न आज तक सुना ही है कि कोई चोरों की नजर से बचा हुआ सामान भी, चोरों पर दया करके दे डाले । अस्तु, बाबा अब तो हम आपके शिष्य होकर आपसे गुरुमंत्र लेना चाहते है । कृपा करके हमें गुरु मन्त्र दीजिये ।

चोरों की बात सुनकर महात्मा ने कहा कि भाई चोरों को गुरुमन्त्र देने से क्या लाभ हो सकता है, और चोरों को मै शिष्य भी नहीं बना सकता । तुम लोग जिस कार्य के लिये आये हो अपना कार्य करके अपने घर जाओ । हमारा और तुम्हारा गुरू-शिष्य का सम्बन्ध कदापि नहीं हो सकता ।

महात्मा की इस बात को सुनकर चोरों ने दृढ़तापूर्वक कहा

कि बाबा हम तो तुम्हारे शिष्य अवश्य ही बन कर रहेंगे । यदि आप सीधे से नहीं मानेंगे तो हम जबरदस्ती आपके शिष्य बनेंगे ।

महात्मा ने मन में विचार किया कि ये चोर बड़े जिद्दी मालूम होते है । सम्भव है यदि मै इनको बिल्कुल इन्कार कर दूँगा तो यह मेरे साथ मारपीट भी अवश्य करेंगे । ऐसा विचार करके महात्मा ने चोरों से कहा कि भाई मै तुमको एक शर्त पर शिष्य बना सकता हूँ कि तुम मेरी दो बातों में से एक भी बात मान लोगे । अन्यथा चाहे तुम लोग मुझे मार भी डालोगे, तब भी मैं तुमको गुरु मन्त्र नही दूँगा । महात्मा की इस बात को सुनकर चोरों ने कहा कि बाबा हम लोग चोरी करना नहीं छोड़ सकते, क्योंकि यह हमारा पैत्रिक धन्धा है । आपकी दूसरी कोई भी बात होगी तो हम मान लेंगे ।

तब महात्मा ने कहा कि अच्छा तुम लोग यदि चोरी करना नही छोड़ सकते हो तो झूठ बोलना छोड़ दो । हम तुम्हें शिष्य बना लेंगे ।

चोरों ने महात्मा की इस बात को सुनकर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और अन्त में दोनों ने यही सोचा कि भाई हमको इस महात्मा का शिष्य तो अवश्य बनना है इसलिये इसकी एक बात तो अवश्य ही माननी पड़ेगी । अस्तु, दोनों चोरों ने महात्मा के सामने शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए कहा कि बाबा, हम दोनों आज से जिन्दगी भर तक कभी भी झूठ नहीं बोलेंगे, आपके सामने हम पक्का वादा करते है ।

चोरो की इस प्रकार की बातों को सुनकर महात्मा को पूरा भरोसा हो गया कि ये लोग चोरी अवश्य करेंगे, मगर झूठ नहीं बोलेंगे । इस बात से सन्तोष मानते हुए महात्मा ने दोनों चोरों को शिष्य बनाकर तुरन्त गुरुमन्त्र दे दिया ।

इसके बाद दोनों चोर गुरू जी को प्रणाम करके खुशी-खुशी अपने घर चले गये ।

घर पर पहुँच कर दोनों चोरों ने कई दिन तक इस बात पर विचार किया कि बगैर झूठ बोले चोरी हो ही नहीं सकती है और चोरी के अतिरिक्त हम लोग दूसरा कोई काम कर नहीं सकते है । ऐसी परिस्थिति में दोनों चारों को विचार करते-करते करीब एक महीना बीत गया, किन्तु एक पैसे की भी कहीं चोरी नही कर सके । अन्त में इनके एक बात सूझी कि रोज-रोज की इन छोटी-मोटी चोरियों से काम नही चलेगा । अब राजा के यहाँ ही चोरी की जाय तो, एक दिन की कमाई से वर्षों तक की रोटियों का गुजारा चल जायेगा ।

इन्होंने राजा के यहाँ चोरी करने का इरादा पक्का करके चोरी करने का पूरा नक्शा भी बना लिया । चोरी करने के लिए इन्होंने दो कीमती राजसी पोशाक तैयार करवायी और एक दिन दोपहर के बारह बजे दोनों ने अपने लम्बे शरीर पर राजसी पोशाके पहिनी, सिर पर कीमती साफे बाँधे, और साफों पर कलगियाँ लगाई, तथा कीमती जूते पहिने और हाथों में बड़ी शानदार छड़ियाँ लेकर राज-भवन की ओर चल दिये ।

राज भवन के खजाने के मार्ग में कुछ-कुछ फासले पर सात डयोढ़ियाँ थी जिन पर सात पहरेदार हर समय पहरा देते थे । पहिले पहरेदार के नजदीक ज्योंही ये दोनों पहुँचे, तो पहरेदार ने कहा कि आप कौन है । तो दोनों ने एक साथ तपाक से कहा कि हम चोर है । परहेदार इनकी बात को सुनकर बड़ा शरमिन्दा-सा हो गया और मन में सोचने लगा कि यह तो हमारे महाराज के कोई खास रिश्तेदार मालूम होते है । मैंने इनको पहिचानने में बड़ी भूल की है । अन्यथा इस प्रकार से न तो यह चोरों के आने का समय ही

है और न चोरो की सी शकल है इसके अतिरिक्त चोरों की सी पोशाकें भी नहीं है। इन तमाम कारणों को सोचकर पहरेदार कुछ गम्भीर मुद्रा में शांत भाव से बैठा रहा और ये दोनों चोर आगे बढ़ गये।

कुछ दूर चलने पर दूसरे पहरेदार ने वहीं प्रश्न कया कि तुम कौन हो, तो इन्होंने भी तुरन्त अपने को चोर कह दिया इस बात पर वह पहरेदार भी पहले के पहरेदार की भाँति तमाम बातों को क्षण मात्र में सोचकर शान्त हो गया।

फिर ये दानों चोर आगे बढ़ गये। इसी प्रकार से इन चोरों सातों ने ड्योढ़ियाँ पार कर दी, और राजकोष के दरवाजे पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचकर इन्होंने अपने छोटे-छोटे जेबी औजारों से राजकोष के ताले खोल डाले और अन्दर जाकर अपनी लम्बी-लम्बी जेबों में केवल हीरे-जवाहरात ही भरे और कुछ अनमोल चींजें भी रख ली। फिर ये दोनों चोर राजकोष के दरवाजों को बन्द करके पुनः उसी मार्ग से वापिस चल दिये।

राज नियम के अनुसार हर एक पहरेदार ने इनसे वापसी पर भी यही प्रश्न किया कि तुम कौन हो, और इन्होंने भी अपने पहले के शब्दों को दुहराते हुए कहा कि हम चोर है। हर एक पहरेदार ने यही सोचा कि यह लोग खाली हाथ आये थे और खाली हाथों ही वापस जा रहे है। निश्चय ही इन दोनों ने हमसे मजाक किया है।

इस प्रकार दिन-दहाड़े ये दोनों चोर बगैर झूठ बोले ही, राजकोष की लम्बी चोरी करके अपने मकान पर सुरक्षित पहुँच गये। इधर राजकोष के पहरेवालों की ज्योंही ड्यूटी बदली और दूसरे पहरेदारों की उपस्थिति हुई तो उन्होंने राजकोष के तालों को टूटा हुआ पाया। उन्होंने तुरन्त राजदरबार में खबर भेज दी और

यह समाचार जरासी देर में तमाम राज्य में फैल गया कि राजकोष में सात-सात पहरेदारों के होते हुए भी, दिन-दहाड़े राजभवन के खजाने में कीमती जवाहरातों की भरपूर चोरी हो गई ।

राजा ने जब यह समाचार सुना तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा । उसने राजमन्त्री से कहा कि मन्त्री जी, यदि हमारे यहाँ इतने जबरदस्त पहरे, चौकी और इन्तजामों के होते हुए भी दिन में चोरी हो गई, तो बतलाओ हमारी गरीब प्रजा की रक्षा होना तो नितान्त असम्भव हो जायेगा, चारों तरफ अराजकता फैल जायेगी, गुंडे, चोर, बदमाशों का बड़ा भारी जोर बढ़ जायेगा । इसलिये जल्द से जल्द इस चोरी का और चोरों का पता लगाना चाहिये ।

राजा की इस बात का समर्थन करते हुए मन्त्री ने कहा कि महाराज! जहाँ तक मेरी पेश पड़ेगी, मैं बहुत जल्द चोरों को पकड़ने का पूरा पूरा प्रबन्ध अभी किये देता हूँ । आप बेफिकर रहिये ।

मंत्री ने अपने निजी स्थान में पहुँचकर तुरन्त कर्मचारियों के द्वारा, उस दिन वाले सातों पहरेदारों को बुलवा लिया, और बड़ी भंयकर डाट बतलाते हुए कहा कि देखो तुम लोग यदि चोरी का ठीक ठीक हाल नहीं बतलाओगे तो याद रखो तुम्हे कोल्हू में पिसवा कर मरवा डालूँगा ।

मंत्री की इस भयंकर बात को सुनकर पहरेवाले काँप उठे और हाथ जोड़कर बोले कि अन्नदाता, आप चाहें तो बेशक हम लोगों को मरवा डालिये किन्तु वास्तव में यह सत्य है और हम ईश्वर को साक्षी करके कहते है कि हम लोग पूर्ण निर्दोष है । हमलोगों ने चोरी नहीं कि है और न चोरी के मामले में हमारी कोई जानकरी है । पहरेदारों की बातों को सुनकर तथा उन लोगों की

आकृति को देखकर मन्त्री ने गम्भीरतापूर्वक अपने मन में विचार किया कि वास्तव में ये लोग निर्दोष मालूम हो रहे है। इस चोरी के विषय में इनको कोई जानकारी नहीं है।

मन के इस विचार को छिपाते हुए, मंत्री ने अपनी गम्भीर मुद्रा में कहा कि अच्छा तुम लोग कुछ देर के लिये सामने वाले कमरे में बैठ जाओ। मै तुम्हें सोचने के लिये फिर एक बार मौका देता हूँ और कुछ समय के बाद मै तुम्हें बुलवाकर पूछताछ करूँगा। यदि तुमने ठीक-ठीक बातें नहीं बतलाई तो तुम लोग अपनी जान से हाथ धो बैठोगे।

सातों पहरेदार बड़े कम्पित हृदय से भयभीत होकर सोचने लगे कि यदि वास्तव में असली चोरों का पता नहीं लगा तो हम लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।

कुछ समय के बाद राजमंत्री ने उन सातों पहरेदारों में से, नम्बर वार हरेक पहरेदार को अपने पास एकान्त में बुलाया और मीठे शब्दों में धीरे से कहा कि देखो हम तुमको कुछ भी सजा नही देगें, केवल तुम गम्भीरतापूर्वक यह विचार करके सही उत्तर दो कि उस दिन तुम्हारे पहरे के समय में, कौन-कौन व्यक्ति आये थे और तुम्हारी किस-किस व्यक्ति से, किस-किस विषय मे, क्या-क्या बाते हुई थीं।

अब पहरेदार की जान में जान आयी। तब वह जरा शान्तिपूर्वक मन में विचार करने लगा, तो उसे एकाएक उन दो व्यक्तियों का ध्यान आया, जो कि अपने को चोर कहकर अन्दर गये थे और चोर कहकर वापस लौट आये थे। पहरेदार ने हाथ जोड़कर आदि से अन्त तक उन दोनों व्यक्तियों का हाल बिल्कुल खुलासा रूप में समझा दिया और अन्त में कहा कि मेरा ख्याल ऐसा था कि वे दोनों व्यक्ति सम्भवतया महाराज के रिश्तेदारों में

से ही कोई हो सकते है ।

पहरेदार की इस बात को सुनकर मन्त्री तुरन्त समझ गया कि दरअसल में वे ही दोनों व्यक्ति पक्के चोर थे । मन्त्री ने उस नम्बर एक के पहरेदार को अपने पीछे वाले कमरे में दूरी पर भिजवा दिया । बाद में मन्त्री ने, एक के बाद दूसरे को, अर्थात् सिलसिलेवार सभी पहरेदारों को अलग-अलग करके बुलाना शुरू किया, और हर एक से वही प्रश्न, उसी प्रकार से किया जैसा कि सबसे पहले पहरेदार से किया था ।

परिणामस्वरूप सभी पहरेदारों की बिल्कुल एक सी! कहानी निकली । तब तो राजमंत्री को पूर्णरूप से निश्चय हो गया, कि चोरी उन्हीं दोनों व्यक्तियों ने की है और ये सातों पहरेदार बिल्कुल बेकसूर है । अतः मन्त्री ने उन सातों को तुरन्त राजदण्ड से मुक्त कर दिया और वे लोग अपने-अपने घर चले गये ।

तदुपरान्त राजमन्त्री ने, तमाम राज्य में डुग्गी पिटवा दी कि हमारे राज्यभंडार में जो चोरी हुई है, उस चोर का जो कोई व्यक्ति पता बतावेगा उसको राज्य की तरफ से, बड़ा भारी इनाम दिया जायेगा ।

इस प्रकार जब यह मुनादी नगर में चारों तरफ हो गई । उन दोनों चोरों ने भी इस मुनादी को बड़े ध्यानपूर्वक सुना दोनों आपस मे सलाह करने लगे कि यदि हमलोग इनाम के लोभ में आकर खबर देने गये तो सम्भव है कि हम दोनों को सिपाही गिरफ्तार कर ले । पर अन्त में दोनों चोरों ने यह तय कर लिया कि प्रथम तो राजा को वचन में बांधकर चोर का भेद बतलायेंगे, ताकि वह हमको किसी प्रकार की सजा दे ही नही सकेगें, और इनाम भी हाथ लग जायेगा । इतने पर भी यदि राजा ने हमारे साथ दगाबाजी की तो हमको चाहे कितनी ही लम्बी सजा या मौत क्यों न भोगनी

पड़ें मगर हम अपने घर का पता कदापि नही बतायेगें । राजा के यहाँ से लायी हुई अपार धनराशि से हमारे बाल-बच्चों की गुजर बसर तो दीर्घ काल तक बेफिकरी से चलती ही रहेगी । ऐसा पूर्ण निश्चय करके दोनों चोरों ने वही राजसी पोशाकें पहनी, तथा वहीं साफें, कलंगी और छड़ियाँ हाथ में लेकर राज-दरबार की ओर चल दिये ।

कुछ समय बाद जब ये दोनों चोर राज-दरबार में जाकर एक तरफ खड़ें हो गये, तब राजा की निगाह उन दोनों चोरों पर पड़ी । राजा ने उन लोगों को किसी बड़े परिवार का आदमी समझकर इनसे पूछा कि आप लोग किस कारण से आये है और क्या कहना चाहते है ।

तब चोरों ने राजा को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा कि हम लोग राजकोष की चोरी के सम्बन्ध में इनाम प्राप्त करने के हेतु एवं चोरी का पूरा-पूरा हाल बताने आये हें ।

राजा ने इनकी तरफ आश्चर्य की दृष्टि से देखते हुए कहा कि अच्छा बताओ हमारे यहाँ राजकोष की चोरी, सात- सात पहरेदारों के होते हुए भी किस प्रकार से हुई है ।

चोरों ने उत्तर देते हुए कहा, कि महाराज राजकोष की चोरी का हम पूरा-पूरा हाल तभी बता सकते है कि जब आप हम दोनों को अभय देने का पक्का वचन दें । अन्यथा हम चोरी का सच्चा हाल बता नहीं सकते ।

राजा ने इन व्यक्तियों को वचन देते हुए कहा कि, तुम लोग पूर्ण विश्वास रखो कि हम तुमको किसी भी प्रकार की कोई सजा नहीं देंगे । बल्कि तुम्हारी सच्चाई की बातों का पूरा यकीन होने के बाद तुम्हें और इनाम दिया जायेगा । चोरों ने राजा की बात का पूर्ण विश्वास करते हुए चोरी का तमाम हाल आदि से अन्त तक

कह सुनाया ।

राजा ने उन दोनों चोरों की बातें सुनी, और उनकी पोशाकों को तथा उनकी वेषभूषा को देखकर राजा को उनकी बातों पर पूर्ण विश्वास हो गया ।

राजा ने कहा कि तुम्हारी बातें सब सही मालुम हो रही है, मगर यह बात समझ में नही आयी कि तुम लोगों ने चोरी जैसे निंन्दनीय कर्म करते हुए भी सत्य बोलना कब से और कहाँ से सीखा है ।

चोरों ने उत्तर देते हुए अपने गुरु साधू महात्मा की बातें आदि से अन्त तक सब कह सुनायी । जिनकी वजह से हम दोनों को सत्य बोलकर ही चोरी करने के लिये बाध्य होना पड़ा है ।

चोरों की बात सुनकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई, और आश्चर्य इस बात का हुआ कि सत्य बोलकर चोरी करनेवाले चोरों को जीवन में मैंने प्रथम बार देखा ।

राजा ने प्रसन्नता से मंत्री की तरफ देखा, और चोरों को यथोचित इनाम देने के लिये संकेत कर दिया । राजमंत्री ने दोनों चोरों को पाँच-पाँच सौ अशर्फियां अलग-अलग दी, और कहा कि हम तुम्हारी सच्चाई पर बहुत खुश हुए है ।

चोरों ने इनाम प्राप्त करने के पश्चात् राजा को झुक-झुक कर बारबार प्रणाम किया और चलने के लिये आज्ञा मांगी ।

राजा ने चोरों की सच्ची सत्यनिष्ठा देखकर मन में सोचा कि ऐसे सच्चे और बहादुर आदमियों को यदि हम अपने यहाँ काम पर रख लें तो बहुत उचित रहेगा । ऐसा विचार करके राजा ने, चोरों से कहा कि भाई जब तुमने झूठ बोलना छोड़ दिया है तो यह बताओ कि चोरी करना भी किसी शर्त पर छोड़ सकते हो ? तब चोरों ने कहा कि महाराज, हमने और हमारे पूर्वजों ने हमेशा से

चोरी करना ही सीखा है, दूसरा कोई काम हमलोग जानते नही है । यदि हमलोगों को रोटी का पक्का वशीला, बगैर चोरी के कहीं से प्राप्त हो जाये तो हमलोग चोरी करना भी सहर्ष छोड़ सकते है ।

राजा ने चोरों की बातों से बड़ा संतोष अनुभव करते हुए कहा कि देखो, यदि तुम हमारे सामने अपने गुरू की आन रखकर कर यह प्रतिज्ञा करो कि रोटी मिल जाने पर हम चोरी कभी नहीं करेगे तो हम तुम दोनों व्यक्त्यिों को अपनी पलटन का अफसर बना देंगे ।

राजा की बात सुनकर चोरों को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने चोरी जैसे निन्दनीय कर्म से सहज पिण्ड छूटते हुए देखकर तुरन्त राजा के सामने, अपने गुरु की आन रखकर प्रतिज्ञा करते हुए कहा कि यदि महाराज आप हमको हमेशा के लिये नौकरी दे देंगे तो हम लोग जिन्दगी में कभी भी चोरी नहीं करेंगे ।

राजा ने खुशी के साथ उन दोनों चोरों को अपने यहाँ पल्टन में आफिसरों के पद पर रख लिया और भविष्य के लिये यह वचन दे दिया कि तुम लोगों के बाल-बच्चों को भी हमारे राज में हमेशा किसी न किसी पद पर स्थान मिलता रहेगा । तब तुम लोग अपने-अपने घर जाओं और कल से हमारे यहाँ काम पर आ जाओ ।

दोनों चोर राजा को बड़ी श्रद्धापूर्वक प्रणाम करके अपने घर चले गये और इनाम की अशर्फियाँ अपनी स्त्रियों के सामने रखते हुए राजा के यहाँ का सारा वृत्तान्त कह सुनाया । अब चोरों के घर में आनन्द का पारावार नहीं रहा, उनका सारा रहन-सहन ही बदल गया । राज-घराने में भी चोरों की बड़ी इज्जत बढ़ी और समाज में भी लोग इनकी बड़ी इज्जत करने लग गये । एक साधू के जरा से

सत्संग से चोरों का जीवन शाही जीवन बन गया ।

संत को लीद का दान

एक राजा अपनी राजधानी की घुड़साल में जाकर अपने घोड़ों का निरीक्षण कर रहा था । उसी समय एक ऐसा सन्यासी वहाँ आ गया जो कि एक दिन में, सिर्फ एक ही घर पर भिक्षा माँगता था । और जो कुछ भी एकबार में मिल जाता था, उसी को भगवान के नाम और संतोष पूर्वक खा लेता था । सन्यासी ने राजा के सामने पहुँच कर नारायण हरि कहा और चुप-चाप खड़ा हो गया । जब राजा की निगाह सन्यासी पर गई, तो राजा ने अचानक एक मुट्ठी घोड़े की लीद हाथ से उठाकर सन्यासी को दे दी । सन्यासी लीद को लेकर वहाँ से चला गया, और अपने आश्रम में पहुँच कर अपने नियम के अनुसार भगवान का ध्यान करके उस लीद को खा गया ।

सन्यासी को लीद देने बाद राजा अपने राजभवन में चला गया और अपने जरूरी कामों में वयस्त हो गया ।

लगभग एक वर्ष के बाद, राजा के गुरु का आगमन राजमहल में हुआ राजा ने बड़ी श्रद्धा के साथ गुरु का सत्कार किया । राजा के गुरु एक बहुत पहुँचे हुए सिद्ध पुरुष थे । उन्होंने राजा को आशीर्वाद देने की दृष्टि से राजा के भविष्य पर ध्यान लगाकर देखा, तो उन्हें यह जानकर महान आश्चर्य हुआ कि राजा के खाने के लिये सैकड़ों मन लीद इकट्ठी हो गई है । गुरू ने पुनः ध्यान धरकर देखा कि राजा के खाने के लिये इस लीद के एकत्रित होने का कारण क्या है । तो मालूम हुआ कि राजा ने उन्मादित अवस्था

में किसी उँचे सन्त को लीद का दान कर दिया है, जिसे वह खा गया है । इसलिये उसके भयंकर परिणास्वरूप सैकड़ों मन लीद राजा के खाने के लिये तैयार हो गई है । क्योंकि ईश्वरीय विधान के अनुसार सुपात्र को दिया हुआ दान रात-दिन बढ़ता रहता है, इसीलिये राजा के हाथ से दी हुई लीद रातदिन बढ़ती चली जा रही है ।

ऐसा विचार करके राजगुरू ने एकान्त में राजा से गम्भीर मुद्रा में कहा कि, राजन, तुम्हारे खाने के लिये सैकड़ों मन लीद एकत्रित हो गई है, इसे कहाँ तक खाओगे ।

गुरु की बात सुनकर राजा चौंक पड़ा और हाथ जोड़कर कहने लगा कि गुरुदेव आप यह कैसी अनोखी बात कह रहें है ?

राजगुरु बोले कि मै गलत नहीं कह रहा हूँ । तुमने अपनी घुड़साल में खड़े होकर किसी उच्च कोटि के भूखे सन्त को लीद का दान कर दिया है और वह उसी लीद को अपने आश्रम में जाकर खा गया है । जो रातदिन तुम्हारे खाने के लिये बढ़ती चली जा रही है ।

राजा ने गुरू की बातें ध्यानपूर्वक सुनी और उसे उन्मादित अवस्था में सन्त को हुई लीद का पूरा पूरा ध्यान आ गया । राजा ने घबड़ाकर गुरू के चरण पकड़ लिये और प्रार्थना करने लगा कि गुरूदेव, यह अपराध मुझसे अवश्य हो गया है, किन्तु किसी भी प्रकार आप मेरी रक्षा कीजिये । मै आपकी शरण में हूँ, आप सामर्थ्यवान हैं, त्रिकालज्ञ है, आपको मेरा उद्धार करना ही पड़ेगा । राजा की दीनता देखकर गुरु को दया आ गयी और वे राजा के उद्धार का उपाय सोचने लगे ।

राजगुरू ने मन में सोचा कि यदि राजा की झूठी निन्दा किसी भी प्रकार से प्रजा में फैल जाय, तो झूठी निन्दा करने वाले जितने

भी व्यक्ति होंगे, उन सभी लोगों को उस पाप के बदले में राजा की लीद बँटती चली जायेगी, और एक दिन वह तमाम लीद समाप्त हो जायेगी । राजगुरू ने ऐसा निश्चय करके कहा कि राजन, यदि तुम लीद खाने से बचना चाहते हो, तो तुम्हें अपनी झूठी निन्दा फैलानी पड़ेगी ओर उस अपमान की सहन करना पड़ेगा । राजा ने मन में सोचा कि मनों की तादाद में लीद खाने के मुकाबले तो यही अच्छा रहेगा कि झूठी निन्दा के द्वारा जो कुछ भी कष्ट और आत्मग्लानि पैदा होगी उसे सहन कर लेंगे । राजा ने हाथ जोड़कर गुरू से कहा कि गुरूदेव, झूठी निन्दा के द्वारा जो कुछ अपमान होगा, उसे मै सहन कर लूँगा किन्तु ढेरों लीद खाने से मेरी जान किसी भी प्रकार बचाइये ।

राजगुरू ने कहा कि मेरी और तुम्हारी बात को कोई तीसरा व्यक्ति कतई न जान सके यह ध्यान अन्त तक रखना होगा । राजा ने स्वीकृति दे दी ।

तब राजगुरू ने कहा कि तुम अपनी जवान लड़की को साथ लेकर एकान्त स्थल में रहने का प्रबन्ध करो । जिस कमरे में तुम दोनों रहोंगे, उस कमरे मे कभी कोई तीसरा व्यक्ति नहीं आने पाये । मै समय-समय पर तुमसे बाहर वाले कमरे में मिलता रहूँगा । तुम्हारे पास तुम्हारी रानी तथा राजमन्त्री तक भी उस कमरे में कभी न आने पायें । जिस किसी से भी जरूरी मुलाकात करनी हो, उन सबके लिये, बाहर वाले कमरे में ही मिलने-जुलने का इन्तजाम रखा जाय । छोटी मोटी साधारण मुलाकात के लिए सभी को इन्कार कर दिया जाय । इसके अतिरिक्त शराब की बोतलें बराबर मँगवाते रहकर राज-परिवार को तथा राजकर्मचारियों को हमेशा यह दिखाते रहना होगा कि मुझे हर वक्त शराब पीने को चाहिए । दूसरों के सामने जब कभी भी बातचीत का अवसर प्राप्त

हो, तो अपने को हमेशा शराबी और अय्याश साबित करते रहना। राजगुरू राज को एकान्त में सभी बातें समझाकर विदा हो गये।

राजा ने दूसरे दिन से ही बस्ती से बाहर थोड़ी सी दूरी पर अपने बगीचे की कोठी में अपनी जवान लड़की के साथ रहना शुरू कर दिया। और शराब की बोतलें आने लगीं तथा राजा के पास खास कमरे में रानी और राजमंत्री का प्रवेश भी रोक दिया गया। राजा ने राजकाज की ओर से भी ध्यान हटा लिया। राजा की इस प्रकार की रहन-सहन को देखकर, अल्पकाल में ही राजपरिवार और कर्मचारी मंडल तथा समस्त प्रजा में, यह बातें बड़े जोरो से फैल गयीं कि, राजा की नीयत भ्रष्ट हो गई है, अपनी जवान लड़की को लेकर एकान्त में रहता है और हर समय शराब पीकर अय्याशी मे लगा रहता है तथा राजकाज तक को देखना-भालना छोड़ दिया है। समस्त राज्य में यह चर्चा हर आदमी के मुँह पर आने लगी, और अनेकों प्रकार से राजा को लोग दुराचारी कहने लगगये। इस समाचार ने फैलते-फैलते इतना जोर पकड़ लिया और लोगों की इतनी हिम्मत खुल गई कि, सभी राजा की निन्दा दिन-दहाड़ें करने लग गये। इस दौरान में राजगुरू समय-समय पर एकान्त में आकर राजा से मिलते रहते थे, और अपने योग ध्यान के द्वारा राजा को यह बतलाते थे कि राजन् तुम्हारे खाने के लिये जो लीद इकट्ठा हुई थी, वह दिनों दिन घटती चली जा रही है।

कुछ समय के बाद जब लोगों में राजा की निन्दा खूब जोरों से चारों तरफ फैल गई तब एक दिन राजगुरू ने आकर राजा से कहा कि राजन् तुम्हारी तमाम लीद समाप्त हो चुकी है। केवल एक मुट्ठी ही लीद जो तुमने दी थी वह समाप्त नहीं हुई। वह तो तुमको खानी ही पड़ेगी। राजा ने पुनः गुरु से प्रार्थना करते हुए

कहा कि गुरुदेव, कोई दूसरा ऐसा उपाय, निकालिये कि जिसके द्वारा यह एक मुट्ठी लीद भी मुझे न खानी पड़े। राजा की प्रार्थना सुनकर गुरु ने पुनः ध्यान लगाकर देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि इसके राज्य में सिर्फ एक लोहार ऐसा रह गया है, जिसने आजतक एकबार भी राजा की निन्दा नहीं की है। अस्तु राजगुरु ने कहा कि राजन्, तुम्हारे राज्य में सिर्फ एक ऐसा व्यक्ति रह गया है जिसने तुम्हारी जरा भी निन्दा नहीं की है वह है लुहार जो सत्य बोलने वाला व्यक्ति है। यदि तुम किसी भी प्रकार से उस लुहार के मुँह से एकबार भी अपनी निन्दा करा लो, तो तुम्हें वह एक मुट्ठी लीद भी नहीं खानी पड़ेगी। इतना कहकर राजगुरु राजा को आशीर्वाद देकर चले गये।

तब राजा ने अपना वेष बदला और फटे-पुराने कपड़ें पहिनकर लुहार की दुकान पर पहुँच गये। राजा ने कुछ गरीबी का ढंग दिखाते हुए लुहार से कहा, बाबा हम नौकरी करना चाहते है। आप कृपा करके हमें अपने यहाँ किसी भी काम पर नौकर रख लीजिये, और हमारा काम देखकर बाद में जो कुछ भी आप उचित समझें पैसे दे दें। मै उसी गें पूर्ण संतोष मान लूँगा। राजा के विशेष आग्रह करने पर लुहार ने उन्हं नौकर रख लिया, और काम-काज में राजा को लगा दिया। दो एक दिन के बाद, राजा ने लुहार से कहा कि बाबा हमने सुना है कि इस नगर का राजा बहुत नीच प्रकृति का है जो कि अपनी जवान लड़की को लेकर एकान्त मे अकेला रहता है और शराब पीता है। लुहार ने राजा की बात सुनी अनसुनी कर दी और कोई उत्तर नहीं दिया। अब राजा ने नित्य प्रति लौहार से राजा की बुराई करते हुए बार-बार उत्तर पाने की प्रतीक्षा जाहिर की अतः लुहार ने कुछ चिढ़कर मन में सोचा कि यह व्यक्ति बार-बार मुझसे राजा की निन्दा क्यों कराना

चाहता है । अस्तु, लोहार सत्यवादी होने के कारण मनोयोगी बन चुका था, अतः नौकर की बात पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने लगा, तो उसके मन में यह विचार आया कि यह नौकर मुझे धोखा दे रहा है और उसने नौकर से कहा तुम मेरे मुँह से राजा की झूठी निन्दा करवाकर मुझे लीद खिलाना चाहते हो, तो यह कदापि सम्भव नहीं हो सकता है । लुहार की बातें सुनकर राजा दंग रह गया, ओर कुछ क्षण के उपरान्त रोटी खाने के बहाने लज्जित होकर अपने राज भवन में चला गया।

दो-एक दिन के बाद जब राजा के गुरु राजा से मिलने आये, तो राजा ने लोहार के यहाँ की नौकरी करने का सारा किस्सा आदि से अन्त तक सुनाया । तब राजगुरू ने राजा से कहा कि तुम्हारे समस्त राज्य और नगर में यहीं एक लुहार सत्यवादी है, इसलिये वह अपनी आँखों देखी बात को ही सच्ची मानता है । इसके अतिरिक्त वह किसी की बुराई करना भी नहीं जानता, और सदैव सत्य बोलने के कारण उसकी चित्तवृत्तियाँ निरोध हो गई है । इसलिये उसे यह मालूम हो गया कि यह व्यक्ति मुझसे राजा की झूठी निन्दा करवा कर लीद खिलाना चाहता है । अतः वह लीद खाने से साफ बच गया ।

राजगुरू ने कहा कि राजन, यही गनीमत समझो कि तुम्हारे खाने के लिये जो सैकड़ों मन लीद एकत्रित होगई थी वह तुम्हारी झूठी निन्दा करनेवालों में बठ गई है । अब वह उन सब लोगों को खानी पड़ेगी, और शेष एक मुट्ठी लीद तो तुमने दी थी वह खत्म नहीं हो सकी है । वह लीद तो तुमको खानी ही पड़ेगी । इसलिये अब तुम इस एकान्त में रहने वाले नाटक को समाप्त कर दो, और पुनः अपनी राजधानी के काम को पूर्ववत् सम्हाल कर रहना प्रारम्भ कर दो तथा शेष जीवन में भगवान का भजन करो । फिर कभी

ऐसी गलती मत करना कि जिसकी वजह से तुम्हें इतना बड़ा प्रायश्चित्त करना पड़े ।

राजा ने गुरू की सभी बातों को स्वीकार कर लियाऔर गुरू का यथोचित्त सत्कार करके उन्हें विदा कर दिया । इसके बाद राजा राजधानी के कार्यों को बड़ी सावधानी से करने लगा । कुछ समय के बाद प्रजा में चारों तरफ यह बात फैल गई कि हमारा राजा अब पुनः धर्मात्मा हो गया है । उसकी बुराई के स्थान पर चारों तरफ उसकी प्रशंसा होने लगी ।

शेष जीवन को राजा ने बड़ी शान्ति से भगवत् आराधना में तथा प्रजा की सच्ची सेवा में लगाकर अपने को धन्य बना लिया ।

दाना दुश्मन और नादान दोस्त

एक बहुत बड़े सौदागर के पास कोई स्वामिभक्त, तालीम-याफ्ता ऐसा बन्दर था, जो कि रात के वक्त अपने हाथ में एक छोटी तलवार लेकर बड़ी सावधानी के साथ मालिक का पहरा दिया करता था ।

एकबार वह सौदागर अपना बहुत सा सामान लेकर जब देश-देशान्तरों में व्यापार करने के लिये जा रहा था, तो जहाँ-जहाँ वह रातभर विश्राम करता था, वहाँ-वहाँ उसका वह बन्दर रात भर जागकर नंगी तलवार से पहरा देता रहता था और इतनी सतर्कता रखता था कि कोई पक्षी क्या, चूहा तक भी सौदागर के पास नही पहुँच सकता था । एकबार सौदागर जब एक विशाल राज्य में पहुँचा तो उसने वहाँ के राजा के पास अपने बन्दर की प्रशंसा

सुनाई । राजा ने बन्दर की पुरी जानकारी एक रात में अपने यहाँ रख करके देख ली । उसका काम देखकर राजा ने दूसरे ही दिन उस सौदागर को बन्दर की पूरी कीमत देकर खरीद लिया, और अपने सोने के कमरे में रोज के लिए उस बन्दर को अपने अंगरक्षक के स्थान में नियुक्त कर दिया ।

राजा के भवन के शयनागार में छत के बीचो-बीच एक लोहे की जंजीर लटक रही थी । एक काला साँप कहीं से निकलकर छत पर से होता हुआ वह उस जंजीर पर आकर लटक गया । साँप अपनी दो जीभ को बाहर निकालकर लपलपाने लगा । उस सांप की परछाँही राजा के मुंह पर पड़ने लगी । उस हिलते हुए सर्प की लपलपाती हुई जीभ की परछाँही जब बार-बार राजा के मुँह पर आने लगीं । तो, बन्दर ने उस परछाँही को ही सर्प समझकर तलवार से उसे काट डालना चाहा । ठीक उसी समय कुछ चोरों ने राजा के उसी कमरे में नकब लगाकर अन्दर घुसना चाहा तो उन्होंने देखा कि एक बन्दर सर्प की परछाँही को असली सर्प समझकर उसे काटने के लिये तैयार बैठा है और बन्दर की तलवार का निशाना राजा की गरदन पर पड़ रहा है । अतः एक चोर ने बड़ी शीघ्रता के साथ यह सोचते हुए कि, यह नादान बन्दर राजा को मार डालेगा, तुरन्त लपक कर अपनी तलवार के एक ही हाथ से बन्दर को मार डाला और दूसरे चोर ने तुरन्त सर्प को मार डाला । इस प्रकार चोरों ने राजा की जान सुरक्षित कर दी, और वे दोनों चोर राजा के यहाँ ये कीमती सामान, सौने-चाँदी और जवाहरात बगैरह को बाँध कर ले गये ।

प्रातःकाल जब राजा सोकर उठा तो उसने अपने बन्दर को मरा हुआ पाया और पास ही में एक सर्प को भी कटा हुआ पाया । राजा की निगाह जब अपने कमरे में घूमी तो दीवाल में

नकब लगा हुआ देखा और सोने-चाँदी, जवाहरात के सामानों को वहाँ से गायब पाया, तो राजा ने सोचा यह कार्य चोरों ने किया है, मगर बन्दर के पास मरे सर्प की बात कतई समझ में नही आयी। अस्तु राजा ने उठकर चुपचाप पहले एक लकड़ी के टुकड़े से मरे हुए सर्प के टुकड़ो को, नकब वाले छेद के द्वारा बाहर फेंक दिया। इसके बाद राजा ने अपने कमरे का दरवाजा अन्दर से खोला, और ज्योंही कर्मचारियों ने आकर राजा को प्रणाम किया, त्योंही राजा ने राज्य मंत्री को बुलाने के लिये आदेश दिया।

राजा का आज्ञा पाकर राजमन्त्री तुरन्त राजमहल में उपस्थित हो गया और राजा को प्रणाम करते हुए बोला कि महाराज मेरे लिये क्या आज्ञा है, इस बैमौके पर कैसे याद किया है। राजा ने संक्षेप में अपने कमरे की चोरी का हाल बतलाते हुए कहा कि हमारे यहाँ रात को जो चोरी हुई है, उस चोरी होने का मुझे कोई रंज नहीं है, बल्कि उस चोरी में एक रहस्य की एक बात भी शामिल है जिसकी जानकारी करना मुझे बहुत ही आवश्यक प्रतीत हो रहा है। इसलिये तुम किसी भी प्रकार यत्न करके इस चोरी करने वाले चोरों का पता लगाओ, ताकि मै उनसे इस रहस्य की जानकारी कर सकूँ।

राजमन्त्री राजा की विशेष आज्ञा पाकर तुरन्त वहाँ से चल दिया और अपने स्थान पर आकर उसने कर्मचारी-मंडल को आज्ञा दी कि तुमलोग सारे शहर में जोरदार मुनादी कर दो कि हमारे महाराज के राजमहल की चोरी का जो कोई व्यक्ति पूरा-पूरा सच्चा हाल बतलायेगा उसे राज्य की तरफ से उसे बड़ा भारी इनाम दिया जायेगा। जब यह मुनादी की खबर चोरों को लगी तो वे लोग आपस में यह सोचने लगे कि इनाम लेने के लिये राजा के पास चलना चाहिये या नहीं क्योंकि इनाम के धोखे में यदि राजा

ने हमको कैदखाने में डाल दिया तो बड़ी मुश्किल हो जायेगी। अन्त में चोरों ने अपनी चतुराई के भरोसे पर, राजा से इनाम प्राप्त करने के लिये अपने अन्दर हिम्मत पैदा कर ली और दोनों चोर अच्छे-अच्छे कपड़ें पहन कर राजा के दरबार में पहुँच गये।

कुछ समय के बाद राजा की दृष्टि जब इन दानों व्यक्त्यिों पर पड़ी तो राजा ने इनसे कहा कि आप लोग अपने आने का कारण बतलाइयें और कहिए आप क्या चाहते है तब दोनों चोरों ने कहा। महाराज, हम आपके यहाँ की चोरी का हाल बतलाने आये है और बदले में आपकी मुनादी के अनुसार इनाम भी प्राप्त करना चाहते है। राजा ने कहा कि यदि तुम चोरी का सही हाल बतला दोगें तो तुमको अच्छा इनाम देंगे। तब चोरों ने कहा कि महाराज चोरी का हाल बतलाने से पहिले हम आपसे एक वचन और चाहते है कि आप चोरों को सजा नहीं दे सकेंगे। राजा ने कहा कि मैं पक्का वचन देता हूँ कि यदि तुम्हारी बातें सही साबित हुई तो हम चोरों को कोई सजा नहीं देंगे।

तब चोरों ने कहा कि महाराज आपके यहाँ से हम दोनों ने ही चोरी की है। पर राजा ने कहा कि चोरी के सम्बन्ध में कुछ अन्दरूनी हालात बतलाओगे तभी इनाम मिल सकेगा।

तब चोरों ने कहा कि महाराज, एक दिन हम दोनों व्यक्तियों ने आपके यहाँ आधी रात तक आपके शयनागार वाले कमरे में नकब लगाया था, किन्तु जैसे ही हमने अन्दर कमरे में प्रवेश करने के लिए अपना सिर घुसाकर देखा तो हम दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि आपकी छत के बीच में लटक रही एक लोहे की जंजीर पर एक सर्प लटक रहा था और सर्प अपनी जीभ को बाहर निकालकर लपलपा रहा था। उस सर्प की परछाही आपके ऊपर पड़ रही थी। वहीं आपके पास एक बन्दर नंगी तलवार लेकर

पहरा दे रहा था और बन्दर सर्प की परछाहीं को असली समझकर उसे तलवार से मारने के लिये आपकी गरदन के ऊपर निशाना बनाना चाहता था। हमने यह देखकर कि यह बन्दर यद्यपि राजा का हितैषी है किन्तु नादान होने के कारण राजा की जान जरासी देर में ले डालेगा, ऐसा सोचकर हम दोनों ने बहुत तेजी के साथ आपके कमरे में घुसकर सबसे पहले मैंने अपनी तलवार से बन्दर को मार डाला और मेरे साथी ने सर्प को। तब हम लोगों ने आपकी जान पूर्णरूपेण सुरक्षित समझकर समाधान किया और फिर हम दोनों ने यथाशीघ्र आपके यहाँ की बहुमूल्य सोने-चांदी व जवाहरात की चोरी करके उसी नकब वाले स्थान से बाहर निकल गये। अब आपको अख्त्यार है कि आप चाहें तो सजा दे या इनाम।

राजा ने दन दोनों चोरों की बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुना। राजा को यह पक्का विश्वास हो गया कि इन चोरोंने जो कुछ कहा है वह ठीक है। राजा ने अपनी जान बचाने में इन दोनों चोरों को ही मुख्य कारण पाया। इस विचार से राजा ने, मन्त्री से कहा कि देखो इन दोनों चोरों ने मेरी जान बचाई है, इसलिये इनको समुचित इनाम मिलना चाहिये।

राजमन्त्री ने राजा से कहा कि महाराज, आप ठीक कह रहे है। मेरे विचार से इन दोनों को पाँच-पाँच गाँव इनाम में दे दिये जाये। जिससे ये जागीरदार बन जायँ, और बाद में इनको राजपदाधिकरियो में जगह देकर, अपने अंगरक्षक के स्थान पर इन दोनों की नियुक्ति कर दी जाय, ताकि आपके साथ-साथ हर समय रहने के लिये, छः-छः घण्टे में इनकी ड्यूटी हमेशा बदलती रहेगी, और एक के बाद दूसरे का नम्बर आता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके यहाँ से जो वेतन बड़े-बड़े पदाधिकारियों को

मिलता है वही वेतन इनको भी देना चाहिये ।

राजा ने मंत्री की राय सुनकर बड़ी प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि तुमने हमारी इच्छा के अनुसार बहुत ही ठीक निर्णय इन दोनों के सम्बन्ध में दिया है । इसी प्रकार का पूरा पूरा प्रबन्ध इन दोनों के लिये तुरन्त कर दिया जाय ।

राजमन्त्री ने इन दोनों चोरों के लिये पाँच-पाँच गाँव इनाम में दे दिये और दोनों को ही मोटी तनखा पर रखकर राजा ने इज्जतदार आदमियों में इनको अंगरक्षक के स्थान पर नियुक्त कर दिया । और दोनों के लिए हाथों हाथ राजसी पोशाकें तैयार करवा तथा दूसरे दिन उनके लिये राजदरबार में आने के लिये आज्ञा दे दी गई । वे दोनों चोर उस दिन महाराज को तथा राजमत्री को माथा नवाकर अपने अपने घर चले गये । तब से चोरी करने का उनका पेशा सदैव के लिये समाप्त हो गया । राजसमाज में उन दोनों की बड़ी इज्जत बन गई । दूसरे दिन से इन दोनों व्यक्तियों ने अपना-अपना काम सँभाल लिया । तब राजा ने राजमंत्री से कहा कि देखो अब एक बहुत ही जरूरी काम रह गया है उसे भी लगे हाथों पूरा कर दो । राजमन्त्री ने कहा महाराज, आज्ञा करिये कौन सा काम और करना है । तब राजा ने कहा कि देखो कि हमारे पूरे राज्य में राज्य की तरफ से यह मुनादी चारों तरफ जोरों सेकरवा दो कि दाना दुश्मन अच्छा होता है और नादान दोस्त बुरा होता है । इसके अतिरिक्त इन शब्दों को शहर की बड़ी-बड़ी दीवालों पर भी बड़े-बड़े हरफों में लिखवा दो ।

राजमन्त्री ने ढिढोरा पीटने वाले आदमियों को राज्य में कई टुकड़ों में अलग-अलग भेज दिया और नगाड़े की चोट पर गली-गली और बाजार-बाजार में उन शब्दों को कहने के लिये प्रबन्ध कर दिया तथा बड़ी-बड़ी दीवालों पर भी इन शब्दों को लिखवा

दिया ।

इस तरह प्रचार करने से प्रजा में बड़ा उत्साह बढ़ा और प्राय: सभी लोग दानाई का बर्ताव करने लगे । इसलिये जनता में पारस्परिक प्रेम और सद्भावनायें बढ़ने लगी । इसका परिणाम यह हुआ कि जनता में बड़ा भारी अमन चैन फैल गया और हरएक व्यक्ति दूसरों की भलाई को अपना कर्त्तव्य समझने लगा ।

सतोगुण और तमोगुण की तराजू

ज्ञान-मार्ग की खोज करने वाले कुछ सत्संगी साधुओं का एक प्रसिद्ध आश्रम बस्ती के बाहर जंगल में बना हुआ था । उस आश्रम में एक बहुत ऊँचे ज्ञानी महात्मा रहते थे । एक दिन एक नवयुवक साधू ने सत्संग में उन ज्ञानी महात्मा से कहा कि बाबा सतोगुण और तमोगुण की कोई प्रत्यक्ष व्याख्या करके हमको समझाने की कृपा करिये ।

ज्ञानी महात्मा ने कहा, बेटा सुनो! सतोगुण और तमोगुण में इतना भारी अन्तर है, जितना अन्तर पृथ्वी और आकाश में है । क्योंकि यह विषय बहुत गम्भीर है इसलिये आप सब लोग ध्यानपूर्वक सुनियें ।

देखो, संसार में तीन गुण है । सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण । और समस्त संसार के जितने भी जीवमात्र प्राणी है वे सबके सब इन्हीं तीनों गुणों से संचालित हो रहे है । अस्तु, सतोगुण के द्वारा ईश्वरीय बल प्राप्त होता है, और रजोगुण के द्वारा मानवीय बल प्राप्त होता है तथा तमोगुण के द्वारा आसुर बल प्राप्त होता है । देखो, संसार में जितने भी प्रकार के जीव-जन्तु,

पशु-पक्षी, जलचर, नभचर है और मनुष्य मात्र जितने भी प्राणी है, उन समस्त प्राणीमात्र के अन्तर्गत सतोगुण का मुख्य स्वरूप गाय है। क्योंकि हमारे भारतवर्ष की जो एक पुरानी कहावत है कि गाय के शरीर में तैतीस करोड़ देवताओं का निवास रहता है, यह बात मतलब से खाली नहीं है। देखो, गाय के सिर पर सीग होते हुए भी वह गाय सबसे डरकर और बचकर चलती है। सबसे पिटना जानती है परन्तु मारना नहीं जानती। किसी भी गाय को कोई व्यक्ति अपपने यहाँ से किसी भी दूसरे व्यक्ति को देदेता है तो भी वह चुपचाप दूसरे के घर चली जाती है। संसारी लोग जब किसी भले और भोले आदमी की प्रशंसा करने लगते है तो उदाहरण के लिये केवल गाय की ही नजीर देकर उसके सीधेपन की पुष्टि जोरदारी से कर देते है। इसके अतिरिक्त गाय के सतोगुण का प्रत्यक्ष परिचय यह है कि, समस्त संसार के प्राणी मात्र का टट्टी-पेशाब, जहाँ दुर्गन्ध और अपवित्रता का द्योतक है, वहाँ संसार भर में केवल एक गाय का ही टट्टी-पेशाब महान पवित्रता का द्योतक है, जिसे गोबर और गोमूत्र कहते है। गोबर और गोमुत्र के लेपन से, खान-पान से तमाम दुर्गन्ध एवं अपवित्रता और अनेकों प्रकार की बीमारियाँ दूर की जाती है, और बड़े-बड़े यज्ञादिक महोत्सवों में केवल गोबर के लेपन से ही स्थान को पूर्ण पवित्र माना जाता है तथा बच्चे से लेकर बूढ़े व्यक्तियों तक को अथवा कमजोर से लेकर पहलवान व्यक्तियों तक को अथवा व्यभिचारी से लेकर महात्माओं तक का, केवल गाय के दुग्ध से ही पालन-पोषण होता है और स्वास्थ्य ठीक रह पाता है। प्रात:काल उठकर सबसे पहिले गाय के दर्शन से और गाय के चरण स्पर्श से बहुत सुन्दर लाभ माना जाता है तथा गाय की पूँछ को मस्तक पर लगाने से लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये शुभ माना जाता है। मरने के समय प्राय:

अधिकाश भारतीय लोग गाय का दान कराना परम धर्म मानते है, क्योंकि धर्मशास्त्र की मान्यता के नाते, मरने वाले व्यक्ति को, नरक कुण्ड एवं बैतरणी नदी से गाय ही पार लगाती है। गाय के सतोगुण की सबसे बड़ी पहचान यह है कि गाय घास और भूसे के सूखे तिनके खाकर भी अमृत के समान स्वाष्टि और लाभप्रद दूध हमें प्रदान करती है और उसी दूध से घी और दही हमें प्राप्त होता है। देखो, संसार में कोई भी वैज्ञानिक सूखी घास और भूसे में से दूध नही निकाल सकता है। यह केवल गाय के सतोगुण का ही परिणाम है कि, जिसके द्वारा, सबसे शुष्क पदार्थ के द्वारा भी सबसे अधिक सरस पदार्थ ईश्वरीय बल के द्वारा गाय हमें प्रदान करती है। और गाय के गोबर से उपले, कन्डे बनते है जिसके द्वारा हमको शुद्ध अग्नि प्राप्त होती है और इसकी अग्नि से स्वादिष्ट भोजन तैयार होता है। तब कुछ देर तक ज्ञानी महात्मा शान्त होकर पुनः बोलने लगे, देखो बेटा अब मै तुमलोगों को तमोगुण का प्रत्यक्ष स्वरूप बतलाता हूँ। तमोगुण का मूर्तिमान स्वरूप काला सर्प है। जिसे देखकर लोग डरते है और जो अकारण ही प्राणियों को काट कर मृत्यु के घाट उतार देता है सर्प की इस हिंसात्मक भावना के फलस्वरूप ही, संसारी लोग उसके शत्रु बने हुए है; क्योंकि जहाँ भी सर्प को देख लेते है, वही पर लोग उसे मारने या पकड़ने का दौड़तें है सर्प के तमोगुण का सबसे बडा प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि यदि सर्प को कवल रातदिन दूध ही पिलाया जाय, तो भी उसके शरीर में जहर की ही उत्पत्ति होती है। इसलिये सर्प को तमोगुण प्रधान होने के कारण इसे आसुरी बल माना जाता है।

अब ज्ञानी महात्मा आगे कहने लगे कि देखो, मध्यवर्ती तीसरा गुण रजोगुण है। इस रजोगुण की प्रधानता से ही संसारी

लोगो का कार्य चलता है क्योंकि यह मानवी बल है इसके द्वारा समस्त संसार के कार्य-व्यवहार, लेन-देन, विवाह- शादी, राजा-प्रजा के नियम सभी कार्य रजोगुण की शक्ति से चलते है । इन कार्य-व्यवहारों में जो कोई व्यक्ति रजोगुण के कार्यों में सतोगुण का सम्पुट लगाकर कार्य करते है, वे पुरुष हों या स्त्री, बड़े भारी ईमानदार और सच्चरित्र कहलाते हैं । इन लोगो को अपने लोक और परलोक दोनों को सम्हालने की फिकर रहती है । इसलिये ऐसे व्यक्ति दूसरों की भलाई को ध्यान मे रखकर अपने कार्य-व्यवहार को चलाते है और ऐसे सज्जन जनधन की भारी उन्नति पाने पर भी निरभिमानी होते है । इसीलिये ऐसे लोगों की संसार में बड़ी प्रशंसा होती रहती है और इनको सभ्य समाज में बड़ी प्रतिष्ठा और आदर का सम्मान प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त जो लोग केवल रजोगुण के द्वारा ही अपना कार्य करते है, वे लोग समाज की दृष्टि में स्वार्थी माने जाते है; क्योकि उनका हर एक कार्य बड़ी नाप-तोल और नफा- नुकसान का पूरा ख्याल रखकर ही सदैव होता रहता है । इसके बाद जो लोग रजोगुण में तमोगुण को मिलाकर कार्य करते है, वे लोग बेईमान और दगाबाज माने जाते है । ऐसे लोगों से जनता सतर्क रहकर बड़ी सावधानी के साथ व्यवहार करती है । और कुछ लोग जो केवल तमोगुण से ही अपना व्यवहार संचालन करते है, वे लोग चोरी और डकैती का काम करते है, जनता के जान-माल का बेजाँ तरीके से शोषण करते है । इसका परिणाम यह होता है कि उन लोगों को, जंगलों में या जेलों में, अपना समय व्यतीत करना पड़ता है तथा कोई तो गोली या बन्दूक के शिकार हो जाते अथवा कोई कोई व्यक्ति फाँसी के तख्ते पर झूल जाते है । इसके अतिरिक्त ऐसे लोग जबतक जीवित रहते है तब तक समाज की दृष्टि में घृणा के पात्र समझे जाते है ।

इतनी व्याख्या करने के बाद, वह ज्ञानी महात्मा कहने लगे कि देखो, इन समस्त व्यक्तियों के अतिरिक्त संसार में कुछ लोग केवल सतोगुण के द्वारा ही अपना कार्य संचालन करते है। उनकी गणना केवल उच्च कोटि के साधू, महात्मा और त्यागी पुरुषों में होती है। इन लोगों का जीवन सदैव परमार्थ के लिये तथा ईश्वर-चिन्तन के लिये ही होता है। इसलिये संसार ऐसे महापुरुषों का सदैव से ही ऋणी रहता चला आया है और ऐसे पुरुषों के जीवन-चरित्र से जनता को उत्तम मार्ग मिलता है। इसी सतोगुण की मुख्य शक्ति को लेकर बड़े-बड़े भक्तों का जन्म होता है। इन सतोगुणी भक्तों के द्वारा जो कुछ चरित्र-चित्रण होता है या कविता के रूप में जो कुछ भी इनकी वाणियाँ निकलती है वे समस्त चीजें, जनता की जाग्रति के लिये, सहायक सिद्ध होती है। जो पुरुष शुद्ध सतोगुण का आचरण इस संसार में करते है, उनका जन्म भगवान के विशेष अंश के द्वारा ही होता है, इसलिये ऐसे पुरुष केवल लोक-कल्याणार्थ ही अवतरित हुआ करते है। इतना प्रवचन करने के पश्चात् ज्ञानी साधू ने अपना वक्तव्य समाप्त कर दिया, इससे उस आश्रम के सतसंगी पुरुषों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। भक्तों ने बड़ी श्रद्धा से दंडवत् करते हुए ज्ञानी साधू से कहा कि बाबा आज हमारी समझ में सतोगुण, तमोगुण, और रजोगुण की व्याख्या अच्छी तरह से आ गई है।

बारह साल का खतरनाक राज्य

एक राज्य की प्रथा परम्परा से इस प्रकार चली आ रही थी कि जो कोई राजा राजगद्दी पर बैठता था, उस राजा को ठीक बारह साल के बाद राजगद्दी से अलग करके, भंयकर जानवरों के जंगल में छोड़ दिया जाता था। यह जंगल राज्य की सीमा से बारह कोस दूर पड़ता था। इस जंगल में यदि कोई भी व्यक्ति अकेला पहुँच जाता था तो वह कभी भी जिन्दा लौटकर नहीं आ सकता था। इसीलिये इस राज्य गद्दी पर बैठने वाले सैकड़ों राजा इसी प्रकार मारे गये थे। और हर बारह साल के बाद एक नये राजा का प्रजा के द्वारा चुनाव करके, बारह साल के लिये ही उस राजा का राज्याभिषेक हुआ करता था।

एक समय एक ऐसे व्यक्ति को प्रजा ने राजा बना दिया जिसने अपने जीवन-काल में काफी सत्संग किया था। इस राजा ने राज गद्दी पर बैठते ही, सबसे पहले यही हुक्म चालू कर दिया कि बारह कौस की दूरी पर जो खूँखार जंगली जानवरों को बेहड़ वन है, उसमें से जानवरों को पकड़-पकड़ कर मार डालो। इस प्रकार से राजा की आज्ञा पाकर राज्य-सेना की एक पूरी पलटन, तरह-तरह के हाथियारो को लेकर उस बेहड़ वन में चली गई। पल्टन के सिपाहियों के लिये खाने-पीने का पूरा प्रबन्ध दूसरी पल्टन के सिपाहियों के द्वारा रसद पहुँचाने के लिये करवा दिया। अतः पहली पल्टन के सिपाहियों ने उस जंगल के खतरनाक जानवरों को पकड़ना और मारना शुरू कर दिया।

इस प्रकार धीरे-धीरे उस जंगल के सैकड़ों, हजारों जानवर

मारे गये। तब फिर राजा ने, दूसरी ताजी पल्टन जंगल में भेज दी तथा पहली पल्टन को वापस बुला लिया। नई भेजी हुई पल्टन को यह आज्ञा दे दी कि तमाम जंगल में एक भी जंगली जानवर न रहने पाये, अन्यथा तुम लोगों को कड़ी सजा दी जायेगी। इस नई पल्टन ने जंगल में पहुँचकर बचे-खुचे जानवरों को दनादन मारना शुरू कर दिया।

लगभग एक वर्ष के इस परिश्रम के पश्चात् राजा को यह खबर मिली कि अब वह जंगल जंगली जानवरों से शून्य हो चुका है। तब राजा ने तुरन्त दूसरा हुकुम यह निकाल दिया कि उस पूरे जंगल के अन्दर बड़ी-बड़ी इमारतें कायदे से बनाकर बाजारों के सहित एक सुन्दर नगर कायम कर दो। नगर के बीच में, राजमहल तथा कचहरी भी बना दो तथा पलटन के रहने के लिये एक बहुत बड़ा किला भी। किले के ऊपर पक्की तोपें जमा दो और एक बहुत पक्की दीवाल के अन्दर खजाने की इमारत तैयार करवा दी। नगर के चारों तरफ पक्का परकोटा बनेगा और नगर के बीच एक बहुत बड़ा सरोवर बनेगा। सरोवर के पास एक विशाल सुन्दर बगीचा रहेगा और नगर की बस्ती के मार्गों में दूर-दूर पर सुन्दर चौराहें रहेंगे। सरोवर राजमहल के बिल्कुल बराबर बनेगा तथा उसमें संगमरमर की सीढ़ियाँ लगेंगी, और राजमहलों से सरोवर पर जाने के लिये निजी मार्ग बनेगा। इस प्रकार से राजा ने बड़े बड़े ऊँचे कारीगरों को बहुत भारी तादाद में बुलाकर नगर-निर्माण करने के लिए समझा कर लंगल में भेज दिये और हजारों आदमी रातदिन नगर- बनाने के काम में लग गये। राजा ने इन सब लोगों के खाने-पीने का पूरा प्रबन्ध कर दिया था और समय-समय पर राजा स्वयं भी उस जंगल में जाकर नगर-निर्माण करने में सलाह-मशवरा देता रहता था। इस प्रकार

राजा ने जबरदस्त दौड़-धूप करके कुछ वर्षों में ही एक सुन्दर नया नगर तैयार करवा लिया। और उस नये नगर में मय हथियारो के पूरी पलटन और पूरे खजाने का भी प्रबन्ध करवा दिया।

इसके पश्चात् राजा ने तुरन्त तीसरी आज्ञा यह निकाली कि उस नये नगर में जो कोई जाकर रहना चाहेगा उसको एक वर्ष तक के लिये खाना-पीना मुफ्त मिलेगा। और मकान तथा दुकानों का किराया-भाड़ा भी नहीं लिया जायेगा। राजा की इस नई आज्ञा को सुनते ही राज्य के हजारों स्त्री-पुरुषों ने उस नये नगर में रहना प्रारम्भ कर दिया। राजा के बारह साल पूरे भी नहीं होने पाये थे कि तब तक उस विशाल नये नगर के लाखों की संख्या में लोग बस गये। उनका कारबार, व्यापार भी उस नगर में खूब चलने लग गया।

इस नये नगर की प्रशंसा दूर-दूर तक फैलने लगी और दूसरे देशों के व्यक्ति भी इस नगर में आने-जाने और रहने लगे। इस प्रकार नये नगर की पूरी रचना हो जाने के कुछ ही दिन बाद इस राजा के बारह साल पूरे हो गये, और नियमानुसार इसे गद्दी से हटा दिया गया। अब यह राजा वहाँ की राजगद्दी से उतर कर, तुरन्त अपने बसाये हुए नये नगर में राजी-खुशी से चला गया, और वहाँ पहुँचते ही इसने अपनी राजधानी का काम पूर्णरूपेण अपने हाथों में ले लिया। पहले से भी सुन्दर राज्यगद्दी का मालिक बनकर ऐश्वर्य प्राप्त करने लगा।

राजगद्दी पर बैठने की तिथि से लेकर साल के साल, इस नये राज्य की वर्ष तिथि का महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाने लगा। इस महोत्सव में दूर-दूर से बड़े-बड़े व्याख्यान दाता भी आते थे, कवि और गवैये भी आते थे, नाचगाने का भी प्रबन्ध तमाम जनता के मनोरंजन के लिये होता था और कई दिनोंतक समस्त नगर के निवासियों को तथा साधू-ब्राह्मणों को

उत्तम प्रकार का भोजन कराया जाता था। इस प्रकार कार्यक्रम चलते-चलते कुछ वर्ष निकल गये।

एक समय वर्षोत्सव के शुभ अवसर पर कुछ विशेष तौर से उत्सव मनाये जाने का प्रबन्ध किया गया था। प्रत्येक वर्ष के अनुसार खाने-पीने, नाच-गाने के सभी कार्यों में कुछ विशेषता रखी गई। इसी क़ारण से राजा ने इस वर्ष महोत्सव में, एक बहुत बड़ी सभा का आयोजन किया, जिसके अन्दर सभी नगर-निवासियों के अतिरिक्त बड़े बड़े विद्वान लोग भी उस सभा में दूर दूर से आकर सम्मिलित हुए थे। जब सभा का बहुत सा कार्य समाप्त हो गया तो राज्य की तरफ से वहाँ के राजमंत्री ने, इस नये राज्य की स्थापना का वर्णन आदि से अन्त तक सभासदों को कह सुनाया, और इस प्रकार से मन्त्री ने अपने महाराज की चतुराई तथा दूरदर्शिता का वर्णन करते हुए यह बतलाया कि यदि हमारे महाराज भी उस बारह साल की राजधानी को, उस राज्य के पहले के राजाओं की भाँति ही गफलत में भोगते तो ये भी उन्हीं की तरह बारह साल पूरे होने के बाद जंगली खूँखार जानवरों को अपना शरीर अर्पण कर देते। किन्तु इन्होंने उस बारह साल के समय का पूरा सदुपयोग किया, और इस नये नगर का निर्माण करने के हेतु रात-दिन तैयारी में लगे रहे। इन्होंने उन बारह सालों में अपने सुख-भोग और ऐश्वर्य की कुछ भी परवाह नहीं की थी जितनी इनको इस नये नगर में पहुँच कर अपने भविष्य की हर प्रकार से सुरक्षा प्राप्त करने की थी। उसी कठिन परिश्रम और भारी प्रयत्न का यह फल है कि हमारे महाराज, उस पहली राजधानी के मुकाबले में भी अधिक सम्पन्न और हर प्रकार से सुखी है। मन्त्री का वक्तव्य समाप्त होने पर भरी सभा मे जनता ने खुशी के साथ जोरदार तालियाँ बजा दीं, और राजमन्त्री अपने

नियत स्थान पर बैठ गया ।

इसके बाद बाहर से आये हुए एक उच्च कोटी के महात्मा का वक्तव्य प्रारम्भ हुआ । महात्मा ने समस्त सभासदों को नमस्कार करते हुए कहा प्यारे भाइयों, हमारे राज मन्त्रीजी ने महाराज की दूरदर्शिता एवं बुद्धिमत्ता की जो कुछ प्रशंसा की है वह बहुत ही सुन्दर एवं प्रशंसनीय गाथा है; किन्तु मेरे प्यारे भाइयों अब इसी विषय को लेते हुंए मै आप लोगों का ध्यान मुख्य तत्व की तरफ लाना चाहता हूँ । वह विषय यह है कि जिस प्रकार हमारे राजा साहब ने अपने मौजूदा सुख और राज्य की परवाह न करते हुए केवल अपने आने वाले संकटकालीन समय की ही परवाह की थी और उन्होंने अपने भविष्य को उज्जवल बनाने के लिये, उस बारह साल के राज्य-सुख को छोड़ते हुए उस बीहड़ जंगल को ही, नया नगर बसाने में भारी परिश्रम किया था । जिसके परिणामस्वरूप आज हमारे राजा साहब हर प्रकार से सुखी और सम्पन्न बने बैठे हैं । महात्मा ने कहा मुख्य रूप से समझने का विषय यह है कि जब एक ही जीवन में आने वाले परिवर्तन के लिये, राजा साहब ने इतना भारी प्रयत्न करके अपने भविष्य को उज्जवल बनाया, तो इस जीवन के बाद दूसरे जीवन में आने वाले कठिन भविष्य के लिये, कितने भारी परिश्रम की जरूरत है, जिसके द्वारा प्रत्येक प्राणी, वहाँ भी पूर्ण सुखी बन सके । क्योकि इसी जन्म के कर्मानुसार सभी प्राणियों को दूसरे जन्म में अनेक प्रकार के सुख-दुख हानि-लाभ, यश-अपयश, मान-अपमान, दारिद्रय और ऐश्वर्य प्राप्त होते है ।

महात्मा जी के इन प्रभावशाली वाक्यों को सुनकर जनता में जागृति पैदा हुई और कुछ लोगों ने कहा कि बाबा, आपही बतलाइये कि कौन-कौन से कर्मों के करने से यह प्राणी दूसरे जन्म

में भी सुखी और सम्पन्न बन सकता है। क्योंकि यह तो निश्चय ही है कि संसार में जो प्राणी आता है उसे यहाँ से जाना भी जरूरी है। इसलिये वहाँ की तैयारी के लिये भी कुछ उपाय न करना, मूर्खता से खाली नहीं है।

इस प्रकार लोगों की उत्तम श्रद्धा देखकर महात्माजी कहने लगे प्यारे भाइयों, ईश्वर का न्याय प्रत्यक्ष है, वह कभी भी किसी के साथ अन्याय नही करता। ईश्वर की बनाई हुई प्रकृति का यही अटल नियम है कि जैसा धान बोओगे वैसा ही उगेगा, कभी बदला नही जा सकता। इसी प्रकार हर एक प्राणी, जैसे-जैसे कर्म करता है, उसी के अनुसार अनेकों प्रकार के शुभ-अशुभ फल प्रत्येक प्राणी को भोगने पड़ते है। ईश्वर के अटल विधान में जल सूर्य, चन्द्र एवं समस्त तारागण, नक्षत्रों से लेकर-पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल और पवन, अर्थात् यह पंचतत्व इत्यादि सभी जिसके इशारे मात्र से संचालित हो रहे है, और समस्त संसार के जीवधारी प्राणियों का आवागमन भी स्वयमेव चला आ रहा है। इसके अतिरिक्त उस अज्ञात शक्ति रूप भगवान की महिमा आप लोगों को कहाँ तक बतलाऊँ। देखिए किसी भी एक बड़े खेत में आप चार प्रकार के वृक्ष बो दीजिये, आम, नीम, इमली, मिर्च इन चारों वृक्षों के लिये एक ही कुएँ से जल देना शुरू कर दीजिये। जब इन वृक्षों में फल आते है तो आम को उसी मिट्टी जलवायु के द्वारा मीठा रस प्राप्त होता है और नीम को उसी जलवायु-मिट्टी के द्वारा कड़वा रस प्राप्त होता है और इमली को उसी जलवायु-मिट्टी के द्वारा खट्टा रस प्राप्त होता है। मिर्च को भी उसी जलवायु-मिट्टी के द्वारा चरपरा रस प्राप्त होता है। अतः भाइयों, ईश्वर के न्याय का यही प्रत्यक्ष प्रमाण है कि एक ही मिट्टी से, एक ही जल से एक ही वायु से सब वृक्षों को अलग-अलग प्रकार के रस और

गुण प्राप्त होते है तो सोचिये कि उस मिट्टी, जल और वायु में यह सब चीजें अलग-अलग कहाँ छिपी हुई है। जो कि लाखों मन रस अलग-अलग प्रकार से वृक्षों को प्राप्त होता है। किन्तु ईश्वर ने केवल उन वृक्षों के बीजों को ही निमित्त बनाकर अपनी अज्ञात शक्ति के द्वारा, अलग-अलग प्रकार के रस, रंग, गंध, गुण इत्यादि चीजें, जैसे को तैसी प्रदान की है। इसी प्रकार से प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अपने-अपने कर्मानुसार ईश्वर की अज्ञात शक्ति के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के अच्छे-बुरे फल प्राप्त होते रहते है। अतः प्रत्येक प्राणी, किसी अंशों में, कर्म करने में जितना स्वतन्त्र है, उतना ही फल भोगने में भी परतन्त्र है। इसलिये प्रत्येक प्राणी को, पूर्वसंचित कर्मानुसार जो कुछ भी, अच्छा-बुरा फल मिलने वाला है, वह तो अवश्य ही प्राप्त होकर रहेगा किन्तु आगे के लिये जो कुछ उत्तम कर्म कर लेगा, वहीं उस प्राणी का असली लाभ है। क्योंकि यहाँ की जितनी भी वस्तुएँ, सांसारिक सुख-भोगों की है, इनमें से एक तिनका भी, मरने के बाद प्राणी के साथ नहीं जाता है। इसलिये आगे की तैयारी के लिये, मनुष्य को शुभ कर्मों की संचित पूँजी को ही साथ ले जाना चाहिये। इसी से मनुष्य की सच्ची भलाई हो सकती है। जिस प्रकार राजा साहब ने पहले से ही इस नगर में आने के लिये पूरी तैयारी कर ली थी।

महात्मा के इस सुन्दर वक्तव्य को सुनकर सभा में बड़ा आनन्द छा गया, और लोगों ने आनन्द के मारे जोरदार तालियाँ बजा दी।

इसके बाद कुछ लोगों ने पुनः कहा कि बाबा अब कृपा करके यह और बतला दें कि, उत्तम कर्म किस प्रकार से सर्व साध ारण जनता को करने चाहिये।

तब महात्माजी पुनः कहने लगे कि देखो पहली बात यह है

कि आप लोगों को धन कमाने में ईमानदारी का बर्ताव करना चाहिये, बईमानी का नही। दूसरी बात यह है कि आप लोगों को मन, वचन, कर्म के द्वारा कभी भी, किसी का अहित नही करना चाहिये, बल्कि जहाँ तक हो सके दूसरों की भलाई करने का काम अवश्यमेव करना चाहिये। तीसरी बात यह है कि रोजाना प्रात:काल स्नान करने के बाद, कुछ ईश्वर-चिन्तन, भजन और सूर्य नारायण को अर्घ्य अवश्य करना चाहिये। चौथी बात यह है कि, जो कोई भी अतिथि, साधू ब्राह्मण अथवा भिखारी दरवाजे पर आ जाय, उसका यथा शक्ति मान और सत्कार करना चाहिये। पाँचवी बात यह है कि आप लोग संसार के प्राणियों से जिस प्रकार का बर्ताव अपने लिये करवाना चाहते हों, उसी प्रकार का बर्ताव आप लोगों को सभी प्राणियों के साथ करना चाहिये। छठवीं बात यह है कि, दूसरों की बहू-बेटियों को अपनी बहू-बेटी के समान समझना चाहिये। आखिरी और सातवीं बात यह है कि सदैव सत्य बोलने का ही अभ्यास करना चाहिये। इन सात बातों को बताने के बाद महात्माजी ने कहा कि धर्म का तत्व मैंने तुम्हें बतला दिया है जो कोइे व्यक्ति इन सातों बातों का पालन सदैव करते रहेगे। वे असाधारण ईश्वरीय शक्ति का सहयोग पाकर महान आनंन्द प्राप्त करेगें तथा उनका यह लोक और परलोक दोनों ही सुधर जायेगा और वे लोग ईश्वर के बहुत ही निकटतम समझे जायेंगे। और इनका आत्मानन्द और आत्मबल बहुत ऊँचा हो जायेगा।

महात्मा ने अन्त में, यह कहकर अपना वक्तव्य समाप्त करते हुए कहा कि देखो मेरी बताई हुई सातों बातों में से, यदि कोई व्यक्ति सातों का पालन पूरा न कर सके तो इतना ध्यान अवश्य ध्यान रखना कि वह इनमें से, दो-चार बातों का भी यदि पालन कर सकेगा, तो उससे भी उस प्राणी का विशेष कल्याण, और

जीवन का सुधार अवश्य हो जायेगा । इतना कहकर महात्माजी का मान-सत्कार किया गया ।

उस दिन के बाद से इस नये नगर की राजधानी में, सभी लोग प्रायः सनातन धर्मावलम्बी बनते चले गये, ओर घर-घर में अतिथि और साधू-सेवा का सत्कार होने लगा, तथा प्रातःकाल ईश्वर-चिन्तन और भजन-पाठ होने लगे । लोगों में एक दूसरे के प्रति स्नेह और परोपकार की भावनायें बढ़ने लगी । इसलिये यह नया नगर सुख-सौभाग्य से सम्पन्न हो गया ।

मैं खाने को न देता तो लाखों भूखे मर जाते

एक समय शिवाजी महाराज के राज्य में भंयकर अकाल पड़ गया था । प्रजा अत्यन्त दुखी हो गई थी । अन्न के अभाव में बड़ी संकटकालीन अवस्था बन गई थी । शिवाजी महाराज ने बहुत-कुछ सोचने के बाद एक युक्ति निकाली जिससे प्रजा का भी कार्य बन जाय और राज्य को भी नुकसान न हो । अतः शिवाजी ने एक विशाल किला बनवाने की योजना चालू कर दी, और तमाम राज्य में यह घोषणा करवा दी कि हमारे किले की मद्दत पर जो कोई व्यक्ति काम करना चाहेंगे उनके लिये दो मन अनाज राजभंडार द्वारा प्रति मास के हिसाब से, वेतन के रूप में दिया जायेगा । राजा की इस नई घोषणा को सुनकर प्रजा में बड़ा संतोष फैल गया और हजारों व्यक्तियों ने किले की मद्दत पर अपना नाम लिखा दिया, तदुपरान्त किले की नींव खुदना चालू हो गयी और धीरे-धीरे बहुत भारी संख्या में लोग किले की मद्दत पर काम करने

लग गये । इस प्रकार से एक बहुत बड़े मैदान में, किले की दीवार उठने लगी, और एक विशाल परकोटा तैयार होने लग गया । महीने में चार बार लोगों को राज्य-कोष की तरफ से अनाज बँटता था । इस प्रकार से जनता की गुजर बड़े आराम से होने लगी और अकाल की पीड़ा का असर प्रजा को नहीं के बराबर प्रतीत होने लगा, और बड़ी प्रसन्नता से भारी तादाद में जनता के स्त्री-पुरुष किले की मद्दत पर जुट गये । इस प्रकार से कुछ समय के बाद ही किले की लम्बी दीवारे, दूर दूर से दिखाई देने लगी । किले का अन्दरूनी हिस्सा बड़ी कारीगरी के साथ तैयार होने लगा । किले की मद्दत पर काम करने वाले अधिकांश तादाद में ऐसे लोग थे जो कि केवल दिन में ही काम करते थे और आधे से कम व्यक्ति ऐसे थे जो रात में भी काम करते थे । इस प्रकार से किले की मद्दत का काम बड़े जोरों से रात-दिन चल रहा था ।

एक दिन शिवाजी महराज अपने किले में खड़े-खड़े मद्दत के कार्य को बड़ी सावधानी से देख रहे थे । सामने अपार जनसमुदाय को काम करते हुए देखकर अचानक उनके दिल में यह ख्याल पैदा हो गया कि यदि मैं इतने आदमियों को काम पर न लगाता तो लाखों व्यक्ति भूखों मर जाते । शिवाजी के दिल में इस ख्याल के आते ही इनके गुरू त्रिकालज्ञ स्वामी समर्थ श्री रामदासजी महाराज को अपने आश्रम में बैठे-बैठे यह मालूम हो गया कि शिवाजी के दिल में अनुचित रूप से अहंकार आ गया है । यदि इसका समुचित उपाय न किया जायेगा तो राज्य की सतोगुणी व्यवस्था नष्ट हो जायेगी और धीरे-धीरे प्रजा के स्वभाव और कर्म भी तामसी बनते चले जायेगे, क्योंकि राजा के गुण , कर्म और स्वभाव का असर प्रजा पर अवश्य ही पड़ने लगता है । अत: त्रिकालज्ञ सर्मथ स्वामी श्री रामदासजी महाराज ने, राजा और प्रजा के हितों का पूर्ण रूपेण

ध्यान में रखते हुए तुरन्त ही उस नये किले की ओर प्रस्थान किया ।

जब वे किले के सामने पहुँच गये तो शिवाजी ने दूर से गुरूजी को पैदल आते हुए देखकर, तुरन्त नजदीक जाकर साष्टांग प्रणाम किया और हाथ जोड़कर बड़ी विनय के साथ कहा कि गुरुदेव आपने अपने आने की खबर पहिले ही मेरे पास क्यों नहीं भेज दी, जिससे कि मैं आपके लिये सदैव की भाँति पालकी भेज देता । इस समय अचानक आपके आने का कारण क्या है बताने की कृपा कीजिये ।

शिवाजी के इस वाक्य को सुनकर स्वामी रामदासजी महाराज ने कुछ मुस्कुराते हुए कहा कि तुम्हारा किला देखने को अचानक लालसा पैदा हो गई इसलिये चला आया हूँ । राजाने गुरूजी के चेहरे को देखते हुए मन में सोचा कि अवश्य हो कोई विशेष बात है, अन्यथा इस प्रकार से इनका आना आज तक कभी नहीं हुआ था । अस्तु, राजा ने गुरूजी के सम्मुख हाथ जोड़कर बड़े विनीत शब्दों में कहा कि गुरूदेव मेरे लिये कुछ आज्ञा की जाये । समर्थ स्वामी श्रीरामदासजी महाराज ने किले की जमीन पर चारों तरफ अपनी दृष्टि बड़े ध्यानपूर्वक घुमाते हुये, एक पत्थर की शिला को जो जमीन पर लगी हुई थी शीघ्र तुड़वाने के लिये संकेत किया । गुरू की आज्ञा पाते ही शिवाजी ने तुरन्त दो संतराजों को हुक्म दिया कि इस पत्थर के दो टुकड़ें शीघ्र कर दो । राजा की आज्ञा पाते ही दो व्यक्तियों ने उस पत्थर के तुरन्त दो टुकड़े कर दिये । उस पत्थर के एक टुकड़ें को वहाँ से ज्योंही हटाकर अलग किया त्योंही अन्दर से एक बहुत बड़ा मोटा मेढ़क निकलकर एक छलाँग में ही ऊपर आ गया । शिवाजी को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने गुरूजी से कहा कि गुरूदेव, इतने विशाल पत्थर के नीचे रहकर

भी यह इतना मोटा कैसे हो गया है । और किस प्रकार से इसे भोजन प्राप्त हुआ होगा ।

शिवाजी की इस बात को सुनकर, समर्थ स्वामी श्री रामदासजी महाराज जोर से हँस पड़े और कहने लगे कि राजन् जब तुमने सहस्रों लाखों व्यक्तियों को भोजन देकर उनकी जान बचाई है तो इस मेंढ़क के भोजन का प्रबन्ध भी तुमने ही अवश्य किया होगा अन्यथा यह भी जमीन के अन्दर घुल घुल कर मर जाता । शिवाजी ने ज्योंही गुरु की गम्भीर मार्मिक वाणी सुनी, उसके हृदय को आन्तरिक वेदना प्रतीत होने लगी । उन्होंने तुरन्त मन में सोच लिया कि गुरूजी ने मेरे अनुचित अहंकार को घर बैठे ही समझ लिया है, इसी कारण अचानक आकर मेरे अहंकार को नष्ट करने के लिये, यहाँ तक आने का कष्ट किया है । अस्तु शिवाजी गुरू के चरणों पर गिर पड़े और अपना मस्तक गुरू के चरणों पर रखकर अपने अनुचित अहंकार की क्षमा मांगने लगे । गुरूजी ने उसे खड़े होने के लिये आदेश दिया । शिवाजी के हृदय में आत्मग्लानि थी, आँखों मे पश्चात्ताप के हल्के आँसू छलक उठे थे । उन्होंने उठकर हाथ जोड़कर कहा गुरुदेव, मुझे क्षमा कर दें ।

तब स्वामी रामदास जी महाराज ने कहा कि तुम अपने किले की मह्त को कुछ अल्प समय के लिये बन्द कर दो और समस्त कर्मचारियों को बुला लो तब सबके सामने अपना वक्तव्य प्रकट करूँगा । शिवाजी ने तुरन्त समस्त कर्मचारियों को एकत्रित कर लिया । तब गुरूजी ने अपना मत प्रकट करते हुए कहा बेटा शिवाजी, ऐसी जबरदस्त भूल दुबारा जिन्दगी मे फिर कभी मत करना । क्या तुम यह नही जानते हो कि, इस समस्त संसार भर के प्राणी मात्र को जिस जगत्पिता ने जन्म दिया है वही ईश्वर इस समस्त संसार भर के प्राणियों के पालन करने का भी जिम्मेदार

है । देखो, ईश्वर की यह विचित्र लीला है कि तुम्हारे हृदय में एक तरफ तो यह प्रेरणा कर दी कि नया किला बनाकर इन लोगों को काम पर लगा दूँ और इनको राजकोष के अन्न-भंडार से इनकी परवरिश का प्रबन्ध कर दूँ । और दूसरी तरफ तुम्हारे हृदय में यह प्रेरणा कर दी कि यदि मै इतने व्यक्तियों को काम पर नहीं लगाता तो यह भूखो मर जाते । ईश्वर की इस जगतमोहनी माया के चक्कर में फँस कर, बड़े-बड़े ज्ञानी, तपस्वी, साधू, महात्मा, ब्रह्मचारी, सदाचारी, भी अज्ञानियों जैसे कार्य कर बैठते हैं । बड़े-बड़ें मूर्खों के द्वारा सुन्दर कार्य बन जाया करते है । बड़े बहादुरों के शरीर से डरपोकों जैसे कार्य बनजाते है । और डरपोकों के हाथ बहादुरो जैसे कार्य बन जाते है । अस्तु, ईश्वर की इस अनोखी माया का बड़े-बड़े देवताओं को भी पता नहीं मिल पाता है भगवान शंकर और ब्रह्मा भी इस ईश्वर की माया के सामने चक्कर काटते है । वेदों ने भी भगवान का गुणानुवाद करते-करते हांर मान ली, बड़े-बड़े संत और भक्तों ने भी ईश्वर की माया का पार नही पाया है । इसलिये सर्वसाधारण जनता की तो गिनती ही क्या है ।

गुरूजी के इन वाक्यों को सुनकर शिवाजी ने कहा गुरुदेव, फिर मनुष्य को अपने सुन्दर कर्तव्य का मार्गदर्शन किस प्रकार हो सकता है ?

तब गुरूजी ने कहा कि देखो शिवाजी, संसार में मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाने के लिये, सबसे पहले यह आवश्यक है कि वह कुछ धर्मशास्त्रों का अध्ययन करता रहे, तथा कुछ ऊँचे संत भक्तों की गाथा-कविता एवं उनकी उपदेशक वाणी का मनन और अध्ययन करता रहे । इनके उपरान्त सबसे सारतम बात यह है कि इस अमूल्य मानव-शरीर के परम शत्रु पंचभूत है, अर्थात्

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद इन पंचभूतों की अतिश्योक्ति ही मनुष्य को राक्षस बना देती है, और इन पंचभूतों की मृतावस्था ही मनुष्य को देवता बना देती है, अर्थात् अतिशयोक्ति तो यह है कि, प्रत्येक मनुष्य कामाग्नि में कामान्ध हो जाता है, क्रोधाग्नि में क्रोधान्ध हो जाता है। लोभाग्नि में लोभान्ध हो जाता है, मोहाग्नि में मोहान्ध हो जाता है, मंदाग्नि में मदान्ध होता है। इन पंचभूतों की अतिशयोक्ति में मनुष्य अन्धा बन जाता है अपने असली विवेक को खो बैठता है। इन पंचभुतों की मृतावस्था के द्वारा मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद पर धीरे-धीरे विजय प्राप्त कर लेता है, तो उस हालत में यह मनुष्य ऋषि, मुनि, महात्मा, साधू, तपस्वी, भक्त और देवतास्वरूप बन जाता है। यही श्रेणी मानव जीवन को सफल बनाने वाली मानी जाती है। इसलिए ईश्वर की सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास रखते हुए मनुष्य को अपने अन्दर से, इन पंचभूतों पर बड़ी सावधानी से विजय प्राप्त करने के लिये, समस्त जीवन भर भारी प्रयत्नशील रहना चाहिये। अस्तु, काम से बचने के लिये एक पत्नी का पालन करना, एवं परस्त्री-गमन का परित्याग करना परम आवश्यक है। क्रोध से बचने के लिये शान्ति-धारण करना, किसी को बुरी गाली-गलौज न देना, किसी के साथ बेजाँ मारपीट का बरताव न करना, एवं सहनशील बनना परम आवश्यक है। लोभ से बचने के लिये संतोष वृत्ति में रहना, धन की प्राप्ति के लिये किसी का माल न मारना या बेईमानी न करना एवं धन होते हुए परमार्थ और स्वार्थ का सही उपयोग करना परम आवश्यक है, मोह से बचने के लिये, किसी भी प्राणी में विशेष आसक्ति का न होना, इन्द्रियों के वशीभूत होकर, किसी से विशेष प्रेम न करना, एवं सामान्यतया तटस्थ रूप से रहना परम आवश्यक है। मद से बचने के लिये किसी भी प्रकार का अहंकार नही करना एवं

धनबल, जनबल, देहबल, बुद्धिबल, राज्यबल, इन समस्त शक्तियों का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग न करके, समस्त प्राणी-मात्र में स्नेह और दया का सम्बन्ध रखकर अपनी हर प्रकार की शक्ति का सदुपयोग करना परम आवश्यक हैं और सदैव हर हालत में प्राणी को ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्य पर पूरा-पूरा भरोसा रखकर ही, एवं ईश्वर को ही सर्व जगत का स्वामी समझते हुए, अपने प्रत्येक लौकिक कार्यों को, सावधानी से करते रहना चाहिये । इतना कहकर गुरू समर्थ स्वामी श्री रामदास जी महाराज ने अपना वक्तव्य समाप्त कर दिया ।

किले के अन्दर की अपार जनता ने, गुरू के चरणों में श्रद्धापूर्वक दंडवत् किया शिवजी ने कहा, गुरूदेव आज आपने मुझ पर महान कृपा की है । मेरे हृदय के अंधकार को दूर ही नहीं किया, बल्कि इस बहाने से मुझको और मेरी प्रजा को धर्म के तत्व का महान सुन्दर और सरल ढंग से बोध करा दिया है । आप जैसे राजगुरू यदि भारत में होते रहेंगे तो, भारत का पतन कभी नहीं हो सकेंगा, बल्कि राजा को और जनता को अपने लोक और परलोक दोनों सम्हालने की पूरी शक्ति का सुन्दर बोध होता रहेगा ।

इसके उपरान्त शिवाजी ने गुरूजी के लिये तुरन्तु पालकी मंगवाई और अपार जनता की भीड़ के साथ, राजा ने बड़े स्वागत के साथ, गुरूजी की विदाई कर दी । उस दिन के बाद से राजा और प्रजा में धर्म का ठोस पालन होने लगा, क्योंकि जनता को भी अपने सच्चे कर्त्तव्य और अकर्तव्य का पूरा ज्ञान हो गया था । इस घटना के कुछ महीनों बाद ही अकाल नष्ट हो गया और घर-घर में सुख शान्ति का साम्राज्य फैल गया ।

***

जिन्द के क्रोध का उल्टा परिणाम

एक समय महाप्रतापी महाराज विक्रमादित्य के राज्य में एक जिन्द ने प्रजा को बहुत सताया था। जब गरीब प्रजा की दुखभरी आवाज विक्रमादित्य के कानों में पहुँची तो उन्होंने इस बात की जानकारी सही तरीके से कर ली और अपने सिद्ध किये हुए वीरों के द्वारा जिन्द को पकड़वाकर पेचदार ढक्कन के एक सोने के लोटे में बन्द करके उसे लोटे सहित नदी में डलवा दिया।

इस प्रकार जब जिन्द को नदी में पड़े-पड़े सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो गये और उसे जब किसी प्रकार भी छुटकारा नहीं मिला तब उसने अपने मन में यह प्रतिज्ञा कर ली कि आज से लेकर सौ वर्ष के अन्दर जो मुझे कोई व्यक्ति निकाल कर छुटकारा करा देगा उसे मैं लाखों- करोड़ों रुपये की सम्पत्ति दिला दूँगा। जिन्द की इस प्रतिज्ञा के बावजूद सौ वर्ष पर्यन्त तक किसी भी व्यक्ति ने इसे नदी में से नहीं निकाला। तब जिन्द ने दूसरी शताब्दि के प्रवेश में दुबारा यह प्रतिज्ञा की कि अब से लेकर आगे के सौ वर्ष के अन्दर मुझे जो कोई भी इस नदी में से निकालेगा उसे मैं राजा बना दूँगा। किन्तु इस प्रतिज्ञा के सौ वर्ष बाद तक भी जिन्द को किसी ने नदी से बाहर नहीं निकाला।

अबकी बार जिन्द ने मन में प्रतिज्ञा की कि जो कोई व्यक्ति आगामी सौ वर्ष के अन्दर मुझे नदी से बाहर निकालेगा उसे मैं, समस्त पृथ्वी का चक्रवती राजा बना दूँगा, किन्तु भाग्यवश इस नई तीसरी शताब्दी में भी किसी ने इस जिन्द को नदी से बाहर नहीं निकाला।

इस प्रकार जिन्द को नदी में पड़े-पड़े तीन सौ वर्ष से अधिक व्यतीत हो गये। तब जिन्द ने क्रोध में भरकर एक दृढ़ प्रतिज्ञा इस प्रकार से की, कि जो कोई व्यक्ति मुझे आगामी सौ वर्ष के अन्दर से इस नदी में से निकालेगा, उसे मै अवश्य ही जान से मार डालूँगा।

जिन्द की इस नई प्रतिज्ञा के कुछ वर्षों के बाद, एक गरीब धीवर ने उस नदी में आकर मछलियाँ पकड़ने के लिये जाल पटका, और कुछ देर में ही उस जाल के अन्दर वह सोने का लोटा फँसकर आगया जिसमे जिन्द रहता था। अस्तु, धीवर ने वजनदार सोने का लोटा देखकर बड़ी भारी खुशी मनाई। और सोचने लगा कि इसके अन्दर कोई न कोई बेशकीमती वस्तु अवश्य निकलेगी। धीवर ने लोटे को नदी के किनारे पर रखकर, बड़ी प्रसन्नता के साथ लोटे का ढक्कन खोलना प्रारम्भ किया। जब ढक्कन पूरा खुल गया तब उसके अन्दर से एक हलकासा धुआँ धीरे-धीरे ऊपर को उठने लगा। और कुछ क्षण के उपरान्त जब वह धुआँ बहुत बड़ी तादाद में सामने एकत्रित हो गया, तब उसके अन्दर से एक विशाल दैत्य की शकल बन गई, और वह समस्त धूआँ क्षणमात्र में गायब हो गया। धीवर ने ज्योंही उस दैत्य को देखा, त्योंही उसके हृदय में महान भय का संचार बड़े भयानक रूप में जाग्रत हो उठा। धीवर ने हाथ जोड़कर काँपते हुए शरीर से कहा आप कौन है? तब वह कहने लगा मै जिन्द हूँ, और तुझे मार डालूँगा। धीवर ने बड़े नम्र शब्दों में प्रार्थना करते हुए कहा कि मैंने आपका क्या बिगाड़ा है, आप मुझे बेकसूर क्यों मार डालना चाहते है। मै गरीब आदमी हूँ, मेरे परिवार में भी अकेला कमाई करने वाला हूँ यदि आप मुझे मार डालेंगे तो मेरे परिवार का कोई व्यक्ति पालन-पोषण भी नहीं कर सकेगा और वह सब भूखो मर

जायेंगे, इसलिये आप ईश्वर के नाम पर मेरी जान छोड़ दो, मैंने आपका कुछ नही बिगाड़ा है। जिन्द ने क्रोधपूर्वक शब्दों मे कहाकि चाहे तुमने मेरा कुछ भी नही गिगाड़ा है किन्तु मै अपनी प्रतिज्ञा के आधार पर तुमको जरूर मार डालूँगा, क्योंकि इस नदी मे पड़े-पड़े मुझको तीन सौ वर्ष से अधिक व्यतीत हो गये है। मैने सबसे पहले यह प्रतिज्ञा की थी कि, जो कोई व्यक्ति मुझको एक सौ वर्ष के अन्दर ही इस नदी में से निकाल देगा, उसे मै बहुत धनवान बना दूँगा, किन्तु उस शताब्दी के अन्दर मुझे किसी ने भी नदी से बाहर नहीं निकाला। तब दूसरी शताब्दी में मैंने प्रतिज्ञा की, जो कोई मुझे इस शताब्दी में बाहर निकालेगा, उसे मै बहुत धनवान बना दूँगा, किन्तु उस शताब्दी के अन्दर मुझे किसी ने भी नदी से बाहर नहीं निकाला। तब दूसरी शताब्दी में मैंने प्रतिज्ञा की, जो कोई मुझे इस शताब्दी में बाहर निकालेगा उसे मै राजा बना दूँगा, किन्तु तब भी किसी ने मुझे बाहर नही निकाला। तब फिर मैंने तीसरी शताब्दी में प्रतिज्ञा की कि जो कोई मुझे अबकी बार बाहर निकालेगा, उसे मै बादशाह बना दूँगा, परन्तु तब भी उस तीसरी शताब्दी मे मुझे किसी ने नदी से बाहर नही निकाला। अस्तु, जब तीन सौ वर्ष मुझे नदी मे पड़े-पड़े व्यतीत हो गये, तब चौथी बार मैंने यह प्रतिज्ञा की, कि अबकी बार मुझे जो कोई भी व्यक्ति नदी से बाहर निकालेगा उसे मै जान से मार डालूँगा। अस्तु, तूने आकर चौथी बार में निकाला है, इसलिये में बिल्कुल मजबूर हूँ और तुमको अवश्य ही मार डालूँगा।

जिन्द की इस कथा को सुनकर धीवर का हृदय काँप गया। वह मन ही मन सोचने लगाकि हे ईश्वर, तब तो सिवाय तुम्हारे मेरी प्राणरक्षा कोई भी नही कर सकता है। मै अपनी जाति से और अपने कर्म से पापी हूँ, किन्तु भगवन बड़े-बड़े पापियों की रक्षा भी

आप सदैव से करते आ रहे है, इसलिये दीनबन्धु शीघ्र आकर किसी भी प्रकार से आप मेरी प्राण रक्षा कीजिये ।

धीवर के सच्चे हृदय की प्रार्थना ईश्वर ने सुनी, और उसी क्षण धीवर की बुद्धि में नई सूझ आगई, और वह बड़े मीठे शब्दों में जिन्द से कहने लगा कि महाराज यदि आप अपनी प्रतिज्ञा के आधार पर मुझ निरपराध को अवश्य ही मार डालना चाहते हैं तो आपकी मर्जी । बेशक मुझे मार डालिये क्योंकि आप जबरदस्त है और मै कमजोर गरीब आदमी हूँ, लेकिन मरनेवाले आदमी की कमसे कम एक मांग तोपूरी कर देते है, इसलिये आप भी मेरी एक माँग तो अवश्य ही पूरी कर दीजियेगा, फिर भले ही मार डालिये ।

जिन्द ने कहा अच्छा भाई मै तुम्हारी एक माँग अवश्य पूरी करूँगा क्योंकि तुमने मेरी जान बचाई है, इसलिये बोलो तुम मरने से पहले क्या चाहते हो । निसंकोच कह दो । धीवर ने बड़ी नरमाई और आश्चर्य का भाव रखते हुए कहाकि बस मै सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि कि क्या यह सच है कि तुम इतने लम्बे-चौड़े व्यक्ति होकर, इस जरा से लोटे में बन्द थें । यदि यह सत्य है तो तुम सिर्फ एक बार मुझे इस लोटे में घुसकर दिखा दो तो मेरा यह महान आश्चर्य समाप्त हो जायेगा । तब फिर तुम मुझे बेशक मार डालना, क्योंकि मरना तो सभी को है, चाहे चार दिन पहिले मरे या चार दिन पीछे मरे ।

धीवर की इस युक्ति को जिन्द नही समझ सका, उसने सोचा कि चलो मरने से पूर्व एक बात इसकी भी मान लेना बहुत जरूरी है । इस लिये जिन्द ने तुरन्त पुनः धुएँ का रूप धारण करते हुए धीरे-धीरे लोटे में प्रवेश करना प्रारम्भ कर दिया, और थोड़ी ही देर के अन्दर ही वह समस्त धुंआँ लोटे के अन्दर प्रवेश कर

गया । धीवर नाक लगाये पास में बैठा हुआ धुंये को प्रगति को लोटे में प्रवेश करते हुए बड़ी सावधानी और तत्परता के साथ देख रहा था । अस्तु धुंआँ रूपधारी जिन्द ने ज्योंही पूर्णरूपेण लोटे मे प्रवेश किया ही था बस तुरन्त ही धीवर ने लपक कर लोटे का ढक्कन लोटे के ऊपर जड़ दिया । और बड़ी शीघ्रता के साथ धीवर ने उस लोटे को नदी में दूर ढकेल दिया । तब धीवर की जान में जान आयी और वह भगवान की भारी कृपा का अनुभव करता हुआ अपने घर को सुरक्षित चला गया । और इधर जिन्द भी अपने अनुचित क्रोध के परिणाम में जिन्दगी भर के लिये नदी में विलीन हो गया ।

मन्त्री पद का अनोखा चुनाव

एक राजा का मन्त्री बड़ा भारी सुयोग्य, चतुर और धर्म को जानने वाला, न्यायकारी परमार्थी था । जब वह मन्त्री बहुत वृद्ध हो गया तो उसने अपने मन में विचार करके यह निश्चय कर लिया कि अब मुझे शेष जीवन प्रभु के भजन और साधु सत्संग में ही व्यतीत करना परम आवश्यक रहेगा ।

वृद्ध मन्त्री ने एक दिन समय पाकर एकान्त में अपने स्वामी राजा साहब से विनयपूर्वक कहा कि महाराज, अब मै अपना जीवन प्रभु के चिन्तन-भजन और सत्संग में ही व्यतीत करना चाहता हूँ इसलिये कृपा करके अब मुझे मन्त्री पद से छुटकारा दे दीजिये । राजा ने मन्त्री की बात को सुनकर प्रथम तो मन में बड़ा भारी दुख अनुभव किया कि ऐसे चतुर मन्त्री के निकल जाने से राजकाज में मुझे बड़ी भारी परेशानी होगी । किन्तु चतुर राजा ने

इस बात को मनही में गुप्त रखते हुये उत्तर दिया, कि हम आपको पूर्ण रूपेण छुट्टी सिर्फ एक ही हालत में दे सकते है कि आप अपना सा दूसरा व्यक्ति इस स्थान की पूर्ति के लिए हमें दे जाइये। तो हम खुशी से, आपको पूर्ण छुट्टी दे देंगे, अन्यथा आपको छुट्टी नहीं मिल सकेंगी। राजमन्त्री ने कहा महाराज आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। जिस दिन मै अपना-सा आदमी तलाश कर लूँगा उसी दिन आपसे छुट्टी प्राप्त करूँगा, इसके पूर्व मै आपसे छुट्टी नहीं मागूँगा।

राजमंत्री ने कुछ दिन बाद ही, राजा की तरफ से यह घोषणा दूर-दूर के देशों में करवा दी कि, हमारे राज्य में एक नये राजमंत्री की आवश्यकता है, इसलिये अमुक दिन, अमुक तारीख में, इसकी परीक्षा होगी। जो कोई सज्जन इस राजमन्त्री पद की परीक्षा में बैठना चाहें, वे अवधि से दो दिन पूर्व हमारे यहाँ अवश्य आ जायें। बाहर के सभी आने वाले व्यक्तियों के लिये ठहरने का एवं खाने-पीने का पूरा-पूरा प्रबन्ध समुचित रूप से कर दिया गया है।

राज्य की इस कीमती घोषणा को सुनकर दूर-दूर के पढ़े-लिखे व्यक्ति हजारों की तादाद में राज्य में आकर उपस्थित हो गये। बस्ती से बाहर एक नाले के पास इन लोगों के ठहरने का उत्तम प्रबन्ध राजा की तरफ से कर दिया गया। समय-समय पर राज-कर्मचारियों द्वारा इन सभी लोगों को सुन्दर भोजन भी प्राप्त होता रहा। दो दिन बाद राज्यमन्त्री-पद की परीक्षा का दिन आ गया। सभी लोगों ने स्नान इत्यादि कार्यों से निवृत्त होकर, अपने-अपने कपड़े और पोशाकें बदल ली। कुछ देर बाद नाले के आस-पास, इन लोगों की भारी तादाद में भीड़ दिखाई देने लगी। सभी लोग परिक्षा के सम्बन्ध में अनेकों प्रकार के मनसूबे

बाँध रहे थे और समय की प्रतीक्षा कर रहे थे ।

दोपहर के बाद, जब दिन कुछ ढलने लगा, तब उस नाले के सामनवाले गाँव में से एक बूढ़ा किसान, एक टूटीसी बैलगाड़ी में दो बैलों को जोतकर आ रहा था । बूढ़ा किसान अपनी बैलगाड़ी को नाले से होकर पार कराना चाहता था कि ठीक उसी समय उसकी बैलगाड़ी नाले में फँस गयी । बूढ़े किसान ने उन बूढ़े बैलों को धीरे-धीरे मारना शुरू किया, मगर गाड़ी जरा भी आगे न बढ़ सकी । किसान ने गाड़ी हाँकने के लिये बहुत प्रयत्न किये, सैकड़ों बार जोरों से तिक तिक की आवाज लगाता रहा, मगर उसे सफलता नही मिली ।

नाले के उस ओर मन्त्री पद के चुनाव में आये हुए हजारों युवकों की भीड़ इस बूढ़े किसान का तमाशा देखने में लगी हुई थी । इन पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने उस गरीब किसान का मजाक बना रखा था । दर्शक मण्डली में से कोई कहता था कि अबे बुद्ढे, तेरी अकल कहाँ मारी गयी है । तू इतने बूढ़े बैलों को जोतकर ही क्यों लाया । कोई कहता था कि बुढद्‌ा बड़ा बेवकूफ है । बैल भी बुद्ढे है और गाड़ी भी टूटी हुई सी है और आप भी मरने को रखा है । बेवकूफ को बुद्धि होती तो इतनी मूर्खता का काम कभी न करता । लोग-बाग तालियाँ पीट-पीट कर उसे भरपूर बेवकूफ बना रहे थे और खूब जोर जोर से हँस रहे थे ।

बूढ़ा किसान पसीने-पसीने हो रहा था । उसकी परेशानी बेहद बढ़ चुकी थी । उसे किसी प्रकार का कोई सहारा नहीं दीख रहा था । तभी उस दर्शक मण्डली की भीड़ को चीरता हुआ, एक नौजवान गरीब लड़का उस नाले की तरफ जोरों से बढ़ता हुआ दिखा और जरा सी देर में उसने सारा मामला समझ लिया । उसने खेद प्रकट करते हुए दर्शक मण्डली के सभी व्यक्तियों को कहा कि

भाइयों, क्या हमारे तुम्हारे जैसे पढ़े-लिखे नौजवान लड़को का यही कर्तव्य है कि मुसीबत में फँसे इन्सान की मदद करने के बजाय उसका मजाक बनाया जाय। इतना कहते-कहते वह गरीब नौजवान अपने कपड़ों को कुछ ऊँचा करते हुए नाले में आगे बढ़ गया और उसने किसान से कहा—बाबा तुम घबड़ाओ मत। देखो, तुम बैलों की लगाम को ठीक तौर से पकड़ कर गाड़ी पर बैठ जाओ, और मै तुम्हारी गाड़ी के पहियें को अपनी पूरी ताकत से गढ्ढे से बाहर कर दूँगा। तुम बेफिकर होकर अपनी गाड़ी को ले जाना। इतना कहकर उस गरीब नौजवान ने अपनी पूरी ताकत से गाड़ी के पहियों को ज्योंही आगे को धक्का लगाया त्योही गाड़ी चल दी।

बूढ़े किसान ने, नाला पार करने के बाद अपनी गाड़ी को रोकते हुए उस जवान से पूछा, बेटा तुम कौन हो, यहाँ किस काम से आये हुए हो। तुमने मेरे ऊपर बड़ी भारी कृपा की है। अन्यथा मेरी यह गाड़ी न मालूम कब तक इस नाले में रुकी रहती। बूढ़े किसान की स्नेह भरी बातें सुनकर उसने कहा बाबा मै परदेशी गरीब आदमी हूँ। यहाँ के राज्य की ओर से राज्यमन्त्री पद के लिये एक व्यक्ति का चुनाव होगा और इसी बात को लेकर यहाँ हजारों व्यक्ति आये हुए है। जिस किसी व्यक्ति का भाग्य जोर मारेगा, वही आदमी यहाँ के राज्य का राजमन्त्री चुन लिया जायेगा। बूढ़े किसान ने इस नौजवान की बातों को बड़ी गम्भीरता से सुना और फिर कहने लगा कि बेटा, नाले में घुसने से तुम्हारे कपड़े खराब हो गये हैं। क्या तुमने यह नहीं सोचा कि इतनी बड़ी राज्यमन्त्री की परीक्षा में बैठने के लिये, कपड़े भी सुन्दर होना परम आवश्यक है। क्या तुम्हारे पास बदलने के लिये और दूसरे बढ़िया कपड़े है?

बूढ़े किसान की बातें सुनकर वह गरीब नौजवान कहने लगा, कि बाबा मेरे पास सिवाय इन कपड़ो के दूसरे और कोई कपड़े नही है। किन्तु मैने अपने जीवन में मानव–जीवन के लिए जो बातें अपने बुजुर्गों से और धर्मशास्त्रों से सीखी है, उसके आधार पर मेरा यह परम कर्तव्य हो गया था कि मै अपने कपड़ों की या अन्य किसी दूसरी बातों की जरा भी परवाह न करते हुए शीघ्र से शीघ्र मै तुम्हारी नाले मे फँसी हुई गाड़ी को बाहर निकाल दूँ। ऐसी सूरत में मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया है, आपके ऊपर किसी भी प्रकार का कोई अहसान नहीं किया है, और अपने उचित कर्तव्य का पालन करने के मार्ग में, यदि कपड़े खराब हो जाते है और मुझे मन्त्री पद नहीं भी प्राप्त होता है, तो मुझे इसका तनिक भी दुख नही होगा, बल्कि मेरी आत्मा को इस बात से और भी शान्ति मिलेगी कि, ईश्वर को यह कार्य मंजूर नहीं था। क्योंकि न मालूम राजमन्त्री बनने के बाद, किसी भी दूसरी प्रकार से मेरे नैतिक जीवन का पतन हो सकता है। भगवान ने दया करके मुझे इस मार्ग से बचा दिया है।

इस गरीब नौजवान की बातें सुनकर बूढ़ा किसान बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने अपने दोनों हाथों को आसमान की तरफ ऊँचा उठाते हुए कहा, कि हे परमात्मा, मेरी यही प्रार्थना है कि तुम इसी गरीब नौजवान को यहाँ का राज्यमन्त्री बनाना। इसके बाद बूढ़े किसान ने कहा बेटा, तुम्हारा क्या नाम है और कौन से गाँव के रहने वाले हो। नौजवान ने अपना और अपने गाँव का नाम तुरन्त बता दिया। बूढ़े किसान ने अपनी गाड़ी को हाँकते हुए कहा कि बेटा मेरी तुमने बड़ी भारी मदद की है, इसलिये इस बूढ़े का यही आशीर्वाद है कि भगवान तुमको ही यहाँ का राज्यमन्त्री अवश्य बनायेंगे।

जरा सी देर में बूढ़े किसान की गाड़ी आँखों से ओझल हो गई। सभी नवयुवक दर्शक लोग इन दोनों की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। सभी लोग मन में सोच रहे थे कि न मालूम किस प्रकार से यहाँ के राज्यमन्त्री का चुनाव होगा। आगे चलकर बूढ़े किसान ने गाड़ी को एक जानकार व्यक्ति के पास छोड़ दिया और आप अपने मकान पर गया। अपने असली कपड़े पहिनकर राजदरबार में तुरन्त जाकर महाराज को नमस्कार करते हुए अपने (निज) मन्त्री के स्थान पर बैठ गया। कुछ देर बाद ही, मन्त्री ने सिपाहियों को हुकुम दिया कि तुम लोग इसी वख्त उस नाले के पास जाओ, और वहाँ जितने भी व्यक्ति ठहरे हुए है, उनमें से अमुक नाम के अमुक गाँव के रहने वाले व्यक्ति को तुरन्त लिवाकर यहाँ ले आओ।

सिपाहियों ने जरा सी देर में ही उस आदमी को दरबार में लाकर खड़ा कर दिया, जब मन्त्री ने उस आदमी को पहचान लिया तो उसे एक तरफ कुरसी पर बैठने के लिये आदेश दिया और सिपाहियों को दूसरा हुकुम दिया कि तुमलोग अभी जाकर नाले पर ठहरे हुए व्यक्तियों की मुनादी करवा दो कि यहाँ के राजमन्त्री पद का चुनाव समाप्त हो चुका है। सभी लोग अपने-अपने घर को वापस जा सकते है। जिस युवक ने बूढ़े किसान की गाड़ी नाले से बाहर निकलवायी थी, वहीं राजमन्त्री पद के चुनाव में जीत गया है।

मंत्री के इस आदेश को पाकर सिपाहियों ने नाले के पास ठहरे हुए सारे व्यक्तियों को ढोल पीटकर राजाज्ञा को सुना दिया। जब लोगों ने यह सुना कि, बूढ़े किसान की गाड़ी को नाले से बाहर निकालने वाले को ही राजमंत्री चुन लिया है, तो सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। आपस में एक दूसरे से वार्तालाप

करते हुए सभी लोग हताश होकर वहाँ से चल दिये, और कहने लगे कि अरे भाई यह बात किसको मालूम थी कि, वह बूढ़े किसान की गाड़ी ही, हमलोगों की परीक्षा का मूल कारण है। हमलोग तो यह समझ रहे थे कि कोई पढ़ाई-लिखाई और चतुराई की बातों पर पूछताछ की जायेगी। मगर यह परीक्षा जिस प्रकार से की गई है, इसका स्वप्न भी नहीं था।

इधर राजसभा में राजमन्त्री ने उस जवान का पूरा वृत्तान्त राजा साहब को बता दिया और कहने लगा कि महाराज, मैंने अपना सा आदमी तलाश करके आपकी सेवा में उपस्थित कर दिया है। इस आदमी के द्वारा आपके राज्य का तथा आपकी प्रजा का कभी अहित नहीं हो सकेगा। अब आप कृपा करके इसे मन्त्री बनाकर मुझे शीघ्र छुट्टी देने का प्रबन्ध कर दीजिये। इसके द्वारा, आपकी प्रजा को सच्चा न्याय और सच्ची सद्भावनाएँ सदैव प्राप्त होती रहेंगी। राजमंत्री के इस सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर वह नौजवान ताज्जुब करने लगा कि अरे यह राजमंत्री ही, उस टूटी सी बैलगाड़ी पर बूढ़ा किसान बनकर आया था? हमें क्या मालूम कि यही किसान सब की परीक्षा का मूल कारण बनकर आया है। राजमंत्री ने उस नौजवान से कहा कि देखो बेटा, जिस प्रकार तुमने उस बूढ़े किसान की गाड़ी नाले से बाहर निकालना अपना कर्तव्य समझा और किसी भी प्रकार स्वार्थ की भावनाओं का लेशमात्र भी ध्यान तुम्हारे मन में नहीं था, उसी प्रकार सदा इस राज्य का और प्रजा का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए निःस्वार्थ भाव से सदैव सेवा करते रहना।

राज्यमन्त्री की इस बात को सुनकर उस नौजवान ने खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए कहा पिताजी ऐसा ही होगा। राजा ने तुरन्त उस नवयुवक को, मन्त्री पद की ताजपोशी करवा दी और राजा ने

एवं नवयुवक ने आँखों में आँसू भरते हुए वृद्ध मन्त्री को विदाई दी, और चलते समय नये मन्त्री ने पुराने मन्त्री के चरणों पर गिरकर दंडवत किया। बूढ़े मन्त्री ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे न्याय पर कायम रहने का आशीर्वाद दिया और अपने भगवा वस्त्र पहिन कर जंगल की राह ली। बाद में इस नये मन्त्री के कार्यो द्वारा राजा को और प्रजा को बड़ा भारी सुख और संतोष तथा सच्चे न्याय की प्राप्ति होने लगी।

जौहरी को इनाम में धूल

एक राजा के यहाँ एक बहुत बड़ा कीमती हीरा रखा हुआ था। वह हीरा बहुत पुराना था। कई बार जौहरियों को दिखाया गया था। और जौहरियों ने इस हीरे की बड़ी प्रशंसा की थी राजा ने सोचा कि इस हीरे की असली परीक्षा तभी हो सकती है कि जब देश-देशान्तर के सभी जौहरियों से इसकी जाँच करवाई जाय।

एक बार राजा ने राज्य में एक बहुत बड़ी प्रदर्शनी लगवाई। उसमें दूर-दूर के अनेकों प्रकार के व्यापारी भी आये, किन्तु राजा ने खासतौर से भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध जौहरियों को इस प्रदर्शनी में आमन्त्रित किया था। और उन जौहरियों के लिये रहने, खाने-पीने इत्यादि का विशेष प्रबन्ध करदिया था। सभी जौहरी बड़े प्रसन्न थे कि इस राजा ने हम लोगों की बड़ी इज्जत की है। इसी तरह कुछ दिन तक प्रदर्शनी का क्रम चलता रहा। पर जब प्रदर्शनी की समाप्ति का समय निकट आ गया, तब एक दिन राजा ने सभी जौहरियों को दरबार में बुलाया और सभी से प्रायः थोड़ी-थोड़ी आवश्यकतानुसार जवाहरात की खरीद कर

ली। इसके उपरान्त राजा ने मन्त्री से कहा कि हमारे यहाँ का हीरा निकालकर सभी जौहरियों के सामने रखो और उसकी जाँच करवा लो। राजमन्त्री ने उस राजसी पुराने हीरे को निकलवाकर सभी जौहरियों को दिखाया।

जौहरियों ने अपनी दूरबीनों के द्वारा उस हीरे को अच्छी तरह से जाँच करके देखा और अन्त में सभी जौहरियों ने उस हीरे को अच्छी तरह से जाँच करके देखा और अन्त में सभी जौहरियों ने उस हीरे की बेहद प्रशंसा करते हुए कहा कि महाराज वर्तमान समय में इस हीरे की टक्कर का दूसरा हीरा कदापि नहीं निकल सकता है। इसलिये इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम है।

इस प्रकार अधिकाशं सभी जौहरी जब अपनी-अपनी सम्मति उस हीरे के बारे में दे चुके, तब अन्त में एक पुराना बुड्ढा जौहरी उठा और उसने उस हीरे को खूब अच्छी तरह से देखा और कहने लगा कि महाराज, यदि बेअदबी माफ हो तो एक कड़वी बात कहना चाहता हूँ।

राजा ने तुरन्त नि:संकोच भाव से उत्तर देते हुए कहा कि जौहरी, तुम जो कुछ भी कहना चाहते हो उसे बेधड़क कह दो, हम वायदा करते है कि तुम्हारी बात का बिल्कुल भी बुरा नहीं मानेंगे।

तब बुड्ढे जौहरी ने कहा कि महाराज यह आपका अनमोल हीरा, देखने में जितना ऊँचा है, उतना ही अन्दरूनी तरीके से वह पेट का पापी है। यह सुनकर राजा साहब के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, उन्होंने जरा मुस्कराते हुए कहा कि जौहरी साहब क्या हीरा भी पेट का पापी हो सकता है ? और यदि हो सकता है तो आपके पास इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण भी है, जिसके द्वारा सभा के लोग

आपकी बात सरलता पूर्वक सत्य समझ सकें ।

बूड्ढे जौहरी ने कहा कि सरकार मेरी बात का यदि यकीन नहीं है तो हीरे को तोड़कर देख लीजीये । इसके पेट में ढाई रत्ती धूल निकलेगी । राजा सहित सभा के सभी लोग, एवं सभी जौहरी इस सोच में पड़ गये कि हीरा जैसे कठोर पत्थर के अन्दर भी क्या धूल निकल सकती है? सभा के लोगों में काना-फुसी होने लगी और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि इस बुड्ढे जौहरी ने अपना रंग जमाने के लिये यह नई बात राजा साहब के सामने रखी है, कि न कोई हीरे को तोड़ेगा और न इसकी बात झूठी साबित हो सकेगी ।

राजा ने अपने मन्त्री से सलाह करते हुए कहा कि मन्त्री साहब, हमारा चाहे हीरे के टूटने से कितना ही नुकसान क्यों न हो जाय, किन्तु हम असलियत समझना चाहते हैं, इतना कहने के बाद राजा साहब ने बुड्ढे जौहरी से कहां कि यदि तुम्हारी बात गलत साबित हुई तो तुम्हें लम्बी सजा दी जायेगी और तुम्हारी पैत्रिक सम्पत्ति जितनी भी तुम्हारे पास है वह सब छीन ली जावेगी । यदि तुमको यह शर्त मंजूर हो तो हम अपने हीरे को अभी तुड़वा कर देख लेंगे ।

राजा बाहब ही बात सुनकर बुड्ढे जौहरी ने, निस्संकोच उत्तर देते हुए कहा, कि महाराज मै आपकी शर्त से पूर्ण सहमत हूँ । आप इसी वक्त हीरे को तुड़वाने का प्रबन्ध कर दीजिये ।

राजा साहब ने भी उसी वक्त हुकुम दे दिया कि हीरे को अभी दरबार में सभी लोगों के सामने तुड़वा दिया जाय । राजा की आज्ञा के आदेशानुसार हीरे को हीरा काटने वाले कारीगरों के द्वारा तुरन्त ही दरबार में कटवाया गया, और हीरे का पेट कटते वख्त बड़ी भारी सावधानी से सभी लोग हीरे के ऊपर दृष्टि

गड़ाये हुए थे। हीरे के टुकड़े होते ही उसके पेट में से ढाई रत्ती धूल निकल पड़ी। लोगों को बड़ा भारी आश्चर्य होने लगा कि प्रथम तो हीरे जैसी कठोर वस्तु के अन्दर धूल कहाँ से आ सकती है, और यदि अन्दर धूल मौजूद भी थी, तो उसका पता इसे कैसे लग गया। भाई इस बुडढे जौहरी की अकल ने कमाल ही कर दिखाया वरना, इतने बड़े-बड़े प्रसिद्ध जौहरियों ने इस हीरे को देखा भाला मगर कोई भी इस गहराई तक नहीं पहुँच सका।

राजा साहब ने बुड्ढे जौहरी से का, जौहरी साहब, आपकी दर्शिता और जवाहरात की परख के हम बेहद कायल हैं, क्या आप यह और बता सकेंगे कि आपने इसके अन्दर धूल को किस तरह से पहचाना था। जौहरी ने कहा सरकार यह हमारी परख और नजर का खेल है जिससे हमको यह मालूम हो गया कि यह हीरा जमीन के अन्दर पकते समय पेट के अन्दर से कुछ कच्चा रह गयाहै इसलिये इसके अन्दर कुछ धूल अवश्य निकलेगी।

जौहरी की बातों से राज़ा को पूर्ण संतोष हो गया और जौहरी की अकलमन्दी की छाप राजा के हृदय पर अंकित हो गई। तब राजा साहब ने, अपने मन्त्री से कहा कि मन्त्री जी आप जौहरी साहब के लिये इनाम का माकूल इन्तजाम कर दीजिए। मन्त्री ने कहा महाराज, जौहरी साहब ने जितनी गहरी अकल का परिचय दिया है उसके मुताबिक कोई साधारण इनाम इनके योग्य नही हो सकता है। इसलिये मैंने इनके लिये बहुत ऊँचे इनाम का विचार किया है और वह इनको अभी दिये देता हूँ। इतना कहकर राजमन्त्री ने भरी सभा में दो मुट्ठी धूल हाथों में लेकर बुड्ढे जौहरी के सिर पर तुरन्त डाल दी। सभा के सभी लोग आश्चर्य में रह गये कि इस मन्त्री ने यह क्या गजब कर दिया। राजा साहब के क्रोध का तो ठिकाना ही नहीं रहा। उन्होंने अपने मन्त्री की ओर

लाल-लाल आँखे निकाल कर देखा और कड़क कर बोले कि मन्त्री, यह तुमने क्या अनर्थ कर डाला । इतने बड़े इज्जतदार जौहरी के सिर पर तुमने भरी सभा में धूल डाल दी । यदि इसका माकूल उत्तर तुम नहीं दे सकोंगे तो तुम्हें माकुल सजा दी जायेगी ।

राजा की इस बात को सुनकर बुड्ढा जौहरी तुरन्त बोल उठा कि महाराज, राजमन्त्री ने मुझे बहुत ही ऊँचा इनाम दिया है और इससे ऊँचा इनाम और दूसरा कोई हो भी नहीं सकता है । किन्तु राजा को संतोष नहीं हुआ और उसने इस रहस्य को स्पष्ट समझने के लिये पुनः कहा कि मै तुम्हारी इस बात का मतलब साफ-साफ समझना चाहता हूँ । तब मन्त्री ने कहा कि अन्नदाता मैंने जौहरी साहब के सिर पर धूल जिस कारण से डाली है, उसका मतलब जौहरी साहब पूरा-पूरा समझ गये है । इसलिये कृपा करके आप उनसे ही पूछ लीजीये कि मैंने इनके सिर पर धूल क्यों डाली है ।

इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हुए राजा साहब ने जौहरी की तरफ देखा और कहने लगे कि जौहरी साहब, क्या आप इस बात का मतलब हमें समझा सकते है कि हमारे मन्त्री साहब ने आपको इनाम के स्थान पर आपके सिर पर धूल क्यों डाली है? तब बुड्ढे जौहरी ने कहा कि महाराज आपके मन्त्री साहब ने मुझे बड़ा माकूल इनाम दिया है । उसका कारण यह है कि मन्त्री साहब ने अपने मन में यह विचार किया है कि जब इस जौहरी को पैनी बुद्धि पत्थर के अन्दर तक के हालातों को जानने में इतनी निपुण होगई है कि दूसरे किसी भी जौहरी की बुद्धि वहाँ तक नहीं पहुँच सकी थी । ऐसी सूरत में यदि यह जौहरी अपनी इस पैनी बुद्धि को इस संसारी धन्दे के चक्कर में न फँसाकर, कहीं भगवान की खोज में और भगवान के भजन में लगाता तो इसको कितना भारी

लाभ हो जाता और इसके लोक तथा परलोक दोनों ही सुधर जाते अर्थात् इस भवसागर के आवागमन के चक्कर से भी मुक्त हो जाता। अस्तु, इतनी भारी कीमती बुद्धि से भी इसके सिर पर धूल डाली है। जौहरी ने इस प्रकार राजा को समझाते हुए कहा कि महाराज, आज मेरे जीवन में यह पहिला दिन है जबकि मै इस बात को समझ पाया हूँ कि मुझे वास्तव में ईश्वर की खोज और ईश्वर का चिन्तन सच्चे हृदय से करना चाहिये था, जिसे कि मैं अबतक कतई भूला बैठा हूँ।

जौहरी ने अपने वक्तव्य को चालू रखते हुए कहा कि महाराज, राजमन्त्री ने मेरे सिर पर धूल पटक कर मेरे हृदय के अन्धे नेत्रों को रोशनी प्रदान की है। इसका बदला किसी भी प्रकार से मै पूरा नही कर सकता और इस प्रकार का इनाम जिन्दगी में आजतक न कभी मिला और न कभी कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा इनाम देने की हिम्मत ही कर सकता है। इस प्रकार जब राजा का अत्याचार बराबर चलता रहा, तब देश-देशान्तरों में दूर-दूर तक यह समाचार फैल गया, और इसका परिणाम यह निकला कि जगन्नाथ पुरी की यात्रा में युवा स्त्रियों का जाना कतई बन्द हो गया, केवल बुड्ढी स्त्रियाँ और पुरुष ही उस यात्रा में आते-जाते थे।

एक दिन एक गाँव की रहनेवाली सती युवा स्त्री ने अपने मन में विचार किया कि जगन्नाथ जी के दर्शन करने का सौभाग्य यदि युवा स्त्रियों के भाग्य से छिन चुका है, तो भी मै इस मार्ग में जबरदस्ती पदार्पण करूँगी, और जहाँ तक सम्भव हो सकेगा मै इस क्लेश की जड़ ही समाप्त करके मानूँगी।

इस प्रकार दृढ़ संकल्प करके, उस स्त्री ने अपने पति से कहा कि मैं भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन करना चाहती हूँ, आप मुझे

जगन्नाथ पुरी ले चलिये स्त्री की बात सुनकर उसका पति कहने लगा, कि क्या तुझे यह मालूम नहीं है कि वहाँ का राजा युवा स्त्रियों की इज्जत को जबरदस्ती खराब करता है और किसी की भी उसमें कोई पेश नहीं पड़ पाती है। स्त्री कहने लगी कि मेरे हृदय में तो यह दृढ़ संकल्प हो गया है कि चाहे कुछ भी हो, परन्तु भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन अवश्य करूँगी। यदि मौत भी मेरे सामने आ जायेगी तो भी मैं नहीं मानूँगी। मुझे जगन्नाथ पुरी अवश्य ही पहुँचना है।

स्त्री की इतनी हठधर्मी को देखकर उसका पति कहने लगा कि यदि तुझे जाना ही है तो गाँव के अनेको लोग हर साल जगन्नाथ पुरी को जाते है तू भी उन्हीं के साथ चली जाना। मैं तेरे साथ नही चलूँगा। क्योंकि जब वहाँ पर तेरी इज्जत बिगाड़ने के लिए राजा के सिपाही तुझे पकड़कर जबरदस्ती ले जायेगे, उस वख्त मैं अपनी आँखो से इस दुःख को देख नहीं सकूँगा। स्त्री ने अपने पति की बात को मान लिया और कुछ समय के उपरान्त ही जब गाँव के लोगों की टोली जगन्नाथ जी के दर्शनों को चलने लगी तो यह सती स्त्री भी उनके साथ हो ली। गाँव के लोगों ने इस स्त्री को बहुत कुछ समझाया परन्तु उसने किसी का भी कहना नहीं माना। अन्त में गाँव के सभी लोग मजबूर हो गये और उस स्त्री को अपने साथ में ले लिया।

कुछ समय के बाद पैदल यात्रा करते-करते यह सभी लोग जगन्नाथ पुरी पहुँच गये, और वहाँ किसी ठहरने के स्थान पर इन लोगों ने रात का मुकाम कर लिया। प्रातःकाल होते ही नित्य नियम के अनुसार राजा के सिपाही सभी स्थानों पर पहुँच-पहुँचकर जिस प्रकार युवा स्त्रियों की खोज किया करते थे, उसी प्रकार इन लोगों के पास भी सिपाहियों की एक टोली पहुँच गई और वे उस

युवा स्त्री को जबरदस्ती पकड़ कर ले गये। बेचारे गाँव-वालों ने सिपाहियों से बहुत कुछ कहा-सुना, प्रार्थना की, मगर उनकी किसी ने एक भी नहीं सुनी। उस सती स्त्री को तुरन्त राजमहलों में राजा के पास पहुँचा दिया। राजा ने एकान्त समय पाकर उस स्त्री के प्रेमालाप करना शुरू कर दिया तो स्त्री ने बड़ी सावधानी के साथ राजा से प्रार्थना करते हुए कहा कि महाराज, यह आपका कार्य यद्यपि उचित नहीं है किन्तु आप राजा है, राजशक्ति आपके हाथ मे है, इसलिये आपसे किसी की कोई पेश नहीं पड़ सकती है। परन्तु मेरी थोड़ी सी प्रार्थना यह है कि इस समय मैं रजस्वला (मासिक धर्म से) हूँ इसलिये तीन दिन तक तो इस अपवित्र शरीर को छूने से पाप भी लग जायेगा, दूसरे कपड़ों में बदबू आती रहती है। अस्तु आप तीन दिन के लिए मुझे क्षमा करिये और मेरे लिये एक तरफ एकान्त में ठहरने का प्रबन्ध करवा दीजिये।

कामी राजा ने स्त्री की बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया और उसके ठहरने का उत्तम प्रबन्ध एकान्त की तरफ के कमरे में कर दिया। राजा को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह सुन्दरी तीन दिन के बाद मुझसे अवश्य प्रेम करेगी। सती स्त्री का बहाना कामा कर गया और उसे तीन दिन का अवकाश बेखटके प्राप्त हो गया। इसके उपरान्त उस सती स्त्री ने देखा कि राजपरिवार के लोगों के लिये, इसी राजभवन के अन्दर से, एक निजी रास्ता, जगन्नाथ जी के मन्दिर में जाने को सुरंग के रूप में बना हुआ है। जगन्नाथ जी के मन्दिर के बड़े-बड़े दरवाले ठाकुर जी के शयन होने के बाद बन्द कर दिये जाते थे और बाहर से ताले लग जाते थे किन्तु राज परिवार के लोगों को सुरंग द्वारा मन्दिर में जाने के लिये, सदैव ही रास्ता खुला रहता था। सती स्त्री ने देखा कि राज परिवार के सीाी लोग रात में सो चुके है तब उसने चुपके से

उठकर उसी सुरंग में प्रवेश किया और जरासी देर में मन्दिर मे पहुँच गई । ठाकुर जी के सम्मुख पहुँच कर उसी साध्वा स्त्री ने बड़े प्रेम से दर्शन किये, फिर कहने लगी कि हे दीनबन्धु,आप जगत के नाथ हो, इसीलिये आपका नाम जगन्नाथ है, किन्तु आपका यह कैसा न्याय है कि आपके दर्शनों को आने वाली सती स्त्रियों की लाज यहाँ नष्ट की जाती है । आप इस अन्याय को देखते रहते है । क्या यही आपका ईश्वरत्व है? संसार में आपके इस जगन्नाथ पुरी की निन्दा चारों ओर फैल चुकी है और आपके कान पर जूँ भी नहीं रेंगती है । मै अपने स्थान से इस बात की प्रतिज्ञा करके आयी हूँ कि या तो इस अन्याय की समाप्ति ही होगी या मेरे शरीर की ही समाप्ति होगी । हे जगत्पिता, मैं आपके सम्मुख यह दूसरी प्रतिज्ञा करती हूँ कि जब तक इस अन्याय के सम्बन्ध में आप मुझे स्पष्टीकरण नहीं करेंगे, तब तक मै अन्नजल ग्रहण नहीं करूँगी, आप यदि ईश्वर हैं तो इस न्याय का सच्चा उत्तर दीजिये, कि आप इस अन्याय को कैसे बरदाश्त कर रहे है । अन्यथा तीन दिन के बाद मैं इस शरीर को समाप्त कर दूँगी, और मरते वक्त आपको केवल पत्थर की मूर्ति के सिवाय और कुछ नहीं समझूँगी ।

सती स्त्री ने ठाकुर जी के सामने यह प्रतिज्ञा सच्चे हृदय से कह, और रात भर ईश्वर-चिन्तन करती रही, दिन निकलने से पूर्व ही वह अपने स्थान पर आकर सो गई । इस प्रकार रोजाना रात में ठाकुर जी के सम्मुख ईश्वर-चिन्तन करती रही, और पहले दिन से ही उसने अन्न-जल छोड़ दिया था । इस प्रकार उस सती स्त्री के तीन दिन व्यतीत हो गये और तीसरी रात चल रही थी कि उसने अपना मरण निश्चित कर लिया था । जब तीसरी रात भी व्यतीत हो चली, तब सती स्त्री का ध्यान मृत्यु की ओर लग रहा था, इतने में, मन्दिर के अन्दर से एक हल्की सी आवाज उस स्त्री के

कान में आयी और उसने स्पष्ट शब्दों मे यह सुना कि देवी मै तुम्हारे सच्चे त्याग और तप से बहुत प्रसन्न हूँ और तुमने मुझसे जो कुछ प्रश्न इस राजा के अन्याय के सम्बन्ध में किये है उसका उत्तर यह है कि इस राजा की पूर्वसंचित पुण्याई बहुत भारी तादाद में अब भी मौजूद है, इस लिये यह जितने भी पाप करता चला जा रहा है, वे मुझे सब सहन करने पड़ रहे है । और इसकी पुण्याई का अभी बड़ा लम्बा छोर है, इसीलिये मेरी मजबूरी है कि मै इसमें कुछ भी नहीं कर सकता हूँ ।

तब सती स्त्री ने कहा कि भगवन्, जब आपने इतना गम्भीर विषय मुझे बता दिया तो, कृपा करके सिर्फ इतना और बतला दें कि क्या कोई ऐसी भी सूरत हो सकती है जिसके द्वारा इस अन्यायी राजा का शीघ्र पतन हो जाय ।

तब पुनः वही आवाज सती के कान मे कहने लगी कि सिर्फ एक ही रास्ता इसके नष्ट होने का रह गया है कि यदि यह राजा किसी की बातों मे आकर अपनी समस्त संचित पुण्याई को संकल्प करके हाथ मे जल लेकर किसी को दे दे तो इसकी समस्त शक्ति उस वख्त समाप्त हो जायेगी । अन्यथा यह सैकड़ों वर्ष तक भी यदि पाप करता रहेगा तो भी इसके पुण्यों का अन्त नहीं हो सकता है ।

सती स्त्री ने मन्दिर की गम्भीर वाणी को स्पष्ट रूप से ईश्वर की आवाज समझ ली और फिर सच्चे हृदय से भगवान जगन्नाथ की जै-जैकार कहकर दंडवत् की और कहा कि हे दीनबन्धु, आपने मेरा मनोरथ सफल कर दिया । आप सच्चे ईश्वर है अब मै अपने कार्य में आपकी कृपा से सफलता प्राप्त कर लूँगी । इतना कहकर सती स्त्री ने भगवान को नमस्कार करके तुरन्त ही अपने स्थान पर आकर सो गई ।

इधर तीन दिन समाप्त होते ही, वह कामातुर राजा चौथे दिन उसी स्त्री को एकान्त में बुलाकर प्रेम भरी बातें करने लगा। सती स्त्री ने अपने मन का गुप्त भाव छिपाते हुए कुछ प्रेम भरी चितवन से राजा की ओर देखते हुए कहा कि महाराज, आप बताइये कि, आप अपनी इच्छा की पूर्ति राजी से करना चाहते है या जबरदस्ती से करना चाहते है। इसलिये मै आपको पहिले ही बतलाये देती हूँ कि यदि आप राजी से बातें करेंगे तो आपको भी आनन्द आयेगा और मुझे भी आनन्द आयेगा। अन्यथा यदि आप जबरदस्ती से काम लेना चाहेंगे तो मै यहीं पर इसी समय अपने प्राणों को समाप्त कर दूँगी। सुन्दरी स्त्री की बातों को सुनकर उस कामी राजा के हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई और कहने लगा कि मै तेरी राजी में ही अपनी राजी मानता हूँ। बोल, तू मुझसे क्या चाहती है। पहिले तेरी राजी पूर्ण कर दूँगा, फिर मै अपनी राजी बाद में पूर्ण करूँगा। मै वचन देता हूँ कि तेरी आज्ञा का पालन अवश्य ही करूँगा, तू निःसंकोच भाव से कह दे कि तू मुझसे क्या चाहती है।

सती स्त्री ने हर प्रकार से राजा को वचन बँधा हुआ देखकर कहने लगी कि मै आपसे सिर्फ इतना चाहती हूँ कि आप अपने हाथ में जल लेकर यह कहें कि मेरी जितनी भी पूर्व-संचित पुण्याई है वह सब मै तुझे देता हूँ। ऐसा कहकर वह जल-आप मेरे हाथ पर दे दीजिये।

कुसंग के चक्कर में पड़ा हुआ वह कामान्ध राजा, उस स्त्री के रहस्य को कतई नहीं समझ पाया और बड़ी प्रसन्नता के साथ हँसते हुए उसने कहा कि बस इतनी सी बात के लिये तूने इतने भारी संकोच के साथ कहा है। यदि तू सौ-पचास गाँव भी माँगती तो मै तुझे देने में इन्कार न करता। इतना कहकर राजा ने तुरन्त

अपने हाथ में जल ले लिया और कहा कि मेरी जितनी भी संचित पुण्याई है, वह सभी मै तुझे प्रसन्नता पूर्वक देता हूँ। इतना कहकर राजा ने अपने हाथ का जल उस सती स्त्री के हाथ में छोड़ दिया।

इस जल के छोड़ते ही राजा के चेहरे का तेज तुरन्त नष्ट हो गया। उसका हृदय अन्दर से धड़कने लगा, शरीर कुछ कम्पित होने लगा। लुटी हुई पूँजी के साहूकार की तरह उसने स्त्री की तरफ सशंकित नेत्रों से देखा। उसी सती स्त्री ने जरा सी देर में सब कुछ समझ लिया, और तुरन्त ही उसने कपड़ों के अन्दर से छिपी हुई कटारी निकाल ली, और राजा को एक ही झटके में नीचे पटक दिया और कड़क कर कहने लगी कि बोल मेरा कहना मानेगा या मौत के घाट उतरना चाहता है। राजा काँपने लगा उसके मुँह से बोल तक नहीं निकल रहा था। सती स्त्री ने कहा कि अरे पापी राजा, तेरे पास जितनी भी शक्ति थी वह अब सब समाप्त हो चुकी है, मै यदि चाहूँ तो तुझे चूहे की तरह इसी वख्त मार सकती हूँ और यदि तुझे अपनी जान प्यारी हो तो मेरे कहने के अनुसार शपथ लेनी पड़ेगी। कामी राजा की अकल के तोते उड़ चुके थे। उसे अपनी मौत सामने दीख रही थी। राजा का नशा हिरन हो चुका था। अस्तु उसने हाथ जोड़कर कहा कि देवी मै तुम्हारी सभी बातें मानने को तैयार हूँ मगर तुम मेरी जान छोड़ दो। सती स्त्री ने कहा, कि फिर एक बार जल हाथ में लेकर ईश्वर को साक्षी करके कहो कि मै अपने शेष जीवन मे अब कभी भी किसी दूसरी स्त्री के साथ बलात्कार नही करूँगा और धर्मानुकूल जीवन व्यतीत करूँगा। राजा ने तुरन्त हाथ में जल लेकर प्रतिज्ञा करते हुए स्त्री के बताये हुए शब्दों को दुहरा दिया, और शेष जीवन में अपने जीवन को धर्मानुकूल रखने का पक्का

वायदा कर दिया ।

इस प्रतिज्ञा के करते ही राजा के हृदय में बड़ा सुख और संतोष प्रतीत होने लगा । उसे अपने अन्दर ज्ञान का कुछ प्रकाश दीखने लगा । राजा ने बड़ी कृतज्ञतापूर्वक नेत्रों से हाथ जोड़तें हुए कहा कि देवी, तुमने भारी कृपा करके मुझे महान भयानक अन्धकार के मार्ग से निकालकर प्रकाशपथ पर लाकर खड़ाकर दिया है । मै तुम्हारा जन्म जन्मान्तर तक यह एहसान नहीं भूल सकूँगा ।

सती स्त्री ने उस राजा को सही रास्ते पर आया हुआ देखकर अपनी कटार पुनः कपड़ों में छिपा ली और कहने लगी कि अब तुम डरो मत । देखो सुबह का भूला हुआ व्यक्ति यदि शाम तक भी अपने घर पर पहुँच जाता है तो वह भूला हुआ नहीं माना जाता । इसलिये अब तुम शेष जीवन में भगवान का भजन और गरीबों की तथा दीन-दुखियों की सहायता करते रहना । इतना कहने के बाद उस साध्वी स्त्री ने अपने हाथ में जल लेकर कहा कि देखो, मैंने तुम्हारे जितने संचित पुण्य प्राप्त किये है उनमें से आधे तुमको वापस किये देती हूँ जिसकी शक्ति से तुम पुनः राज्य भोगते हुए ही शेष जीवन सुखपूर्वक समाप्त कर सकोगे, अन्यथा तुमको शेष जीवन में दारिद्र्य भोगकर ही समय व्यतीत करना पड़ता ।

राजा के हृदय की आँखें खुल गई और उसने उस सती स्त्री को अपना गुरू मान लिया । प्रभात होते ही राजा ने उस स्त्री की बड़ी आवभगत करते हुए फूलों के हार पहिनाकर उसे एक बहुत बड़ी ऊँची सवारी में बैठाकर अपने नगर में बड़े गाजे बाजे के साथ उसका बृहत् रूप से जुलूस निकाला, और आप तथा उसके सभी राज परिचालक गण उस सवारी के साथ पैदल चलते रहे । इसके उपरान्त घर पर आकर उस राजा ने उस स्त्री के साथ गाँव के जो लोग आये थे उनको भी बुलाकर उन सबकी बड़ी भारी

आवभगत की । तदुपरान्त सभी ने उत्तम-उत्तम भोजन किया । सायँकाल के बाद राजा ने नगर के सभी लोगों को बुलाकर एक बहुत बड़ी सभा का आयोजन किया और उस सभा में सब से ऊँचा सिंहासन उस सती स्त्री को गुरू रूप में समर्पित किया । नगर के सभी लोग सोच रहे थे कि आज इस राजा का जीवन किस प्रकार अचानक बदल गया है ।

राजा ने सभा में कुछ संक्षिप्त भाषण देते हुए कहा कि मेरे नगर निवासियों, आज मेरे घोर अन्धकारमय जीवन को, इस साध्वी सती स्त्री ने प्रकाशमय बना दिया है । मैं इनका बदला कभी जन्म जन्मातर में भी नहीं चुका सकता । यह मेरी गुरू हैं और इनकी महान कृपा से अब मेरा शेष जीवन केवल धर्मानुकूल मार्ग से ही व्यतीत होगा । राजा के इस वक्तव्य को सुनकर नगरनिवासियों में बड़ा भारी आनन्द छा गया, और उन सब लोगों ने राजा के गुरू को उच्च ध्वनि के साथ तीन बार जै-जैकार की । उसके बाद सभा विसर्जित हो गई ।

दूसरे दिन राजा ने अपने गुरू का संकेत पाकर उनके सभी लोगों के सहित उस गुरूस्वरूप स्त्री को, उनके गाँव तक पहुँचाने के लिये सब प्रकार का सुन्दर प्रबन्ध करवा दिया । और अपने नगर की सीमा तक, राजा भी अपने कर्मचारियों सहित उन सबको पहुँचाने आया । राजा ने सीमा पर पहुँच कर अपने गुरू के चरणों में दंड़वत् करके विदा ले ली । और उधर वह सती स्त्री अपने संगी-साथियों सहित अपने गाँव में सुरक्षित पहुँच गई । उस दिन के बाद से हजारों लाखों व्यक्त्यिों में तथा गाँव-गाँव में यह बात फैल गई कि जगन्नाथ पुरी का राजा धर्मात्मा हो गया है । एक सती स्त्री के प्रताप से संसार की सभी युवा स्त्रियों के लिये, जगन्नाथ पुरी के दर्शन सुलभ हो गये ।

यम के दूत और गोलोक धाम

एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण का जिद्दी स्वभाव वाला बालक रहता था। इसकी उम्र लगभग बारह साल की हो गई थी। मगर वह वर्षों पहिले से ही एक काम को बराबर करता चला आ रहा था कि सुबह से श्याम तक सारे गाँव में छिपे-छिपे चक्कर लगाता रहता था, और जहाँ कहीं भी किसी के घर में गाय और बछड़ों को अलग-अलग बँधा हुआ देख लेता, वहीं पर चुपके से आकर बछड़े-बछड़ियों की रस्सी को खोलकर तुरन्त भाग जाता था। और वे खोले हुए बछड़े गायों का दूध पी जाते है। इस प्रकार गाँव के सभी लोग परेशान थे। कभी-कभी वह इस ब्राह्मण के बालक को पकड़ लेते थे और मारपीट कर छोड़ देते थे। मगर इतने पर भी यह कार्य बन्द नहीं हुआ। इस जिद्दी बालक की यह आदत दिनों दिन और मजबूत होती चली गई। इस बालक के हृदय में ऐसा विचार रहता था कि यदि कभी-कभी थोड़ी बहुत मार पड़ जायेगी तो पिट लेंगे, लेकिन इस काम को मै कतई बन्द नही करूँगा, क्योंकि गाँव के आदमी बड़े बदमाश है कि गाय के बच्चों को अपनी माताओं से अलग बाँधकर उन्हें भूखा रखते है और जिस माँ के दूध पर बंच्चों का पूरा अधिकार होता है, उस दूध को, बच्चो को न देकर, सब दूध स्वयं पी जाते है। इस लिये गाँव के सभी आदमियों का यह व्यवहार, गाय को और गाय के बच्चों को दुख देने के सिवाय और कोई नही है। इन लोगों का यह सरासर अन्याय है कि गाय बच्चों के हक का दूध ये सब गाँव वाले पी जाते है। इस ब्राह्मण के हृदय में यह भावना सदैव

जागती रहती थी, और मन में सोचता था कि यदि कोई व्यक्ति मुझको मेरी मां से जबरदस्ती अलग कर दे तो मुझको और मेरी माता को कितना भारी कष्ट होगा। इसी प्रकार इन गायों को और गायों के बच्चों को सदैव कष्ट होता रहता है।

यह ब्राह्मण का अबोध बालक सारे दिन छिपे तरीके से सारे गाँव में चक्कर लगाता रहता था और मौका पाते ही गाय की रस्सी खूँटे से खोलकर तुरन्त भाग जाता था। उधर गाँव के भी बालक के इस कार्य से बड़े परेशान हो गए थे और सदैव इसे पकड़ने की ताक में लगे रहते थे। कभी-कभी बालक उन लोगों के हाथपड़ भी जाता था। और तब उसे काफी मार सहनी पड़ती थी। इस प्रकार इस बालक का यह कार्यक्रम कुछ वर्षो तक चलता रहा। पर गायों और बछड़ों का विशेष आशीर्वाद भी इस बालक को प्राप्त होता रहता था।

एक दिन अचानक एक जहरीले सर्प ने इस बालक को डस लिया। सर्प के डँसते ही वह बालक मर गया। इसके बाद उस बालक की मृत आत्मा को, यम के दूत पकड़ कर ले गये। यम के दूत जिस समय किसी भी आत्मा को सूक्ष्म शरीर के द्वारा यमराज के पास ले जाते हैं, उस समय उनके लिये यह नियम लागू रहता है कि यदि वह मृत आत्मा पापात्मा है तो उसे यम के दूत दक्षिणायन मार्ग के द्वारा यमलोक में ले जाते हैं और यदि वह मृत आत्मा पुण्यात्मा है तो उस उत्तरायण मार्ग के द्वारा यमपुरी में ले जाते हैं। इस ब्राह्मण बालक को वे यम के दूत उत्तरायणमार्ग के द्वारा ले जा रहे थे। उस उत्तरायण मार्ग में भगवान श्री कृष्ण का गोलोक-धाम पड़ता था। यम के दूतों ने अपने प्राचीन नियमों के अनुसार उस बालक को गोलोकधाम के दरवाजे पर खड़ा करके कहा देखो यह भगवान श्री कृष्ण का गोलोक धाम है, इसके दर्शन

कर लो। बालक वहीं पर ठहर कर बाहर-भीतर की सभी चीजों को बड़ी सावधानी के साथ देख रहा था। भीतर एक गोलोकधाम के दरवाजे पर श्री कृष्ण की एक बड़ी सुन्दर तस्वीर लगी हुई थी। उस तस्वीर का यह नियम था कि यदि कोई मृत आत्मा साधारण पुण्यवती होती थी तो वह तस्वीर केवल तस्वीर ही के रूप में उस व्यक्ति को दिखलाई देती थी, और यदि वह मृत आत्मा कोई तीक्ष्ण पुण्य वाली होती थी तो वह तस्वीर उस व्यक्ति के सामने कुछ मुस्करा देती थी। इसी नियम के अनुसार वह तस्वीर इस बालक को देखकर मुस्कराई और तस्वीर के अन्दर से श्रीकृष्ण कहने लगे, कहो बालक, क्या तुम अन्दर आकर इस गोलोक धाम की सैर करना चाहते हो? यह बालक गोलोक धाम की महिमा को किंचित् मात्र भी नहीं जानता था, किन्तु उसने उस बगीचे के अन्दर गायों और बछड़ों को खुले हुए विचरते देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य होने लगा कि क्या यहीं इन पर रस्सी बाँधने का कोई प्रतिबन्ध नहीं है? इसी कौतुहल को अच्छी तरह समझने के लिये उस बालक ने तुरन्त उत्तर दिया कि हाँ, मै इस बगीचे को अन्दर से देखना चाहता हूँ। बालक की मन्शा को अन्तरयामी भगवान जान रहे थे। उन्होंने तस्वीर के अन्दर से यमदूतों को आज्ञा दे दी कि तुम दोनों इसी दरवाजे पर खड़ें रहो और इस बच्चे को अन्दर भेज दो। यमदूतों ने तुरन्त बच्चे को छोड़ दिया, और अन्दर जाने के लिये आदेश कर दिया। वह गरीब ब्राह्मण का बालक जब उस बगीचे में चला गया, तो उसने वहाँ पर हजारों-लाखों गायों का और गायों के बच्चों को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रतापूर्वक विचरते देखा। जब यह बालक आगे बढ़ता चला गया तो उसने तरह-तरह के सरोवर, नदी, सुन्दर, सुन्दर फल फूलों से लदे हुए पेड़ों को देखा और उस विशाल लम्बे-चौड़े बगीचे में, चारों तरफ

मोर, बन्दर, कोयल, तोते, हिरन खरगोश आदि अनेकानेक पशु-पक्षियों को किलोल करते हुए देखा। पेड़ों में आम, जामुन, केले, अमरूद, काफी तादाद में लगे हुए थे। सुन्दर सुन्दर गायों के झुंड के झुडं विचरण कर रहे थे तथा गाँव के अनेकों बालक गोप ग्वाल भी वहाँ कूदते-फाँदते खेलते डोल रहे थे। यह बालक बगीचे के अन्दर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता था, त्यों-२ इसका आनन्द भी बढ़ता जा रहा था। कुछ दूर और आगे बढ़ने पर इसने देखा कि बगीचे के बीचो बीच एक बहुत बड़ा ऊँचा मन्दिर बना हुआ है जिसके ऊपर दीवालों में जवाहरात जगमगा रही है। उसकी चमक को देखकर यह बालक चकाचौंध में पड़ गया। फिर थोड़ा आगे बढ़ते ही उस मन्दिर के अन्दर एक सोने के रत्नजटित दिव्य सिंहासन पर श्री राजा कृष्ण जी को विराजमान देखा। उनके सिर पर हीरों से जड़ाऊ मुकुट के ऊपर मोर पंख लगा हुआ था, गले में सुन्दर पीताम्बर था, हृदय पर मणियों की माला लटक रही थी, मस्तक पर सुन्दर तिलक मन को मोहित कर रहा था, हाथ में सुन्दर वंशी थी, इन दोनों की महान सुन्दर छवि को देखकर यह बालक धीरे-धीरे अपने शरीर की सुध भूलता जा रहा था। इसने सोचा कि इस बड़े विशाल बगीचे के यही दोनों स्वामी मालूम होते हैं, इसलिये इस बालक ने उन दोनों के सम्मुख पहुँचते ही हाथ जोड़कर दंडवत् प्रणाम किया और मन में संकोच कर रहा था कि न मालूम ये मुझसे क्या पूछ बैठेंगे।

इस बालक के नजदीक पहुँचने ही भगवान श्री कृष्ण ने कुछ मुस्कराते हुए कहा कि कहो बालक, क्या तुमको यह जगह पसंद आई है और क्या तुम यहाँ रहना चाहते हो? बालक ने कहा महाराज, यह जगह मुझे बेहद पसंद आई है किन्तु डर इस बात का है, कि जो काम मैं हमेशा से करता आया हूँ वह काम मैं यहाँ भी

करूँगा तो, मुझे यहाँ कोई मारेगा तो नहीं?

भगवान हँसकर बोले, बेटा यहाँ तो तुम जो चाहो उसे रात-दिन करते रहना। यहाँ तो तुमको कोई एक अंगुली भी नहीं लगा सकता। किसी की यह हिम्मत नहीं है कि तुम्हारी ओर कोई टेढ़ी नजर से भी देख ले। यदि तुम यहाँ रहना चाहते हो तो, मैं तुम्हारे लिये यहाँ रहने का पक्का प्रबन्ध करवा दूँ।

इस बात को सुनकर बालक बड़ा मगन हो गया और बड़ी खुशी के साथ बोल उठा कि तब तो मै इस स्थान में ही हमेशा रहना चाहता हूँ, आप मुझे कभी फिर इस स्थान से बाहर तो नहीं निकाल देंगे।

इस भोले बालक के शुद्ध हृदय की बातों को सुनकर युगल सरकार को बड़ी भारी प्रसन्नता हुई। उन्होंने दरवाजे पर खड़े हुए दोनों यम के दूतों को तस्वीर के अन्दर से कहा, देखो तुम लोग अपने-अपने स्थान को चले जाओ। यह बालक अब तुम्हारे साथ नहीं जायेगा, क्योंकि वह हमेशा के लिये हमारी मेहमानदारी में मौज करेगा। तुम यमराज से जाकर हमारा संदेश कह देना कि उस बालक ने हजारों गायों का और हजारों बछड़ों का बहुत भारी तादाद में आशीर्वाद प्राप्त किया है। अब यह बालक तुम्हारी यमपुरी में कभी नहीं आयेगा। उसका खाता बराबर कर देना; क्योंकि यह अब मेरे निज गोलोकधाम पर अधिकार प्राप्त कर चुका है। ऐसी सूरत में यदि फिर भी उसके खाते में कोई भोग शेष रह जाय तो यमराज मेरे खाते में उसे डाल दें। मै सब भुगत लूँगा। किन्तु उस बालक के खाते में कोई भी भोग और शेष नहीं रहना चाहिये। यम के दोनों दूत उस तस्वीर के अन्दर का आदेश पाकर उदास मन से चल दिये और उन्होंने यमराज के यहाँ पहुँच कर उस बालक का सारा चरित्र यमराज से कह दिया। यमराज

ने भगवान श्री कृष्ण की आज्ञा को शिरोधार्य कर लिया और उस बालक का खाता बराबर करते हुए, कहने लगे कि हमारी इसमें क्या चल सकती है । मालिक का मालिक कौन होता है । उस मालिक की रीझन ही अनोखी है इस बालक ने कोई खास जप, तप, दान, पुण्य कुछ नहीं किये थे, केवल गायों और बछड़ों के आशीर्वाद से इतना ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया है जिसके लिये देवता लोग भी तरसते रहते है ।

मरने के बाद कर्म का फल

प्राचीन काल में जब कि मुसलमानी राज्य था, एक मुसलमान राजा के नौजवान लड़के का नाम हातिम था । हातिम बचपन से ही खुदा में जबरदस्त भरोसा रखता था, और दुनियाँ के हर आदमी की सेवा करना ही अपना परम कर्त्तव्य मानता था । अर्थात् हर इन्सान की सेवा को ही वह खुदा की सेवा मानता था । इसलिये हातिम ने अपनी जवानी में ही, अपना घर बार सब छोड़ दिया था, और देश-देशान्तरों में घूम-घूम कर हर एक आदमी की तकलीफ और दुखों को दूर करने में ही रात-दिन लगा रहता था । इस गरीब परिवार हातिम को हमेशा जयादातर जंगल और पहाड़ों के रास्ते ही तय करने पड़ते थे । एक दिन हातिम रात के समय एक जंगल के कब्र स्थान में लेटकर चांदनी रात का आनन्द ले रहा था । वह बड़ा बहादुर और निडर तबियत का आदमी था । सच्चा परोपकारी होने के कारण, खुदा इसकी हर वख्त मदद करता था । हातिम की आँखें खुली हुई थी । आधी रात बीत चुकी थी तो अचानक उसने देखा कि सामने जितनी भी कब्रे बनी हुई थी, उन सबके मुँह एक

साथ खुल गये, और हर एक कब्र में से एक एक आदमी निकल कर बैठ गया। बीस बीस कब्रें आमने-सामने दो पंक्तियों में बनी हुई थी, और और इन दोनों पंक्तियों के बीच सिरे की तरफ एक बड़ी कब्र बनी हुई थी। इस प्रकार कुल इकतालीस कब्रें थी, और इन सबों में से इकतालीस आदमी बैठ गये। जरा सी देर में सभी आदमियों के सामने सुन्दर तौर से खाने के सामान के सहित खाने के लिये पत्तलें आ गयीं। उन चालीसों आदमियों को तो खाने का सामान प्राप्त हुआ लेकिन उस बड़ी कब्र वाले को खाली पत्तल मिली थी। वे चालीसों आदमी तो अपने सामान बड़ी खुशी के साथ खाने लगे, किन्तु वह इकतालीसवाँ आदमी चुपचाप सुस्त बैठा उन चालीसों आदमियों की तरफ निराशा भरी निगाहों से देख रहा था। हातिम ने ज्योंही इस आदमी को इस बुरे तरीके से परेशान देखा, तो तुरन्त ही चुपचाप अपने बिस्तर से उठकर उस आदमी के पीछे पहुँचा और धीमी आवाज में बोला कि ऐ बदनसीब आदमी, क्या मैं तुझसे यह पूछ सकता हूँ कि तेरे साथ यह बेइन्साफी क्यों हो रही है; जबकि कब्र के अन्दर से जगने वाले सभी आदमियों को खाना दिया गया है। केवल तुम अकेले को खाना क्यों नहीं दिया जाता है। हातिम के इन शब्दों को सुनकर उस व्यक्ति ने दुःखी हृदय से इसकी तरफ देखते हुए कहा कि ऐ नौजवान, मेरी इस लम्बी कहानी को सुनकर भी तुम क्या कर सकते हो। यहाँ जो सबको खाना मिल रहा है वह उन लोगों के अच्छे कर्म का फल है। और मुझे जो खाना नहीं मिलता है वह मेरे बुरे कर्म का फल है। आज मुद्दतों से मैं अन्न के लिये तरस रहा हूँ मगर मेरी कोई पेश नही पड़ती है।

इस दुखिया की दुखभरी बातों से हातिम का हृदय भी दुःख से भर गया। हातिम ने बड़े मिठास के साथ कहा कि भाई , क्या

मै किसी भी प्रकार से तुम्हारी कोई मदद कर सकता हूँ। यदि मेरे किसी भी कार्य से तुम्हें खाना मिल सकता हो तो तुम नि:संकोच भाव से मुझसे कहो, मै तुम्हारी मदद के लिये कोई भी बात उठाकर नहीं रखूँगा।

उस कब्र वाले बुडढे ने आशा और हमदर्दी से भरी बातें सुनकर कहा भाई क्या मै तुम्हारा नाम पूछ सकता हूँ। नौजवान ने कहा बाबा मेरा नाम हातिम है। बुडढे के चेहरे पर खुशी की रेखा खिंच गई। उसने कहा कि क्या तुम्हीं वह हातिम हो, जिसने अपनी सारी जिन्दगी दूसरों के लिये ही बेच रखी है। आज मालूम होता है कि खुदा ने मेरे ऊपर कुछ रहम किया है और किस्मत के दिनों ने कुछ पलटा खाया है जो कि तुम्हारे जैसे दाता सखी से मुलाकात हुई है। अच्छा भाई, अब मै तुमको अपनी दास्तान सुनाता हूँ। मुझे पूरा पूरा यकीन है कि तुम्हारे द्वारा मेरा अवश्य दुख टल जायेगा।

बुड्ढा कहने लगा कि देखो बेटा, मै कुछ वर्षों पहिले चीन देशका सबसे बड़ा व्यापारी था। मेरे पास चालीस नौकर थे, मैं इन लोगों के साथ एक देश से दूसरे देश को, माल की खरीद-बेच करता रहता था। हम लोगों को कभी पैदल के रास्ते से तो कभी जल के रास्ते से सैकड़ों कोसों की यात्रा करनी पड़ती थी। मैंने करोड़ों रुपया कमाया था। मै चीन का सबसे बड़ा सौदागर था। इत्तफाक की बात थी कि एक दफा मै अपने चालीसों आदमियों के साथ बहुत सा धन कमाकर आ रहा था कि बहुत बड़े जंगल में अचानक सशस्त्र डाकुओं ने बहुत भारी तादाद में हमला कर दिया। हम लोगों ने काफी मुकाबला करने की कोशिश की, किन्तु उन्होंने मुझको और मेरे चालीसों आदमियों को कत्ल कर दिया और जो कुछ हम लोगों के पास धन था उसे वे लूट कर ले

गये। तभी से हम लोगों की इकतालीस कब्रें इस जंगल में बनी हुई है। फर्क इस बात का है कि ये मेरे चालीसों आदमी तो हमेशा, राहे खुदा पर कुछ न कुछ खैरात करते ही रहते थे, और मुझे खैरात से सख्त नफरत थी। मै खुदा के नाम पर एक पैसा भी किसी को कभी नहीं दिया करता था। इसी बात का नतीजा है कि उसी दिन से रोजाना मेरे इन चालीसों आदमियों को रात को बारह बजे के बाद, पत्तलों पर खाना लगकर आता है और ये लोग पेट भरकर भोजन कर लेते है। लेकिन मेरे लिये रोजाना खाली पत्तल आती है। मै धन के घमंड में किसी को कुछ नही समझता था और खुदा के नाम की बात तक भी, किसी के मुँह से सुनना पसन्द नहीं करता था। अतः उस दिन से लेकरआज तक रोजाना मैं अपनी करनी पर बेहद पछताता रहता हूँ। मेरी लाखों करोड़ों की सम्पत्ति तो मेरे लड़कों ने आपस में बाँट ली होगी, और लाखों करोड़ों की सम्पत्ति को मै गुप्त खजाने की शक्ल में अपने मकान में छोड़ आया हूँ, और लाखों की सम्पत्ति डाकू लोग लूट कर ले गये। मुझे यह कतई मालूम नहीं था कि असली कमाई वह है, जो खुदा के नाम खैरात की जाती है। और नकली वह है जिसे इन्सान यहीं छोड़कर मर जाता है। इसलिये मुझे सख्त अफसोस इस बात का है कि, मैंने वह नकली कमाई की थी, जो कि मरने के बाद एक कौड़ी का भी फायदा मै उस सम्पत्ति का नहीं उठा सकता हूँ।

उस बुड्ढे की बातों को बड़े ध्यान से सुनते ही हातिम का हृदय दुखी हो गया। हातिम ने कहा बाबा मुझे अब यह बात बताओ कि मै तुम्हारी किस प्रकार से मदद कर सकता हूँ।

बुड्ढे ने कहा ऐ गरीब परवर खुदा के बन्दे, अगर तुम मेरी कुछ मदद करना चाहते हो तो सुनो तुमको मेरे चीनदेश में जाना

पड़ेगा । वहाँ जाकर पूछ लेना कि चीन के सबसे बड़े मशहूर सौदागर का कौन सा मकान है । फिर मकान में जाकर मेरे लड़कों से मिलना और कहना कि मै तुम्हारे पिता का गड़ा हुआ धन निकलवा दूँगा, लेकिन शर्त यह रखें कि मै राजा के सिपाहियों के सामने उस गुप्त खजाने को बतलाउँगा । और फिर आप राजा के दरबार में जाकर मेरी गुप्त बातें बताकर वहाँ से सिपाहियों की टोली अपनी मदद के लिये साथ में ले आना, वरना तुम्हारे निकाले हुए धन को मेरे बदचलन चारों लड़के जबरदस्ती लूटकर ले जायेंगे और मेरा भला नहीं हो सकेगा ।

हातिम ने कहा बाबा तुम बेफिकर रहा । मुझे खुदा ने इतनी काबलियत दी है कि तुम्हारे उस पैसे में से एक पैसा भी मैं नहीं लेने दूँगा । तुम गुप्त खजाने का सही पता बता दो और फिर उस खजाने के माल को मै। किस तरह से क्या करूँ ये सभी बातें तुझे अच्छा तरह से समझा दो ।

बुड्ढे ने कहा बेटा खुदा तुम्हारी हजार वर्ष की उम्र करे । अच्छा तो सुनो–देखो जिस वक्त तुम मेरे मकान के अन्दर पहुँचोगे तो चित्रकारी का एक सुन्दर चित्र बना हुआ है, उस चित्र के अन्दर दाहिनी तरफ एक गोल बिन्दी का निशान बटन के बराबर बना हुआ है, जो कि उसी चित्र में एक आवश्यक निशान की जगह पर बना हुआ है, वह निशान उस दरवाजे का गुप्त ताला है । इसलिये तुम अपनी सबसे छोटी अंगुली को उस निशान के ऊपर जोर से दबा देना, तो तुरन्त ही एक किवाड़ अपने आप खुल जायेगा और उस अलमारी के अन्दर तुमको करोड़ों की सम्पत्ति सामने ही रखी हुई मिलेगी । बस फिर तुम उस समस्त सम्पत्ति को मेरी तरफ से, राहे खुदा पर फकीरों को भोजन करा देना । इतना कर देने से मेरी इस जिन्दगी का सुधार सुख की शक्ल में बदल जायेगा और

मेरी इस कठिन मुसीबत से मेरा पिण्ड सदा के लिये छूट जायेगा । आपका मेरे ऊपर बड़ा भारी अहसान होगा ।

हातिम ने उस बुड्ढे सौदागर की तमाम बातों को बड़े ध्यान से सुनकर समझ लिया और बोला अच्छा बाबा, खुदा चाहेगा तो तुम्हारी मुसीबत अब बहुत जल्द खत्म हो जायेगी । तुम पूरा विश्वास रखो मैं तुम्हारे बताये हुए तरीको से ही, तुम्हारा काम पूरा करके ही मानूँगा । अच्छा अब रुखसत चाहता हूँ । हातिम ने जैसे ही उस बुड्ढे को आखिरी सलाम किया वैसे ही वे इकतालीसों कब्रों के सभी आदमी, कब्रों के अन्दर समा गये और सभी कब्रों के मुँह तुरन्त बन्द हो गये । हातिम वहाँ से आगे चल दिया और चीन देश का पता लगाता हुआ कुछ समय बाद ही चीन देश में जा पहुँचा । वहाँ लोगों से, चीन के सबसे बड़े सौदागर का मकान पूछते-पूछते उसी मकान पर पहुँच गया । हातिम ने बाहर से दरवाजे को खटखटाया तो अन्दर से एक नौजवान आदमी ने आकर दरवाजा खोला और पूछने लगा कि आप कौन है और किस काम से आना हुआ है । अन्दर तशरीफ लाइये । हातिम मकान के अन्दर चला गया, और एक कुरसी पर बैठते हुए बोला, भाई साहब, आपको यह सुनकर बड़ा ताज्जुब होगा कि मैं आपके पिता से मिलकर आया हूँ और उनके बताये हुए गुप्त धन को आपके मकान में से निकालकर फकीरों को खैरात करूँगा ।

हातिम की बात को सुनकर सौदागर के चारों लड़के हँसने लगे कि हमारे बाप को मरे हुए बहुत समय निकल गया है और आजतक कोई भी आदमी मरे हुए आदमियों से मिलकर नहीं आ सका है, तुम कैसे मिलकर आये हो । तुम किसी प्रकार की गलतफहमी में हो । अगर तुम इस मकान में से गुप्त धन निकाल कर दिखा दो तो हम तुम्हारी बात का पक्का यकीन कर सकते

है । अन्यथा तुम्हारा ख्याल गलत मालूम पड़ता है या तुमने किसी आदमी से धोखा खाया है ।

हातिम ने कहामै तुम्हारे इसी मकान में से गुप्त धन निकाल कर अवश्य दिखा दूँगा । मगर पहिले मुझे राजसभा में जाकर इत्तला देनी होगी। इसके बाद मै आप लोगों के सामने ही उस गुप्त धन को निकाल कर तुरन्त दिखा दूँगा । हातिम की बातों से वे चारें लड़के बड़े हैरान थे, इन लड़कों की यह भी मन्शा थी कि यह गुप्त धन किसी प्रकार से हम लोगों के हाथ लग जाना चाहिये ।

हातिम ने उन चारों लड़कों को साथ लेकर राजसभा मे प्रवेश किया और राजा साहब के सम्मुख पहुँच कर हातिम ने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया, और अदब से खड़ा हो गया । तब राजा साहब ने हातिम से पहिले नाम पूछा, और बाद में आने का कारण पूछा । हातिम ने बड़ी नम्रता के साथ कहा कि गरीबपरवर, मेरा नाम हातिम है । मै इन चारों लड़कों के मृतक पिता से कब्रस्तान में मुलाकात करके आया हूँ । उसके बताये हुए गुप्त धन के खजाने को मै आपके सामने इस सौदागर के मकान में से निकालना चाहता हूँ, क्योंकि उसके कहने के मुताबिक, मै उस तमाम धन को, खुदा की राह पर खैरात करना चाहता हूँ । उस सौदागर की मुसीबत तभी दूर हो सकेगी जब कि इस सारे धन की रोटियाँ फकीरों के पेट में पहुँच जायेगी, क्योकि इस सौदागर ने अपने जीवन में केवल धन कमाना ही सीखा था, खुदा की राह पर एक पैसा भी किसी को देना नहीं जाना था । इसी का नतीजा है कि उसके चालीसों साथी जो उसके साथ मारे गये थे, उन सबको रोजाना आधी रात पर खाने को पेट भरकर मिलता है, लेकिन इस सौदागर को रोटी का एक निवाला भी खाने को नही मिलता ।

हातिम की इस दास्तान को सुनकर राजासाहब ने बड़ा

ताज्जुब मानते हुए सोचा कि, अगर यह आदमी उसके मकान में से गुप्त धन के खजाने को निकलवा देंगा तो इसकी और तमाम बातें भी सही मान ली जायेगी । वरना यह झूठा समझा जायेगा । यह सोचकर राजा साहब ने कहा कि ए हातीम हम खुद तुम्हारे साथ चलकर देखेंगे कि तुम किस तरीके से उस सौदागर का खजाना निकालोगे । इतना कहकर राजा साहब सौ-पचास सिपाहियों को साथ में लेकर हातिम के साथ उस सौदागर के मकान को चल दिये । वहाँ पहुँचकर राजा साहब एक तरफ खड़े हो गये और सौदागर के चारों लड़कों को भी एक तरफ खड़ा करवा दिया । तब हातिम को खजाना निकालने की आज्ञा दी । हातिम ने मन में खुदा का ध्यान करते हुए दरवाजे के सामने वाली दीवाल पर नजर घुमाई तो उसे वह गोल बिंदी का निशान चित्र में साफ दिखलाई दिया । हातिम ने उस चित्र के पास पहुँचकर उस गोल बिन्दी के अन्दर अपनी सबसे छोटी अंगुली को जोर से घुसेड़ दिया । अंगुली के अन्दर घुसते ही खटाके के साथ एक किवाड़ खुल गया और आलमारी के अन्दर करोड़ों की सम्पत्ति रखी हुई तुरन्त दिखलाई दे गई । हातिम ने राजा साहब से कहा कि गरीबपरवर, आप इस धन को अपने हाथ से उठाकर मेरे सुपुर्द कर दीजिये, ताकि यह सौदागर के लड़के इसमें से कोइ हिस्सा न ले सकें ।

राजा साहब ने कहा कि इस धन में से एक पैसा भी कोई दूसरा आदमी नहीं ले सकता है । मै तुम्हारी अकलमन्दी पर बहुत खुश हूँ । तुम इसे अपनी मर्जी के मुताबिक खैरात में लगा सकते हो । राजासाहब ने अपने पचास सिपाहियों को उसी जगह पर इन्तजामी मामले के लिये छोड़ते हुए कहा कि जब तक तुम्हारा खैराती काम पूरा नहीं हो जाता तब तक यह मेरे पचास सिपाही

तुम्हारे हुकुम में हाजिर रहेंगे। राजा साहब अपने बचे हुए सिपाहियों को साथ लेकर अपने राजदरबार में चले गये और हातिम ने पचासों मजदूरों को लगाकर लाखों मन तरह-तरह के खाने और पकवान तैयार करवाये। तथा लाखों मन मिठाई तथा लाखों मन पूरी कचौड़ी तैयार करवाई। और उस सौदागर के मकान पर रोजाना हर वक्त साधू और फकीरों को खाना बँटने लग गया। इस प्रकार करीब एक महीने तक फकीरों को रात दिन भोजन मिलता रहा। दूर दूर तक के फकीर और भूखों ने खूब पेट भरकर खाना खाया। चारों तरफ यह बात फैल गई कि चीन के बड़े सौदागर के मकान पर बड़ी जबरदस्त खैरात चल रही है। जिस दिन से यह खैरात का काम चालू हुआ था, उसीदिन से सौदागर को कब्र स्थान में खाना मिलने लग गया था। और जब यह खेराती काम खत्म हो गया, तब हातिम ने उनके चारो लड़कों से हाथ जोड़कर विदा माँगी, और वहाँ से तुरन्त चल दिया। हातिम के चल देने पर वहाँ की बस्ती के सैकड़ों आदमी इसे नगर की सीमा तक बड़ी खुशी के साथ पहुँचाने आये। तब हातिम ने सबों को हाथ जोड़कर विदाई दी औ़र वह सीधा उसी सौदागर की कब्र की तरफ चल दिया।

कुछ दिनो के बाद जब हातिम उस मुकाम पर पहुँच गया, तो उसने दिन भर वहीं अपना समय व्यतीत किया और जब आधी रात हुई तो, उस दिन की तरह सभी कब्रों के दरवाजे खुल गये और जब चालीसों आदमियों को एक साथ खाना आया तो उस सौदागर को सबसे बढ़िया खाना मिला। सभी लोग खाने में लग गये, तब हातिम ने पीछे की तरफ से चुपचाप जाकर कहा कि बाबा सलाम बुड्ढे सौदागर ने हातिम की तरफ प्रेम भरी नजरों से देखते हुए कहा, कि शावास बेटा, तुम जुग जुग जियो, तुम्हारी

बदौलत मेरी बर्बाद जिन्दगी, सुनहले रूप में बदल गई सूखा हुआ चमन फिर से हरा हो गया, ऐ हातिम, तुम्हारी तारीफ करना मेरी जबान की शक्ति से बाहर है, क्योकि तुम केवल इन्सान ही नही हो, बल्कि खुदाबन्द के प्यारे फरिस्ते हो । तुम्हारा नाम और तुम्हारा काम दुनिया में सदा अमर रहेगा । मैंने अब यह अच्छी तरह से समझ लिया कि जिस कमाई का धन अपने लिये खर्च किया जाता है वह कुछ भी काम नहीं आता और जो धन सेवा या पराये के लिये खर्च किया जाता है वहीं कमाई सच्ची कमाई है जो मरने के बाद भी काम आती है । इतना कहते ही दोनों ने आपस में सलाम किया और कब्रों के दरवाजे पुनः बन्द हो गये । तब हातिम खुदा का नाम लेकर आगे चल दिया ।

गीता के एक श्लोक का परिणाम

एक गाँव में एक ऐसे वेश्य की अनाज की दुकान थी, जो कि दुकान पर कतई नही बैठता था, बल्कि दुकान के ऊपर के कमरे में ही हमेशा रहता था, और सदैव भगवान का भजन करता रहता था । जो कोई ग्राहक अनाज लेने आता था, तो पहले कमरे में जाकर सेठजी को रुपये दे आता था, तब वह दुकान की ताली उस ग्राहक को दे देते थे । ग्राहक सेठजी के बताये हुए भाव के अनुसार अपने हाथों से अनाज तौलकर ले जाता और पुनः ताली सेठजी को दे जाता था । इस प्रकार सेठजी की दुकानदारी बहुत समय से चल रही थी ।

एक दिन एक ब्राह्मण ने यह सोचा कि सेठजी तो किसी भी ग्राहक को अपने सामने अनाज तौलकर नहीं देते, हर एक को

ताली पकड़ा देते है और कह देते है कि इतना अनाज तोलकर ले जाइये । इसलिये मै कुछ अनाज अधिक तोलकर ले आऊँगा । ऐसा विचार करके वह ब्राह्मण सेठजी के कमरे में गया और पाँच रुपये देकर बोला मुझे गेहूँ चाहिए सेठ जी ने ताली ब्राह्मण को दे दी । ब्राह्मण नें पाँच सेर गेहूँ अधिक लेकर अपनी पोटली में डाल लिये । फिर ताली सेठजी को देकर ब्राह्मण अपने घर चला गया । घर जाकर ब्राह्मण ने जब अनाज तौलकर देखा तो, असली तौल में से भी पाचँ सेर गेहूँ कम निकले । ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ और सोचने लगा कि मैंने तौल करने में भूल तो नहीं की है । अस्तु, वह ब्राह्मण पोटली को सिर पर रखकर फिर सेठजी के पास गया और कहने लगा कि सेठजी मै गेहूँ तोलने में भूल गया था, गेहूँ कम निकले है । सेठजी ने ब्राह्मण को बड़ी प्रसन्नता के साथ पुनः ताली देते हुए कहा महाराज, फिर से तौलकर ले जाइये । ब्राह्मण ने दुकान में जाकर गेहूँ की पोटली खोलकर, गेहूँ के ढेर में मिला दी । और फिर से उसने बड़ी सावधानी के साथ गेहूं तौले, और दस सेर गेहूँ अधिक अपनी पोटली में डाल लिये । इसके बाद वह सेठजी को ताली देकर अपने घर चला गया । घर पर पहुँच कर उसने फिर से गेहूँ तौले तो असली तौल में से भी दस सेर गेहूँ कम हो गये । ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य होने लगा । उसने सोचा कि मैंने खूब अच्छी तरह से समझकर गेहूं तौले थे, मैंने तौलने में भूल नहीं की है । या तो सेठजी के पास कोई करामात है या कोई जादू-मन्तर है, क्योंकि पहिले मैंने पाँच सेर गेहूँ ज्यादा ले लिये थे तो मेरे असल गेहूँ में से पाँच सेर ही और घट गये थे, और अबकी बार मैंने दस सेर गेहूँ अधिक ले लिये थे, तो मेरे असल गेहूँओं में से दस सेह ही और घट गये है । यह कोई मामूली बात नहीं है । यह तो कोई न

कोई सिद्धि का प्रताप है । इसी कारण से सेठ जी हर एक व्यक्ति को चुपचाप ताली दे देते है । इनके साथ कोई आदमी पहलेतो बेइमानी करता नही है, और यदि करता भी है, तो उसे उस चोरी का उल्टा परिणाम भोगना पड़ता है । अगर मै फिर उनसे यह कहूँ कि मेरे गेहूँ घट गये तो बड़े भारी शरम की बात होगी, क्योकि मैं अपने हाथों से ही दोनों दफा तौलकर लाया हूँ । सेठजी तो अपनी आँखो से देखते तक नहीं है, फिर यह कसूर मेरे सिर ही पड़ेगा ।

ब्राह्मण ने अनेक प्रकार के सोच-विचार करके, अन्त में यही निश्चय किया कि मुझे सेठजी से चलकर इस रहस्य की जानकारी अवश्य प्राप्त करनी होगी । ब्राह्मण उस गेहूँ की पोटली को लेकर पुनः सेठजी के पास गया, और उनके पास बैठकर कहने लगा कि सेठजी, मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ, यद्यपि मेरे लिये यह बड़ी शरम की बात है, किन्तु पूछे बगैर मन भी नहीं मानता हैं ।

सेठजी ने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज, जो कुछ पूछना चाहते है खुशी से पूछ लीजिये । इसमें शरम की कौन सी बात है । मै तो ब्राह्मणों का सेवक हूँ ।

ब्राह्मण ने कहा सेठ जी, आपके पास कौन सी सिद्धि या कौन सा जादू है अथवा कौनसी जन्त्र-मन्त्र की शक्ति है, यहीं आपसे जानना चाहता हूँ ।

सेठजी ने कहा महाराज, मेरे पास कोई जादू-मन्तर या सिद्धि नहीं है । आपने ऐसा ख्याल किस कारण से कर लिया है । ब्राह्मण ने कहा सेठजी मै यहाँ से पाँच रुपये के गेहूँ पहले लेने आया था, उस समय मै पाँच सेर गेहूँ बेईमानी से अधिक ले गया था, किन्तु जब घर पर जाकर तौला तो, मेरे असली अनाज की तोल में से भी, पाँच सेर गेहूँ और घट गये । मैंने अपनी तौलने की भूल

समझी और दुबारा आपके पास आया, फिर मैने अपना अनाज सब आपके अनाज मे डाल दिया और फिर दुबारा बड़ी भारी सावधानी एवं होशियारी के साथ मैने अपने पूरे गेहूँ तौल कर ले लिये । इसके बाद मैने दस सेर गेहूं अधिक बेइमानी के साथ अपनी पोटली मे और मिला लिये । किन्तु जब पुनः मैने घर पर जाकर गेहूं गेहूँ तोले तो मेरे असली गेहूँ की तौल मे से भी, दस सेर गेहूँ और घट गये तब तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा, और मैने अच्छी तरह से समझ लिया कि यह मेरे तौलने की भूल नही है, बल्कि यह तो केवल सेठजी की कोई गुप्त शक्ति का परिणाम है । इसीलिये वे अपने हाथों से अनाज तोलकर किसी को नही देते है, और बेफिकर हो अपने कमरे मे भगवान का भजन करते रहते है । इसीलिये सेठजी आपसे मेरी यही प्रार्थना है कि आप अब मुझसे कोई बात छिपा न रखें, और जो कुछ आपके पास गुप्त शक्ति का बल है, वह मुझे कृपा करके बतला दें, ताकि मेरी आत्मा को शान्ति मिल सके और मेरे हृदय का संदेह नष्ट हो जाय ।

सेठ जी ने उत्तर देते हुए, हाथ जोड़कर कहा कि, महाराज मै आपसे किसी प्रकार का छिपाव नही रखना चाहता हूँ, मेरे पास कोई ऋद्धि-सिद्धि का बल नही है, मै तो केवल गीता जी के एक श्लोक की मान्यता पर ही पूरा भरोसा रखता हूँ ।

अनन्याश्चिंतयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

अर्थात् भगवान ने इस श्लोक के अन्दर यह बतलाया है कि, जो कोई प्राणी, सब प्रकार के भरोसों को छोड़कर केवल मेरा ही चिन्तन और उपासना करता है, उस प्राणी की हर समय, हर प्रकार से कुशल और रक्षा का मै जिम्मेदार हूँ । इसलिये महाराज, मैने

सब के भरोसों को छोड़ दिया है, केवल प्रभु-चिन्तन में लगा रहता हूँ। वही भगवान मेरे हर प्रकार से नफा-नुकसान और कुशल-मंगल के जिन्मेदार है। इससे अधिक मेरे पास कुछ भी शक्ति नहीं है, और न मैने आपसे कोई बात छिपाकर ही रखी है। ब्राह्मण को सेठजी की बात पर पूरा भरोसा हो गया, ओर वह मन में अच्छी तरह से समझ गया, कि इनके पास जो कुछ भी शक्ति है, वह केवल इसी श्लोक के भरोसे की महान शक्ति है, और इसीलिये भगवान इनकी सब प्रकार से रक्षा कर रहे है।

ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा सेठजी आप धन्य है; क्योंकि भगवान में आपकी बड़ी निष्ठा है, और इसीलिये भगवान आपकी पूर्ण रूप से हर प्रकार से रक्षा कर रहे हैं। आज से मैं आपको इस विषय में गुरू मानता हूँ, क्योंकि मैं भी इसी वख्त से अपनी सारी जिम्मेदारियों को समाप्त करके, भगवान के भंजन में लग जाऊँगा। ब्राह्मण सेठजी को नमस्कार करके अपने घर पर पहुँचा और अपनी स्त्री को सारा वृत्तान्त कह दिया, और कहा कि अब मैं आज से, पैसा कमाने नहीं जाऊँगा, भगवान मेरे सभी कार्यो को घर बैठे पूरा करेंगे। ब्राह्मण ने बाजार जाना कतई बन्द कर दिया, और भगवान के भजन में लग गया।

कुछ समय बीत जाने पर घर की भोजन-सामग्री धीरे-धीरे समाप्त होने लगी तब ब्राह्मणी ने पति से विनयपूर्वक कहा कि, घर की भोजन-सामग्री प्रायः समाप्त हो चुकी है, तथा आपके यहाँ कभी-कभी साधू सेवा भी चलती रहती है। अब इस प्रकार से घर पर बैठे-बैठे काम नही चलेगा, इसलिये आप पूर्व की भाँति धन कमाने के लिये बाहर जाना शुरू कर दीजिये। आप ज्यों-ज्यो भगवान का भरोसा कर रहे हैं त्यों-त्यो गरीबी अपना अधिकार जमाती जा रही है। ब्राह्मण ने अपनी स्त्री की बात को अस्वीकार

करते हुए कहा कि देखो देवी, भगवान हमारे सभी कार्यों को घर बैठे अवश्य पूरा करेंगे । तुम विश्वास रखो ।

पति की बात को सुनकर ब्राह्मणी चुप हो गई और ब्राह्मण अपने भजन में लग गया, किन्तु धीरे-धीरे घर में भोजन का सर्वथा जब अभाव हो गया तो ब्राह्मणी ने अपने पहिनने के जेवरों को बेचना शुरू कर दिया और इस प्रकार कुछ समय और निकल गया । किन्तु फिर भी आमदनी का कोई स्रोत जब कहीं से प्राप्त नहीं हुआ तो फिर एक दिन ब्राह्मणी ने पति से नम्र निवेदन करते हुए कहा कि देखो, आप तो भगवान के भरोसे पर बैठे हो, कमाई करने कहीं नहीं जाते हो, इधर मेरे पहिनने के सारे जेवर भी समाप्त हो चुके है, अब इस प्रकार नहीं चलेगा । आप पहले की तरह कमाई करने के लिए जाना शुरू कर दीजिये अन्यथा बाल-बच्चे भूखे मरने लगेंगे । ब्राह्मण ने अपनी स्त्री को फिर से बातें बनाकर टालमटोल कर दिया, और मन में सोचने लगे कि मेरे लिये भगवान कहाँ जाकर सो गये है या गीता का यह श्लोक ही झूठा है । खेर देखा जायेगा, भगवान अवश्य सुनेंगे । ब्राह्मण फिर से भजन करने में लग गया ।

कुछ समय के बाद ब्राह्मणी ने घर के बर्तनों को भी बेचना शुरू कर दिया और यथाशक्ति गृहस्थी का पालन करती रही । अन्त में जब घर का सारा सामान समाप्त हो गया और भोजन-व्यवस्था का कोई साधन प्राप्त नहीं रहा तब ब्राह्मणी ने उस दिन कुछ कुपित होकर पति से कहा कि महाराज आप तो भगवान के भजन में लगे हुए हो, और भगवान आपकी तरफ से बेफिकर हो सो रहे है, घर के अन्दर जो कुछ भी जेवर-बर्तन वस्तुएँ थी, वे सब बिक चुकी है । अब एक दो दिन के लिए भी, खाने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं है । मेरी जहाँ तक चल पड़ी मैंने चीजों को बेचकर गृहस्थी का

पालन किया, मगर अब मेरे बस की कुछ भी बात नही है । आप जाने और आपका काम जाने । चाहे कमाई करने के लिए जाओ या भगवान का भजन करते रहो । अब तो आप जब अनाज लावेंगे तभी घर में चूल्हा जलेगा अन्यथा घर का सब कार्य बन्द रहेगा । ब्राह्मणी इतना कहकर वहाँ से चली गई और ब्राह्मण उसी समय सोच में पड़ गया ।

ब्राह्मण ने सोचा कि यह गीता के 'नवे अध्याय का बाइसवाँ श्लोक' गलत मालूम होता है अन्यथा अब तक तो भगवान कभी के हमारी मदद करने को आ गये होते । मैंने बहुत सय तक प्रभु की प्रतीक्षा की मगर नतीजा कुछ नही निकला । क्या सेठजी ने भी धोखा दिया है? खैर जो कुछ भी हो, मुझे अब यह भरोसा छोड़ देना चाहिये । इतना विचार करने के उपरान्त ब्राह्मण ने गीता के उस श्लोक पर हड़ताल पोत दी और उठकर चल दिये, ब्राह्मण ने मन में सोचा कि इधर तो घर का सब सामान समाप्त हो चुका है, और उधर मेरी आशाओं पर पानी फिर चुका है, इसलिये कुछ दिन के लिये मै बहाना बनाकर घर से निकल जाऊँगा, तो ये सब घर के आदमी भूखों मरकर समाप्त हो जायेगें, और मेरा इस गृहस्थी से सदा के लिये पिण्ड छूट जायेगा । ऐसा विचार करके पंडित जी ने अपनी स्त्री से कहा कि देवि, अब मै बाजार से सौदा लेने जा रहा हूँ और नदी में स्नान करता हुआ बहुत जल्दी लौटूँगा, तब तक तुम खाना बना लेना । इतना कहकर पंडितजी घर से बाहर चले गये ।

ब्राह्मणी को बड़ी प्रसन्नता हुई कि आज पतिदेव इतने दिनों के बाद कमाई करने के लिए गये है, इसलिये वह घर के अन्दर रसोई में गोबर का चौका लगाकर तैयारी करने लगी, कि इतने मे ही बाहर से किसी ने जोरों से आवाज देना शुरू किया पंडित जी

महाराज, पंडित जी महाराज ! ब्राह्मणी ने दरवाजे पर आकर पूछा आप कहाँ से आये है जरा ठहरिये, पंडित जी अभी स्नान करने गये हैं, आते ही होंगे। उस महान सुन्दर मुख वाले व्यक्ति ने कहा मुझे ठहरने की जरा भी फुरसत नहीं है, मै अमुक राज का प्रधान कार्यकर्त्ता हूं, राजा साहब ने यह सब सामान पंडित जी के लिये भेजा हैं। इसे आपके यहाँ उतरवा कर मुझे शीघ्र वापिस लौटकर वहाँ पहुंचना है। इतना कहते ही उस व्यक्ति ने, नौकरों को हुकुम दिया और उन लोगों ने हाथी-घोड़ों और बैलगाड़ियों पर से लदा हुआ कुछ सामान उतार कर पंडित जी के मकान में रखना शुरू कर दिया। जरा सी देर में ही मकान के अन्दर लाखों-करोड़ों रुपये का हर प्रकार का सामान भर गया—सोना, चाँदी, जेवर, जवाहरात, कपड़ों की पोशाकें तथा थान के थान ढेर लग गये। खाने-पीने के सामान का तो ठिकाना ही नही था, गेहूँ और खांड की बोरियों पर बोरियाँ सैकड़ों चिन दी गई। घी के पीपों की कतार लगा दी गई, और अन्दर की तरफ रुपयों से भरी हुई थैलियों के ढेर लग गये। यह तमाम सामान उतरने के बाद, जब राजा साहब के प्रधान कार्यकर्ता ने ब्राह्मणी से विदा माँगी तो, ब्राह्मणी ने कहा महाराज, जरा ठहरिये, पंडित जी आते ही होंगे। किन्तु जब कार्यकर्ता महोदय ने कहा कि मै जरासी देर भी नही ठहर सकता तब लाचार होकर ब्राह्मणी ने कहा कि महाराज आप अपना पूरा पता ठीक-ठीक लिखकर दे जाइये, ताकि मै पंडित जी को आपका पूरा पता सही सही बता सकूँ। तब वे राजासाहब के कार्यकर्ता महोदय बोले, कि मेरा पूरा पता तो आजतक किसी को न लगा है और न लग सकेगा, किन्तु पंडित जी मुझको खूब अच्छी तरह से जानते है, वह जरासी बात में समझ जायेगें। आप पंडित जी से मेरी तरफ से केवल इतना कह देना, कि मुझसे थोड़ी सी

भूल यही हुई है कि मेरे आने में जरासी देर हो गई । यदि थोड़ी बहुत देर-अबेर कभी हो भी जाती है तो, इतनी जल्दी किसी का मुँह काला पीला न कर दिया करें । इसके लिये मैं पंडित जी से क्षमा प्रार्थी हूँ । इतना कहते ही उन्होंने, ब्राह्मणी को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए तुरन्त विदा ले ली । ब्राह्मणी भौचक्की सी उनकी पीठ की तरफ देखती रह गई और वह वहाँ से हटते ही तुरन्त अन्तर्ध्यान हो गये । ब्राह्मणी का मन प्रसन्नता के कारण बहुत प्रसन्न हो रहा था । उसने जल्दी से उत्तम रसोई तैयार कर ली । और भगवान् का भोग लगाया, किन्तु जब पंडितजी नहीं लौटे तो उसने बच्चों को भोजन करा दिया और सांयकाल तक पंडितजी की प्रतीक्षा करने के बाद उसने भी भोजन कर लिया । दूसरे दिन से ब्राह्मणी ने दो-चार नौकर-नौकरानी गृहकार्य के लिए रख लिये उस अपार सम्पत्ति के योग से, ब्राह्मणी राजसी सुख प्राप्त करने लगी । किन्तु अपने पति की याद में दुख भी अनुभव करती रहती थी । इसप्रकार एक मास बीत जाने के बाद, जब पंडितजी एकान्त स्थल से तप करके घर को लौटे तो उन्होंने सोचा कि घर सूना मिलेगा । किन्तु घर पर पहुँचते ही पंडितजी ने वहाँ राजसी वैभव देखा तो उन्हें भारी कौतूहल हुआ कि घर पर खाने को एक दाना तक नहीं था और स्त्री भी मेरी सदाचारणी है फिर यह अपार सम्पत्ति कहाँ से आयी । पंडित जी ऐसा विचार करते-करते ज्योंही दरवाजे में घुसे, कि ब्राह्मणी उनके चरणों पर आ गिरी और आँखों में प्रेम के आँसू भर कर, उसने गदगद कंठ से कहा, प्राणनाथ, इतने दिनों से कहाँ चले गये थे । पंडितजी ने शीघ्रता के साथ कहा कि पहले तू यह बतला कि यह अपार सम्पत्ति तेरे पास कहाँ से आई । ब्राह्मणी ने कहा महाराज, आप जिसदिन घर से बाहर सौदा लेने के लिये गये थे, उसी समय एक व्यक्ति, किसी राजा का प्रधान कार्यकर्ता,

अनेकों प्रकार की अपार सम्पत्ति गाड़ियों में लदवाकर यहाँ आया और आपको पुकारने लगा । मैंने उनसे पूछा आप कौन है और आपका पता-ठिकाना क्या है, पंडितजी अभी आते होंगे, आप जरा ठहरिये । किन्तु उन्होंने ठहरने से इन्कार करते हुए कहा कि, मुझे जरा भी फुरसत नहीं है, यह राजा साहब ने पंडित जी के लिये सामान भेजा है इसे रखवा लें । इतना कहते ही उन्होंने अपने कर्मचारियों को सामान उतार कर घर में रखने की आज्ञा दे दी और बात की बात में उनके नौकरों ने यह सामान हमारे घर में रखकर ढेर लगा दिया । अन्त में जब वे जाने लगे तो मैंने फिर उनसे कहा कि आप अपना पूरा पता बता जाइये । यदि पंडितजी पूछेंगे तो मैं उनको बता दूँगी । तब उन्होंने कहा कि मेरा पूरा पता न ता कोई जानता है और न कोई जान सकता है, किन्तु पंडितजी मुझको भली भाँति जानते है, उनसे सिर्फ यह कह दें कि मुझसे थोड़ी सी भूल यह जरूर हो गई है कि मुझे आने में कुछ देर लग गई थी, किन्तु इतनी सी गलती पर, इतनी बड़ी सजा पंडितजी को नही देनी चाहिये थी कि, जरासी बात में ही वह किसी का इतना जल्दी काला पीला मुँह न कर दिया करें ।

ब्राह्मणी के मुँह से यह बात सुनते ही पंडितजी के नेत्रों में आँसू भर आये और अपने क्रोध पर बड़ी भारी आत्मग्लानि हृदय में मानने लगे कि हाय, मैंने अपनी नासमझी के कारण प्रभु के मुँह पर हरताल पोत दी । गीता के शब्द स्वयं प्रभु के मुँह के शब्द है, गीताके श्लोक पर हरताल लगाने के माने है कि मैंने भगवान के मुँह पर हरताल लगाई है । हे प्रभु मैं बड़ा अपराधी हूँ मुझे क्षमा करना ।

पंडितजी की इन सब बातों को ब्राह्मणी बड़े गौर से सुन रही थी । उसने कहा महाराज आपने किस के मुँह पर हड़ताल पोत दी

है, जोकि आपको इतनी भारी आत्मवेदना हो रही है ।

पंडितजी ने दुखी हृदय से कहा देवी मैंने भगवान श्रीकृष्ण के मुँह पर हड़ताल पोती है । इसीलिये मेरा हृदय दुखी है, लेकिन देवी तुम बड़ी भाग्यशालिनी हो क्योंकि तुमको स्वयं भगवान ने आकर दर्शन दिये । और उन्होंने यह ठीक कहा है कि मुझे न कोई जानता है और न जान सकता है, क्योंकि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि तप-योग-ध्यान-समाधी लगा करके भी मर जाते है परन्तु वह किसी के समझने में नही आता है । अस्तु, देवी तुम्हारे बड़े भारी पुण्य थे जिस कारण प्रभु का तुमको साक्षात्कार हुआ है । इतना कहकर पंडितजी ने ब्राह्मणी के चरण छू लिये । ब्राह्मणी ने शरमाकर पति के चरणों में प्रणाम करत हुए कहा, महाराज यह सब आपके भजन और विश्वास का फल है । जिस कारण आप इतने अधिक समय तक कमाई करने के लिए घर से बाहर नहीं निकले थे, बल्कि मैंने ही आपको जबरदस्ती कह-सुनकर भेजा था । इसी के परिणामस्वरूप आपको भगवान ने एकं ही दफे में इतनी अपार सम्पत्ति भेज दी है कि, अब जीवन में कमाई करने की कभी भी जरूरत नहीं पड़ेगी । इसप्रकार दोनों स्त्री-पुरुषों का आपस में कुछ देर तक वार्तालाप चलता रहा । इसके पश्चात पंडितजी अपने उसी कमरे में भजन करने के लिए निश्चिन्त होकर बैठ गये । और उन्होंने गीता के लिस श्लोक पर हड़ताल लगाई थी, उसे किसी प्रकार से धोकर साफ किया और उसे एकान्त कमरे मे बैठकर सर्वप्रथम पंडितजी ने प्रभु से कहा कि हे दीनबन्धु, मेरे अपराधों को क्षमा करना, मैंने आपके प्रति अविश्वास करके बड़ी भारी भूल की है । पंडितजी गीता के सम्मुख सिर झुकाकर पृथ्वी पर अपनी नाक बार-बार रगड़ने लगे और सच्चे हृदय से बार-बार क्षमा याचा करने लगे । इसके पश्चात पंडितजी अपने भजन-ध्यान में लग गये,

और गृहिणी अपने गृहस्थी के कार्यों में लग गई ।

तब से घर में नित्य प्रति साधू सेवा और अथिति-सेवा बड़े प्रेम से होने लगी । गाँव में पंडितजी की बड़ी प्रतिष्ठा और सुयश फैल गया । घर में पहले से ही ठाकुर सेवा चली आ रही थी । इसलिये अब तो ठाकुर-सेवा का भोगराग भी बड़े ठाठ के साथ चलने लगा । ब्राह्मणी ने अपना मकान भी विशाल रूप में बनवा लिया । सांयकाल को मकान के बड़े आगन में, ठाकुरजी के सम्मुख गाँव के बहुत से स्त्री-पुरुष एकत्रित होकर कीर्तन और सत्संग करते थे । इस प्रकार से इन दोनों स्त्री-पुरुषों का जीवन हर प्रकार से सुखी और सम्पन्न हो गया, तथा भगवान की असीम दया के कारण इनके लोक और परलोक दोनों ही सुधर गये । इनका शेष जीवन भी अन्त तक आनन्दयुक्त ही रहा ।

सौ अशर्फी नित्य का दान कैसे

चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्य के राज्यकाल में एक राजा प्रात:काल होते ही सर्वप्रथम सौ अशर्फी नित्य दान करता था । इसके बाद ही वह अपने दैनिक कार्य पूरे किया करता था । समाचार जब एक दिन महाराज विक्रमादित्य ने सुना तो उनको बड़ा आश्चर्य इसलिये हुआ कि, जिस राजा के यहाँ सौ अशर्फी की रोज की आमदनी भी शायद सम्भव नहीं है, फिर वह सौ अशर्फी का नित्य दान कैसे करता है? महाराज विक्रमादित्य बड़े भारी परोपकारी और न्यायप्रिय थे । इसलिये उन्होंने सोचा कि सम्भव है इस राजा के यहाँ कोई अन्याय की कमाई गुप्त रूप से आती हो, उसी में से यह नित्य अशर्फियों का दान करता हो, तो

यह दान सर्वथा अनुचित है इसलिये मुझे यह कार्य रोक देना परम आवश्यक होगा। और यदि अन्याय की कमाई नहीं आती है तो, इतना बड़ा दान नित्य प्रति करने की शक्ति इसे कैसे प्राप्त होती है, यह बात भी मुझे मालूम करना परम आवश्यक है।

एक दिन महाराज विक्रमादित्य ने मन में सोचा कि इस कार्य का पता मुझे गुप्तरूप से करना होगा, अन्यथा असली भेद हाथ नहीं लग सकेगा। ऐसा निश्चय करने के बाद महाराज गुप्तरूप से अपने मन्त्री को सब हालात बतलाकर आधीरात के समय अपना भेष बदल कर एक गरीब आदमी की शक्ल में महलों से बाहर निकल गये। दो दिन के बाद वे उस राजा की राजधानी में पहुँच गये। अपने दैनिक कार्यक्रम से निवृत्त होकर मध्यान्हकाल होते ही महाराज विक्रमादित्य उस राजा के दरबार पहुँच गये। दरबार में एक तरफ खड़े होकर राजा को लम्बी सलाम झुका दी। उस राजा ने गरीब विक्रमादित्य की तरफ देखते हुए कहा, आप कैसे आये है और क्या कहना चाहते है। विक्रमादित्य ने कहा मै आपके यहाँ नौकरी करने की इच्छा से आया हूँ। किन्तु मै केवल सरकार के अंगरक्षक की ही नौकरी चाहता हूँ दूसरा कोई काम नहीं कर सकूँगा। राजा ने और भी कई प्रकार के काम करने के लिये कहा, किन्तु विक्रमादित्य ने सभी कार्यों के लिए साफ इन्कार कर दिया। अन्त मे राजा ने उनको अंगरक्षक के स्थान पर ही नौकर रख लिया, इसलिये विक्रमादित्य को हर समय उस राजा के साथ-साथ रहने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो गया।

रात में जिस कमरे में राजा साहब सोते थे, उसी कमरे में विक्रमादित्य भी उनके नजदीक सोते थे। पर आधी रात के दो बजे के लगभग राजा साहब रोजाना चुपचाप उठकर महलों के गुप्त मार्ग द्वारा, सुरंग में होते हुए एक बीहड़ जंगल में पहुँचते थे। वहाँ

एक देवी का मन्दिर था । देवी के सामने एक तेल का कढ़ाया व भट्टी के ऊपर रखा रहता था । वहाँ पहुँचते ही राजा साहब नित्य प्रति उस भट्टी की आग को खूब जला देते थे और जब वह तेलखूब गरम हो जाता था तब राजा साहब उस तेल में कूद पड़ते थे और उनके प्राण समाप्त हो जाते थे । तब वह देवी उस राजा को जीवन-दान देकर निकाल लेती थी, और उस कार्य की प्रसन्नता के बदले में राज साहब को सौ अशर्फी दे देती थी । और राजा साहब उन्हीं सौ अशर्फियों को नित्य प्रति दान कर दिया करते थे । इस प्रकार यह कार्य एक लम्बे समय से चल रहा था । किन्तु इस कार्य का पता सिवाय उस राजा साहब के, किसी दूसरे व्यक्ति को कतई मालूम नहीं था ।

एक दिन राज साहब आधीरात के बाद जैसे ही उठकर चुपचाप सुरंग के द्वार से जानें लगे, वैसे ही विक्रमादित्य भी उनके पीछे-पीछे चुपचाप चल दिये । मगर राजा साहब को इस बात का पता नहीं चल सका कि आज मेरे पीछे-पीछे कोइ दूसरा व्यक्ति आ रहा है, अस्तु राजा साहब सदैव की भाँति बेधड़क होकर उस बीहड़ जंगल के मार्ग को शीघ्रता से तय करते हुए देवी के मन्दिर में जा पहुँचे, और वहाँ पहुँचते ही उन्होंने भट्टी की आग सुलगा दी । बाद में जब तेल खूब गरम हो गया तो राजा साहब उसमे कूद पड़े और प्रान्त होते ही देवी ने उन्हें जीवन-दान देकर, बाहर निकाल लिया और सौ अशर्फी उसे दे दी । विक्रमादित्य दूर से ही यह काण्ड छिपे-छिपे देख रहे थे । उन्होंने जैसे ही देवी को सौ अशर्फी देते देख तो आप तुरन्त बड़ी तेजी के साथ उसी मार्ग से वापस लौटकर, राजा साहब के आने से पहले ही अपने बिस्तर पर आकर लेट गये । राजा साहब भी नित्य की भाँति सुरंग मार्ग से वापस लौटकर अपने विस्तर पर लेट गये, और उन्होंने अपने

अंगरक्षक को खर्राटे लेते हुए देखा ।

महाराज विक्रमादित्य ने अपने मन में सोचा कि इस राजा को सौ अशर्फी नित्य दान करने के लिये, भारी संकट का सामना करना पड़ता है अर्थात् नित्य प्रति मृत्यु के मुख में प्रवेश करना पड़ता है और अपने शरीर को जलाकर खाक कर देता है । राजा के इस महा कठिन कार्य को देखकर, विक्रमादित्य का हृदय भी दुखी हो गया । उन्होंने सोचा कि, राजा के इस महा दुख को, सदा के लिये नष्ट कर देना आवश्यक होगा, चाहे इसके बदले में मुझे कितना ही भारी कष्ट क्यों न सहन करना पड़े । ऐसा निश्चय करने के बाद महाराज विक्रमादित्य दूसरे दिन, रात में उस राजा के जाने के समय से दो घंटे पूर्व ही उठकर, उस सुरंग मार्ग के द्वारा देवी के मन्दिर पर पहुँच गये, और उन्होंने पहुँचते ही भट्टी की आग सुलगा दी । तेल जब कढ़ाव के अन्दर खूब खौल गया, तब विक्रमादित्य तेल में कूद पड़े । विक्रमादित्य के मरते ही देवी ने उन्हें तुरन्त जीवित करके बाहर निकाल लिया, किन्तु विक्रमादित्य तुरन्त एक उछाल मारकर पुनः तेल के कढ़ाव में दुबारा कूद पड़े । जब फिर महाराज का शरीर प्राणशून्य हो गया तो, देवी ने पुनः उनको जीवित करके तेल के कढ़ाव से बाहर निकाल लिया । बाहर निकलते ही महाराज विक्रमादित्य फिर तीसरी बार उस तेल के कढ़ाव में शीघ्रतापूर्वक कूद गये । जब महाराज का शरीर पुनः निर्जीव हो गया तो देवी ने इनको फिर जीवित करके बाहर निकाल लिया । इसके बाद महाराज विक्रमादित्य जब चौथी बार शीघ्रतापूर्वक तेल के कढ़ाव में कूदने लगे तो देवी ने तुरन्त अपनी भुजा लम्बी करके विक्रमादित्य का हाथ पकड़ लिया । और बोली बेटा विक्रम, मैं तुझसे बहुत ही प्रसन्न हुई हूँ क्योंकि तूने मेरे लिये तीन बार अपने शरीर को जलाकर खाक कर दिया है, अब बोल तू क्या

चाहता है । विक्रमादित्य ने कहा मां, मै तेरी वह थैली चाहता हूँ, जिसमें से तू रोजाना सौ अशर्फी निकालकर उस राजा को देती रहती है । देवी ने कहा बेटा विक्रम, यदि मै उस थैली को तुझे दे दूँगी तो मेरे पास क्या रह जायेगा, क्योंकि जब वह राजा यहाँ आकर अपने शरीर को जला देगा तो मै उसे बाहर निकलने पर सौ अशर्फियाँ कहा से दूँगी? विक्रमादित्य ने कहा मां, मै तेरी बातें कुछ भी सुनना नही चाहता । या तो तू मुझे वह थैली पूर्णरूपेण दे दे, अन्यथा मेरा हाथ छोड़ दे । मै तेरे इसी तेल के कढ़ावे में अपने प्राण विर्सजन करके रहूँगा । देवी ने कहा तुझको अब पुन: खौलते हुए तेल के कढ़ाव में हरगिज कूदने नही दूँगी; क्योंकि तेरे जैसे परोपकारी पवित्र आत्मा का तीनबार इस तेल के कढ़ाव में कूदकर प्राणान्त करना सहस्रों बार प्राणान्त करने के समान है । इसलिये अब यह मेरी शक्ति के बिल्कुल परे की बात है कि मै तुमको इस तेल में कूदने का अवसर प्रदान करूँ । अत: देवी ने तुरन्त वह थैली निकालकर, महाराज विक्रमादित्य को दे दी, और कहा कि बेटा किक्रम, अब तुम बहुत जल्दी यहाँ से चले जाओ क्योंकि अब उस राजा के आने का समय हो चला है । विक्रमादित्य ने देवी को दंडवत् प्रणाम किया और तुरन्त अपने मालिक के शयनागार में जाकर, अपने सोने के बिस्तरे पर चुपचाप सो गया ।

इधर देवी ने देखा कि अब वह राजा आता ही होगा, और जब उसके प्राणान्त करने पर मै उसे कुछ भी न दे सकूँगी, तो अनर्थ हो जायेगा, ऐसा विचार करके देवी ने तुरन्त उस तेल के कढ़ाव में एक ठोकर मारकर उसे औंधा कर दिया और आप स्वयं भी उस मन्दिर को छोड़कर उसी समय दूसरे स्थल क्रो भाग गयी ।

इधर यह राजा अपने नित्य नियम के अनुसार उठकर सीधा

देवी के मन्दिर पर आया तो इसने तेल के कढ़ाव को औधा पाया और मन्दिर को देवी से शून्य देखा । राजा एकदम सन्नाटे में आगया, उसे महान आश्चर्य हुआ कि इस घोर जंगल में यह क्या काण्ड हो गया, उसकी समझ में यह बात जरा भी न आ सकी कि, तेल का कढ़ाव कैसे औधा पड़ा है और देवी भी मन्दिर को छोड़कर कहाँ अन्तर्ध्यान हो गई है । आखिर में राजा लाचार अपने महल में लौट आया, और महान दुखी होकर अपने बिस्तरे पर लेट गया । पर राजा को नींद कतई नही आई और पलंग पर छटपटाने लगा । उन्होंने सोचा कि आज से मेरा यह नियम टूट जायेगा कि मै प्रात:काल होते ही गरीबों को सौ अशर्फी नित्य का दान नहीं कर सकूँगा । ऐसी हालत में मै जिन्दा रहना कतई उचित नहीं समझता । अब मुझे अपना प्राणान्त ही करना पड़ेगा ।

प्रात:काल हो गया पर राजा अपने नियम के अनुसार नहीं उठे । वह गम्भीर विचारों में गोता लगा रहे थे, और सोच रहे थे कि आज मै अपना मुँह किसी को दिखाने के लायक नही रहा ।पर उनके अंगरक्षक विक्रमादित्य चुपचाप आँखें बन्द करके इनकी गतिविधि को खूब अच्छी तरह देख रहे थे । विक्रमादित्य अपने समय पर उठे और उन्होंने राजा साहब को उठाने के लिए, प्रार्थनापूर्वक शब्दों में कहा महाराज उठिये, समय काफी होगया है । मगर राजा साहब नही उठे । तब राजमहल के बाहर सुबह होते ही, अशर्फी माँगने वाले याचकों की भीड़ नित्य की भाँति लग गई और उन्होंने ऊँचे स्वर में राजा साहब की जैजैकार करना शुरू कर दी । इधर जब राजा साहब नहीं उठे तो अंगरक्षर विक्रमादित्य ने पुन: मीठे-मीठे शब्दों मे प्रार्थना करना शुरू कर दिया और कहा कि महाराज, आपको आज क्या हो गया है । मै आपका सच्चा विश्वासपात्र सेवक हूँ, मुझसे कुछ भी छिपा मत करिये । मै

यथाशक्ति आपकी भरपूर मदद करूँगा। राजा ने उनकी बात को सुनकर धीरे से कहा कि भाई मेरी मुसीबत में तुम तो क्या, दुनियाँ का कोई भी व्यक्ति मेरी मदद नहीं कर सकता है। अंगरक्षक ने कहा महाराज, दुनियाँ में कोई भी ऐसी मुसीबत नहीं है जिसे इन्सान हल न कर सके। किन्तु फिर भी मेरा आपसे विशेष अनुरोध है कि आप अपनी गुप्त चिन्ता को मुझे अवश्य बतला दीजिये। जब राजा साहब ने इस प्रकार अंगरक्षक को, बार-बार अनुरोध करते हुए देखा, तो मन में सोचा कि यहां इस एकान्त स्थान मे, मेरे और इसके सिवाय तीसरा कोई व्यक्ति नही है, और यह बड़ा विश्वासपात्र एवं मेरा शुभचिन्तक है इसलिये इसको बता देने में अपनी किसी भी प्रकार की हानि नहीं हो सकती। ऐसा साचकर, राजा साहब ने अपना कुल वृत्तान्त अंगरक्षक को संक्षिप्त रूप में बतला दिया। और राजा साहब ने अन्त में यह भी बतला दिया कि अब मुझे सिवाय मौत के दूसरा कोई भी मार्ग दिखलाई नही देता। क्योंकि मै बगैर सौ अशर्फियों को हाथ में लिये, इस कमरे से बाहर अपना मुँह, जीते जी किसी को दिखाना नहीं चाहता।

राजा के धर्म की इतनी कठिन धारणा को देखकर, विक्रमादित्य बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरन्त ही अपने पास से वह थैली निकालकर राजा साहब को भेटं कर दी, और कहा कि अन्नदाता अब आप चिन्ता को छोड़ दीजिये। यह थैली लीजिये। यह आपको रोज सौ अशर्फी तेल के कढ़ाव में कूदकर शरीर जलाये बगैर देती रहेगी। राजा ने ज्योंही उस थैली को देखा और अंगरक्षक की बातें सुनी तो उन्हें महान आश्चर्य हुआ और उन्होंने सोचा कि यह कार्य किसी साधारण आदमी का कदापि नहीं हो सकता है, बल्कि इस पूरी थैली का प्राप्त करना किसी दैवी शक्ति

का ही कार्य है । तो क्या मेरा यह अंगरक्षक कोई वेष बदले हुए देवरूप में मेरे यहाँ नौकरी कर रहा है, राजा साहब के मन में इतना विचार आते ही, वे अपने पलंग से नीचे उतर पड़े और तुरन्त अपने अंगरक्षक के पाँवों पर माथा टेकते हुए बोले, महाराज आप कौन है, जो इस प्रकार अपना असली स्वरूप छिपाकर मेरे यहाँ नौकरी कर रहे है । मै आपके वास्तविक स्वरूप को बिल्कुल नहीं पहचान सका हूँ, क्योंकि आपने एक असम्भव कार्य को पूरा ही नहीं किया है, बल्कि मुझको जीवनदान दिया है । इसलिए आप कोई साधारण मनुष्य नही हो सकते है । चाहे आप देवस्वरूप हों अथवा कोई महापुरुष हों, किन्तु हर हालत में आप कोई न कोई असाधारण पुरुष है । आप दया करके मुझे आप असली परिचय देने की कृपा कीजिये । अंगरक्षक श्री विक्रमादित्य ने कहा, महाराज मैं तो आपका सेवक हूँ, आप ऐसी लम्बी चौड़ी बातें क्यों कर रहे है । किन्तु राजा ने उनके पाँव पकड़ लिये और कातर शब्दों में उनका परिचय जानने की प्रार्थना की ।

विक्रमादित्य कुछ देर के लिये शान्त होकर सोचने लगे कि अब मुझे क्या करना चाहिये । इतने में ही राजा को एक बात सूझी । उसने अपने कमरे में बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के जो फोटो लगे हुए थे, उनमें से उस अंगरक्षक की शक्ल का मिलान करके देखना शुरू कर दिया । थोड़ीसी देर में महाराज विक्रमादित्य का फोटो, उस अंगरक्षक की शक्ल से मिल गया । राजा यह जानकर चौक पड़ा कि, विक्रमादित्य ने मेरे यहाँ आकर अंगरक्षक की नौकरी की है । और साथ ही साथ उनके मन में यह बात भी आगई कि इस असम्भव कार्य की पूर्ति सिवाय महाराज विक्रमादित्य के दूसरा और कोई नही कर सकता । इस निश्चय पर पहुँचने के बाद राजा ने तुरन्त ही साष्टाँग दंडवत् किया और कहने लगे

महाराज, मेरे अपराध को आप क्षमा कर दें; क्योंकि सारे संसार से आप सेवा लेने के योग्य है और आपसे मैंने सेवा ली है, यह मुझसे महान अपराध हो गया है। विक्रमादित्य ने कहा तुम मन में जरा भी संकोच मत करो मै तुम्हारी सौ अशर्फी नित्य की दानशीलता की असलियत को जानने के लिये ही आया था। तुम्हारे इस धर्म-कार्य की वास्तविकता को मैंने खूब अच्छी तरह अपनी आँखों से देख लिया है, तुम्हारा यह कार्य भी कोई साधारण कार्य नहीं था तुम्हारा यह नित्य प्रति तेल के कढ़ाव में शरीर को जलाकर प्राणान्त करके सौ अशर्फी लाना एक महान तप का काम है, और इतने महान तप के द्वारा किया हुआ दान भी, एक महान उच्च कोटि का दान है। आपके इसी तप और दान के प्रताप से ही आज आपको यह अमोघ थैली प्राप्त हुई है जिसके द्वारा आप अनन्त काल तक, निर्विघ्न रूप से रोजाना सौ अशर्फी का दान सुखपूर्वक करते रह सकेंगें।

राजा ने तुरन्त अपने कमरे का दरवाजा अन्दर से खोला और महल के बाहर निकलकर सर्वप्रथम उसने खैरात माँगने वालों को, सौ अशर्फियों का दान कर दिया। इसके उपरान्त उसने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी कि, महाराज अखंड मण्डलेश्वर विक्रमादित्य के लिए उबटन, स्नान, वस्त्रालंकार का उत्तम प्रबन्ध शीघ्र करो। तथा राजा ने अपने मन्त्री को भी महाराज का परिचय करा दिया और मन्त्री सहित सभी लोग, महाराज विक्रमादित्य की उत्तम सेवा में लग गये। विक्रमादित्य अपने नित्य कर्मो से निवृत्त होकर जब उन्होंने राजसी कपड़े पहिने तब उनके चेहरे पर एक अपूर्व तेज झलक आया। राजा ने महाराज के साथ सुन्दर भोजन किया और बाद में अपने दरबार में जाकर राजगद्दी पर महाराज विक्रमादित्य को विराजमान किया और मंत्री की जगह पर राजा

साहब स्वयं विराजमान हुए। यह खबर नगर में चारों ओर फैल गई तो हजारों आदमी महाराज विक्रमादित्य के दर्शन के लिए बराबर आने लगे। इस प्रकार कुछ दिन तक राजा साहब ने, महाराज विक्रमादित्य को बड़े आग्रह के साथ अपनी मेहमानदारी में रखा, और महाराज की सेवा करने में राजा साहब ने अपना परम सौभाग्य माना। जब राजा साहब ने यह देखा कि अब महाराज विक्रमादित्य रुकना नहीं चाहते है तो उसने बड़ी विनय के साथ अपनी राजकन्या विक्रमादित्य को दान, कर दिया और फिर अनेकों प्रकार का दहेज देकर, राजा ने अपनी कन्या सहित महाराज विक्रमादित्य को हाथी की अम्बारी पर बैठा कर बड़े-बड़े बाजे और शहनाइयों के सहित, बड़े स्वागत के साथ विदाई दी। राजा पैदल चलते चलते कुछ दूर तकअपने समस्त कर्मचारियों के सहित, महाराज को अपने नगर द्वार तक पहुँचाने आये और फिर वापस चलते समय राजा ने बारबार हाथ जोड़कर महाराज विक्रमादित्य से अपने अपराधों की क्षमा मांगी। अन्त में दोनों एक दूसरे से विदा होकर अपने अपने राज्य में प्रसन्नता सहित पहुँच गये। यह राजा अपने राज्य में, महाराजा विक्रमादित्य की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से करने लगे और मन ही मन उनके अमित गुणानुवाद गाया करते थे। और इधर महाराज विक्रमादित्य भी अपने मन में, इस छोटे से राजा की दानशीलता एंव उसके गुप्त कार्य की भारी सराहना करने लगे।

भूखे राजा का आतिथ्य फल

भारतीय परम्परा के अनुसार एक राजा का यह स्वाभाव था कि वह घर पर आये हुए अतिथि और साधू-महात्माओं का सेवा-सत्कार किया करता था। एकदिन एक ऊँचा साधू उस राजा के महलों में आया और भोजन सत्कार प्राप्त करने के बाद, राजा से बोला कि राजन, तुमने बहुत सत्कार किया है, हम तुम्हारे इस कार्य से बहुत प्रसन्न है, इसलिये हम यह चाहते है कि यदि तुमको किसी भी प्रकार की कोई परेशानी हो तो, हमसे कह दो, भगवान की दया से हम तुम्हारा कुछ काम सफल कर सकते है।

महात्मा की बात सुनकर राजा ने हाथ जोड़कर बड़ी विनय के साथ कहा कि महाराज वैसे तो भगवान की दया से सब कुछ आनन्द है; किन्तु सिर्फ एक ही बात का कष्ट है कि इस राज्य का उत्तराधिकारी कोई नही है, यदि आप कृपा कर दें तो मेरे हृदय की यह गुप्त चिन्ता भी नष्ट हो जाय।

साधू ने राजा की विनम्र प्रार्थना को सुनकर कहा कि राजन्, तुम प्रत्येक क्षण चलते रहने वाला, सदावर्त चालू कर दो। जिस दिन कोई भूखा आदमी तुम्हारे यहाँ भोजन कर जायेगा, उसी दिन तुम्हारी रानी को गर्भाधान हो जायेगा। इसमें किंचित् भी संशय नही है। इतना कहकर साधू राजा से विदा होकर चला गया, और राजा ने भी उसी दिन से महात्मा की आज्ञा का पालन करते हुए, अपने महल के बड़े-बड़े चारों दरवाजों पर, अहर्निया चालू रहने वाले सदावर्त का प्रबन्ध कर दिया और सिपाहियों को हुकुम दे दिया कि प्रत्येक क्षण, प्रत्येक मांगने वालों को बराबर भोजन

बाँटते रहो, पर खूब ध्यान रखना कि कोई भी व्यक्ति हमारे दरवाजे पर से भूखा न जाने पावे। राजा की आज्ञा के अनुसार महल के चारों दरवाजों पर रात-दिन भोजन बँटने लगा और कभी भी किसी व्यक्ति को भोजन देने से कतई इन्कार नहीं किया जाता था। इस प्रकार लगभग एक वर्ष बीत जाने पर, वही साधू फिर से राजा के यहाँ आया। राजा ने साधू की बड़ी सेवा शुश्रूषा की, जब साधू और राजा दोनों ही भोजन से निवृत्त हुए तब साधू ने राजा से कहा कि कहो राजन, हम जो बात कह गये थे उसका क्या परिणाम निकला। राजा ने कहा, महाराज, मैंने आपकी आज्ञा के अनुसार उसी दिन से, चोबीसों घंटे चालू रहने वाला सदावर्त, अपने महल के चारों दरवाजों पर चालू करवा दिया है, और लाखों भूखे प्राणियों को भोजन बँट चुका है, किन्तु अभी तक रानी को गर्भाधान नहीं हुआ है।

राजा की बात सुनकर साधू एक क्षण के लिये आँखें बन्द करके ध्यानावस्थित होगये और पुनः तुरन्त आँखें खोलकर कहा कहा कि राजन्, तूने इतना बड़ा सदावर्त चारों दरवाजों पर अहर्निश चालू कर रखा है किन्तु फिर भी जैसे भूखे की आवश्यकता थी, उस प्रकार के एक भी भूखे को आज तक भोजन प्राप्त नहीं हुआ है। साधू की बात सुनकर राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गया और हाथ जोड़कर कहने लगा कि महाराज यदि रातदिन भोजन बँटते रहने पर भी, किसी उचित भूखे को भोजन नहीं मिल सका है तब तो यह कार्य महान कठिन है। हम अपनी बुद्धि के अनुसार फिर किस प्रकार के भूखे की तलाश करें जिसके द्वारा आपकी वाणी का आशीर्वाद सफल हो सके। इसलिए यदि आप ही कृपा करके हमें इस कार्य में सहयोग प्रदान कर सकें तो बड़ा ही उत्तम रहेगा।

राजा की प्रार्थना को साधू ने स्वीकार करते हुए कहा कि

राजन अब मैं इस कार्य को पूर्ण रूपेण संपादित करके ही तुम्हारे यहाँ से जाऊँगा। इतना कहते ही साधू ने पुनः अपनी आँखे बन्द करके ध्यान लगाया और जरासी देर के बाद ही आँख खोलते हुए कहा कि देखो राजन्, भूखे तो मेरे ध्यान में आ गये है किन्तु उनको भोजन कराना आसान बात नहीं है। साधू की इस बात से राजा को बड़ा आश्चर्य होने लगा, किन्तु राजा ने विनय के साथ कहा कि महाराज, आपको सब सामर्थ्य है जैसे आज्ञा देंगे, उसी के अनुसार इन्तजाम किया जायेगा। साधू ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर देते हुए कहा कि देखो कल दोपहर को बारह बजे के लगभग, दो व्यक्ति घोड़ों पर बैठकर आते हुए तुम्हारे राजमार्ग के चौराहे पर से गुजरेंगे, उनके घोड़ों पर और शरीर पर कीमती जवाहराती पोशाकें होगी। उनमें से एक युवा और एक वृद्ध पुरुष होगा। इनके पास एक भी पैसा नगद नहीं होगा। यह तीन दिन के भूखे-प्यासे मंजिलों को तय करते हुए, अपने राज्य से भागे हुए होंगे, इनमें से युवा पुरुष राजकुमार होगा और वृद्ध पुरुष राजमंत्री होगा। किन्तु विशेष स्वाभिमानी होने के कारण, खाने के लिये सर्वथा इन्कार करेंगे। इनको तुम्हारा राजमंत्री यदि स्वयं वहाँ पर उपस्थित होकर भारी विनय और चतुराई के साथ ला सकेगा तभी ये दोनों तुम्हारा अन्न ग्रहण कर सकेंगे, अन्यथा ये दोनों व्यक्ति भूखे मर जाना मंजूर करेंगे परन्तु किसी के यहाँ भोजन करना मंजूर नहीं करेंगे।

महात्माजी के आदेशानुसार राजा ने मंत्री को खूब अच्छी तरह से समझा कर दूसरे दिन नगर के चौराहे पर भेज दिया। राजमंत्री बड़ा भारी चतुर था। उसने सौ-पचास सिपाहियों को साथ लेकर नियत स्थान पर अपनी नियुक्ति लगा दी। और मंत्री सहित सभी लोग दोनों आगन्तुक घुडसवारों की प्रतीक्षा में लग गये। प्रत्येक राहगीर को बड़े गौर से देखते थे। ठीक बारह बजते ही

दोनों घुड़सवार सामने से आते दिखलाई दिये। राजमन्त्री ने तुरन्त सिपाहियों को हुकुम दिया कि सामने से पूरा रास्ता रोककर सब लोग खड़े हो जाओ, ऐसा न हो कि यह सीधे निकल जाय। सिपाहियों ने तुरन्त पूरा रास्ता घेर लिया और एक पैदल आदमी को भी निकलने के लिये रास्ता नहीं छोड़ा। दोनों घुड़सवारों ने एकदम अपने घोड़ों को रोक लिया, और पूछा कि भाई हमारा रास्ता किसलिये रोक लिया है, हमको जाने दो। राजमंत्री ने बड़ी शीघ्रता के साथ आगे बढ़कर हाथ जोड़तें हुए कहा महाराज, मै यहाँ के राज्य का राजमंत्री हूँ। अपने महाराज की तरफ से आपको आमंत्रित करने के लिये ही यहाँ खड़ा हुआ हूँ। आप दोनों साहब कुछ थोड़ा सा जलपान करके ही जा सकेंगे इससे मुझ पर और मेरे महाराज पर आपकी बड़ी भारी कृपा समझी जायेगी। नवयुवक घुड़सवार ने कहा हमको भोजन की इच्छा नहीं है। अभी हम लोग कुछ विशेष आवश्यक कार्य से जा रहे है लौटते समय कुछ अवकाश मिलेगा तो आपके यहाँ जलपान कर लेगें। राजकुमार के नीरस उत्तर को सुनते ही, राजमन्त्री ने बड़ी भारी दीनता दिखलाते हुए कहा, महाराज आपको चाहे जितना भारी और आवश्यक कार्य क्यों न हो किन्तु इस दास की प्रार्थना तो इस समय आपको स्वीकार करनी ही पड़ेगी, अन्यथा मेरी सारी योग्यता पर पानी फिर जायेगा और मै अपने महाराज की नजरों से गिर जाउँगा इसलिये कृपा करके किसी प्रकार से आप अपने मनको समझाकर हमारे महाराज का आतिथ्य स्वीकार कर लीजिये और साथ चलकर हमारे महाराज का घर पवित्र कर दीजिये। प्रथम घुड़सवार (राजकुमार) ने दूसरे घुड़सवार (राजमन्त्री) की ओर देखा, तो उसने आँखों के संकेत से स्वीकृतिसूचक भाव में बताते हुए कहा, अच्छा भाई इनकी बात भी मानलो, क्योंकि यह यहाँ

के राजमन्त्री है और राजा की तरफ से आग्रह कर रहे है। इनकी बात को न मानने से, राजा का और राजमन्त्री का, दोनों का ही अपमान समझा जायेगा। दोनों ने राजमन्त्री की बात मान ली। राजमन्त्री भी अपने घोड़े पर सवार होकर इन दोनों के साथ हो लिया, और बाकी के सभी सिपाही लोग भी घोड़ों के आगे-पीछे हटो बचो करते हुए चलने लगे। इस प्रकार थोड़ी ही देर के अन्दर सब लोग राजभवन के द्वार तक पहुँच गये। दो चार सिपाहियों ने भागकर महाराज को खबर कर दी, इसलिये महाराज भी स्वयं अगवानी करने के लिए उठकर दरवाजे तक आये और दोनों हाथ जोड़कर प्रथम नमस्कार वन्दन किया, बाद में स्वागत के सहित दोनों आगन्तुक को महाराज स्वयं राज-महलों के अन्दर लिवा कर ले गये। अन्दर साधू महाराज विद्यमान थे, इन दोनों ने साधू को नमस्कार प्रणाम किया। साधू ने हाथ उठाकर कल्याण हो कहा। दोनों व्यक्तियों को सुगन्धित जलों से स्नान करवाया तथा नये वस्त्र पहिनाकर बड़े दिव्य सिहांसनों पर दोनों को बैठाया। बाद में सुगन्धित फूलों के हार इनको पहिनाये, केसरिया चन्दन इत्यादि का इनके मस्तकों पर लेपन किया। इसके बाद इन दोनों व्यक्तियों के लिए तरह-तरह के राजसी भोजनों के सुनहरे थाल भोजन के लिये लगाये गये। तब राजा साहब ने हाथ जोड़कर बड़ी विनय के साथ भोजन शुरू करने के लिए आग्रह किया। जब इन दोनों का भोजन प्रारम्भ हो गया तब राजा साहब ने अपने मन्त्री के सहित पास में बैठकर कुछ मनोविनोद की बातें की। कुछ समय उपरान्त भोजन समाप्त होगया तब राजा साहब ने पान के बीड़े अपने हाथों से दोनों को भेंट किये। इसके बाद घंटे दो घंटे के लिये इन दोनों को पलंग परआराम करने के लिये आग्रहपूर्वक निवेदन करके राजी कर लिया। दोनों ने आराम किया और दो घंटे के बाद दोनों

व्यक्ति पलंग से उठकर चलने को तैयार हो गये। परस्पर रूप से इन दोनों राजकुमार और बूढ़े मन्त्री के सहित, उस राजा ने और मन्त्री ने आपस में बड़ी श्रद्धापूर्वक प्रेमालाप द्वारा विदाई के लिये दोनों ने एक दूसरे से हाथ मिला-मिला कर विदाई ली, और बड़ी प्रसन्नतापूर्वक दोनों व्यक्ति अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल दिये। इनके चले जाने के बाद, साधू ने राजा से कहा कि राजन्, आज तुमने दो भूखे व्यक्तियों को भोजन कराया है, इसलिये आज ही तुम्हारे मनोरथ के सिद्ध होने की जड़ जम जायेगी। इस प्रकार कुछ वार्तालाप करने के बाद, राजा ने साधू को भी बड़ी श्रद्धापूर्वक भोजन कराया और साधू के चलते समय राजा और रानी ने साधू के चरणों पर मस्तक रखकर दंडवत प्रणाम किया। साधू ने दोनों को अभीष्ट सिद्धि का आर्शीवाद देकर प्रेमपूर्वक विदाई ली और जंगल की ओर चल दिया।

भगवान् की दया से उसी दिन रानी को गर्भाधान हो गया और एक वर्ष के अन्दर ही राजा के यहाँ एक सुन्दर पुत्र का जन्म हुआ। राजा ने बड़ी खुशियाँ मनाई, बड़े दान पुण्य किये। इस प्रकार से राजा का जीवन पूर्णरूपेण सुखयुक्त हो गया। राजा के महल के चारो दरवाजो पर अनन्तकालीन सदावर्त चलता रहा और नियमानुसार राजा के यहाँ साधूसेवा तथा अतिथि-सत्कार भी श्रद्धापूर्वक चलता रहता था। राजा की प्रजा भी, राजा के ध र्माचरण और न्यायप्रियता से बड़ी प्रसन्न थी, इसलिये राजा और प्रजा दोनों ही पूर्ण सूखी हो गये।

कुछ समय के बाद ही साधू फिर एक बार उस राजा के यहाँ आया और कुशल-मंगल के बाद जब उसे राजकुमार के जन्म का पता लग गया, तब उसने प्रसन्नता दिखाते हुए कहा कि राजन, सदावर्त का चालू कर देना जितना आसान है, उतना अतिथि और

भूखे की सच्ची पहिचान करना आसान नहीं है इसलिये कोई व्यक्ति गरीब हो या अमीर, पढ़ा-लिखा विद्वान हो या मूर्ख, सुन्दर हो या कुरूप, किन्तु प्राणी मात्र की सच्ची सेवा का भाव मन मे रखकर धर्माचरण का पालन करना चाहिये। और अतिथी-सेवा के समय किसी की जाति-पाँति का भी ध्यान नही करना चाहिये। सर्वमय ईश्वर के रूप को ही समझकर सबके प्रति प्रेम सम्बन्ध रखना चाहिये। इस प्रकार बहुतसा ज्ञानोपदेश देकर साधू राजा से विदा होकर चला गया और राजा का शेष जीवन भी धर्ममय हो गया।

कवि कालीदास और दो प्रेत

राजा भोज के शासन काल में, महाकवि कालीदास जब कभी भोज के दरबार में जाते थे तो दरबार में प्रवेश करते ही सबसे पहले वे यह कहते थे कि, 'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते' अर्थात् राजा तो अपने देश में ही पूजा जाता है किन्तु गुणी पुरुष सब जगह पुजता है। इसके उत्तर में राजा भोज कहते थे कि हाँ महाराज, आप का वचन सत्य है, आओ पधारो। इस प्रकार से प्रश्नोत्तर होने के बाद कालीदास जी अपने नियत स्थान पर दरबार में बैठ जाते थे, और राजा भोज उनका बड़ा आदर-सत्कार किया करते थे। इस तरह बहुत समय बीत गया तब राजा भोज के दरबारियो ने, एक दिन समय पाकर कालीदास जी की अनुपस्थिति में, राजा साहब से कालीदास की बुराई करते हुए कहा कि महाराज, देखिए कि कालीदास जी आपका अन्न खाते हैं और भरे दरबार मे आपका ही नित्य प्रति अपमान करते है, क्योंकि सबके

सामने उनका आपसे नित्य यह कहना कि राजा तो देश में ही पूजा पाता है किन्तु गुणीजन सब जगह पूजा जाता है। और इतने पर भी आप उनकी बात का तुरन्त समर्थन भी करते रहते है। इसलिये उनके द्वारा आपका यह अपमान प्रत्यक्ष रूप से भरे दरबार में नित्य प्रति होता रहता है। यह वातावरण सभी दरबारियों को बुरा लगता है, किन्तु संकोचवश आपसे आजतक इसका जिक्र नही किया था, किन्तु आज अवसर देखकर आपसे प्रार्थना की है इसलिये आप इसका किसी भी प्रकार कुछ उपाय अवश्य करिये जिससे भविष्य में दरबार में आपका अपमान न हो सके। राजा भोज ने इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और अपने मन्त्री से कहा कि बताओं हमें इस विषय में क्या करना चाहिये। मन्त्री ने कहा कि महाराज, कालीदासजी को परीक्षा की कठिन कसौटी पर रख दिया जाय, जिससे परीक्षा के द्वारा सजा भी मिल जाये गी और साथ ही साथ इनकी आँखें सदैव के लिये खुल भी जायेंगी। आजकल भरपूर जाड़े का मौसम चल रहा है। इनको नंगा करके, रेगिस्तान के ऐसे घोर जंगल में छुड़वा दिया जाय, जहाँ से दो-तीन दिन तक पैदल चलकर भी वे बस्ती के किनारे तक न आ सकें। मन्त्री की बात सुनकर राजा ने स्वीकृति दे दी।

मन्त्री ने एक पालकी का इन्तजाम करके एक दारोगा और आठ कहार उसके साथ कर दिये जिससे रास्ते में चार चार कहार अपनी बदली करते रहें और फिर कालीदास जी को मन्त्री ने राजा साहब का हुकुम सुनाते हुए कहा कि, महाराज आपको पालकी में बिठाकर रेगिस्तान के जंगल में छोड़ने का हमारे महाराज ने हुकुम कर दिया है। इसलिये पालकी तैयार है, पधारिये। कालिदास जी इन शब्दों को सुनकर दंग रह गये किन्तु मजबूरी इस बात की थी

वह अपनी विद्वत्ता की शक्ति को राजशक्ति के सामने झुका देने के लिये तैयार नहीं थे। वह मन में सोचने लगे कि चाहे प्राण भले ही चले जायँ किन्तु अपनी जान की रक्षा के हित मैं अपने स्वाभिमान को एवं व्यक्तित्व को खो देने के लिये कभी तैयार नहीं होऊँगा। इसलिये कवि कालिदास जी सहर्ष पालकी पर चढ़ गये और पालकी रेगिस्तान की तरफ चल दी। मन्त्री ने दारोगा से पहले ही कह दिया था कि इनको रेगिस्तान के घोर जंगल में छोड़ते वख्त इनके कपड़े भी उतरवा कर लेते आना। कालीदास जी की पालकी में दारोगा जी भी पास में बैठ गये थे। जब यह पालकी रेगिस्तान के बीच घोर जंगल में पहुँच गई तब दारोगा जी ने पालकी रोकने का हुकुम दे दिया और कालीदासजी से नम्रतापूर्वक कहा कि महाराज अब आप यहाँ उतर जाइये और अपनेकपड़े उतार कर हम को दे दीजिये। कालीदास जी ने अपने कपड़े उतार कर दारोगा जी के हाथ में दे दिये। दारोगा जी ने चलते समय कालीदास जी को हाथ जोड़कर नमस्कार किया, और पुनः पालकी में बैठकर विदा हो गये।

अब कालीदास जी इस घोर जंगल में अकेले रह गये। तब वे मन में सोचने लगे कि इस रेगिस्तान में न तो कोई मकान है, और न कोई पेड़ है, दिन तो किसी प्रकार से निकल जायेगा, किन्तु घोर जाड़े की रात्रि को कैसे बिताया जायेगा। पास मे ओड़ने-पहिनने को कपड़े तक नहीं है, और किसी भी बस्ती के किनारे पहुँचने तक के लिये, कम से कम दो तीन दिन का रास्ता चलना पड़ेगा। और इधर रात में जंगली खुंख्वार जानवरों का पूरा डर है। हर प्रकार से कालीदास जी को मौत का साम्राज्य दिखलाई देने लगा। पर कालीदास जी अपने लिये कोई मार्ग नहीं बना सके। धीरे-धीरे सूर्य देव अस्तांचल की ओर बढ़ गये। दिन का प्रकाश भी

अन्धकार की गोद में विलीन हो गया । अन्त में कालीदास जी ने, अपने हृदय में केवल जगत्पिता भगवान का स्मरण किया और कहा कि भगवन, आप सर्वत्र सर्वव्यापक है, दीनजनों की ओर भक्तों की लज्जा हरहालत में सदैव से आपने ही सम्हाली है । इसलिये मेरी रक्षा के लिए भी हे गोविन्द आप यहीं पधारिये ।

उस रेगिस्तान से थोड़ी दूर पर ही एक नाले के नजदीक दो प्रेत रहते थे । दोनों में बड़ा प्रेम था, किन्तु दैवसंयोग से उनमे एक जरासी बात पर बड़ा भारी वाद-विवाद शुरू हो गया । एक प्रेत ने कहा था कि पूस के महीने में सबसे अधिक सर्दी पड़ती है और दूसरे प्रेत ने कहा था कि माघ के महीने में सबसे अधिक सर्दी पड़ती है । इसलिये दोनों प्रेत आपस में झगड़ा करने लग गये । अन्त में दोनों ने मिलकर यह तय किया कि किसी भी बड़े भारी विद्वान के द्वारा इस बात को मालूम कर लें कि कौन से महीने में जाड़ा अधिक पड़ता है । उसी की बात पर हमारी-तुम्हारी हारजीत का फैसला माना जायेगा । अस्तु इन दोनो प्रेतो ने जब यह बात तय कर ली तब फिर उनमें से एक ने का कि आजकल के विद्वानो में कवि कालीदास जी का नाम बहुत ऊँचा हो रहा है, यह बात तय होते ही उन प्रेतों ने अपनी रूहानी ताकत के द्वारा जरासी देर में यह पता लगा लिया कि कालीदास जी तो हमारे नजदीक इसी जंगल में मौजूद बैठे हुए है । चलो उन्हीं के पास चलकर हम दोनों अपनी बात का फैसला करालेंगे । अत: दोनों प्रेत, कवि कालीदास जी के नजदीक चल दिये ।

रात प्रारम्भ हो चुकी थी, किन्तु फिर भी कालीदास जी ने आकाश के क्षीण प्रकाश में सामने से दो भयंकर मूर्तियों को आते देखा । उनके सिर के बाल मुँह पर लटक रहे थे, शरीर में से हड्डियाँ निकल रही थी, हाथ और पाँवों के नाखून बहुत लम्बे-लम्बे

आगे की तरफ बड़े हुए थे, तथा बालों के अन्दर से ढकी हुई आँखे, मशाल की तरह चमक रही थी । अस्तु इन दोनों की कुरूप और भयानक आकृतियों को देखकर, कालीदास जी के हृदय में बड़ा भय उत्पन्न हो गया और मन मे सोचने लगे कि हे भगवान, क्या इन्हीं दोनों के हाथ से मेरी मृत्यु लिखी हुई है । किन्तु जब कालिदास जी ने इन दोनों को अपनी तरफ ही आते देखा तो घबड़ा कर इन्होंने अपनी आँखे मूँद ली और आसन लगाकर मन में भगवत् स्मरण करने लग गये । कुछ क्षण के बाद दोनों प्रेत कालीदास जी के नजदीक पहुँच गये, और दोनों एक ही साथ कालीदास जी को पृथ्वी पर मस्तक टेकते हुए प्रणाम किया । कालीदास जी ने जब इन मीठे शब्दों को सुना तो मन में कुछ संतोष मानते हुए, धीरे से आँखे खोलकर देखा ता दोनों व्यक्ति हाथ जोड़कर कहने लगे, महाराज, आप संसार के माने जाने विद्वान है, और हम दोनों व्यक्तियों में एक जरासी बात पर झगड़ा पड़ गया है इसलिये आपके मुखारविन्द से हम फैसला कराना चाहते है कि हम दोनों में किसकी बात सही है और किसी बात गलत है ।

इन दोनों प्रेतों की बातें सुनकर कालीदास जी ने कहा कि भाई सुनो, अगर तुम लोग अपनी-अपनी बातो का फैसला कराना चाहते हो तो पहले तुम मेरा इस ठंड से बचने का उपाय कर दो, तब मै तुम्हारा फैसला ठीक तौर से तुरन्त कर दूँगा । प्रेतों ने कहा महाराज आप जिस किसी वस्तु के लिये आज्ञा करें, वह वस्तु आपकी सेवा में हम तुरन्त हाजिर कर देंगे । आप बतला तो दीजिये । कालीदास जो ने कहा भाई हमारे चारो और दो-दो तीन-तीन हाथ की दूरी पर लकड़ियाँ जला दो जिसके द्वारा हमारे शरीर को खूब गरमी लग जांवे । प्रेतों ने जरा सी देर में ही

कालीदास जी के चारो तरफ कुछ दूरी पर ढेरों लकड़ियों का अम्बार लगाकर आग लगा दी । कालीदास जी ने आग जलवाकर युक्ति से दोहरा फायदा उठाया कि चारो तरफ आग के जलने से, न तो कोई प्रेत-बाधा छू सकेगी, और न कोई जंगल का खूँखार जानवर ही पास आ सकेगा । इसके अतिरिक्त रात में जंगल की भयंकर ठंड भी अपना असर नहीं कर सकेंगी । चारों तरफ जब खूब आग जलने लगी तब कालीदास जी हर तरह से मन में सन्तोष मानकर प्रेतों से कहने लगे, बोलो भाई अब तुम क्या फैसला कराना चाहते हो ।

दोनों प्रेतों ने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज, हम दोनों का झगड़ा सिर्फ एक बात का है और वह बात भी बहुत मामूली है कि, हम दोनों में से एक का कहना यह है कि पूस के महीने में जाड़ा बहुत जोर की पड़ता है और दूसरे का कहना है कि माघ के महीने में जाड़ा सबसे अधिक जोर का पड़ता है । इसलिये आप ही बता दीजिये कि दोनों महीनों में से, कौन से महीने में जाड़ा सबसे अधिक जोरदार पड़ता है । क्योंकि आपकी वाणी पर ही हम दोनों की हारजीत का फैसला हो जायेगा ।

दोनों प्रेतों की बातें सुनकर कालीदास जी ने मन में सोचा कि मामला बड़ा बेढब है, क्योकि इन दोनों में से जिसके अनुकूल बात कह दूँगा वह तो मुझसे कुछ नही कहेगा, किन्तु जिस व्यक्ति के प्रतिकूल बात कहूँगा तो वही मेरी जान का पक्का दुश्मन बन जायेगा । इधर तो परिस्थितिवश वैसे ही जान के लाले पड़े हुए है, और दूसरी तरफ इन दोनों में से यदि एक भी मेरी जान का दुश्मन बन गया तो फिर जीवन-रक्षा करने के सभी साधन समाप्त हो जायेंगे । अत: कालीदास जी ने बड़ी गम्भीरतापूर्वक विचार करके प्रेतों से कहा कि देखो भाई, बात तो तुम दोनों की ही सही मालूम

होती है, क्योंकि किसी साल में तो पूस के महीने में हवा जोरदार चल जाती है, तो उस वर्ष मे पूँस का जाड़ा जोरदार माना जाता है, और किसी साल में माघ के महीने में हवा जोरदार चलती है तो उस वर्ष में माघ का जाड़ा जोरदार माना जाता है। किन्तु वास्तव में सत्य यह है कि दोनों महीनों में ही जाड़ा एक बराबर का पड़ता है। यह तो केवल हवा का फर्क है। इसलिये तुम दोनों को आपस में झगड़ा करने के लिए कोई गुंजाइश नही रह गई है।

दोनों प्रेतों ने जब कालीदास जी का फैसला, अपने-अपने अनुकूल पाया, और हार किसी की भी नही हुई। तब तो ये दोनों प्रेत बड़े प्रसन्न हो गये, और कवि कालीदास जी के पाँव पड़कर दोनो ने दण्डवत् प्रणाम किया। तदुपरान्त प्रेतों ने कालीदास जी से विनयपूर्वक कहा कि महाराज आपका जैसा ऊँचा नाम सुन रखा था, वैसा ही आप ऊँचे विद्वान भी है। आपके दर्शन पाकर हम लोग वास्तव में कृतार्थ हो गये है। अब आप कृपा करके हम दोनों के लिये कुछ और सेवा बतलाये, जिससें कि आप जैसे विद्वान की सेवा करके हम लोग अपने जीवन को कुछ सफल बना सकें।

कालीदास जी ने देखा कि दोनों ही प्रेत बड़े प्रसन्न हो रहे है, तो अब इनसे कुछ काम निकालना चाहिये। ऐसा सोचकर कालीदास जी ने प्रेतों से कहा कि देखों भाई, अगर तुम हमारी कुछ सेवा करना चाहते हो तो, इसी समय तुम दोनो राजा भोज के महलों में से राजा और रानी को सोते हुये ही, दोनों को पलंगों सहित उड़ाकर यहाँ ले आओ। किन्तु यह ध्यान रखना कि, उनके पलंग हमसे थोड़ी सी दूरी पर तुम लाकर रख दोगें और जब उनकी आँखें खुलेंगी, तब तुम दोनों उनके पलंग से कुछ दूर सामने खड़े होकर अपने दर्शन देते रहना। इसके बाद जब तक मै तुम लोगों को कोई नया हुकुम न दूँ, तब तक तुम लोग वहीं वर

खड़े-खड़े राजा और रानी के दर्शन करते रहना।

कालीदास जी का हुकुम पाते ही दोनों प्रेत बड़ी खुशी के साथ जरासी देर में राजा भोज के महलों में पहुँच गये, और राजा रानी को पंलग सहित, दोनों प्रेत तुरन्त उड़ाकर ले आये, और कालीदासजी के सम्मुख ही कुछ दूरी पर दोनों के पलंग रख दिये। जब जंगल की ठंडी हवा से राजा रानी की नींद खुली तो, उन्होंने उस अँधियारी रात के क्षीण प्रकाश में उस घोर जंगल को देखा और फिर जरासी देर मे ही उनकी नजर उन दोनों भयानक प्रेतों के ऊपर पड़ी। उन दोनों प्रेतों को देखकर राजा और रानी दोनों ही एकदम घबरा गये। और उन्हें बड़ा आश्चर्य इस बात का हुआ कि हम लोग तो अपने महलों में सो रहे थे, यहाँ जंगल में कैसे आ गये। प्रेतों की आकृति से रानी को भयंकर डर उत्पन्न हुआ और वह घबरा कर जल्दी से राजा साहब के पलंग पर उछल कर चढ़ गई और बोली महाराज, मेरी जान इन प्रेतों से जल्दी बचाओ, अन्यथा यह हम लोगों को खा जायेंगे। राजा साहब स्वयं ही बड़े चिंतित थे। वे अपनी और रानी की रक्षा करने में अपने को असमर्थ पा रहे थे। किन्तु उन्होंने जंगल की ओर चारों तरफ नजर घुमाकर देखा तो, उनको जलती हुई आग के प्रकाश में, कालीदास जी की मूर्ति ध्यानावस्थित दिखलाई पड़ी। राजा साहब ने रानी से कहा कि देखो उस अग्नि के प्रकाश में कालीदास जी दिखाई पड़ रहे हैं। इसलिए इस मुसीबत के समय में हमको उन्हीं की शरण में चलना चाहिए, अन्यथा प्राणरक्षा का कोई साधन हमारे पास नहीं है रानी ने कहा कि महाराज, आपने तो उनको अपने दरबार से अपमानित कराकर जंगल में भिजवा दिया था, अब किस मुँह से उनके सामने अपनी रक्षा के लिये कहेंगे। राजा ने कहा रानी, तुम नहीं जानती हो, जो महापुरुष होते हैं, वह विपक्षी की मुसीबत

के समय दुश्मन की भी भलाई करने को तैयार हो जाते है, यही उन लोगो के जीवन का आदर्श पाया जाता है। अस्तु, इस समय हमको कालीदास जी की शरण में चलना बहुत ही आवश्यक है। इतना कहकर दोनो राजा-रानी पलंग से उतरकर तुरन्त कालीदास जी की ओर चल दिये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि कालीदास जी आँखे बन्द किये हुए ध्यानमग्न बैठे है। किन्तु फिर भी राजा भोज ने भय और स्वार्थ के वशीभूत होकर जरा धीरे से कहा महाराज कालीदास जी, दण्डवत स्वीकार हो।

इस शब्द के सुनते ही कालीदास जी ने आँखे खोल दीं और सामने खड़े हुए राजा-रानी को देखकर कहा, अरे आप लोग यहाँ कैसे आ गये? कहिए मेरे लायक क्या सेवा है बताइये। राजा ने शीघ्रतापूर्वक उत्तर देते हुए कहा कि महाराज, यह सेवा बताने का समय नही है, बल्कि हमारी प्राणरक्षा का सवाल है। देखो वह सामने दो भंयकर प्राणी खड़े हुए हैं, इनसे हमारी रक्षा करिये। कालीदास जी ने राजा भोज की बातें सुनकर कहा, अरे आप तो स्वयं राजा है। आपके पास फौज, पलटन, नौकर-चाकर, अस्त्र-शस्त्र सभी चाजें रहती है फिर आप को डरने का क्या कारण है ?

राजा भोज ने उत्तर देते हुए कहा महाराज, यह सब चीजें तो राज्य में मौजूद है, किन्तु यहाँ इस घोर अन्धकारमय जंगल में तो कुछ भी साधन प्राप्त नहीं है, इसलिये इस समय शीघ्र कृपा करके हमारी सहायता करिये। कालीदास जी ने राजा भोज के दीन भरे शब्दों को सुनकर कहा, अच्छा राजन, अब तुम क्या चाहते हो। यदि आप दोनों अपने महल में जाना चाहते हों तब तो तुम अपने-अपने पलंगों पर जाकर लेट जाओ, तुमको तुरन्त यथास्थान पहुँचवा दूँगा, किन्तु पलंगों पर लेटते ही तुम लोग अपनी चादरें ओढ़ कर मुँह ढ़ँक लेना। राजा भोज तुरन्त ही बहुत अच्छा कहकर

रानी सहित अपने-अपने पलंगो पर जाकर लेट गये और चादरों से अपना मुँह ढ़क लिया। राजा भोज के जाते ही कालीदास जी ने दोनों प्रेतों को हाथ के इशारे से बताते हुए कहा कि इन दोनों को तुम जहाँ से लाये हो वहीं पर शीघ्र पहुँचा दो। कालीदास जी की आज्ञा पाते ही दोनों प्रेतों ने, राजा और रानी के पलंगों को तुरन्त ही उड़ाकर उनके राजमहलो में यथास्थान पहुँचा दिया। राजा भोज ने ज्योंही आँखे खोलकर देखा तो रानी के सहित अपने-अपने पलगों पर अपने को राजमहलों के अन्दर पाया। तब राजा भोज को उस समय कवि कालीदास जी के गुणों का स्मरण होने लगा, उन्होंने अपने मन में कहा कि आज यदि कालीदास जी कृपा न करते तो हम दोनों का प्राणान्त अवश्य हो जाता। इसके अतिरिक्त राजा भोज के हृदय में सबसे अधिक सहानुभूति कालीदास जी के प्रति इस बात पर पैदा हो रही थी कि, मैंने उनको अपने दरबार से अपमानित कराकर मौत के मुँह में पहुँचवा दिया था, और इसके बदले में कालीदास ने मुझको रानी सहित, मौत के मुँह से बचाकर, हमारे राजमहलों में हमो सुरक्षित पहुँचवा दिया; और उनके दयालु हृदय में बदला लेने की भावना कतई पैदा नहीं हुई। राजा भोज ने जैसे-तैसे रात काटी और दिन निकलते ही उन्होंने अपने मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम अति सुन्दर पौशाकें और पालकी लेकर उस जंगल में शीघ्र जाओ और कवि कालीदास जी को बड़े स्वागत के सहित, विनयपूर्वक पालकी में बैठाकर यहाँ जल्द से जल्द ले आओ। इस कार्य में जरा भी कोई त्रुटि कहीं न रहने पाये। इसके अतिरिक्त राजा भोज ने अपनी रात वाली समस्त घटना, आद्योपान्त मन्त्री को सुनाई। राजा भोज का मंत्री दो पालकियों को लेकर तथा घने बलवान कहारों को लेकर एवं उस दिन वाले उस दारोगा को लेकर अति शीघ्र ही वह उस

जंगल की ओर चल दिये। कुछ समय के उपरान्त जब राजमंत्री जंगल में पहुँच गया तो उसने कुछ दूर पहिले ही से पालकी से उतर कर पैदल चलना शुरू कर दिया, और कालीदास जी के पास पहुँचकर मन्त्री ने पृथ्वी पर मस्तक टेककर दंडवत किया और हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहने लगा कि महाराज पधारिये, हमारे महाराज ने आपको महान स्वागत के साथ दरबार में लिवा लाने के लिए मुझे भेजा है और उन्होंने साथ ही साथ यह प्रार्थना भी कहला भेजी है कि हमारा जो कुछ भी अपराध आपकी दृष्टि में हो उसे क्षमा कर दीजिये, और जो जो कीमती वस्त्र हम लाये है उन्हें पहनकर हमारे साथ चलने की कृपा करिये। राजमन्त्री के भरपूर विनय युक्त वचन को सुनकर कालीदास जी प्रसन्न हो गये और राजसी पोशाकें पहिनकर पालकी में बैठ गये। तदुपरान्त कुछ समय के बाद जब यह लोग राजदरबार के नजदीक पहुँच गये तब दूत ने जाकर दरबार मे खबर कर दी कि कालीदास जी की सवारी दरबार के निकट आ पहुँची है। तुरन्त राजा भोज अपने दरबारियों को साथ लेकर कालीदास जी के स्वागत के लिये दरवाले पर आये। जैसे ही कालीदासस जी पालकी से उतर कर दरबार में घुसने लगे कि राजा भोज का साक्षात्कार हो गया। राजा भोज ने जैसे ही कालीदास जी को नमस्कार किया, तैसे ही कालीदास जी ने सर्वप्रथम दरबार में घुसते ही अपनी उसी पुरानी कहावत को दुहराते हुए कहा कि 'स्वदेशे पूज्यते राजा, गुणी सर्वत्र पुज्यते।' अस्तु वही पुराना भावार्थ था कि राजा तो अपने देश में ही पूजाजाता है और गुणी जन समस्त विश्व मे पूजा जाता है। अस्तु राजा भोज ने कालीदास जी के उन शब्दों का जोरदार रूप से समर्थन करते हुए कहा कि हाँ महाराज आपका यह वचन अक्षर-अक्षर सत्य है। हम आपके इन शब्दों का हृदय से स्वागत

करते है । इसके उपरान्त राजा भोज ने कालीदास जी को अपने साथ लेजाकर राजमहलों में खाना-पीना कराया और उस दिन से कालीदास जी की इज्जत चौगुनी और बढ़ गई और सभी दरबारी एवं प्रजावासी लोग भी, पहिले के मुकाबले में कालीदास जी का बड़ा भारी मान-सम्मान और स्वागत करने लग गये ।

गरीब राजा से रावण की हार

त्रेतायुग के समय में एक छोटी सी राजधानी में एक सतोगुणी बेनु नाम के राजा राज करते थे । इनकी दीनचर्या बड़ी ही विचित्र थी, क्योंकि वे राज्य की आमदनी में से एक पैसा भी अपने खर्च के लिए नहीं लेते थे । बल्कि वे अपनी रानी के साथ मिलकर अपने हाथों से ही खेती करते थे, अर्थात् बैलों तक से खेतों में काम नहीं लेते थे । बैलों की जगह रानी को ही जोतकर खेती का काम पूरा करते थे, क्योंकि बैलों को जोतना भी अपराध मानते थे, और इसीलिए कभी किसी घोड़े, हाथी आदि पशु की सवारी पर नहीं चलते थे । घर के सभी धन्दे रानी अपने हाथों से करती थी, क्योंकि राजा और रानी की खेती के द्वारा जो कमाई होती थी, उस कमाई के पैसे में से एक साल भर तक का खर्चा बड़ी मुश्किल से चलाना पड़ता था । अर्थात मोटा छोटा मामूली कपड़ा दोनों पहिन पाते थे, घर की रसोई बहुत मामूली बन पाती थी । जेवर का तो नाम-निशान भी नहीं था, उस खेती की कमाई से; अपने निजी कार्यों के लिए नौकर रखना तो नितान्त असम्भव ही था । अस्तु यह दोनों राजा रानी, बड़ा परिश्रम करके अपनी उदरपूर्ति और मामूली कपड़ों से जीवन व्यतीत करते थे । उसके अतिरिक्त, राजा

साहब राजकाज की देखभाल तथा प्रजा का पालन और न्याय कार्य बड़ी सावधानी और सत्यता के साथ, सेवा भाव से, कुशलतापूर्वक करते रहते थे । और सुबह शाम एकान्त स्थान पर भगवान का भजन किया करते थे । राजासाहब को रात में आराम और शयन करने के लिए बहुत कम समय मिल पाता था । इधर रानी भी अपने घर के तथा रसोई के कार्यों में लगी रहती थी और यथा शक्ति अपने पति की सेवा का भरपूर ख्याल रखती थी । राजासाहब के और अपने कपड़ों को स्वयं अपने ही हाथों से घर में धो लिया करती थी । इस प्रकार इन दोनों राजा रानी का जीवन, साधारण मजदूरों से भी गया गुजरा गरीबी से युक्त था, किन्तु ये दोनों प्राणी, जनता की सच्ची सेवा करने में ही अपना परम सौभाग्य मानते थे । इसलिये इसको अपनी गरीबी के जीवन पर कोई भी दुःख नहीं था, बल्कि सुख, संतोष और शान्ति इनको भरपूर प्राप्त थी ।

एक बार इनके राज्य में कोई बड़ा मेला या उत्सव मनाया गया और जनता बड़े समारोह के साथ, एक ही स्थल पर एकत्रित हुई । वहाँ इन दोनों राजा-रानियों को भी जाना पड़ा था । उस मेले में गरीब से गरीब लोग भी अच्छे-अच्छे कपड़े और जेवर, अपनी परिस्थिति के अनुसार पहिन कर आये थे । किन्तु उस तमाम मेले के स्त्री-पुरुषों में सबसे अधिक गरीबी की वेषभूषा इन्हीं दोनों राजा-रानियों की थी । इस तमाम वातावरण को देखकर रानी का हृदय बड़ा दुखी हुआ, और उसने घर आकर उस दिन राजा साहब से कहा कि महाराज, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हम और आप कहने को तो राजा रानी है किन्तु घर में इतना भी साध न नहीं है कि यदि कहीं आने-जाने या मेले-त्योहार का काम पड़ जाय तो कुछ अच्छे कपड़े तथा जेवर पहिन सके । इसलिए आपने

जो यह हठधर्मी चलाई कि हम राज्य का एक पैसा भी अपने काम में नही लेंगे यह बात आपकी मुझको पसंद नहीं है । आपने उसदिन मेले में देखा होगा कि गरीब लोग भी अच्छे-अच्छे कपड़े और जेवर अपनी क्षमता के अनुसार पहिने हुए थे । किन्तु हमारे और आपके पास इसके लिए जरासा भी कोई उत्तम साधन नहीं है ।

रानी की बात सुनकर कुछ आश्चर्य करते हुए, राजा ने कहा कि रानी तुमने अपने समस्त जीवन में कभी भी इस बात का ख्याल नहीं किया कि हमको बढ़िया कपड़ा और जेवर होना चाहिए किन्तु आज जब बुढ़ापे की तरफ हमारे और तुम्हारे जीवन का प्रवेश हो रहा है तब तुमने यह बात निकाली है । इस लिए अच्छा होता कि जीवन को भी उसी रूप में व्यतीत किया जाता, जैसा कि हम और तुम करते चले आरहे हैं ।

रानी ने उत्तर देते हुए कहा कि महाराज रहने दो इन बातों को । हमको तो इस गरीबी के जीवन से परेशानी अनुभव होती है, क्योंकि कहने के लिए तो दुनियाँ के सामने हम लोग राजा रानी है, किन्तु कोली और चमारों से भी गया बीता जीवन है हमारा । इसलिये अब आप कुछ न कुछ अच्छे-अच्छे कपड़े और जेवरों का तो प्रबन्ध अवश्य ही कर दीजिये ।

रानी की बात सुनकर, राजा कुछ मौन होकर मन में गम्भीर चिन्तन करने लगे कि समस्या बड़ी ही विचित्र है । एक तरफ तो राज्य का पैसा हमको अपने काम में लेना है, दूसरी तरफ रानी ने आज से पहिले कभी भी जिन्दगी भर में कोई सवाल या माँग नहीं की थी, इसलिये उसको इन्कार भी कैसे किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त हमारी खेती की निजी आमदनी में से इतनी बचत नहीं है कि हम रानी की माँग पूरी कर सकें । अस्तु उस दिन राजा गम्भीर विचारों में पड़े-पड़े सो गये और उनको कोई नया मार्ग नहीं

दिखलाई दिया। किन्तु दूसरे दिन जब वह अपने राज दरबार में आकर बैठे तो उनको एक नई सूझ ध्यान में आयी और उन्होंने अपने मन्त्री से सलाह करते हुए कहा कि, मन्त्री जी हमारी रानी ने अपनी जिन्दगी भर में हमसे कभी कोई सवाल कपड़े और जेवरों के लिये नही किया था, किन्तु जब से उस दिन मेले में से लौटकर आई है तब से उन्होंने मुझसे खासतौर से आग्रह करके कुछ अच्छे-अच्छे कपड़े और जेवरों को बनवाने के लिए कहा है। पर अपने राज्य का पैसा मैं अपने काम में लेना नहीं चाहता हूँ, तथा मेरी निजी खेती की कमाई में से, एक पैसे की भी बचत नहीं हो पाती है। इसलिये मजबूर होकर मुझे यह सेचना पड़ा है कि तुम देशाटन के लिए निकल जाओ, और इस भूमंडल पर जहाँ कहीं भी तुमको कोई भंयकर अत्याचारी दुष्ट राजा नजर आये तो उसी से हमारे लिये, टैक्स के रूप में, सवा मन सोना लेकर आ जाओ। किन्तु किसी गरीब या धर्मात्मा राजा को कतई मत सताना।

मन्त्री ने कहा महाराज आपने, जैसे आज्ञा दी है उसी के अनुसार कार्य करके सवा मन सोना टैक्स के रूप में ले आऊँगा। आप पूर्ण निश्चिन्त रहिये। आपके तप और त्याग की शक्ति के बल पर मैं कठिन से कठिन कार्य को भी, सहज ही पूर्ण सफल बना सकता हूँ। इतना कहकर राजमंत्री ने उठकर महाराज को सिर नवाया, और तुरन्त यात्रा के लिये कुछ आवश्यक सामान लेकर राजा से विदा हो गया।

मन्त्री ने राज्य से बाहर निकलकर तमाम भूमंडल के राजाओं के सम्बन्ध में विचार करना और जानकारी प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ ही दिन में उसे यह मालूम हो गया कि आजकल इस पृथ्वी पर सबसे कठोर, बड़ा बलवान दुष्ट स्वभाव का राजा

रावण है, इसलिये यह मन्त्री महोदय, उस राजा रावण से मिलने चले गये। दरबान ने जाकर रावण से निवेदन कर दिया तो रावण ने मन्त्री को दरबार में आ जाने के लिए आज्ञा दे दी। दरबार में पहुँचकर रावण को नमस्कार किया और कहा कि महाराज मैं बेनू राजा का मन्त्री हूँ, उनकी आज्ञा के अनुसार मैं आपसे सवा मन सोना टैक्स के रूप में लेने आया हूँ।

मंत्री की बात सुनकर रावण को बड़ी हँसी आयी और वह कहने लगा कि अरे राजमंत्री, मालूम होता है कि तू और तेरा राजा, दोनों ही बड़े मूर्ख हो, क्या तुम्हें यह बात मालूम नहीं है कि रावण टैक्स लेना जानता है किन्तु देना नहीं जानता। इसलिये यदि तुम भीख के रूप में सोना माँगते तो शायद तुमको सवामन सोना अवश्य मिल जाता, किन्तु तुम टैक्स के रूप में सोना लेना चाहते हो, तो यह तुम्हारी महान् मूर्खता है। गनीमत इसी में है कि तुम अपनी जान बचाकर यहाँ से शीघ्र भाग जाओ। अन्यथा इसी समय तुमको मौत के घाट उतरना पड़ेगा।

रावण की बात सुनकर मन्त्री नमस्कार करके तुरन्त वहाँ चे चल दिया और समुद्र किनारे पहुँचकर उसने अपने हाथ से रावण की लंका जैसी एक मिट्टी की छोटी सी लंका बनाना शुरू कर दिया। इधर मन्त्री के चले जाने के बाद रात को जब रावण अपने महलों में पहुँचा तो उसनेअपनी रानी मन्दोदरी से हँसकर कहा कि देखो रानी, अभी दुनिया में बड़े-बड़े मूर्ख राज पड़े है, उन्हीं में से एक राजा बेनु है। उसने सवामन सोना मुझसे टैक्स में प्राप्त करने के लिये अपने वृद्ध मन्त्री को मेरे यहाँ भेजा था। जब उसने मुझसे सब बातें कही तो मैंने उसको यह कहकर भगा दिया कि जान बचानी है तो अभी भाग जाओ, तो वह चला गया ।

मन्दोदरी रानी ने कहा कि महाराज उस मन्त्री के पास अपने

तपस्वी बेनु राजा की गुप्त शक्ति मौजूद थी । उसके बल से वह आपसे टैक्स के रूप में सोना लेने आया था । उस राजा की महिमा मैने खूब सुन रखी है । आपने उनको समझने में भूल की है अत: मै प्रात:काल होने पर उस राजा की शक्ति का परिचय आपको स्वयं दूँगी, तब आप यह समझ पायेंगे कि वह अकेला मन्त्री जो केवल बातों से ही आप जैसे जगत विख्यात योद्धा से, टैक्स वसूल करने आया था, मूर्ख नही था ।

रावण और मन्दोदरी दूसरे दिन जब प्रात:काल उठे तो मन्दोदरी ने रावण से कहा कि महाराज महलों की छत के ऊपर चलिये । मै उस राजा के प्रताप को अभी आपको दिखलाये देती हूँ । यह कहकर मन्दोदरी कुछ अनाज कपड़े में भर कर रावण के साथ महल की छत के ऊपर गई और वहाँ उसने थोड़ा सा अनाज कबूतरों के खाने के लिये पास वाली दूसरी छत पर फेंक दिया । अनाज के पड़ते ही सैक्ड़ों कबूतर छत पर आ गये और अनाज खाने लगे । जब मन्दोदरी ने देखा कि सब कबूतर अनाज खाने में मस्त हो रहे है तो मन्दोदरी ने तुरन्त ही उन कबूतरों से कहा कि अरे कबूतरों! तुमको बेनु राजा की आन है इसमें से एक भी दाना मत खाओ । मन्दोदरी के मुँह से शब्द निकलते ही सब कबूतरों ने अपने अपने मुँह बन्द कर लिये, और एक भी दाना किसी ने नहीं खाया । इसके कुछ देर के बाद मन्दोदरी ने पुन: कबूतरों से कहा कि तुमको बेनु राजा की आन है कि दाना खाने लगो । यह सुनते ही सब कबूतर फिर से दाना खाने लगे । इसके कुछ देर बाद मन्दोदरी ने कुछ और दाना फैकते हुए कहा अरे कबूतरों ! तुमको राजा रावण की आन है इनमें से एक भी दाना मत खाओ, किन्तु इस बार एक भी कबूतर ने दाना खाना बन्द नहीं किया, बल्कि बड़ी संलग्नता के साथ दाना खाने में सब कबूतर लगे रहे । इसी

दौरान एक बहरा कबूतर भी उन कबूतरों के साथ आकर दाना खाने लग गया था । अतः मन्दोदरी ने रावण को यह सब तमाशा दिखाते हुए पुनः कहा कि अरे कबूतरो तुमको पुनः बेनु राजा की आन है इनमें से एक भी दाना मत खाओ । सभी कबूतर तो एक दम दाना खाने से तुरन्त रुक गये किन्त उस बहरे कबूतर ने मन्दोदरी की बात नहीं सुनी थी इसीलिये उसने ज्योंही दाना खाने के लिये चोंच मारी कि उस कबूतर की गर्दन तुरन्त कटकर जमीन पर गिर पड़ी । मन्दोदरी ने कहा देखा महाराज, सिर्फ यह एक ही कबूतर बहरा था जिसने उस राजा की आन को नहीं सुना था और दाना खाने को ज्योंही उसने चोंच मारी कि उसकी गरदन तुरन्त कटकर जमीन पर गिर पड़ी है । अन्त में रानी ने सब कबूतरों से कह दिया कि तुमको बेनु राजा की आन है दाना खाना शुरू कर दो । फिर से सभी कबूतर दाना खाने लग गये ।

इस प्रकार मन्दोदरी ने उस राजा के महान प्रताप का परिचय देते हुए कहा कि महाराज, इस राजा के तप और त्याग की इतनी ऊँची महिमा है कि जहाँ कहीं भी काई व्यक्ति इसकी आन लगाकर बात कह देगा तो वह बात उसकी उसी वक्त पूरी हो जाती है । इसलिये आपको उस राजा के मन्त्री की बात मान लेनी चाहिये थी । मन्दोदरी के इस कौतुक भरे कार्य को देखकर रावण अपने मन के अन्दर सशंकित और लज्जित हुआ, किन्तु स्वभाव के कारण उसने मन्दोदरी को यह कहकर टाल दिया कि अरे तूने भी क्या जानवरों का तमाशा दिखाकर मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश की है । अतः रावण उसीदिन अपने नियत समय पर राजसभा में तो पहुँच ही गया किन्तु मन्दोदरी के उस खेल को देखने के बाद से कुछ उदास हो गया था ।

उधर उस मन्त्री ने समुद्र के किनारे पर मिट्टी की एक छोटी

सी लंका जब तैयार कर ली, तब वह पुनः रावण की सभा में आया और नमस्कार करके कहने लगा कि महाराज मै आपको एक तमाशा दिखलाना चाहता हूँ, आप मेरे साथ समुद्र के किनारे पर चलने की कृपा करिये। आपने ऐसा नवीन तमाशा जिन्दगी में आज तक न कभी देखा होगा और न कभी देखने को मिल सकेगा।

रावण ने उस मन्त्री की बात को इसलिए तुरन्त स्वीकार कर लिया कि मन्दोदरी के द्वारा वह इनकी महानता स्वयं अपनी आँखो से देख चुका था, अतः रावण अपने कुछ योद्धा और सिपाहियों को साथ लेकर उस मन्त्री के साथ चल दिया और जब वे सब लोग उस मिट्टी की लंका के पास आ गये, तब वह मन्त्री रावण से कहने लगा कि महाराज दखिए यह मिट्टी की लंका आपकी लंका के सदृश ही मालूम हो रही है, अतः इस मिट्टी की लंका के जितने हिस्से को मै अपने हाथों से तोड़ दूँगा, उतनी ही तुम्हारी लंका स्वयंमेव टूट कर गिर जायेगी। यह कहकर उस मन्त्री ने कहा कि अरी मिट्टी की लंका! तुझको हमारे बेनु राजा की आन है कि मै जितनी तुझे तोड़ दूँ, उतनी ही लंका इस रावण की स्वयमेव टूट कर गिर पड़नी चाहिये। इतनी कहते ही मन्त्री ने, मिट्टी की लंका का एक तरफ का कुछ हिस्सा तुरन्त तोड़कर फेंक दिया और रावण से कहा कि जाओ महाराज, अपनी लंका के इस हिस्से को देख लो, साबूत है या गिर चुका है। यदि तुम्हारी सोने की लंका का इतना हिस्सा टूट चुका है तो समझ लो कि मै जरा सी देर में तुम्हारी समस्त लंका को चौपट कर सकता हूँ। इसलिये मै फिर एकबार आपको समझने के लिए मौका देता हूं कि या तो सवामन सोना टैक्स के रूप में हमको दे दें अन्यथा अपनी लंका की रक्षा कर सको तो कर लेना। रावण ने तुरन्त अपने कर्मचारियों

को आज्ञा दी कि तुम लोग शीघ्र खबर लाकर दो कि हमारी लंका का इतना हिस्सा टूट चुका है या सुरक्षित है । रावण के कर्मचारियों ने जाकर देखा तो लंका का उतना हिस्सा टूट जाने की खबर लगाकर तुरन्त देदी । रावण तो अपने मन में पहिले से ही उसकी शक्ति को समझे बैठा था । उसने अपनी आन्तरिक लज्जा को छिपा कर प्रकट भावना को बदलते हुए उस राजा के मन्त्री से कहा कि अरे भाई क्या जरासी चीज के लिए झगड़ा बढ़ाना । हमारे यहाँ सोने की क्या कमी है? चाहें तो आप दस मन सोना ले जाइये । इतना कहते ही रावण ने अपने एक खास आदमी को इशारा करते हुए कहा कि तुम इनको सवा मन सोना शीघ्र दे दो । रावण की आज्ञा पाते ही जरा सी देर में उस व्यक्ति ने सवा मन सोना लाकर उस मन्त्री को दे दिया । इसके बाद वह मन्त्री रावण को नमस्कार करके सोना लेता हुआ अपने राज्य की तरफ चल दिया । कुछ ही दिनों में वह अपने स्वामी बेनु राजा के तपोबल की शक्ति के द्वारा अपनी राजधानी में आ पहुँचा; और उसने सवामन सोना अपने राजा के सन्मुख रखते हुए रावण का सारा वृत्तान्त कह सुनाया ।

मन्त्री की बात से राजा बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि तुमने यह बड़ी समझदारी का काम किया कि किसी गरीब, सीधे राजा को नहीं सताया । इसके बाद राजा ने मन्त्री से कहा कि इस सोने को लेकर हमारे घर चलो और यह सोना हमारी रानी को भेंट कर दो; क्योंकि मै इस सोने को अपने हाथ से छूना नहीं चाहता हूँ । राजा के साथ मन्त्री रानी के पास पहुँचे और उन्होंने सवा मन सोना रानी के सन्मुख भेंट कर दिया । तब राजा साहब ने रानी से कहा कि देखो यह सवा मन सोना मैंने तुम्हारे लिए बाहर से मँगवाया है । इसलिये इसी में से तुम अपने जेवर बनवा

लो और अच्छे-अच्छे कपड़े भी तैयार करवा लो, इसके अतिरिक्त फिर भी जो शेष हिस्सा सोने का बच जाय तो उसे अपने पास रख लेना ताकि फिर कभी तुम्हारी कोई आवश्यकता आ जाय तो इसी से उसकी भी पूर्ति हो सकती है । क्योंकि हमारी निजी आमदनी में से तो, केवल मोटा झोटा खाने-पहिनने के सिवाय एक पैसे की भी बचत नही हो सकती है । रानी ने सवा मन सोना सन्मुख देखते ही मन में विचार किया कि मेरे लिए स्वामी ने केवल मेरी प्रसन्नता के लिये ही यह सोना किसी विशेष उपचार द्वारा मेरे मँगवाया है, किन्तु इसमें से वह स्वयं जरा सा भी हिस्सा लेना नहीं चाहते, और इसके अतिरिक्त वह इस सोने को छूना भी पाप समझते है, इसीलिये उन्होंने मन्त्री के हाथों से यह सोना मेरे सन्मुख भिजवाया है । अस्तु रानी के हृदय में इन तमाम बातों ने एकदम रानी का पूरा विचार क्षण मात्र में बदल डाला और उसके हृदय में पुनः सतोगुण का पूरा संचार जागृत हो उठा । तब रानी ने हाथ जोड़कर राजा से कहा कि महाराज, मेरा अपराध क्षमा कर दीजिये । मेरे लिए अब अच्च्छे-अच्छे कपड़े और जेवरों की जरूरत नही है । मुझे तो वही जीवन पसंद है जो कि हमेशा से आपके साथ मैंने व्यतीत किया था । क्योंकि मेरे सिर पर उस मेले में एक उन्माद सवार हुआ था जो कि आज पूर्णरूपेण नष्ट हो गया है । इसलिये मैंने जो कुछ भी नई मांगें प्राप्त करने के लिए आपसे कुछ कहा सुना था उसके लिए मेरे हृदय में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हो रहा है, और मै उसके लिए आपसे बार-बार क्षमा चाहती हूँ । इसके बाद फिर कभी भी इस जीवन में मै आपसे किसी प्रकार की नई माँगे कतई नहीं रखूँगी ।

रानी की बातों को सुनकर राजा बेनु बड़ा प्रसन्न हुआ । तब राजा ने कहा कि रानी जी यदि कोई व्यक्ति सुबह का भूला हुआ शाम को भी अपने घर वापिस आ जाये तो वह व्यक्ति भूला हुआ

नहीं माना जाता । मै भगवान को अनेक-अनेक धन्यवाद देता हूँ कि उसने तुम्हारी बुद्धि को फिर से सतोगुण पर लाकर रखा । मन्त्री मन ही मन में मगन हो रहा था और सोचता था कि हे भगवान तुमने ऐसे देवता पुरुषों को भी मनुष्य जन्म देकर इस पृथ्वी मंडल पर भेजा है । तुम्हारी माया धन्य है । रानी के अन्तिम विचार को सुनकर राजा ने तुरन्त अपने मन्त्री से कहा कि देखो अब यह अब यह सोना तो हमारे किसी भी मतलब का नहीं है । इसे ले जाकर गरीब लोगों को थोड़ा-थोड़ा बाँट दो । राजा की आज्ञा पाकर मन्त्री ने वह सोना लेजाकर गरीबों को तुरन्त बँटवा दिया और वे दोनों राजा-रानी पहिले की भाँति ही अपनी दिनचर्या में बड़े मगन रहने लगे, तथा तप और त्याग की उनकी भावना दृढ़ हो गयी । इसलिये प्रजा की सेवा और ईश्वर के चिन्तन में उन लागों का विशेष मन लगने लग गया । उधर सवा मन सोना देने के बाद जब पुनः रावण और मन्दोदरी की बातें महलों में हुई तो, मन्दोदरी ने अपनी बात का समर्थन करते हुए कहा कि नाथ आपका इसी में कल्याण था कि आपने उसे सोना दे दिया अन्यथा थोड़ी देर में सर्वनाश हो जाता ।

क्षमा का विचित्र परिणाम

एक गाँव में वायुजित नाम के बड़े चरित्रवान धनसम्पन्न साधारण वेष में एक महात्मा रहते थे । ये महात्मा बड़े ज्ञानी, शान्तिप्रिय और संतोषी थे । इसके अतिरिक्त इनके अन्दर नम्रता, सज्जनता और क्षमा की अद्‌भुत शक्ति विद्यमान थी और ये ईश्वर के गुणानुवाद में अटूट श्रद्धा रखते थे । एक दिन महात्मा वायुजित

सड़क पर से गुजरते हुए कही जा रहे थे, कि एक गायक साधू हाथ में तानपूरा लेकर सामने से आता हुआ दिखायी दिया। उसे देख वायुजित को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तुरन्त साधू के सामने हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहा कि महाराज कोई भगवत कीर्तन सुनाइये।

साधू ने वायुजित की ओर देखते हुए कहा, अरे मूर्ख क्या तू कोई राजा बाबू है या कोई बड़ा सरदार है। किसलिये तू हमारा गाना सुनने के लिये आग्रह कर रहा है। तेरे जैसों के लिए हमारा गाना सुनने का कोई अधिकार नही है, जा तू अपने घर का रास्ता ले। साधू की बातें सुनकर वायुजित कहने लगे अरे भाई, हम कोई राजा बाबू या बड़े सरदार नही है किन्तु जिस जगतपिता ईश्वर की बनाई हुई यह सारी सृष्टि है, उस ईश्वर का गुणानुवाद सुनने का तो सभी प्राणियों को अधिकार है, फिर तुम ऐसी व्यर्थ की बातें कह कर अपने अन्दर क्रोध क्यों करते हो। वायुजित की बातें सुनकर साधू को और दूना क्रोध हो गया; और उसने आवेश में आकर गाली देते हुए अपना तानपूरा दोनों हाथों से उठाकर वायुजित के सिर पर इतने जोर के साथ दे मारा कि तानपूरा टूट गया। उसके टूटने से साधू भयंकर क्रोध में कहने लगा कि बेवकूफ जानता तो कुछ है नहीं और उल्टा गुरू बनकर हमको उपदेश दे रहा है। तेरे जैसे सैकड़ों बेवकूफ हमारा गाना सुनने के लिए पीछे लगे डोलते है। वायुजित के सिर से तानपुरे की चोट लगने से उसकी खोपड़ी फट गयी थी और खून बह निकला था। वायुजित की तरफ देखकर खूब हँसने लगा और तालियाँ पीट-पीटकर उसकी हँसी उड़ाने लगा। किन्तु वायुजित ने फिर साधू से कुछ भी नहीं कहा और दु:खी हालत में ही वह अपने घर चला गया।

घर पहुँचकर उसने अपने नौकर से पहिले अपने सिर पर दवा

लगाकर पट्टी बँधवाई और इसके बाद वायुजित ने नौकर से कहा कि तुम उस गायक साधू के घर का पता लगाकर उसके घर जाओ और जो वस्तु मै देता हूँ उसको समझा कर ठीक तौर से उसे दे आना। वायुजित ने एक थाल भर कर मिठाई और पाँच अशर्फियाँ देते हुए कहा कि तुम गायक जी को नमस्कार करके हमारी सब बातें कह देना। नौकर ने गायक के घर जाकर कहा कि आपके लिये वायुजित महाराज ने ये चीजें भेजी है और उन्होंने यह प्रार्थना की है कि आपका जो तानपूरा टूटा है उसे पाँच अशर्फियां देकर आप नया बनवा लें और कुछ कटु शब्दों के प्रयोग करने से जो आपका मुँह कडुआ हो गया है उसके लिये यह मिठाई खाकर मुँह मीठा कर लें। इसके अतिरिक्त आपके हृदय को जो कुछ दुख हुआ था। उसके लिये उन्होंने आपसे हाथ जोड़कर बार-बार क्षमा याचना की है और कहा है कि मुझे पूरी उम्मीद है कि आप अवश्य क्षमा कर देंगे। इतना कहकर मिठाई तथा अशिर्फयाँ देने के बाद नौकर गायक जी को नमस्कार करके अपने घर वापस चला आया।

नौकर के चले जाने के बाद, गायक साधू बड़े आश्चर्य में पड़ गया और अपने मन मं बड़ी ग्लानि मानते हुए सोचने लगा कि मै इस व्यक्ति को कतई पहिचान नही सका। मैने इसको सैकड़ों गालियाँ दी, तथा इसका सिर भी फोड़ दिया, किन्तु उसने बदले में मुझको एक शब्द भी बुरा नहीं कहा, बल्कि हर प्रकार से अपना अपमान सहन करते हुए चुपचाप चला गया और उस तमाम कृत्य के बदले में, मेरी प्रसन्नता का पूरा ख्याल रखते हुए उन्होंने यह पाँच अशर्फियाँ और एक थाल मिठाई भेज दी है। इस प्रकार से वह गायक साधू बहुत से विचारों की उधेड़बुन में पड़ा रहा किन्तु उसकी आत्मा को शान्ति प्राप्त नही हुई और अन्त में उसके हृदय

में यही बात आयी कि मुझको वायुजित के पास चलकर अवश्य क्षमा माँगनी होगी। ऐसा निश्चय करते ही गायक को एक मिनट भी अपने घर में रुकना भारी हो गया और तुरन्त शीघ्रतापूर्वक वह वायुजित के घर की ओर चल दिया।

थोड़े देर मे ही वह वायुजित के घर पहुँच गया और सन्मुख पहुँचते ही दौड़कर उनके चरणों पर गिरकर दुखी हृदय से कहा-भगवन, मेरे अपराध को क्षमा कर दीजिए, मैंने अहंकार के वशीभूत होकर आपको सैकड़ों गालियाँ सुनायीं, तथा आपका सिर भी तोड़ दिया, किन्तु आप ऐसे देवता पुरुष है कि आपने मेरी धृष्टता पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, बल्कि आपकी महान उदारता का यह परिणाम दिया कि मुझ जैसे अपराधी पापी पुरुष के लिए आपने बजाय दंड देने के पाँच अशर्फी एवं थाल भरकर मिठाई भेज दी। इतना कहकर गायक फूट-फूटकर रोने लगा और बोला कि मेरी आत्मा को तभी शान्ति मिल सकेगी, जब आप मुझे हृदय से क्षमा कर देंगे।

गायक की बातें सुनकर वायुजित का हृदय भी दुखी हो उठा। उसने तुरन्त उसे उठाकर अपनी छाती से लगा लिया और आँखों में आँसू भरकर कहने लगे भैया तुम इतने दुखी क्यों होते हो। इसमें तुम्हारा कुछ भी कसूर नही है। तुमने जो कुछ किया था वह कुछ अनुचित नही था, ईश्वरीय विधान के अनुसार मुझे यह चोट लगने वाली थी, सो लग गई। तुम इसका जरा भी ख्याल मत करो। वायुजित की बातों से गायक के हृदय को बड़ी सान्त्वना मिली किन्तु फिर भी उसकी उदासीनता दूर नहीं हुई तब वायुजित ने कहा भैया अब इन बातों को जाने दो, आओ मै और तुम दोनों मिलकर एक साथ भोजन कर लें, तभी हमारा मन प्रसन्न होगा।

वायुजित ने अपने नौकर से भोजन के लिये थालें लगवाकर

मँगवायी, और दोनों ने एक साथ मिलकर भोजन किया। बाद में दोनों ने पान खाये और एक साथ बैठकर कुछ समय तक प्रेम से वार्तालाप करते रहे। उससे दोनों का प्रेम सम्बन्ध सदैव के लिए प्रगाढ़ हो गया, और नये तानपूरे पर नये-नये भजन-कीर्तन होने लगे, तथा भगवत् भजन और साधू संगत के आनन्द का एक नया अखाड़ा वायुजित के घर पर कायम हो गया। जिन-जिन लोगों ने वायुजित के इस व्यवहार को सुना, वह मुक्त कंठ से वायुजित की क्षमा की अमित प्रशंसा करने लगे और कुछ समय में ही वायुजित का नाम चारों ओर फैल गया साथ ही आम जनमा को आत्मिक शान्ति और ज्ञान पाने के लिये एक नया स्थान प्राप्त हो गया।

विक्रमादित्य और शनिश्चर

आज से दो हजार वर्ष पूर्व भारत के प्रसिद्ध नरेश महाराज विक्रमादित्य दानशीलता और परोपकार के शिखर-शिरोमणी थे। प्रजा की हर प्रकार से रक्षा करना और दीन-दुखियों की हर प्रकार से माँग पूरी करना उनका अहर्निश परम कर्तव्य था। अतः दूसरों की भलाई करने में ही वह अपने जीवन की सार्थकता, सफलता और सौभाग्य मानते थे।

एक दिन एक गरीब ब्राह्मण बड़ी दूर से उनका नाम सुनकर उनकी राजसभा में आया और अवसर पाकर कहने लगा कि महाराज, मेरी कन्या शादी के योग्य हो गई है, किन्तु द्रव्य के अभाव के कारण उसकी शादी नहीं कर पाया हूँ। यदि आप कृपा करके मुझे एक हजार रुपया दे दें तो मेरी कन्या का विवाह बड़े आनन्दपूर्वक हो जायेगा। मै आपकी प्रशंसा सुनकर इतनी दूर से

आया हूँ ।

ब्राहण की बात सुनते ही, महाराज विक्रमादित्य ने तुरन्त अपने कोषाध्यक्ष से कहलवाकर, एक हजार रुपया ब्राह्मण को अपने सन्मुख दिलवा दिया । और ब्राह्मण हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए कहा कि महाराज यदि आपको और कभी भी किसी प्रकार की वस्तु की आवश्यकता पड़ जाय तो आप निःसंकोच आकर मुझे आज्ञा प्रदान कर सकते है । ब्राह्मण राजा को अनेकों प्रकार से आशीर्वाद देता हुआ, एक हजार रुपये लेकर अपने घर को चल दिया । किन्तु इस ब्राह्मण पर शनिश्चर महाराज बहुत दिनों से कुपित हो रहे थे, इसीलिये यह बेचारा गरीबी में बड़ी ही मुश्किलों से अपने परिवार का पालन पोषण रूखा-सूखा अन्न खाकर कर लेता था । जब यह ब्राह्मण एक हजार रुपये लेकर घर जा रहा था, उस रास्तें में कुछ देर के लिये शनिश्चरजी महाराज एक लुटेरे का वेश धारणकर इनसे एक हजार रुपये छीनकर ले गये । इससे ब्राह्मण बड़ा दुखी हुआ किन्तु फिर लाचार होकर महाराज विक्रमादित्य की सभा में लौटकर आया और कहने लगा महाराज मुझे हजार रुपया और दें दीजिये तो बड़ी कृपा होगी । विक्रमादित्य ने रुपया दिया तो ब्राह्मण राजा को आशीर्वाद देता हुआ चला गया । किन्तु दुर्भाग्य रूपी शनिश्चर जी ने फिर से उसे जंगल में लूट लिया । तब वह ब्राह्मण अपने हृदय में अत्यन्त दुखी हो गया तथा मन में सोचने लगा कि मै बड़ा भारी अभागा हूँ , क्या मेरी कन्या का विवाह विधाता को मंजूर ही नहीं है । बहुत कुछ सोच-विचार करने के उपरान्त ब्राह्मण को कोई दूसरा उपाय नहीं सूझा, और फिर से वह हिम्मत करके तीसरी बार महाराज विक्रमादित्य के दरबार में जा पहुँचा, किन्तु बड़ा उदास होकर एक तरफ चुपचाप खड़ा हो गया । जब विक्रमादित्य की नजर इस

ब्राह्मण पर पड़ी तो उनको आश्चर्य होने लगा कि जब मेरे राज्य में सभी याचकों को मुँह माँगा दान दिया जाता है तो यह ब्राह्मण इतना लोभी क्यों है कि बार-बार रुपये माँगने आता है। यदि एक ही दफे में यह पाँच हजार रुपये मुझसे माँग लेता तो मै इसको सहर्ष दे देता, किन्तु एक एक हजार रुपये बार-बार लेने क्यों आता है' राजा ने हाथ जोड़कर ब्राह्मण से कहा कि महाराज आप बार-बार रुपया लेने के लिये कष्ट क्यों उठा रहे है, आपको जितने रुपयों की आवश्यकता हो, एक ही बार में सहर्ष ले सकते हो। मेरे राज्य में ब्राह्मणों को इस प्रकार का न तो लोभ है और न संकोच है, केवल आपको ही मैने ऐसा पांया है कि बार-बार रुपये लेने आना पड़ता है।

राजा की बातों से ब्राह्मण को आन्तरिक दुःख तो हुआ, किन्तु ब्राह्मण यह जानता था कि इस कार्य में राजा पूर्ण निर्दोष और पूर्ण नरभिमानी है। यह तो परिस्थिति ही ऐसी बन गई है कि इसको ऐसा कहना पड़ा है। अस्तु ब्राह्मण ने बड़े दीन शब्दों में हाथ जोड़कर कहा कि महाराज, आपका कथन बिल्कुल सत्य है कि मुझे बार-बार रुपया लेने के लिये नहीं आना चाहिये था, किन्तु भगवन मै लोभ के कारण आपके पास बार-बार रुपया लेने नही आता हूँ। मुझको तो केवल एक हजार रुपये की जरूरत है, परन्तु महान दुख के साथ कहना पड़ता है कि, जब-जब भी मै आपके पास से हजार रुपये लेकर गया, तब-तब मुझको एक लुटेरे ने जंगल में लूट लिया। इसलिये मजबूर होकर मुझे बार-बार आपकी शरण में आना पड़ता है। ब्राह्मण की सच्ची बातें सुनकर राजा ने मन में सोचा कि मेरे राज्य मे चोर और लुटेरों का नाम निशान मिट चुका है, फिर यह नया बदमाश कहाँ से पैदा हो गया। इसका उपाय करना परम आवश्यक है। यदि यह ब्राह्मण

फिर से रुपये लेकर जायेगा तो वह इसे पुनः लूट लेगा । राजा ने कहा कि महाराज, अब की बार मै आपके पीछे-पीछे चलूँगा । और आप चुपचाप आगे-आगे चलते रहना । यह कहकर विक्रमादित्य ने पुनः ब्राह्मण को एक हजार रुपये और दिलवा दिये । और हाथ में धनुषबाण लेकर ब्राह्मण से कुछ दूर पीछे-पीछे चल दिये । ब्राह्मण जैसे ही उस जंगल में पहुँचा कि वही लुटेरे महाशय फिर आ गये । ब्राह्मण ने जैसे ही उसे जंगल में देखा देखते ही चिल्ला उठा कि देखा महाराज, यही वह लुटेरा है जिसने दो बार पहले मुझे लूटा है, आप जल्दी से मेरी रक्षा कीजिये । ब्राह्मण की आवाज सुनते ही राजा ने ललकार कर कहा कि अरे बदमाश, जरा ठहर, मै अभी तुझको सब बताये देता हूँ । शनिश्चर जी ने देखा कि अबकी बार, धर्मात्मा प्रतापी राज विक्रमादित्य उसकी सहायता के लिये आ गया है । इसलिये जबतक मै इसको अपना असली रूप नहीं दिखाऊँगा तब तक यह मुझे युद्ध करने के लिये बाध्य कर देगा । अतः शनिश्चर जी ने केवल महाराज को ही कुछ देर के लिए दिव्य दृष्टि देकर अपना असली रूप दिखाते हुए सांकेतिक भाषा में कहा कि मै इस ब्राह्मण पर कुपित हँ इसीलिये इसके सभी कार्यों को मै बिगाड़ रहा हूँ अतः तुम अपने घर को लौट जाओ, और इसके बीच में पड़ने की कोशिश मत करो, अन्यथा तुमको भी भयंकर मुसीबतों से टकराना पड़ जायेगा ।

महाराज विक्रमादित्य ने शनिश्चर जी को पहिचानते हुए उनको नमस्कार किया, और प्रार्थनासूचक शब्दों में कहा कि भगवन मै इस ब्राह्मण को, निर्विघ्नतापूर्वक एक हजार रुपयों के सहित, इसके घर तक पहुँचा देने का वायदा कर चुका हूँ । इसलिये आप कृपा करके अब इस ब्राह्मण का पीछा छोड़ दीजिये और इसके बदले में आप मुझको जो कुछ भी दंड देना चाहें दे

लीजिए । मै सहर्ष तैयार हूँ । इस कार्य मे मै आप का बड़ा अहसान मानूँगा ।

शनिदेव ने फिर एकबार राजा को यह इशारा किया कि तुम इस प्रपंच मे पड़ने की चेष्टा मत करो, किन्तु विक्रमादित्य ने हाथ जोड़ते हुए अपनी भावनाओ द्वारा साफ इन्कार कर दिया तब शनिदेव स्वीकृतिसूचक इशारा करते हुए अन्तर्ध्यान हो गये । विक्रमादित्य ने जब देखा कि शनिदेव ने मेरी प्रार्थना मान ली है और ब्राह्मण का पीछा छोड़ दिया तब उन्होंने मन में यह समझतें हुए कि अब शनिदेव का प्रकोप मेरे ऊपर चालू हो जायेगा, इसलिये उन्होंने बड़ी शीघ्रता के साथ ब्राह्मण से कहा कि महाराज अब जल्दी जल्दी चलें । मैने इस वख्त तो उस लुटेरे बदमाश को भगा दिया है किन्तु न-मालूम फिर और कोई नई आफत आ जाय, अतः आपको घर तक शीघ्र पहुँचा देना मेरा परम कर्तव्य है । राजा की बातों को सुनकर ब्राह्मण ने भी जल्दी-जल्दी कदम उठाये, और यथासमय दोनों व्यक्ति नियत स्थान पर पहुँच गये । ब्राह्मण ने सकुशल घर पहुँचकर राजा के प्रति महान कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि महाराज, आपने मेरे जैसे गरीब ब्राह्मण के लिए इतना भारी कष्ट उठाया है, मै आपके इस उपकार का बदला जीवन में कभी नहीं भूल सकता हूँ, अतः भगवान से मेरी यहीं प्रार्थना है कि वह आपको हर प्रकार से सफलता और शक्ति प्रदान करें ।

ब्राह्मण का आशीर्वाद प्राप्त करके महाराज विक्रमादित्य अपने घर की तरफ चल दिये । किन्तु उन्होंने रास्तें में सोचा कि अब शनिदेव मेरे ऊपर रुष्ट हो चुके है, और यदि अब मै अपने राज्य में लौटकर जाऊँगा । तो निश्चय ही शनिदेव मेरे राज्य को नष्ट कर देंगे और मेरे कारण, मेरी समस्त प्रजा को भी कष्ट उठाना पड़ेगा । यह सोचकर महाराज विक्रमादित्य ने अपनी

राजधानी का रास्ता छोड़ दिया, और जंगल के रास्ते होते हुए दूसरी राजधानियों की तरफ चल दिये। इस प्रकार से कुछ दिनों की पैदल यात्रा करते-करते एक दिन महाराज विक्रमादित्य किसी दूसरे राजा की राजधानी में पहुँच गये। वहाँ पहुँचकर वे रात्री में बस्ती के किनारे पर ही एक पेड़ के नीचे सो गये। शनिदेव की वक्र दृष्टि राजा के ऊपर पड़ी, और उसी समय वहाँ पर एक राह चलते हुए यात्री को चोरों ने लूट कर मार दिया, और लाश को विक्रमादित्य के पास रखकर भाग गये। जब प्रात:काल हुआ और चारों तरफ राहगीरों ने इस कत्ल की हुई लाश का हल्ला मचा दिया तो राज्य के सिपाहियों न तुरन्त आकर मौके पर जानकारी प्राप्त की और सोते हुए विक्रमादित्य को जगाकर उनसे पूछा कि बताओ इस आदमी का खून किसने किया है महाराज विक्रमादित्य ने तुरन्त ही अपने मन में समझ लिया कि, शनि महाराज की कृपा मेरे ऊपर चालू हो गई है। देखो, भगवान के हाथ लाज है इसका परिणाम क्या निकलेगा। विक्रमादित्य ने सिपाहियो से कहा कि भाई मै तो गहरी नींद में सो रहा था, मुझे मालूम नहीं है कि इस आदमी का खून किसने किया है। सिपाहियों ने कहा कि अबे बदमाश, खून करने वाले आदमी क्या कभी अपने मूँह से यह कहा करते है कि वह खून हमने किया है। अब तुझे सब मालूम पड़ जायेगा कि इस बुरे कर्म का फल भी कितना बुरा होता है। इतना कहकर उन सिपाहियों ने विक्रमादित्य को रस्सी बाँध कर अपने राज के सन्मुख दरबार में पेश कर दिया। राजा ने सिपाहियों के द्वारा सब हालात मालूम कर लियें,और बगैर कुछ अधिक पूछताछ किये ही, हुकुम दे दिया कि इसके चारो हाथ पाँव काट कर चौराहे पर डालदो, और सिपाहियों का पहरा इसके पास इसलिये लगा दो कि, चौराहे पर से गुजरने

वाला हर एक व्यक्ति, इस आदमी को ठोकर मारकर ही निकल सकेगा । क्योंकि सबको यह बताया जायेगा कि चोरी से खून करने वालों को यही सजा मिला करती है । राजा की आज्ञा अनुसार विक्रमादित्य के चारों हाथ पाँव, कोहनी और गेहटुओं के पास से काटकर उनको चौराहे पर डाल दिया और उनके पास सिपाहियों की एक टोली बैठ गई जिसने कि हर एक राहगीर को ठोकर मारकर ही निकलने के लिये बाध्य कर दिया । अतः इस काण्ड से, महाराज विक्रमादित्य को बड़ा कष्ट होने लगा, किन्तु उनके जीवन का मुख्य सिद्धान्त यही था कि जब तक दम में दम रहेगा, तब तक किसी भी हालत में, परोपकार से मुँह नही मोड़ेंगे । इसी हेतु इनको इस समय, इतना भंयकर कष्ट होने पर भी, इनकी आत्मा में शान्ति थी और मन ही मन में प्रभु का स्मरण कर रहे थे ।

दूसरे दिन एक तेली वहाँ से होकर गुजरा तो प्रभु की प्रेरणा से उस तेली को इस कटे हुये आदमी पर दया आ गई और उसने अपने तेल के घड़े में से थोड़ा-सा तेल निकाल कर, इसके कटे हुए चारों हाथ पाँवों पर लगा दिया । उस दिन उस तेली का तेल बड़ी ऊँची कीमत पर बाजार में बिक गया और तेली को विशेष लाभ हो गया । इसलिये तेली के हृदय में यह बात पैदा हो गई कि यह कटा हुआ आदमी कोई बहुत बड़ा भाग्यशाली आदमी मालूम होता है । यदि इस आदमी की मै सेवा करूँगा तो निस्संदेह माला-माल हो जाऊँगा । यह सोच तेली ने दूसरे दिन आकर चौराहे के सिपाहियों से कहा कि भैया अगर तुम आज्ञा दे दो तो मै इस कटे हुए आदमी को अपने घर ले जाऊँ । तुली की प्रार्थना सुनकर सिपाहियों ने कहा कि तुम राजदरबार में जाकर यदि आज्ञा-पत्र ले आओ तो हम तुमको इसे दे देगें । सिपाहियों की बातें सुनकर तेली

तुरन्त ही राजदरबार में जा पहुँचा और बड़ी दीनता के साथ कहने लगा कि महाराज आपके नगर में चौराहे पर एक व्यक्ति चारों हाथ-पावों से कटा हुआ पड़ा है, यदि आप आज्ञा करा दें तो मै उसे उठाकर अपने घर पर ले जाऊँ। राजा ने तेली की बातों को सुनते ही, एक पत्र सिपाहियों के नाम लिख दिया कि तुम उस कटे हुए आदमी को इस तेली के सुपुर्द कर दो। तेली ने राजा का पत्र ले जाकर सिपाहियों को दे दिया और सिपाहियों की अनुमति प्राप्त करके, उस कटे हुए व्यक्ति को सिर पर रखकर अपने घर ले गया।

तेली ने घर पहुँचते ही उसके चारों हाथ पाँवो पर कपड़ों की पट्टियाँ खूब लपेट दी, फिर उन पट्टियों के ऊपर अच्छी तरह से तेल डाल दिया। इसके अनन्तर तेली ने उनके कपड़े बदलकर दूसरे पहिना दिये और उनके मुँह को पानी से खूब धो दिया तथा तमाम शरीर को भी साफ कर दिया। इसके बाद तेली ने हलुआ-पूरी बनाकर, अपने हाथों से उसे खिलाया, और बाद में एक खाट पर गद्दा बिछाकर उन्हें सुला दिया। इस प्रकार तेली, ज्यों-ज्यों विक्रमादित्य की सेवा विशेष रुचि के साथ करने लगा त्यों-त्यों उस तेली को धन का बहुत लाभ होता गया और कुछ ही दिनों में तेली की इज्जत समस्त तेलियों में ऊँची हो गई।

इधर महाराज विक्रमादित्य को दोनों वख्त ताजा भोजन खाने को मिलने लगा, और उनकी इच्छा के अनुसार तेली भी स्त्री के सहित हर समय उनकी सेवा में लगा रहता था। तेली के हृदय में यह बात खूब दृढ़ हो गई थी कि यह व्यक्ति कोई न कोई महापुरुष अवश्य है, क्योकि प्रथम तो तेली ने जिस दिन से इनकी सेवा चालू की थी उसी दिन से उसे धन का विशेष लाभ होने लग गया था, और दूसरी बात यह थी कि जब कभी यह तेली अपनी स्त्री

के साथ फुरसत में इनके पास बैठता था तो, घंटे दो घंटे की सत्संगवार्ता विक्रमादित्य के मुखारविन्द से सुनने को मिलती थी जिससे कि तेली का हृदय आनन्द ज्ञान के द्वारा मगन हो जाता था।

इस प्रकार से जब कुछ महीने बीत गये और दीपावली का शुभ दिन आ गया तो तेली ने भी यथाशक्ति अपने घर में दीप जलाये, और कुछ सुन्दर-सुन्दर पकवान बनाकर आप खाये और उनको भी खूब प्रेम से खिलाये। आधी रात के बाद जब प्रायः सभी लोग सो गये तब, महाराजा विक्रमादित्य के हृदय में यह ख्याल पैदा हुआ कि आज के दिन यदि हम अपने राज्य में होते तो कितना आनन्द मनाया जाता और कितना भारी दीपदान होता कि सारा शहर रात भर तक जगमगाता रहता। किन्तु आज दैव के प्रकोप से एक तेली के घर पर पड़े-पड़े हमारा समय बीत रहा है।

विक्रमादित्य महान साहसी पुरुष थे इसीलिए किसी भी अवस्था में अपनी हिम्मत और अपनी बुद्धि खो नहीं बैठते थे। इतना विचार करने के बाद उन्होंने सोचा कि, इस शहर की गली और बाजारों में भी प्रायः सभी मकानों के दीपक मन्द पड़े हुए है। इस समय यदि मै दीपक राग गाना शुरू कर दूँ तो शहर के तमाम दीपक अपने आप एक साथ जल उठेंगे। और शहर में चारों तरफ भरपूर रोशनी हो जायेगी, और इस रोशनी को ही मै अपने लक्ष्मीपूजन का अंग मान लूँगा, अन्यथा वैसे तो मेरे पास हाथ-पाँव भी नहीं है और कोई साधन भी नही है। ऐसा विचार करके महाराज विक्रमादित्य ने, अपना सिद्धकिया हुआ दीपक राग गाना शुरू कर दिया, और जिस समय दीपक राग उनके कण्ठ की भरपूर शक्ति के द्वारा उच्चरित होने लगा, ठीक उसी समय, तमाम

शहर के बुझे हुए दीपक स्वतः जल उठे, और उनके मनोयोग द्वारा एकाग्र चित्त से गाये हुए गाने की तेज आवाज से तेली की भी आँखे खुल गयी। जब तेली ने चारों तरफ गली में भी और अपने घर में विशेष रूप से दीपकों को जलते हुए देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य होने लगा कि यह सब कैसे हो रहा है, इस व्यक्ति के गाने में ही कोई जादू छिपा हुआ है। दूसरी तरफ जैसे ही समस्त नगर के दीपक जल उठे और समस्त राजभवन के दीपक भी जल उठे तो राजपरिवार के राजा रानी बगैरह भी आश्चर्य में पड़ गये और सोचने लगे कि यह सब करामात किस की है, और कैसे सभी दीपक अपने आप जल उठे है। जब राजभवन के अन्दर यह चर्चा चल रही थी तो एक पुराने व्यक्ति ने कहा कि इस नगर में किसी व्यक्ति ने कोई सिद्ध किया हुआ दीपक राग गाया है, इसी से इस नगर के समस्त दीपक अपने आप जल उठे है।

यह समाचार जब राजभवन की युवा राजकन्या ने सुना तो उसने अपने मन में यह विचार किया कि, जो कोई भी व्यक्ति केवल गाना गाकर ही, समस्त नगर के दीपकों को जला सकता है, वह व्यक्ति कोई साधारण व्यक्ति कदापि नहीं हो सकता, इसलिये मुझे इसी व्यक्ति के साथ शादी करनी चाहिये। ऐसा विचार और निश्चय करते ही, राजकुमारी ने तुरन्त अपने माता-पिता को यह कह दिया कि, जिस किसी भी व्यक्ति ने यह राग गाकर, समस्त नगर के दीपक जला दिये है, मै उसी के साथ शादी करूँगी। राजकुमारी की ऐसी प्रतिज्ञा के निकलते ही, उसके पिता ने तुरन्त अपनी सेना के सिपाहियों को बुला हुकुम दे दिया कि तुम सब लोग हजारों की तादाद में, नगर के हरेक घर में प्रवेश कर जाओ, और जल्द से जल्द यह मालूम करो कि कौन से व्यक्ति ने यह दीपक राग गाकर नगर के सभी दीपक जला दिये हैं। राजा

की आज्ञा पाकर सेना के हजारों सिपाही एकदम दौड़ पड़े और उन्होंने नगर के एक-एक घर में प्रवेश कर देखा कि वह दीपक राग गाने वाला व्यक्ति कौन सा है ।

किन्तु जब नगर के प्रतिष्ठित परिवारों के सभी मकानों का नम्बर समाप्त हो गया और कहीं भी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, तब उन सिपाहियों ने, नीच जाति के गरीब लोगों के मकानों को देखना शुरू किया । ढूढ़ते-ढूढ़ते जब उस तेली के मकान पर सिपाही पहुँच गये तो उन्होंने स्वयं अपनी आँखो से देखा कि यह वही अपराधी व्यक्ति है जिसके चारो हाथ पाँव हमारे महाराज ने कटवा दिये थे । और जिसको यह तेली हमारे राजा साहब से विनयपूर्वक माँगकर अपने घर ले आया था । अस्तु, सिपाहियों ने तेली से पूछा कि कहो भाई क्या यह-बात सच है कि इसी आदमी के गाने से इस नगर के सभी दीपक एकदम जल उठे है । तेली ने अपने मन के अन्दर कुछ भय खाते हुए कि, न मालूम फिर से इस आदमी को कोई दूसरी सजा और मिलेगी, डरते-डरते कहा कि महाराज मैं तो सो रहा था किन्तु इसके गाने की आवाज सुनकर ही मै अचानक जाग पड़ा और चारों तरफ के दीपक मुझको जलते दिखे । सम्भव है कि इसी के गाने से समस्त नगर के दीपक सब एक साथ जल उठे हों ।

तेली की इस बात को सुनकर सिपाहियों को बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने दौड़कर अपने राजा साहब को सब खबर सुनायी । इस खबर को सुनकर राजा और रानी सोच में पड़ गये कि इस कटे, अगंभंग अपराधी व्यक्ति के साथ, हमारी राजकन्या का विवाह कैसे सम्भव हो सकता है । और फिर उन्होंने अपनी राज कुमारी को बुलाकर सब समाचार बता दिया कि इस व्यक्ति के साथ तुम्हारा विवाह कदापि नहीं हो सकता है । राजकुमारी ने सब

सुनकर बड़ी दृढ़ता के साथ कहा कि पिताजी, राजकन्याएँ जिसको एक बार अपना पति चुन लेती है वह व्यक्ति फिर कितना ही अयोग्य क्यों न निकल जाय, किन्तु शादी उसी के साथ करती है। अतः मैंने जो एक बार यह प्रतिज्ञा कर ली है कि जिसने यह दीपक राग गाया है, उसी के साथ शादी करूँगी तो अब मेरे इस दृढ़ विचार को संसार में कोई भी व्यक्ति बदल नहीं सकता क्योंकि मेरे भाग्य में जो कुछ भी दुख-सुख है, वह सब मुझको अवश्य ही भोगना पड़ेगा, इसलिये मै अपनी की हुई प्रतिज्ञा के आधारपर, इसी से शादी करूँगी। आप अपने मन में किसी भी प्रकार का दुख अनुभव न करें। जो कुछ ईश्वर को मंजूर है, उस विधान को संसार में कोई भी टाल नहीं सकता इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक दशा में अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करते रहना चाहिये। राजकुमारी की इस बात को सुनकर, राजा और रानी ने मन में दुख मानते हुए, अनेकों प्रकार से अपनी प्यारी बेटी को समझाने की भरपूर चेष्टा की, किन्तु राजकुमारी ने अपने माता पिता की एक भी बात कतई नहीं मानी। तब राजा ने मजबूर होकर अपने कर्मचारियों को हुकुम दिया कि तुम एक बहुत सुन्दर गद्देदार छोटी सी पालकी ले जाओ और उस हाथ-पाव कटे हुए व्यक्ति को बड़े अदब के साथ बैठाकर ले आओ। राजा के हुकुम से कुछ कर्मचारी गण एक सुन्दर पालकी लेकर गये। उन्होंने तेली के घर पहुँच कर अपने महाराज का हुकुम सुनाते हुए बड़े अदब के साथ उस कटे हुए व्यक्ति को पालकी में बिठा लिया। इससे तेली को कुछ उदासीनता आने लगी कि मैंने इस भाग्यवान पुरुष की सेवा करके इतनी जल्दी उन्नति प्राप्त कर ली है किन्तु आज फिर इससे सम्बन्ध विच्छेद हो रहा है। किन्तु राजाज्ञा के समने इसकी बोलने की हिम्मत तक नहीं थी। विक्रमादित्य इस बात को ताड़

उन्होंने तेली को प्रेमपूर्वक कुछ सान्तवना देते हुए कहा कि भाई तुमने मेरे साथ जो कुछ अहसान किये है उसका बदला तुम्हें ईश्वर अवश्य देगा और हो सका तो मेरा और तुम्हारा मिलन फिर भी हो सकेगा ।

इस प्रकार कुछ बातें होने के बाद, राज-कर्मचारीगण उस पालकी को लेकर राजा के महलों में पहुँचवाकर एक सुन्दर पलंग पर उस व्यक्ति को लिटवा दिया, तथा कर्मचारियों को विदा कर दिया । तदुपरान्त राजा ने उस हाथ-पैर कटे हुए व्यक्ति से कहा कि भाई हमारी लड़की तुमसे शादी करना चाहती है, इसीलिये हमने तुमको यहाँ बुलाया है । कहो तुम्हारी क्या राय है । तब उस कटे हुए व्यक्ति ने कहा कि, महाराज, आपका और आपकी लड़की का ख्याल कहाँ है, देखिए मेरे जैसे अंगभंग अपराधी व्यक्ति के साथ क्या राजकन्या का विवाह कभी सम्भव और संगत हो सकता है? इसलिये आपसे मेरी यही प्रार्थना है कि आप भूलकर भी ऐसा कार्य न करें । यदि मेरे हाथ पाँव साबूत होते तो शायद किसी हद तक आपकी बात मानने योग्य समझी जा सकती थी, किन्तु अब तो ऐसी हालत में जो कोई भी सुनेगा वह आपको बुरा कहेगा । विक्रमादित्य की ज्ञान भरी बातों को सुनकर राजा ने अपने मन में सोचा कि यह आदमी कोई भी हो किन्तु बड़ा बुद्धिमान मालूम होता है । अतः राजा ने अपनी रानी और लड़की के पास जाकर इसकी सब बातें कह दी और फिर से दुबारा राजा रानी ने अपनी लड़की को समझाने की भरपूर चेष्टा की, किन्तु लड़की ने नहीं माना । अन्त में फिर ये तीनों ही व्यक्ति उस कटे हुए व्यक्ति के पास आये और राजा ने अपनी मजबूरी दिखाते हुए कहा कि मैंने आपके कहने के मुताबिक लड़की को हर तरहसे समझाया है किन्तु उसने मेरी बात को किंचित मात्र भी स्वीकार नहीं किया है,

इसलिये अब मजबूरी है कि इस कन्या का विवाह आपके साथ ही किया जाय । अन्त में विक्रमादित्य ने उस कन्या की तरफ देखते हुए कहा कि देवी, मै यह नही समझ सकता हूँ कि तुम मेरे जैसे अपंग व्यक्ति के साथ रहकर अपना जीवन सुखी बना सकोगी । उस बात को सुनकर राजकन्या ने कहा कि इस समय जीवन के दुख और सुख का प्रश्न ही नही है, इस समय तो केवल यही प्रश्न है कि मैने आपका दीपक राग सुनते ही, घर में यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि जिस किसी व्यक्ति ने यह राग गाकर नगर के तमाम दीपक जला दिये है, उसी के साथ मै शादी करूँगी, इसलिये मै अपनी प्रतिज्ञा से किसी भी प्रकार अब विचलित होने को तैयार नहीं हूँ । मेरे भाग्य में जो कुछ दुख सुख बदा है वह अवश्य ही मिलकर रहेगा । क्योंकि पूर्वसंचित प्रारब्ध कर्म के सामने, संसार में किसी की भी कोई पेश नहीं पड़ती है ।

विक्रमादित्य राजकन्या की धर्मपरायणता को देखकर मन में उसकी सराहना करने लगे, और प्रकट में बोले कि भाई जब आप लोग नही मानते है तो जैसी आपकी मर्जी हो करें । हम तो हर प्रकार से आपके आधीन है । किन्तु यदि आपको मेरी शादी इस कन्या से करनी ही है तो मेरा साथी उस तेली को भी यहाँ अवश्य बुलाकर उसकी खातिरदारी करनी होगी । राज ने इस बात को मान लिया और एक दूसरी पालकी कर्मचारियों के द्वारा भेजकर उस तेली को भी अपने महलों में बुला लिया, तथा उस तेली को राजसी सुगन्धित पदार्थों से स्नान कराकर, राजसी कपड़े पहिनवाये और उसके लिए एक खास कमरे में बड़े आराम के साथ रहने का प्रबन्ध, अपनी महमानदारी में कर दिया । इसके बाद सिर्फ अपने कुछ चुने हुए खास सगे-सम्बन्धियों को बुलाकर, वेदविधि के अनुसार इन दोनों के फेरे डलवा दिये, अर्थात् संक्षिप्त रूप से ही

इस वैवाहिक कार्य को समाप्त कर दिया । तदुपरान्त विक्रमादित्य को एक रंगमहल दिया गया और उसमें राजा की लड़की अपने अंगभंग पति की खूब सेवा करने लगी । उधर शादी होने के बाद तेली ने अपने घर जाने के लिए प्रार्थना की तो विक्रमादित्य ने उसे अपने पास बुलाकर बहुत देर तक बड़े प्रेम से वार्तालाप किया और कहा कि देखो तुम रोज आकर मुझसे एक बार दिन में कभी न कभी मिलते रहना । इसके बाद विक्रमादित्य ने अपनी पत्नी से कहा कि इसकी स्त्री के लिए कुछ मिठाइयाँ और कुछ रुपये रख कर इसको किसी सवारी से इसके घर तक पहुँचवा दो । राजकुमारी ने पति के आदेशानुसार तुरन्त सब प्रबन्ध करके तेली को विदा कर दिया । तेली ने घर जाकर सब रुपये और मिठाई स्त्री को देते हुए, उस कटे हुए व्यक्ति का सारा वृत्तान्त कह सुनाया । तेली की स्त्री को उसके भाग्य पर बड़ा आश्चर्य होने लगा । तब तेली ने कहा कि मैं तो पहिले से ही जानता था कि यह कोई न कोई महापुरुष अवश्य है ।

इधर राजकुमारी अपने अंगभंग पति की सेवा बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ रात दिन करने लगी । जब कुछ दिन बीते तो एक दिन विक्रमादित्य को यह ख्याल आया कि देखो इस नव बालिका राजकुमारी ने केवल अपने धर्म और प्रतिज्ञा का पालन करने के हेतु ही, मेरे जैसे अपंग और दीन आदमी के हाथों में अपने जीवन की सम्पूर्ण आशाओं को बलिदान कर दिया है । इस बेचारी राजकुमारी ने दुनियाँ में आकर क्या सुख उठाया है अस्तु परोपकारी महाराज विक्रमादित्य को जब इस राजकन्या के जीवन पर दया उत्पन्न हुई तो, उन्होंने सोचा कि अब इस कन्या को सुखी करने का एक मात्र साधन यही है कि मुझे शनिदेव को प्रसन्न करना पड़ेगा । मुझे अपने दुख की इतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि

चिन्ता इस राज कन्या के जीवन की है ।

महाराज विक्रमादित्य ने प्रातःकाल होते ही अपने कपड़े बदलवा कर तथा मुंह बगैरह साफ कराकर अपनी पत्नी से कहा कि मुझे जमीन पर बिठा दो मुझे कुछ स्तुति करनी है । राजकुमारी ने उसी प्रकार तुरन्त इन्तजाम करके अपने पति को जमीन पर बैठा दिया और चुपचाप वहाँ से बाहर निकलकर अपने माता-पिता से कहा कि देखो आज ये किसी देवता की नई स्तुति करने वाले है इसलिये हमें छिपकर देखना चाहिये कि ये क्या करते है । जब पहले इन्होंने एक गाना गाकर नगर के सभी दीपक जला दिये तो आज न मालूम ये क्या नया खेल खेलेंगे । राजा-रानी और राजकुमारी कमरे के बाहर ही बैठकर छिपे-छिपे सब हाल देखने लगे ।

इधर महाराज विक्रमादित्य एकाग्र मन करके, अपनी सिद्ध रागिनी के द्वारा, बड़े सुन्दर सुर के साथ शनिदेव की स्तुति करने लगे । ज्यों-ज्यों स्तुति का सुर ऊँचा होता गया, त्यों त्यों, महाराज विक्रमादित्य अपने देहानुसंधान को भूलते गये । अन्त में कुछ देर के बाद जब महाराज विक्रमादित्य पूर्णरूपेण भावावेश में हो गये तो इनको अपने शरीर का बिल्कुल ही भान नही रहा । उसी समय शनिदेव, विक्रमादित्य के सन्मुख आकर उपस्थित हो गये, और बोले विक्रमादित्य , आज तै तेरी इस स्तुति से बेहद प्रसन्न हो गया हूँ, आज तुझे जो कुछ माँगना है जी खोलकर माँग ले । इन शब्दों के कान में पड़ते ही अपने सन्मुख शनिदेव को बड़ी प्रसन्न मुद्रा में खड़ा देखा । तब विक्रमादित्य ने कहा कि भगवन् मै अपने लिये कुछ इच्छा नही रखता, किन्तु इस अबोध बालिका ने मेरी स्त्री का स्थान ग्रहण करके अपने सुन्दर जीवन का बलिदान मेरे जैसे अपंग के लिए कर दिया है, इसलिये इसके दुख से दुखी होकर आपको

याद किया है ।

शनिदेव ने कहा, पृथ्वी नरेश विक्रमादित्य, मै सब कुछ जानता हूँ कि तेरा जैसा परोपकारी व्यक्ति इस भूमंडल पर दूसरा कोई नहीं है । अन्यथा तू एक ब्राह्मण के कष्ट-निवारण के बदले में इतनी भारी विपत्ति को सहर्ष अपने सिर पर नहीं ले सकता था । आज मै तुझसे बेहद प्रसन्न हूँ । यह कहकर शनिदेव ने उसके शरीर के ऊपर ज्यों ही हाथ लगाया कि उसके चारों हाथ-पाव उसी वख्त साबूत हो गये । विक्रमादित्य के हाथ-पाँव साबूत होते ही विक्रमादित्य ने शनिदेव को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा प्रभु मेरे लिये आपको बड़ा कष्ट उठाना पड़ा । मुझे क्षमा करना अन्त में शनि देव ने कहा कि मै प्रसन्न होकर जाता हूँ । तुमको तुरन्त ही इसका परिणाम प्राप्त हो जायेगा।

शनिदेव के जाते ही महाराज विक्रमादित्य के चेहरे पर एकदम तेज चमक उठा, और उधर राजकन्या और राजा-रानी तीनों ही छिपे-छिपे इनकी सब बातें सुनकर रहे थे । अतः जब इन तीनों ने यह सुना कि किसी दैवी शक्ति ने इनको पृथ्वीनरेश विक्रमादित्य कहकर सम्बोधित किया है तो इनके आश्चर्य का ठिकाना नही रहा । इन्होंने जैसे ही आगे बढ़कर देखा तो इनके चारो हाथ-पाँव साबूत थे, और चेहरे पर बड़ा तेज चमक रहा था राजा ने तुरन्त ही उन्हें पहिचान भी लिया कि यह तो वास्तव मे महाराज विक्रमादित्य ही है । राजा, रानी और राजकन्या तीनो ही एकदम महाराज विक्रमादित्य के चरणो पर गिर पड़े तथा अपने अनजान मे किये हुए बुरे व्यवहार की क्षमा माँगने लगे । राज ने हाथ जोड़र कहा कि भगवन मैंने अपको पहिचानने में बड़ी भूल की थी । और मेरे इस नीच व्यवहार से आपको महान कष्ट उठाना पड़ा था । इसलिये मेरे अपराध को आप हृदय से क्षमा कर दीजिये । आप तो महान

परोपकारी हैं अतः मेरी आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिये आप मुझे अपने मुखारविन्द से क्षमा कह दीजिये। राजा के इस दीन भरे वचन को सुनकर विक्रमादित्य के हृदय में दया का संचार हो उठा। इसलिये उन्होंने तुरन्त ही उठकर, राजा को अपनी छाती से लगा लिया औरे बड़े मीठे शब्दों में कहने लगे कि भय्या इसमें तुम्हारा तनिक भी कसूर नहीं है। यह तो सब देवमाया के द्वारा कार्य सम्पादन हो रहा था। इसलिये तुम अपने मन में किचिंत् मात्र भी आत्मग्लानि तथा क्षोभ मत करो, मैं भगवान को साक्षी करके कहता हूँ कि मुझे तुम्हारे प्रति लेश मात्र भी बुरी भावना नहीं है। बल्कि मुझको तुम्हारी राजकन्या के धर्मपरायण होने की विशेष महानता प्रतीत हुई है।

विक्रमादित्य की इन बातों से राजा, रानी और राजकन्या को बड़ा सुख अनुभव हुआ; इसलिये इन तीनों ने ही आत्मस्नेह की विशेष जागृति होने के कारण महाराज विक्रमादित्य के चरण-स्पर्श किये और फिर इनके चरण धोकर तीनों ने आचमन करके अपना जीवन धन्य समझा।

इसके बाद चारों व्यक्तियों ने उठकर अपने स्नान आदि नित्यकर्म किये और फिर एक ही कमरे में बैठकर चारो व्यक्तियों ने भोजन किया। इस प्रकार बड़े आमोद-प्रमोद के साथ कुछ दिन और निकल गये। इसी दौरान राजा के तमाम रिश्तेदारों को तथा मिलने-जुलने वालों को यह आश्चर्यजनक समाचार प्राप्त हो गया कि राजकन्या ने जिस कटे हुए व्यक्ति से शादी की थी, वह महाराज विक्रमादित्य थे और उनके चारो हाथ-पाँव फिर से साबूत हो गये है। इसलिये सभी लोग महाराज विक्रमादित्य के दर्शन को नित्य आने लगे। एक दिन महाराज विक्रमादित्य ने अपने राज्य में वापिस जाने के लिए राजा से विदा मांगी, और दो-एक दिन में

अपनी यात्रा का पूरा विधान तैयार करा लिया। तेली तो महाराज से प्राय: रोजाना ही एक बार मिल जाता था। इसलिये महाराज विक्रमादित्य ने, एक दिन उससे कह दिया कि तुम यदि हमारे साथ चलना चाहो तो तुम दोनों-स्त्री पुरुष हमारी राजधानी में चलकर आराम से रहो, और यहीं रहना चाहो तो मै तुम्हारे लिये इसी नगर में एक विशाल कोठी बनवाकर उसका जागीरदार बना दूँगा। तुम जैसा उचित समझो वैसा बता दो। अन्त में तेली ने हाथ जोड़कर यही निवेदन किया कि महाराज मेरे पुरखा हमेशा से इसी नगर में रहते आये है इसलिये मै भी इसी नगर में रहना उचित समझता हूँ, क्योंकि यह मेरी जन्म भूमि है। राजा विक्रमादित्य ने चलते समय तेली को गले से लगा लिया और कहा कि भाई मै तुम्हारा उपकार जीवन भर कभी नहीं भूल सकूँगा। तुम मुझे प्राणों के समान प्यारे हो, अत: तुम मुझसे कभी-कभी मेरी राजधानी में आकर मिलते रहना। इसके बाद महाराज ने तेली को बुलाकर कहा कि देखो तुमने मेरे साथ माता-पिता के समान उपकार किया है; इसलिये मुझको तुम्हारी भी याद हमेशा आती रहेगी। अन्त मे राजा ने विदाई के समय महाराज विक्रमादित्य को हाथी पर अपनी कन्या के सहित बैठाकर विदा करते समय, लाखों करोड़ों की सम्पत्ति दहेज के रूप में, महाराज को भेट की। तुरन्त महाराज ने उस तमाम सम्पत्ति को, उसी वख्त उस तेली को दे दिया और कहा कि हम को जो कुछ भी दहेज में मिला है, इस सम्पत्ति को प्राप्त करने के केवल तुम्ही अधिकारी हो, क्योंकि इस नगर मे तुम्ही को मेरे माता-पिता का स्थान प्राप्त है। विक्रमादित्य के इस व्यवहार से तेली और तेलन की आत्मा बड़ी प्रसन्न हुई, और सभी लोग महाराज की प्रशंसा तथा तेली के भाग्य की सराहना करने लगे। अन्त में चलते समय सभी के नेत्र प्रेमाश्रु से भरे हुए थे। राजा रानी

ने महाराज विक्रमादित्य से बार-बार क्षमा याचना की और चलते समय अपनी कन्या से खूब गले लग कर मिले और कहा कि बेटी तूने जिस प्रकार से अपना त्याग रखकर धर्म का पालन किया था, उसी प्रकार से धर्म ने भी तेरा साथ भरपूर दिया है जिसकी बदौलत आज तू अखण्ड मंडलेश्वरी कहलाकर बड़ी भाग्यशालिनी समझी जा रही है। महाराज विक्रमादित्य की जै जैकार के नारे लगाये। और जहाँ से महाराज की सवारी नगर में होकर निकल रही थी, वहाँ वहाँ सभी जगहों पर फूलों की वर्षा और जै जैकार के नारे लगते ही चले गये। इस प्रकार से सवारी नगर के बाहर पहुँच गई और कुछ ही दिनों की मंजिल तय करने के बाद महाराज विक्रमादित्य अपनी राजधानी में सकुशल अपनी नई रानी के साथ पहुँच गये।

वहाँ की प्रजा ने और राज्यों ने महाराज के शुभ आगमन पर नगर भर में बड़ी भारी रोशनी और सजावट की था घर-घर में मंगल बधावे गाने लगे। राज्य में चारों तरफ सजावटें कर दी गई, और फिर महाराज विक्रमादित्य पूर्व की भाँति ही अपने राज्य का संचालन करने लगे। इसके उपरान्त एक दिन महाराज विक्रमादित्य ने अपने मन्त्री से कहकर अपने सैक्ड़ो गाँवों की जागीरदारी का मालिक उस तेली को बनाकर, उसके पास सब लिखा-पढ़ी पर अपने हाथ से हस्ताक्षर करके, तथा राज्य की मोहर लगाकर भेजवा दिया और उन गाँवों की आमदनी को अपने राज कर्मचारियों द्वारा एकत्रित कराकर साल के साल उसके घर पर बैठे-बैठे पहुँचवाने का प्रबन्ध हमेशा के लिए कर दिया। इस प्रकार से कुछ ही दिनों में उस तेली की गिनती राजाओं की गणना में आ गई। और महाराज विक्रमादित्य का सुयश, सारे संसार में सूर्य के समान प्रकाशित होने लग गया। आजतक सारे भारत वर्ष में महाराज विक्रमादित्य का चलाया हुआ विक्रम सम्वत् वर्तमान में भी चल

रहा है अर्थात् इस महान परोपकारी धर्मात्मा राजा को हुए इतना समय व्यतीत हो चुका है फिर भी उसका नाम अमर है यही उसके ठोस धर्म की पहिचान है ।

सुदामा के दारिद्रय की शेष घड़ियाँ

द्वापर युग में, भगवान श्रीकृष्ण के परम सखा सुदामा जी जिस समय श्री कृष्ण के साथ विद्या पढ़ते थे तो दैवसंयोगवश उनसे एक बार ऐसी भूल हो गई कि, ये दोनों मित्र, जब साँदीपनि गुरू के लिये जंगल में लकड़ियाँ लेने गये, तब गुरूजी ने इन दोनों के खाने के लिये कुछ भुने हुए चने सुदामा को दे दिये थे कि जब तुम लोगों को भूख लगे तो इसे दोनों खा लेना । किन्तु लड़कपन के कारण सुदामा जी ने श्रीकृष्ण से छिपाकर वे सब चने खा लिये थे । उसी अपराध के कारण सुदामा जी को बहुम समय तक दरिद्र सहन करना पड़ा था । किन्तु सुदामा जी का जीवन सदाचार-संतोष भक्ति-विवेक और धर्म से भरा हुआ था । इसलिये यह अपने दुख की जरा भी परवाह नहीं करते थे । अन्त में सुदामाजी की स्त्री जब दरिद्र के दुख से अत्यन्त पीड़ित हो गयी और इस दुख को सहन करने में असमर्थ हो गयी तो उसने अपने संतोषी पति सुदामा को बहुत प्रकार से समझा-बुझाकर उनके बाल-सखा श्री कृष्ण के पास, कुछ थोड़े से चावल लेकर भेज दिया ।

सुदामा जी जब द्वारिका में पहुँच गये और भगवान श्री कृष्ण से इनकी भेंट हुई तो उस समय परमदयालु सर्वान्तर्यामी श्री कृष्ण, अपने मित्र सुदामा की दीनता और दरिद्रता को देखकर महान् दुखी हो गये और नेत्रों में जल भरकर रो पड़े । इसके अतिरिक्त कुछ

समय तक सुदामा को छाती से चिपटाये रहे और देह की सुध-बुध भूल से गये । तदुपरान्त सुदामाजी को चौकी पर बैठाकर सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण ने अपनी पटरानी सहित, सुदामा जी के चरण धोकर चरणोदक लिया और अपने जीवन को सफल बनाया । इसके बाद सुदामाजी के सन्मुख बैठकर कुछ देर तक दुख-सुख का कुछ वार्तालाप करते रहे और जब अन्तर्यामी ने देखा कि सुदामा जी मेरे लिये जो चावल भेंट में लाये है, उन्हें संकोच के कारण मुझे देने में झिझक रहे है । और मुझ को सुदामा जी का दरिद्र अवश्यमेव दूर करना ही है तो इन्ही चावलो को निमित्त बनाकर इनका दुर्भाग्य नष्ट करना होगा ।

ऐसा सोचकर भगवान श्री कृष्ण ने अपना हाथ लम्बा करके सुदामा जी की बगल में रखी चावलों की छोटी सी पोटली खींचते हुए कहा कि मित्र, हमारी भाभी ने जो कुछ सौगात हमारे लिए भेजी हे, उसे भी तुम देना नहीं चाहते हो । इतना कहकर प्रभु ने पोटली खोल डाली और उसमें से एक मुट्ठी चावल उठाकर मुँह में तुरन्त डाल लिया और कुछ देर के बाद दुबारा फिर एक मुट्ठी चावल प्रभु ने खा लिये । इसके बाद जब तीसरी बार फिर प्रभु ने एक मुट्ठी चावल और खाने की चेष्टा की तो रुकमणीजी ने उसी वक्त प्रभु का हाथ पकड़ कर रोक लिया और कहने लगी कि नाथ, क्या यह तुम्हारे मित्र की सौगात, सब तुम्हारे लिये ही आयी है, क्या इसमें हम लोगों का कुछ भी हक नहीं है । भगवान अन्तरयामी थे इसलिये रुक्मिणी के मन का भाव ताड़ गये कि प्रभु ने दो मुट्ठी चावल खाकर तो दो लोक का राज्य सुदामा को दे दिया है, और तीसरी मुट्ठी खाकर क्या तीनों लोक का राज्य सुदामा जी को दे डालेंगे । भगवान ने बचे हुए शेष चावल को रुक्मणी जी की तरफ सरकाते हुए कहा, अच्छा तुम्हारी ऐसी इच्छा

ही है तो यह बचे हुए चावल आप सब मिलकर बाँट लो।

इसके बाद भगवान श्री कृष्ण ने अपने हाथों से सुदामा जी को, सुन्दर सुगन्धित जल से स्नान करवाया और नये-नये कीमती वस्त्र पहिनाये और फिर सुदामा जी को दिव्य सिंहासन पर बैठाकर उनके मस्तक पर केसर चन्दन और तिलक लगाया, तथा सुन्दर सुन्दर रत्नजटित आभूषण गले में पहिनाये, इसके बाद सुगन्धित फूलों के हार सुदामाजी को पहिनाये गये। इसके बाद सुदामाजी के लिए सुन्दर सोने के थाल में, अपने हाथों से परोस-परोस कर भोजन करवाया। साथ ही साथ मनोविनोद भी करते रहे। इसके पश्चात प्रभु ने स्वयं भोजन किया और रानियों ने भी भोजन किया। तदुपरान्त सुदामा जी को बड़े उत्तम गद्देदार पलंग पर आराम करवाया, और सुदामा जी की चरण सेवा प्रभु स्वयं अपने हाथों से करने लगे। तथा रुक्मिणी सत्यभामा आदि पटरानियाँ सुदामा जी को पंखा डुलाने लगीं। इस प्रकार से सुदामा जी की नित्य नई सेवा शुश्रषा अनेकों प्रकार से बड़ी श्रद्धा और प्रेम के सहित होने लगी। यद्यपि सुदामा जी इस महान खातिरदारी के कारण संकोच से दबे जा रहे थे। किन्तु श्रीकृष्ण का उत्तम प्रेम देखकर उनसे कुछ कहते नहीं बनता था। अन्त में जब दो-चार दिन व्यतीत हो गये,तब सुदामा जी ने अपने घर जाने के लिये भगवान से विनम्र प्रार्थना की। प्रभु ने कहा मित्र, तुम बड़ी मुद्दतों से तो आये हो ओर इतनी जल्दी जाने के लिये कहते हो, यह बात मुझको रुचिकर प्रतीत नहीं होती है। किन्तु जब सुदामा जी ने पुनः दो-चार दिन तक बार-बार प्रभु से जाने के लिये आग्रह किया तो भगवान ने स्वीकार कर लिया और बड़ा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि मित्र सुदामा तुमको मिलने से हमको बड़ा भारी आनन्द अनुभव हुआ खैर, आपकी जैसी इच्छा। उसी के अनुसार हमें कार्य करना

होगा । प्रभु के इतना कहने के बाद सुदामा जी जब चलने की तय्यारी करने लगे तब प्रभु ने कहा भय्या सुदामा, अब तुम जा रहे हो तो देखो इन सुन्दर वस्तु आभूषणों को उतार कर धर दो और वही पुराने कपड़े पहिनकर जाओ अन्यथा रास्ते में कोइ चोर बगैरह तुम्हें लूट ले सकता है और तुमको मारपीट भी सकता है । श्री कृष्ण की यह बात सुनकर सुदामा जी ने अपने सुन्दर-सुन्दर सभी वस्त्र व आभूषण उतार दिये, और वही अपने फटे-पुराने कपड़े पहिनकर चलने लगे । तब चलते वख्त सुदामा जी से गले मिलकर प्रभु बहुत दुखी हो गये और नेत्रों में आँसू भर कर रोने लगे । अन्त में सुदामा जी भगवान को नमस्कार कर घर को चल दिये । अस्तु जब सुदामा जी कुछ दूर निकल गये तब रास्ते में जाते हुए मन में सोचने लगे कि यह बहुत ही अच्छा हुआ कि मैंने प्रभु से कुछ नहीं माँगा, अन्यथा मेरी बात भी चली जाती और नतीजा कुछ भी न निकला कि जब उन्होंने इतना भारी प्रेम प्रदर्शित करते हुए भी, चलते वख्त मेरे उत्तम वस्त्र और आभूषणों को भी उतरवा लिया तो, भला मुझे वह अधिक धन दौलत और कहाँ से दे सकते थे । खैर, मित्रता बनी रही यही बहुत है । परन्तु मेरी ब्राह्मणी जब मुझसे पूछेगी कि तुमने प्रभु से धन-दौलत क्यों नहीं माँगी, वह तुम्हें सब कुछ दे सकते थे, और इसीलिए मैंने तुमको ठेल-ठाल कर भेजा था, तो उस वख्त मैं अपनी स्त्री को किस प्रकार से समझा सकूँगा । अन्त में सुदामाजी ने मन में यह सोच लिया कि, मै किसी भी प्रकार से अपनी गृहिणी को तो समझा ही लूँगा, बेचारी झगड़ालू नहीं है, बल्कि पतिपरायणा भी है, परन्तु उसको मेरे ऊपर असंतोष अवश्य पैदा हो जायेगा ।

इस तरह सुदामा जी अपने मन में अनेकों प्रकार के संकल्प और विकल्प करते हुए चले जा रहे थे । सुदामा जी के जाते ही

अन्तर्यामी भगवान श्री कृष्ण अपने मन में इस प्रकार विचार कर रहे थे कि अरे मित्र सुदामा, मै यह जानता हूँ कि तुम मेरे बारे में जो कुछ सोचते हुए जा रहे हो, वह सोचना तुम्हारा बिल्कुल व्यर्थ है, क्योंकि तुमको जो कुछ देना था, वह सब मैंने दे डाला, बल्कि इतना दे दिया है जिसकी कि कल्पना तुम सात जन्म में भी नहीं कर सकते । और यदि मै चाहता तो तुम्हें अपने घर से ही हाथी की सवारी पर चढ़ाकर, महाराजाओं की भाँति, पलटन और बाजों के सहित विदा कर सकता था । किन्तु विशेष मजबूरी और दुख इस बात का है कि, तुम्हारे भाग्य मे दारिद्रय की कुछ घड़ियाँ और शेष रह गई है, जिसकी वजह से मेरी जबान पर भी ताले पड़े हुए हैं और मै तुम्हें यह भी नहीं बता सका कि मैंने तुम्हारी गृहणी के पास असंख्य रुपयों की दौलत भेज दी है और महाराजाओं जैसे महल तुम्हारे लिये तैय्यार हो चुके है । दास और दासियाँ सेवा में उपस्थित हो गयी है । इस कारण तुम्हारे विचारों के द्वारा मेरे प्रति जो कुछ कमजोर भावनायें उत्पन्न हो रही है, उनकी बुराई को मै सहर्ष स्वीकार कर रहा हूँ । किन्तु जब तुम अपने स्थान पहुँचोगे, उसी समय तुम्हारा दरिद्र, पाप समूल नष्ट हो जायेगा, और तुम्हारा भाग्य चमक उठेगा । तब तुम स्वयं समझ जाओंगे कि इस बचपन के साथी ने तुम्हारी क्या सेवा की है ।

सुदामा अपने दरिद्र की शेष घडियों को पूरा करते हुए अपने नगर में जब पहुँचे, तो उन्होंने अपनी झोपड़ी के स्थान पर, बड़े-बड़े राज महलों को बना हुआ देखा । उन्हे बड़ा आश्चर्य होने लगा । किन्तु उसी समय सुदामा जी का शेष दरिद्र जलकर भस्म हो गया । और उनकी पत्नी ने राजमहलों के अन्दर से दूर ही से, सुदामाजी को आते देख लिया । उसने तुरन्त ही अपने दास और दासी दौड़ा दिये कि जल्दी से जाकर महाराज को लिवा लाओ ।

जिस समय यह दास और दासी, राजमहलों के दरवाजे पर सुदामा जी को लिवाकर ले गये तो उसी समय सुदामा जी की स्त्री, सोने के थाल में जलता हुआ दीपक और फूल-माला लेकर दरवाजे पर आ गई और उन्होंने बड़े प्रेम के साथ, सुदामाजी की आरती उतारी और गले में फूलों की मालाये डाल दी। उसके बाद उस ब्राह्मणी ने सुदामा जी के चरण छूए और फिर उन्हें घर में लिवाकर ले गई। तब सुदामा जी यह समझ पाये कि मेरे मित्र श्रीकृष्ण की ही यह परम कृपा मालूम होती है। वह ग़नम का नटखट है, उसने चलते वख्त मेरे अच्छे-अच्छे कपड़े तक भी उतरवा लिये और यह भी नही कहा कि सुदामा तुमको यदि किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो लेते जाओ। किन्तु चुपके-चुपके ही अपार सम्पत्ति उसने घर बैठे भेज दी है और मुझे भाग्यशाली बना दिया है ऐसा विचार करने के उपरान्त सुदामा जी ने ऊपरी मन से अपनी स्त्री से पूछा कि देवी बताओ यह तमाम वसुधा तुमको कहाँ से प्राप्त हुई। सुदामा जी की स्त्री ने बड़े संकोच के साथ नीची गरदन करते हुए कहा, नाथ यह सब तुम्हारे बालसखा द्वारकाधीश जी की ही कृपा का फल है। कुछ देर तक वार्तालाप करने के बाद सुदामाजी को सुन्दर सुगन्धित जल से स्नान करवाया और फिर उनको राजसी पौशाकें पहिनाई गयीं। अन्त में दोनों स्त्री पुरुषों के भाग जाग उठे। इनके चेहरे पर तेज दीखने लगा और फिर ये दोनों प्राणी परम आनन्द मय जीवन व्यतीत करने लगे।

सुदामाजी नित्यप्रति प्रात:काल उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर भगवत् भजन और सन्ध्योपासना में लग जाते थे। और गृहणी भी अतिथि-सेवा और साधू सेवा का यथाशक्ति भरपूर पालन करती थी। और मध्यानकाल में जब ये दोनों प्राणी, भगवान का भोग लगाने के बाद प्रसाद में रसोई पा लेते थे तो फिर

कुछ समय तक तो भगवान श्री कृष्ण की चर्चा और उनके प्रेम-मिलन, सेवा-सत्कार का गुणानुवाद करके आनन्दविभोर हो जाया करते थे । इसके पश्चात कुछ समय तक ये दोनों प्राणी धर्मशास्त्र और भक्तो की गाथाओं का अध्ययन करते थे । इस प्रकार से इन दोनों का जीवन स्वर्गीय सुख का आनन्द लेने लगा ।

कुछ समय बाद, एकदिन अचानक भगवान श्री कृष्ण, अपने मित्र सुदामा से मिलने की इच्छा से, सुदामा के महलों पर आये । सुदामा जी ने जैसे ही प्रभु के दर्शन किये तो दौड़कर चरणों पर गिर पड़े । तब भगवान ने उन्हें उठाकर गले से लगा लिया, और फिर दोनों व्यक्ति महल में बड़े-बड़े सिंहासनों पर विराजमान होकर प्रेम की बातें करने लगे । तदनन्तर सुदामा जी ने भगवान के लिए उबटन कराकर सुगन्धित जलों से स्नान करवाया और फिर चन्दन, अक्षत, फूलमालाओं से प्रभु का बड़े प्रेम के साथ पूजन किया । बाद में दोनों मित्रों ने मिलकर एक साथ भोजन किया । सुदामा अपने मन में आज बड़े मगन हो रहे थे । उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा कि प्रभु आज मेरा जीवन सफल हो गया । मैं आज अपने को धन्य मानता हूँ, क्योंकि आप स्वयं कृपा करके मेरे घर पधारे हो, इससे अधिक मेरे लिए सौभाग्य का विषय और क्या हो सकता है । बाद में दोनों मित्र एक पलंग पर बैठकर प्रेम का वार्तालाप करने लगे, तब सुदामा जी की स्त्री ने आकर प्रभु को नमस्कार किया और कहा कि दीनबन्धु, इस घर की गरीबी को आपने अपनी विशेष कृपा से सदैव के लिए नष्ट कर दिया है । इसलिए हम जन्म-जन्मान्तरों में भी आपका एहसान नहीं भूल सकते । भगवान ने कुछ मुस्कराते हुए कहा कि भाभी, तुमने मेरे लिए जो चावल सौगात में भेजे थे, उनका ही पूरा पूरा बदला जब मैं अभी

तक नहीं चुका पाया हूँ तो फिर तुम्हारे अहसान मानने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता । भगवान के इस वाक्य को सुनकर सुदामाजी की स्त्री ने नेत्रों में जल भर आया और उसने कहा प्रभु आप सर्व सामर्थ्यवान है और ईश्वर है । आपके हृदय की तराजू पर संसारी आदमियों के कौन कौन से कर्म का, कैसा कैसा मूल्य हो सकता है, इसे आपही तौल सकते है । किन्तु मै तो इतना ही समझ सकी हूँ कि यह आपकी केवल भक्तवत्सलता एवं दीनबन्धुता का ही महा प्रसाद है । इस प्रकार से दो-चार दिनतक बड़े आमोद-प्रमोद के साथ श्री कृष्ण सुदामा जी की मेहमानदारी में रहे, और तीनों प्राणियों ने महान सुख का अनुभव किया । अन्त में जब भगवान द्वारकाधीश द्वारका को जाने लगे तो अपने मित्र सुदामा से कहा कि सुदामा जी, आज मै तुमसे बहुत ही प्रसन्न हूँ, इसलिए इस समय जो कुछ भी चाहो जी खोलकर माँग लो ।

भगवान के इस वाक्य को सुनकर सुदामा जी ने कहा कि दीनबन्धु, अब मै आपसे क्या माँगू, जबकि बिना माँगे ही आपने मुझे वह विशाल सम्पत्ति दे डाली है जिसे देखकर देवराज इन्द्र को भी अपने जीवन पर संकोच हो सकता है । किन्तु फिर भी यदि आप मुझपर विशेष प्रसन्न है तो प्रभु कृपा करके मुझे यही वरदान दीजिये, कि आपने जो इतनी बड़ी विशाल सम्पदा दे दी है इसके चक्कर में पड़कर मै आपकी भक्ति को न भूल जाऊँ ।

सुदामा के भक्ति-भाव से भरे हुए वचन सुनकर भगवान श्री कृष्ण ने कहा मित्र, वास्तव में सत्य तो यह बात है कि यह समस्त सम्पत्ति, मैंने खासतौर से तुम्हारी स्त्री की इच्छा पूर्ण करने के लिए ही दी है ।

क्योंकि तुम्हे तो, पहिले भी धन की इच्छा नहीं थी और अब इतना वैभव प्राप्त होने पर भी, तुमको इसकी उतनी खुशी नहीं

है। किन्तु फिर भी मै तुम्हे यह वचन देता हूँ कि तुमको जीवन पर्यन्त मेरी जगन्मोहनी माया कभी नहीं सता सकेगी और तुम दोनों का मन मेरी भक्ति मे अटल रहेगा। भगवान के यह वचन सुनकर दोनों बड़े मगन हो गये और प्रभु के चरणारविन्द में मस्तक टेककर नमस्कार किया। इसके बाद स्त्री सहित सुदामा जी ने प्रभु का विधिवत् पूजन किया, और स्वर्ण के थाल में दीपक जलाकर भगवान की आरती उतारी तथा प्रभु के चरण धोकर दोनों ने चरणोदय पान किया और अपने शरीर पर प्रभु के चरणोदक को छिड़ककर अपने जीवन को सफल बना लिया। बाद में प्रभु दोनों से प्रेमपूर्वक मिलकर अपनी द्वारका पुरी को चले गये। और सुदामा जी अपनी स्त्री के सहित भगवान की शक्ति के अन्तर्गत सर्व प्रकार से संसारी आनन्द भी प्राप्त करने लगे।

अच्छे-बुरे समय की पहिचान

एक शहर में, पुराना खानदानी एकधनाढ्य साहूकार रहता था। जब उसका लड़का जवान हो गया तो उसने एक बहुत बड़े मालदार व्यक्ति की सुन्दर लड़की से उसका सम्बन्ध तय करके, विवाह कर दिया। कुछ वर्षों बाद ही सेठ जी के यहाँ एक-दो नातियों का जन्म हुआ तो बड़ी खुशियाँ मनाई, किन्तु नाती जब कुछ बड़े हो गये तब अचानक सेठजी का देहावसान हो गया। सेठ जी के लड़के ने अपने पिता का समस्त क्रिया-कर्म वंश-परम्परा के अनुसार सुन्दर ढंग से कर दिया। अपने पिता की विशाल सम्पत्ति को पाकर लड़का नगर-सेठ बन गया यह सेठ अपने व्यापारिक क्षेत्र में तेजी-मन्दी की खरीद-बेच करने में बड़ा कुशल था,

इसलिए उसने भी पिता की मृत्यु के बाद लाखों रुपये पैदाकर लिये । इस कारण से समाज में इसका बड़ा भारी प्रभाव बढ़ गया । इसको जगह-जगह अधिक रूप से मान-सम्मान प्राप्त होने लगा । किन्तु इस उन्नति के कुछ ही वर्षों बाद सेठजी को व्यापार में नुकसान लगना शुरू हो गया और धीरे-धीरे दो-चार साल के अन्दर ही सेठजी की तमाम सम्पत्ति, व्यापारिक सट्टे की तेजी-मन्दी के अन्तर्गत सब नष्ट हो गई और इनको अपने रोटी-कपड़ों को भी प्राप्त करने के लाले पड़ गये । सेठजी ने अपने भरसक हजारों प्रकार से अपनी उन्नति के लिए हाथ-पाँव फेके, किन्तु भाग्य ने एक रत्ती भर भी साथ नहीं दिया । सेठ जी जब पूर्ण रूप से निराश होगये, तब उन्होंने अपने मन में यह विचार किया कि मैं अपनी स्त्री और बच्चों को तो अपनी सुसराल में छोड़ दूँगा और जब तक मेरा बुरा समय रहेगा, तब तक मै अपना जीवन किसी एकान्त स्थान में, किसी भी प्रकार से व्यतीत कर लूँगा ।

सेठजी ने अपना विचार अपनी स्त्री से प्रकट कर दिया और वह सब बाल-बच्चों को लेकर अपनी ससुराल में पहुँच गये । वहाँ जाकर ये सब लोग एक रात ही ठहर पाये थे कि दूसरे दिन ही इस बिगड़े हुए सेठ की स्त्री ने, अपने माता-पिता को, अपने यहाँ की समस्त सम्पत्ति के नष्ट हो जाने का समाचार खुलासा बता दिया । साथ ही साथ उसने यह भी बता दिया कि अब ये दो-चार दिन में ही हम लोगों को यहाँ छोड़कर कहीं बीहड़ अनजान स्थल में चले जायँगे लड़की के माता-पिता ने अपने दामाद की खूब अच्छी खातिरदारी की, किन्तु दामाद के चेहरे पर खुशी की रेखा का एक चिन्ह भी कहीं दिखलाई नही देता था । अन्त मे एक दो दिन के बद इस नौजवान सेठ ने अपने सास-ससुर से विदा लेने के लिए कहा, तो उन्होंने एकान्त में ले जाकर अपने दामाद से कहा कि

देखो लाला, हमको आपका तमाम हाल मालूम हो गया है । इसलिये अब तुम इस बात की चिन्ता मत करो कि हमारी सब सम्पत्ति बिगड़ गई है तो अब हम क्या करेंगे । भगवान ने हमको बहुत कुछ दे रखा हे इसलिए, आपको खाने-पहिनने की तो कोई चिन्ता है ही नहीं, बल्कि यदि आप अपना कोई निजी व्यापार भी करना चाहो तो, तुम्हारे लिए लाखों की सम्पत्ति हाजिर है । जितना रुपया चाहो ले सकते हो। इसलिए तुमको घर और बच्चों को छोड़कर बाहर कतई नहीं जाना चाहिए । इतना कहने पर भी इस बिगड़े हुए दामाद ने उनकी एक भी बात नही मानी और चल देने की जिद्द पर डटा रहा; क्योंकि वह अपने मन में खूब जानता था कि मै जितनी दौलत इनसे इस समय ले लूँगा, वह दौलत भी तुरन्त ही नष्ट हो जायेगी । तब अन्त में उस बूढ़े ससुर ने कहा कि अच्छा तुम यहाँ पर रहना नहीं चाहते हो तो कम से कम लाख दो लाख रुपये ही ले जाओ । जिससे तुम्हारे लिए हर काम में बड़ी भारी आसानी रहेगी । परन्तु इस दामाद ने फिर भी उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया, और उत्तर देते हुए कहा कि जब मेरा भाग्य ही साथ नही दे रहा तब आपका रुपया यदि मै ले जाऊँगा तो वह भी अवश्य ही खत्म हो जायेगा । अन्त में जब ससुर ने विशेष आग्रह किया तब उस दामाद ने कहा कि देखिए पिताजी, यदि आप नही मानते है और कुछ देना ही चाहते है तो मुझको एक सौ बकरियाँ दिलवा दीजिए इसके अधिक मै एक पैसा भी लेने को तैयार नही हूँ ।

ससुर ने लाचार होकर उदासीन मन से अपने मुनीम से कहा कि देखो तुम कुछ रुपये लेकर लाला के संग चले जाओ, और हमारे शहर से सौ पचास कोस दूरी पर जाकर, जहाँ भी कहे, इनको एक-सौ बकरियाँ दिलवाकर चले आना, ताकि हमारे

आसपास का कोई भी आदमी यह न समझ पाये कि यह अमुक सेठजी के दामाद बकरियाँ चरा रहे है । अन्त मे दामाद के चलते वख्त सास-ससुर और स्त्री-बच्चे सभी मिल मिलकर खूब रोये, किन्तु इस नौजवान दामाद ने बड़े साहस के साथ कहा कि आप सभी लोग पूर्ण निश्चिन्त रहे, और विश्वास रखें कि मै अपने बुरे समय के समाप्त होते, ही बहुत जल्द वापस होकर आप लोगों के दर्शन करूँगा । इतना कहकर कुछ सामान बिस्तर, लोटा आदि लेकर दामाद और मुनीम दोनों व्यक्ति, सभी लोगो का नमस्कार प्रणाम करके चल दिये । दो-चार दिन के बाद ये लोग एक बड़े अनजान स्थान पर पहुँचे, और वहाँ से मुनीम जी ने एक सौ बकरियाँ, जिसमें नब्बे बकरियाँ और दस बकरे थे, खरीद कर इस नौजवान दामाद को दिलवा दी । इसके बाद मुनीम जी ने भी दो एक बार दामाद से वापिस चलने के लिए आग्रह किया किन्तु इसने एक भी बात नही मानी । अन्त में मुनीम जी, भी अपना मन कुछ उदास करके दामाद से राम राम करते हुए अपने घर को वापिस चल दिये ।

इधर इस साहसी नौजवान ने, उन एकसौ बकरियों को लेकर जंगल का रास्ता ले लिया । जंगल के अन्दर पहुँच कर इसने पेड़ों की घनी छाया केनीचे अपना बिस्तर लगा दिया, और सब बकरियों को जंगल के अन्दर वनस्पति एवं घास चरने के लिये छोड़ दिया । इस नौजवान ने अपनी दिनचर्या इसप्रकार से बना ली कि, जब कभी भूख लगती थी तो अपने लोटे में बकरियों का दूध निकाल कर उसी वख्त ताजा का ताजा पी लेता था । और नींद लगती थी तो पेड़ों की छाया मे निर्भयतापूर्वक सो जाता था, तो जब कभी स्नान करने की इच्छा होती थी तो जंगल के सरोवर आदि में कही स्नान कर लेता था । और कभी सैर करने की बात

मन में आती थी तो जंगल में इधर-उधर घूमने निकल जाता था। कभी भूली-बिसरी बकरियों को एक ही स्थान पर एकत्रित भी कर देता था। इस प्रकार से इस नौजवान का समय बड़े संतोष और शान्ति के साथ व्यतीत होने लगा। किन्तु साथ साथ यह भी था कि, इसकी एक सौ बकरियों में से, कभी एक दो बकरियाँ या तो मर जाती या कोई जंगली जानवर बकरी को मार डालता था। इस प्रकार इसकी बकरियाँ दिन-प्रतिदिन घटने लगी और एक वर्ष के अन्दर पंचानवें बकरियाँ मर गयी, केवल पाँच बकरे व बकरियाँ शेष रह गयी, किन्तु फिर भी इसके दिल पर कोइ मलाल नहीं था। इसका तो दैनिक जीवन उसी प्रकार से चलता रहा और नित्य दिनमें दो एक बार एकाग्र चित्त करके, भगवान का स्मरण भी आनन्दपूर्वक करना रहता था। अन्त में पाँच बकरे रहने के बाद, इसकी एक बकरी ने दो बच्चे दिये। तब यह उन बच्चों के साथ अपना कुछ मनोरंजन भी कर लेता था। इसके कुछ दिन के बाद फिर दूसरी बकरी ने बच्चे दिये। इस प्रकार से कुछ ही दिनों में तीनों चारों बकरियों ने बच्चे दिये। धीरे-धीरे इसकी बकरियों की गणना फिर से बढ़ने लगी और उन मौजूदा बकरियों में से न तो कोई मरती थी और न किसी को कोई जंगली जानवर ही खा डालता था। अन्त में जब इसने देखा अब तो फिर से बकरियों का झुंड़ दीखने लगा, तब इसने अपने मन में यह पूर्ण रूपेण समझ लिया कि अब मेरा बुरा समय समाप्त हो चुका है और अच्छा समय आ गया है। अब इस नौजवान ने अपने घर चलने की सोची, इसलिये वह सब बकरियों को साथ लेकर गाँव में पहुँचा, और बाजार भाव में सब बकरियों का बेचकर इसने रूपये प्राप्त कर लिये। तब इसने एक अच्छे सरोवर में खूब स्नान किया और बाद में एक अच्छे दर्जी से अपने लिये नये कपड़े सिलवाकर पहिन

लिये । इस तमाम दौरान के अन्दर इसके चेहरे की डाढ़ी के बाल काफी लम्बे हो गये थे, और बकरियों का ताजा दूध पी-पीकर बड़ा भारी तन्दुरुस्त हो गया था; चेहरे पर सुर्खी आ गयी थी, अब नये फेशन के कपड़े सिलवाकर पहिन लिये थे, इसलिए अब वह अपने पुराने मिलने वाले आदमियों द्वारा सहसा कदापि भी पहिचाना नहीं जा सकता था ।

अब यह नौजवान सीधा अपने ससुराल वाले शहर में पहुँचा, और वहाँ जाकर इसने एक कमरा किराये पर ले लिया । बाद में अपने ससुर के पास पहुँच कर अनजान की तरह कहा कि सेठ जी हम आपकी आढ़त मे कुछ व्यापार करना चाहते है, इसलिए यह हमारा थोड़ासा रुपया पेशगी जमा कर लीजिये, और हमारे लिये एक सौ बोरी मेवे की खरीदकर बाजार भाव से अपने यहाँ रखवा लिया और उनके बताये हुए फर्जी नाम से उनका खाता खोल लिया । वह नौजवान सौदा लिखाकर अपने कमरे में आ गया, और बाजार से खानापीना लेकर खा लिया और फिर सो गया । किन्तु भाग्य का सितारा इतना सीधा पड़ा कि उसी दिन से मेवे पर तेजी आना शुरू हो गयी और चन्द दिनों में ही, उस मेवे पर काफी तेजी आगई । इसलिए उसके हौसले दिन दूने बढ़ते ही चले गये और वह अपने ससुर की दुकान पर नित्य प्रति जाकर, नये नये सौदो की लम्बी खरीद करने लग गया । इसलिए उसका नफे का हजारो रुपया उनके यहाँ जमा होता रहा और थोड़ा-बहुत अपने खर्च के लिए कभी-कभी कुछ रुपया ले आता था । अन्त में जब उसके ससुर की आढ़त में उसका करीबन एक लाख रुपया इकट्ठा हो गया । तब एक दिन उसने अपने मन में सोचा कि अब अपनी स्त्री को लेकर अपने घर चलना चाहिए । ऐसा विचार करने के उपरान्त उसने अपने सौदों का पूरा हिसाब चुकता कराकर

जितना रुपया निकलता था वह सब ले लिया, और अपने कमरे में आकर नाई से डाढ़ी मुडवायी तथ पहिले जैसे फैन्सी बाल कटवाये और फिर अपने पुराने ढंग के कपड़े बगैरह सब तैयार करवाये और स्नान आदि करके जब नये-नये कपड़े पहिने तो इस नौजवान का चेहरा एकदम चमक उठा। चेहरे पर तेज दीखने लगा तथा उसी रूप में शकल पहिचानने में आने लगी। तब यह महाशय अपनी ससुराल में ससुर साहब के सामने पहुँच कर, उन्हें प्रणाम कहते हुये उनके चरण छू लिये। ससुर साहब ने जब अपने दमाद को एकदम हृष्ट-पुष्ट और प्रसन्न देखा तो झट से उठकर उसको छाती से लगा लिया, और तुरन्त ही उनको अपने साथ लेकर घर पहुँच गये। घर पर पहुँचते ही, एकदम सबको खुशी होगई इसने सासूजी के भी चरण छुये, फिर बच्चों को प्यार किया। एक तरफ कुछ संकोच करती हुई गृहिणी भी आनन्दसागर में गोते लगाती हुई नजदीक आ गई। फिर इन सब लोगों ने मिलकर खूब आनन्द के साथ भोजन किया। तदुपरान्त जब सब लोग एक स्थल पर बैठकर कुछ वार्तालाप करने लगे, तब इनके सास-ससुर ने पूछा कि कहो बेटा तुम्हारा समय वहाँ किस प्रकार से कटा। तब इस नौजवान ने अपना सारा वृत्तान्त आदि से अन्त तक सब कह सुनाया और फिर जिस प्रकार से इनकी आढ़त में रुपया कमाया था, वह भी सब तों बतला दीं।और अन्त में इसने अपने ससुर से कहा कि, पिता जी यदि उस समय मै आपकी बातें मानकर लाख दो लाख रुपया आपसे ले भी लेता तो यह पूर्ण निश्चित था कि वह रुपया भी, जिस प्रकार धीरे-धीरे बकरियाँ मर गई, उसी प्रकार से नष्ट हो जाता। इसीलिए मैंने आपसे एक पैसा भी लेना उचित नही समझा और अपने बुरे समय को समाप्त कर दिया। और आपही देख लीजिये कि अच्छा समय आते ही आपकी ही आढ़त में कितना

रुपया स्वयमेव मेरे लिये मुनाफे में प्राप्त हो गया। इस प्रकार दो चार दिन तक इन लोगों के यहाँ आमोद-प्रमोद चलाता रहा। अन्त में यह नौजवान दामाद अपने बीबी-बच्चों को लेकर धन से परिपूर्ण हो अपनी ससुराल से विदा होकर अपने घर आगया। और अपने अच्छे समय का आनन्द लाभ प्राप्त करने लगा।

ईमानदार की कसौटी

एक शहर में एक करोड़पति सेठ रहता था। किन्तु दुर्भाग्यवश, जब सेठ की वृद्धावस्था मृत्यु के निकट पहुँच रही थी, तब सेठ जी के परिवार के सभी युवा स्त्री पुरुष मर चुके थे। केवल एक नाती दो वर्ष की आयु वाला शेष रह गया था। इसलिए सेठजी को इस बात की बड़ी चिन्ता नित्य प्रति होने लगी, कि जिस दिन मेरी आँखे बन्द हो जायँगी उस दिन मेरी इस विशाल सम्पत्ति का मालिक कोई और आदमी ही बन बैठेगा, और मेरे इस छोटे से नाती की गरदन मरोड़ कर इसे भी खत्म कर देगा। इसलिये सेठजी ने अपने नाते-रिश्तेदारों में या मिलनें जुलने वालों में, दूर दूर तक नजर पसार कर देखा, किन्तु उनको कोई एक भी आदमी ऐसा प्रतीत नहीं हुआ, जिस पर विश्वास किया जा सके। अत: सेठजी ने मन में सोचा कि मेरी इस सम्पत्ति के साथ-साथ मेरे वंश का चिराग भी बुझ जायेगा। इस प्रकार की गहरी चिन्ता में सेठ जी को दिन का भोजन और रात की नीदं भी हराम हो गई। एक दिन अचानक एक नई बात उनके ध्यान में आ गई और उन्होंने सोचा कि बस एक तरीका रह गया है जिसके द्वारा अपना मनोरथ सिद्ध हो सकेगा। इस कार्य को शीघ्र कर डालना ही

उचित होगा। ऐसा सोच सेठ जी तुरन्त बाजार गये और उन्होंने चमड़े के छोटे-छोटे जेबी बटुए करीब दो सौ नग खरीद कर घर ले आये। उसके बाद उन्होंने एकान्त में अकेले बैठकर, हर एक बटुए के अन्दर पाँच-पाँच सौ रुपये के नोट रखदिये और अपने यहाँ के नोकरों का पता कागज पर लिखकर हरएक बटुए में उसे भी रख दिया। इसके बाद उन दो सौ बटुओं को थैले में भरकर उन्होंने आपने नौकरों से कहा कि देखो मै दो दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ तुम लोग घर पर खूब सावधान रहना और मेरे बच्चे का भी पूरा पूरा ध्यान रखना। इतना कह कर सेठ जी घर से बाहर निकले, और रेलवेस्टेशन पर पहुँच गये।

स्टेशन जाकर उन्होंने भीड़ में घुसकर अगले स्टेशन के लिये एक निकट खरीदा और अपने थैले में से धीरे से एक बटुआ निकाल कर चुपचाप जमीन पर डाल दिया। बाद में टिकट लेकर रेल पर चढ़ गये। वहाँ भी लोगों की निगाह बचाकर एक बटुआ चुपचाप जमीन पर डाल दिया। इसके बाद अगले स्टेशन पर उतरे और वहाँ भी स्टेशन से लेकर शहर के अन्दर तक, जगह-जगह मौका देखकर चुपके-चुपके एक एक बटुवा डालते गये। इसके बाद उन्होंने इसी प्रकार से और दो चार शहरों को दौरा किया और उन बचे हुए तमाम बटुओं को फेंकते हुए चले गये। अन्त में चुपचाप अपने घर वापस आ गये। उधर, भी जिन जिन लोगों को वे बटुए मिले वे लोग बड़ी खुशी मनाते हुए उन बटुओं को अपने-अपने घर ले गये। अन्त में एक बटुआ एक ऐसे गरीब आदमी के हाथ लगा कि जिसके स्त्री-बच्चों को पेट भरकर रोटी-कपड़ा भी नसीब नहीं होता था। वह आदमी अपनी नौकरी तलाश करने के चक्कर में, नित्य प्रति मारा-मारा फिर रहा था। इस आदमी ने जब बटुए को खोलकर देखा तो उसमे पाँच सौ

रुपये के नोट रखे हुए थे और साथ में उसमें पते का एक कागज का टुकड़ा भी रखा हुआ था। यह आदमी बड़ा ईमानदार था। इसके अपने घर जाकर अपनी स्त्री को सारा हाल बताते हुए कहा कि देखो, हम लोग एक रुपये के लिए कितने भारी परेशान है, किन्तु जिस बेचारे गरीब के ये पाँच सौ रुपये खो गये होंगे, उसके दिल पर कितना भारी गम सवार हो रहा होगा, उसे तो रातभर नींद भी नहीं आयेगी। अतः मै इसके घर पर जाकर इस बटुए को अभी पहुँचा कर आता हूं, इतना कह वह आदमी बटुए को लेकर, उस सेठ के मकान का पता लगाता हुआ उनके घर पहुंच गया। वहाँ जाकर उसने उस सेठ के नौकर के नाम से दरवाजे पर आवाज लगाई। इधर सेठजी तो उसी वख्त से इसी ताक में बैठे हुए थे कि उन तमाम दो सौ बटुओं में से कोई भी एक दो आदमी लौटकर यहाँ आता है या नहीं। दूसरे दिन सिर्फ यहीं एक आदमी आया था। जैसे ही इसने आवाज दी कि सेठजी ने तुरन्त अपना दरवाजा खोलते हुए कहा कि आप किन्तु साहब से मिलना चाहते है ? आप अन्दर आइये। यह कह कर सेठ जी उस आदमी को अन्दर लिवा ले गये। तब उस आदमी ने कहा कि आपके किसी आदमी का कोई बटुआ तो नहीं खोया है? सेठ जी ने कहा कि हाँ भाई, मेरे एक आदमी का पाँच सौ रुपये का एक बटुआ खो गया है, क्या तुमको मिला है? सेठजी की बात सुनते ही उस आदमी ने, पाँच सौ रुपये का वह बटुआ निकालकर सेठ जी के सामने रख दिया और कहा कि देखिए इसमें पाँच सौ रुपये मौलूद है वे ले लीजिये। सेठजी ने बटुआ हाथ में लेते हुए कहा कि हाँ, यही बटुआ हमारे आदमी का खोया था। किन्तु भाई तुम यह तो बताओ कि तुम कहाँ रहते हो और क्या काम करते हो, और तुम्हारी माली हालत कैसी है? तब उस आदमी ने कहा कि सेठजी मै एक गरीब

आदमी हूँ, मेरी माली हालत तो भगवान का नाम है किन्तु हमारे यहाँ तो भोजनों तक के लाले पड़े हुए है, तथा नौकरी करने के लिए रोजाना मारा-मारा फिरता रहता हूँ। मगर कही भी एक पैसे का धन्धा नहीं मिल रहा है। सेठ जी ने इस गरीब की बातें सुनकर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि भाई जब तुम एक एक पैसे से तंग हो तो क्या तुम इस बटुए को अपने पास नहीं रख सकते थे। तुमको तो इस रुपये से बड़ी मदद मिल जाती, फिर क्या कारण कि तुम इतने रुपयों को वापस करने आये हो? उस आदमी ने उत्तर देते हुए कहा कि सेठजी, भगवान के देने से आदमी का पूरा पड़ता है, बल्कि चोरी, बेइमानी और अनर्थ के रुपये से न पूरा ही पड़ता है और न आत्मा में शान्ति ही मिल पाती है। साथ साथ मै यह मानता था कि मेरे जैसा व्यक्ति जब एक एक रुपये के लिए तरस रहा है तो जिस गरीब के ये इकट्ठे पाँच सौ रुपये खोये हैं, उस व्यक्ति के दिल पर क्या मुसीबत बीत रही होगी। अस्तु, मैं अपने हाल पर और ईश्वर पर भरोसा रखने वाला व्यक्ति हूँ, इसलिए इन पाँच सौ रुपयों को रख लेने से मुझको इतनी खुशी नहीं हो सकती थी, जितनी खुशी इन रुपयों को वापस करने में हो रही है। इस व्यक्ति की बातें सुनकर सेठ जी के हृदय में बड़े सुख-शान्ति का अनुभव होने लगा, किन्तु फिर भी उन्होंने उसी परीक्षा के दृष्टिकोण से कहा कि अच्छा भाई यह तुम्हारी इमानदारी है कि तुम इन रुपयों को यहाँ तक देने आये हो, किन्तु अब हमारी यही इच्छा है कि तुम इन रुपयों को वापस ले जाओ। यह हम खुशी के साथ तुमसे कह रहे है और हम पाँच सौ रुपये अपने पास से, अपने नौकर को भी दे देंगे, ताकि तुम्हारा और उसका दोनों का भला हो जाय।

सेठ जी की इस बात को सुनकर वह गरीब आदमी उस

बटुए को वहीं छोड़कर खड़ा हो गया, और हाथ जोड़कर कहने लगा कि सेठजी, यदि मुझको यह रुपये लेने ही होते तो, मै इनको यहाँ तक देने के लिए हर्गिज न आता। आप क्षमा करें, यह कहते हुए वह आदमी वापस चल दिया। तब सेठ जी ने जरा जोर के साथ आवाज देते हुए कहा कि अरे भाई तुम कहाँ जा रहे हो, मैंने तो तुम्हें प्राप्त करने के लिये, एक लाख रुपया खर्च किया है। सेठ जी की इस बात को सुनकर वह गरीब आदमी एकदम सन्नाटे में आ गया और वापस लौटते हुए उसने आश्चर्य के साथ कहा कि सेठ जी मेरे लिये आपने किस प्रकार से एक लाख रुपये खर्च कर दिये है या मेरे साथ किसी रहस्यात्मक भाषा में बातें कर रहे हैं, अथवा आपको मुझको जेब काटने वाला चोर समझ रखा है, या आप मेरा मजाक कर रहे हैं। इस गरीब की निष्कपट बातें सुनकर सेठ जी ने उस आदमी को प्रेमपूर्वक अपने पास बैठाते हुए कहा कि भैय्या मै तुम्हारा जरा भी मजाक नहीं कर रहा हूँ और न मैंने तुमको जेब काटने वाला चोर ही समझा है। किन्तु वास्तव में सच बात यह है कि मैंने तुम्हारे जैसे व्यक्ति को पाने के लिये ही, इस प्रकार के पाँच-पाचँ सौ रुपयों के दो सौ बटुए कई शहरों में जगह-जगह सड़कों पर तथा स्टेशनों पर, एक एक करके चुपके चुपके जमीनों पर डाल दिये थे, और इसके बाद तुरन्त मै यहाँ अपने घर पर वापस आकर बैठ गया। अस्तु, हर बटुए के अन्दर पाँच पाँच सौ रुपये के नोट और इसी मकान का पता लिखा हुआ था, इस प्रकार से मेरा एक लाख रुपया खर्च हो गया, और यह मानी हुई बात है कि वे दो सौ बटुए, दो सौ आदमियों को अवश्य ही मिले होंगे, किन्तु उन दो सौ आदमियों मे से सिर्फ एक तुम्ही ऐसे व्यक्ति हो जो इन रुपयों के सहित इस बटुए को लेकर हमारे यहाँ ईमानदारी की कसौटी पर सही साबित उतरे हो।

सेठ जी की इस बात को सुनकर उस आदमी ने कुछ आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि सेठ जी इतना अधिक धन बेकार में खर्च करने से आपको कौन सा लाभ प्राप्त हुआ। सेठ जी ने उत्तर देते हुए कहा कि भैय्या आज मुझे बड़ा लाभ हुआ है, क्योंकि मुझे तुम्हारे जैसे व्यक्ति की बड़ी जबरदस्त आवश्यकता थी। इसलिये यदि एक लाख रुपया खर्च करने पर भी तुम मुझे मिल गये तो यह सौदा घाटे का नहीं, बल्कि नफे का ही है। किन्तु सेठ जी ने अपनी बातों का सिलसिला बदलते हुए कहा कि खैर, मै इन सब बातों को बाद में बतलाऊँगा, इस वक्त तो मेरा कहना सिर्फ यह है कि तुम जिस नौकरी की तलाश में घूम रहे थे, वह नौकरी मैं तुमको अपने यहाँ आज ही से दे रहा हूँ। तुमको दो सो रुपया माहवार मिलते रहेंगे और रहने के लिए काफी बड़ा मकान बिना किराये के ही तुमको हमारे यहाँ मिलेगा। अस्तु तुम हमारे दो-चारे नौकरों को साथ ले जाओ और अपना जरूरी सामान यहाँ लदवाकर ले आओ और बाकी का फालतू सामान वहाँ के किसी गरीब पड़ोसी को मुफ्त में देकर चले आओ। इतना कहकर सेठजी ने दो सौ रुपये निकाल कर उस आदमी को दिये और कहा कि यह एक महीने की तनखा हम तुमको पेशगी दे रहे है। तुम अभी हमारे आदमियो को साथ लेकर चले जाओ। इसके बाद सेठजी ने अपने दो-चार आदमियों को बुलाकर उन्हें आज्ञा दे दी, कि देखो तुम लोग इनके साथ साथ इनके घर पर चले जाओ और जो कुछ भी इनका जरूरी कीमती सामान हो उसे लदवाकर तथा इनके बीबी-बच्चों के सहित, बड़े अब के साथ लिवाकर यहाँ लेते आओ। सेठ जी की इन तमाम बातों ने, उस नौजवान को न तो कुछ बोलने ही दिया, और न ही कुछ सोचने ही दिया। वह चुपचाप उठकर उन आदमियों के साथ अपने मकान पर पहुँच गया और वहाँ जाकर

उसने संक्षेप में सेठजी का सारा वृत्तान्त अपनी स्त्री को कह सुनाया। इन दोनों स्त्री-पुरुषों एवं बच्चों ने प्रथम तो कुछ जलपान किया औद बाद में इन्होंने अपने मकान की कुछ आवश्यक कीमती चीजों को ले चलने के लिये एक तरफ रख लिया और बकाया बची हुई बहुत सी चीजें अपने एक गरीब पड़ोसी को दे दिया, और उससे कहा कि भाई, यह सब सामान हम तुम्हारे लिये ही दिये जा रहे है। अब शायद ही ऐसा मौका जीवन में दुबारा आ सके कि इस सामान में से फिर दुबारा हमें कुछ वापस लेंना पड़े। अस्तु उन सब आदमियों ने मिलकर जरासी देर में मकान खाली करके किराया चुकता करते हुए ताली मकान-मालिक को दे दी और फिर ये दोनों स्त्री-पुरुष अपने पड़ोसियों से खूब अच्छी तरह से मिलजुलकर, उस सेठ के आदमियों के साथ, अपने कुछ जरूरी सामान को लेकर सेठ के मकान पर आ गये। सेठ जी ने इन लोगों के घर में आते ही बड़ा स्वागत करते हुए कहा कि आओ बेटा, तुम अपना तमाम सामान एक कमरे में लगा दो। सेठजी के पुराने नौकरों ने जरासी देर में वह सब सामान एक कमरे में लगा दिया। तब सेठ जी ने उस आदमी की स्त्री से कहा, कि देखो बेटी, तुम मेरे धर्म के बेटे की बहू हो, इसलिये मेरी आज्ञा है कि आज से इस घर को अपना ही घर निःसंकोच भाव से समझा करना और जिस किसी वस्तु की आवश्यकता पड़ती रहे, उसे तुरन्त ही, इन पुराने कर्मचारियों पर हुकुम करके मँगवा लिया करना, इसमें मुझसे पूछने की जरूरत नहीं है। तदनन्तर सेठजी ने बहू से कहा कि बेटी जाओ रसोई घर मे जाकर रसोई तैय्यार करो। आज से दोनों वक्त मैं भी तुम्हारे साथ ही भोजन करूँगा। इतना सुनते ही बहु खुशी के साथ रसाई घर में गई और पुराने नोकरों के द्वारा, सब सामान का पता लगाकर उसने रसोई तैयार कर ली. और फिर इन सभी लोगों ने

मिल-जुलकर बड़े प्रेम के साथ भोजन किया तथा सेठ जी ने भोजन करते समय, भोजन के स्वादिष्ट रुचिकर प्रतीत होने के नाते, बहु की बड़ी प्रशंसा की और इस प्रकार से दिन आनन्दपूर्वक बीतते गये ।

एक दिन सेठ जी ने अवसर पाकर इन दोनों को, एकान्त में प्रेमपूर्वक बुलाकर अपने पास बैठाया और बोले कि देखो बेटा, उस दिन मैंने तुमको जो कुछ बातें बाद में बताने को कहा था, उन्हें आज तुम दोनों ध्यान लगाकर सुन लो । देखो मेरे परिवार में जितने भी युवा स्त्री पुरुष थे, वे सबके सब मृत्यु की गोद में सो चुके है, और मै भी अब वृद्ध होने के कारण, मृत्यु की बाट देख ही रहा हूँ । किन्तु मेरे परिवार मे सिर्फ एक ही नाती शेष रह गया है जिसकी लगभग दो साल की उम्र है । उसके ही जीवन-रक्षा की चिन्ता में मै रात-दिन पीड़ित रहता था कि मेरे मरने के बाद, ऐसा कौन सा व्यक्ति उपयुक्त है जो कि इस बच्चे को अपने बच्चों के समान ही समझकर, प्रेम और आत्मीयता के साथ इसका पालन कर सकेगा । क्योंकि मेरी इस विशाल सम्पत्ति के लोभ में पड़कर कोई भी आदमी, इस बच्चे की जान का दुश्मन बन सकेगा । पर तुमको पाकर मेरी आत्मा को बड़ी शान्ति मिल गई और मुझे यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि अब भविष्य में मेरे वंश का दीपक भली भांति प्रकाशित रह सकेगा । इतना कहने के बाद सेठ जी ने तुरन्त ही उस बच्चे को लाकर इन दोनों की गोद में बैठा दिया और उन्होंने भी गोद में लेकर उसे छाती से लगा लिया और उसके मुख का चुम्बन करते हुए, अपार आनन्द का अनुभव करने लगे ।

दोनों स्त्री-पुरुष, उस बच्चे के लालन-पालन में बड़े उत्साह के साथ लगे रहते थे और उसे अपने बंच्चों से भी बढ़कर प्रेम करते थे । इन सब लोगों के एकचित्त हो जाने से सेठजी को भी अपने

निजी परिवार का सा ही आनन्द प्रतीत होने लगा।

एक दिन सेठजी ने इस नये परिवार के सामने सभी पुराने नौकरों को बुलाकर उस आदमी से कहा कि देखो बेटा, आज से मैं तुम्हारा नया नाम धर्मदास रख देता हूँ और अपनी समस्त सम्पत्ति की लिखा-पढ़ी भी तुम्हारे नाम कर देता हूँ। इतना कहकर सेठजी ने एक अच्छे वकील को घर पर बुलाकर उससे कहा कि तुम हमारी समस्त चल और अचल सम्पत्ति का वसीयतनामा इस प्रकार से करवा दो कि, हमारी आधी सम्पत्ति का मालिक ध र्मदास रहे और आधी सम्पत्ति का मालिक हमारा नाती रूपकिशोर रहे। इसके अतिरिक्त एक बात और होनी चाहिये कि जबतक हमारा नाती मालिक न हो जाय, तबतक इस कुल सम्पत्ति का मालिक धर्मदास ही रहेगा और रूपकिशोर की परवरिश, पढ़ाई-लिखाई, देखभाल सब कुछ धर्मदास के जिम्मेदारी पर रहेगी। वकील साहब ने सेठजी के आदेशानुसार ही घर बैठे वसीयतनामे की लिखा-पढ़ी बड़ी कुशलता से पूरी करा दी और अड़ोसी-पड़ोसियों के हस्ताक्षर भी गवाह के रूप में करवा दिये। इसके बाद सेठ जी ने अपने मिलने-जुलनेवाले तथा पास-पड़ोसी के लिए एक दिन बड़ी सी दावत दी, जिसमें नगर के हजारों आदमी शामिल हुए। उस दावत में सेठजी ने सभी लोगों को, अपने नये वसीयतनामें की खबर सुना दी। सभी लोगों ने सेठजी के इस कार्य पर संतोष प्रकट करते हुए कहा कि सेठजी आपने यह कार्य बड़ा ही सुन्दर किया है। इसके बाद दावत का कार्य समाप्त हो गया। इस नये परिवार का आनन्द सेठजी को नित्य पति, नये रूप से प्रतीत होने लगा। किन्तु दुःख का विषय यह था कि सेठजी इस नये परिवार के सुख को प्राप्त करने के बाद सिर्फ एक वर्ष में ही सुरलोक पधार गये। सेठ जी का दाह-संस्कार धर्मदास ने बड़ी

श्रद्धा के साथ किया और बाद में ब्रह्मभोज भी विधि-विधान के साथ किया। किन्तु सेठजी के मरने से धर्मदास को इतना दुःख होने लगा मानो उसके जन्मदाता पिता की ही मृत्यु हुई हो। अन्त में धीरे-धीरे धर्मदास को तसल्ली आती गई, और धर्मदास अपने परिवार के साथ आनन्द से रहने लगा।

धर्मदास की गणना नगर के बहुत ऊँचे सेठो में होने लगी और सभी लोग उसे सेठजी कहकर ही सम्बोधित करते थे। कुछ समय बाद धर्मदास के बच्चों के साथ-साथ सेठजी का नाती रूपकिशोर भी स्कूल में पढ़ने जाने लगा। उन दूसरे बच्चों के साथ-साथ वह भी धर्मदास को पिता जी कहकर सम्बोधित किया करता था। ये सभी बच्चे आपस में एक-दूसरे को अपना भाई मानते थे। रूपकिशोर ने जब से होश सम्हाला था तब से इन सब बच्चों को अपना भाई और उन दोनों को अपना माता-पिता ही मानता था; क्योंकि उसके जीवन में तो कोई दूसरी बात समझने और सोचने तक की नहीं मिली थी। इधर धर्मदास के हृदय में भी कोई रत्तीभर भेदभाव नहीं था कि यह बच्चा कोई गैर है और यह बच्चे हमारे है, बल्कि धर्मदास के हृदय में सदा यह भावना थी कि यह बच्चा केवल बच्चा ही नहीं है किन्तु यह हमारा मालिक है और यही हमारा भाग्यविधाता भी है। इसलिये धर्मदास अपनी पत्नी के सहित इस बच्चे का विशेष लालन-पालन किया करते थे और साल के साल समय-समय पर सेठजी का श्राद्ध कर्म भी बड़े प्रेम के साथ किया करते थे।

एक दिन अचानक धर्मदास के हृदय में एक बात क्षण मात्र के लिए आयी कि यदि मेरी जगह कोई दूसरा व्यक्ति होता तो वह इस बच्चे को मारकर सारी सम्पत्ति का मालिक बन जाता। किन्तु इस क्षणिक विचार के आने मात्र से भी धर्मदास को मन ही मन

बड़ा दुख हुआ । इस बात पर हृदय में आत्मग्लानि पैदा हो गयी कि तू बड़ा नीच है, तेरे अन्दर यह भावनापैदा ही क्यों हुई । अतः धर्मदास ने अपने आपको मन ही मन बड़ा धिक्कारा, और बहुत प्रकार के मनोविचार करने के बाद धर्मदास की आत्मा को शान्ति मिली । इसके बाद दस-पन्द्रह वर्ष तक बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और लालन पालन का काम बड़े आनन्द के साथ-साथ चलता रहा, और धर्मदास का जीवन स्वर्गीय जीवन के रूप में व्यतीत होता रहा । अन्त में जब ये सब बच्चें बड़े हो गये और इनके विवाह-शादी का भी समय आ गया तब धर्मदास ने एक बडत बड़े धनाढ्य और सज्जन व्यक्ति की अति सुन्दर लड़की के साथ रूपकिशोर की शादी बड़ी धूमधाम के साथ कर दी । और अपने बच्चों की भी शादी यथास्थान उचित रूप से कर दी ।

एक दिन धर्मदास ने यह विचार किया कि अब तो रूपकिशोर सब प्रकार से समर्थ और लायक हो गया है तब उसने अपनी पत्नी के सामने एकान्त में उसे बुलाया और सेठजी का लिखा हुआ वसीयतनाम निकालकर उसके सामने रखते हुए कहा, भैया रूप किशोर अब तुम बड़े हो गये हो, यह तमाम सम्पत्ति तुम्हारी ही है, इसे अपने हाथों में सम्हाल कर इसका संचालन और सदुपयोग स्वयं करो । तुम पुत्र ही नही, बल्कि स्वामी भी हो । इस वसीयतनामें को पढ़ने से तुम्हें सब कुछ पता चल जायेगा । रूपकिशोर ने उस वसीयतनामें को बड़े ध्यान से पढ़ा और तुरन्त ही धर्मदास के पावों से चिपट गया और रोते हुए कहने लगा कि पिता जी, आग लगा दो इस वसीतनामें को । मै तो किसी प्रकार भी आपका साथ छोड़ने को तैय्यार नहीं हूँ । मुझे न दौलत चाहिये और न अपना नाम चाहिये, मुझे तो आपके दुलार और लालन-पालन में जो आनन्द अनुभव होता है, वह स्वर्गीय आनंद है । आपसे

अलग रहकर यदि मुझे शाहंशाह भी बनना पड़े तो वह मुझे नरक के समान है । इतने पर भी यदि आप मुझको अलग करना चाहते है तो पिता जी मेरी गरदन घोट दीजिये या मुझे जहर पिला दीजिये तब आप खुशी से मुझसे अलग हो सकते है । धर्मदास ने जिस समय रूपकिशोर की इस प्रकार से प्रेम और आत्मीयता से भरी हुई बातें सुनी तो उसका जी भर आया, नेत्रों से आँसू आ गये । और उन्होंने रूपकिशोर को दोनों हाथों से उठाकर छाती से लगा लिया । धर्मदास और रूपकिशोर के बीच जो वसीयतानामा था, जिसकी वजह से धर्मदास उसके अनुसार कार्य पूरा कर देने से ही मृतक सेठजी के प्रति अपने कर्तव्य का पूरा पालन समझता था उस वसीयतनामे को रूपकिशोर ने तुरन्त फाड़कर फेंक दिया । और कहने लगा पिता जी, इस जरा से कागज के टुकड़े ने हमारे और आपके बीच में बहनेवाली आनन्दरूपी गंगा की धारा को, स्वार्थरूपी गन्दे नाले में बहा देने की कोशिश की थी । इसीलिये मैंने इसका नामोनिशान सदा के लिये समाप्त ही कर दिया । रूपकिशोर की इस मार्मिक बातों मे विनोद छिपा हुआ था । इसलिये धर्मदास का सारा परिवार एकदम खिलखिला कर हँस पड़ा, और उस दिन से उनके घर में सुख, शान्ति और आनन्द की नदी उमड़ पड़ी । और इस परिवार के पुराने नौकर-चाकर, अड़ोसी-पड़ोसियों ने जब रूपकिशोर द्वारा, उस वसीयतनामें को फाड़ डालने की बात सुनी तो, उन्हं बड़ा ही आश्चर्य होने लगा । उन्होंने रूपकिशोर और धर्मदास के आपसी प्रेम-सम्बन्ध की हृदय से सराहना की ।

एक सौदे के अनेकों मूल्य

एक निर्जन जंगज में एक उच्च कोटि का ज्ञानी महात्मा रहता था। वह प्राय: बस्ती के लोगों से अलग ही रहा करता था। एक व्यक्ति ने उस महात्मा की विशेष प्रशंसा सुनी थी इसलिये वह महात्मा का पता लगाता हुआ उनके स्थान में पहुँच गया और दंडवत प्रणाम करके चुपचाप बैठ गया। कुछ देर बाद महात्मा जी ने अपने भजन से निवृत्त होकर उस व्यक्ति से उसक आने का कारण पूछा। तो उसने हाथ जोड़कर बड़ी विनय के साथ कहा कि बाबा मै आपसे गुरु मन्त्र लेना चाहता हूँ जिससे कि आप जैसे महात्मा का सहारा पाकर मै भी अपने जीवन का उद्धार कर सकूँगा। महात्मा जी ने कहा कि कुछ समय अभी और ठहरो तब तुमको गुरुमन्त्र दिया जायगा। वह आदमी लाचार होकर चला गया, और कुछ समय के बाद फिर महात्मा जी के पास आया, किन्तु फिर भी महात्माजी ने उसे यही कहकर टाल दिया कि अभी और ठहरो। इस प्रकार चक्कर लगाते हुए उस व्यक्ति को करीबन दो वर्ष व्यतीत हो गये। तब एक दिन उसने हाथ जोड़कर बड़ी दीनता के साथ कहा कि, बाबा मुझको बहुत समय आपके पास लक्कर लगाते हुए हो गया है, इसलिये अब तो कृपा करके मुझे गुरुमन्त्र दे दीजिये। तब महात्माजी ने कहा कि अच्छा बेटा, कल तुम स्नान करके एवं कोरे कपड़े पहिन करके,मेरे पास आना अत: वह महात्मा जी के पास कुछ ताजे फल लेकर पहँच गया और महात्माजी के सन्मुख फलों को रखकर दंडवत करके बैठ गया। महात्मा जी ने जब उसकी जिज्ञासा को खूब परिपक्व

अवस्था में देख लिया और मन में भी यह सोच लिया कि इसको लगभग दो वर्षा हमें यहाँ चक्कर लगाते हुए हो गये है अब इस को अधिक घुमाना ठीक नहीं होगा। महात्मा उस व्यक्ति को अपने ठाकुर-सेवा के सम्मुख ले गया, और वहाँ जाकर उसने उस व्यक्ति के कान में सिर्फ राम-राम कह दिया। महात्मा जी के मुखारविन्द से इस शब्द को सुनकर उस व्यक्ति को बड़ा ताज्जुब हुआ और कुछ संकोच के साथ कहने लगा कि बाबा यदि आप बुरा न माने तो मै कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। बाबा ने कहा कि बेटा तुम जो कुछ कहना चाहते हो उसे बेधडत्रक नि:संकोच भाव से कह सकते हो। तब वह व्यक्ति बोला कि गुरुदेव, जो मन्त्र आपने मुझे प्रदान किया है, उसे केवल मै ही नहीं जानता हूँ, बल्कि सारी दुनियाँ जानती है, फिर आपने इस जरासी बात के लिये इतने दिन तक मुझसे चक्कर क्यों लगवाये, इस बात का स्पष्टीकरण करके मुझे समझा दीजिये तो मेरे हृदय को संतोष हो जायेगा। तब महात्माजी ने कहा कि बेटा, तुमने अपनी समझ से प्रश्न ठीक ही किया है, किन्तु तुम्हारी बात का उत्तर मै तब दूँगा जब कि तुम मेरा एक काम करके आओगे। गुरूजी के इस वाक्य को सुनकर वह व्यक्ति बड़ी प्रसन्नता के साथ बोला कि अच्छा गुरुदेव, कहिए मै पहिले आपका ही काम करता हूँ, तब बाद में आप मेरी बात का उत्तर दीजिये। गुरुदेव ने तुरन्त उठकर अपनी झोपड़ी से एक पोटली लाकर खोली और उसमें से एक वस्तु निकालकर उस व्यक्ति को देते हुए कहा कि देखो बेटा, तुम इसको किसी साग बेचने वाले के पास ले जाओ और उससे यह कहना कि इसके बदले में तुम कितना बथुआ दोगे। वह जितना भी कहे उससे चौगुना माँगना और पहिले की भाँति ही इसे लौटा कर अवश्य लेते आना। वह व्यक्ति बाजार में एक बड़े पंसारी के यहाँ

गया और उस वस्तु को दिखाते हुए बोला कि तुम इसके बदले में कितना मेवा दे सकोगे। पंसारी ने उसे देखकर कहा कि हम इसके बदले में पाँच सेर मेवा दे सकते है। उस व्यक्ति ने वह वस्तु वापस लेते हुए कहा कि हमको बीच सेर मेवे की आवश्यकता है। इस पर पंसारी ने साफ मना कर दिया। तब वह व्यक्ति पुन: गुरूजी के पास आया और तमाम बातें बता दीं। तब फिर गुरूजी ने कहा कि बेटा तुम किसी सर्राफ के यहाँ इसे ले जाओ और पूर्व की भाँति ही इसके बदले में चौगुना माँग कर लौट आना। वह व्यक्ति एक बहुत बड़े सरार्फ की दुकान पर गया और उस वस्तु को दिखाते हुए कहा कि तुम इसके बदले में कितना सोना दे सकते हो। सरार्फ ने उसे भली भाँति देखकर कहा कि भाई हम इसके बदले में दस तोला सोना तुमको दे सकते है। अत: इस व्यक्ति ने उसे वापस लेते हुए कहा कि भाई इमको तो चालीस तोलासोना चाहिये। सर्राफ ने साफ मना कर दिया। यह व्यक्ति पूर्व की तरह ही उसे लेकर गुरू जी के पास पहुँच गया और कहा कि सर्राफ दस तोला सोना देना चाहता है। गुरूजी ने कहा कि अच्छा बेटा अब तुम इस चीज को एक जौहरी के पास ले जाओ। वह तुरन्त ही उसे जोहरी के पास ले गया और कहा कि बताइये आप इसके बदले में कितना रुपया दे सकते है। जौहरी साहब ने उसे बड़े गौर से देखा और कहा कि भाई इसके बदले में एक लाख रुपया दे सकते है। तब उस व्यक्ति ने उसने उसे वापस लेते हुए कहा कि हमको चार लाख रुपये की जरूरत है। जौहरी कुछ सोच में पड़ गया; किन्तु यह व्यक्नि उसे तुरन्त वापस लेकर गुरूजी के पास पहुँच गया और कहा कि बाबा जौहरी इसका एक लाख रुपया देने को तैयार है। तब महात्माजी ने कहा कि अच्छा बेटा, बस अब तुमको सिर्फ एक ही जगह और जाना

है, इसलिये अब अच्छे अच्छे कपड़े पहिन कर बादशाह के दरबार में चले जाओ और उससे यह कहना कि हमारे गुरूजी ने यह पुछवाया है कि आप इस वस्तु के बदले में कितनी कीमत दे सकते है, यह पूछकर तुम इसे वापस लेकर चले आना । वह व्यक्ति अच्छे-अच्छे कपड़े पहिन कर बादशाह के दरबार मे गया और बड़े अदब से सिर झुकाकर इसने नमस्कार किया और कहा कि हमारे गुरूजी ने यह पुछवाया है कि आप इस चीज के बदले में हमको कितनी कीमत दे सकते है । बादशाह सलामत ने अपने हाथों में रखकर उस वस्तु को बड़े गौर से देखा और दंग रह गया । तब बादश।ह ने उत्तर देते हुए कहा कि भाई तुम अपने गुरुजी से जाकर यह कहना कि आपको जितनी भी दौलत चाहिये मै अपने राज्य की पूरी हैसियत के अनुसार उसे दे सकता हूँ, किन्तु इस चीज की असली कीमत तो मेरा समस्त राज्य चले जाने पर भी पूरी नहीं हो सकती है । इसलिये आप अपने गुरूजी से जाकर सिर्फ यह पूछो कि आपको कितनी दौलत की जरूरत है । वह व्यक्ति उस वस्तु को वापस लेकर गुरुजी के पास आया और उन्हे बादशाह सलामत का सारा वृत्तान्त कह सुनाया । तब गुरूजी ने कहा अच्छा बेटा, अब तुम शान्ति से बैठ जाओ और यह बताओ कि तुमने इन तमाम चक्करों में दौड़ने से क्या नतीजा निकाला । गुरूजी की इस बात को सुनकर वह कहने लगा कि, बाबा मै तो बड़ा हैरान हूँ क्योंकि जिस वस्तु के बदले में सिर्फ दो सेर बथुआ मिल रहा था । एवं पाँच सेर मेवा मिल रहा था, अथवा दस तोले सोना मिल रहा था या एक लाख रुपया मिल रहा था, आज उसी वस्तु के बदले में, बादशाह अपना समस्त राज्य दे देने पर भी, इसकी कीमत पूरी नही कर सकता है । यह मेरे लिये तो महान आश्चर्य का विषय बन गया है, यह मेरी बुद्धि और विवेक की शक्ति से भी परे का

खेल है । इसलिये गुरुदेव आपही कृपा करके अब इस गूढ़ रहस्य पर प्रकाश डालिये, तभी मेरी आत्मा को शान्ति मिल सकेगी । तब गुरुजी ने कहा कि देखो, बेटा, यह प्राचीन मणी है, आजकल संसार में यह वस्तु सर्वथा अप्राप्त है । किन्तु फर्क इस बात का है कि जिसकी जैसी नजर और परख है वह उस चीज की उतनी ही कीमत लगा पाता है । अर्थात् माली ने, पंसारी ने, सर्राफ ने और जौहरी ने, एक से एक बढ़कर कीमत लगाई, यानी जैसी जिसकी बुद्धि और हैसियत थी उसी के अनुसार सभी ने इसकी कीमत की नापतोल की, किन्तु इसकी असली कीमत को केवल बादशाह ही समझ सका था; क्योंकि इसके बदले में सारा राज्य दे देने पर भी वह इसकी कीमत को पूरी नहीं मानता था । अस्तु इसी प्रकार से बेटा, राम का नाम है जिसे सारी दुनियाँ जानती है, परन्तु इस नाम की महिमा को भी, जिसकी जितनी बुद्धि है उसी के अनुसार इसकी वास्तविकता को समझ पाते है । अस्तु जिस प्रकार से रामनाम की महिमा को, सबसे ऊँचे रूप में, गणेश जी ने समझा था कि समस्त विश्व इस नाम के अन्दर समाया हुआ है, इसीलिये गणेश जी की पूजा समस्त देवों में सर्व प्रथम होती है और दूसरे नम्बर पर इस नाम की महिमा को भगवान शंकर ने मुख्य रूप से समझा था । इसीलिये वह महादेव कहलाते है और भगवान विष्णु को सबसे अधिक प्रिय है । तीसरे नम्बर पर इस रामनाम की महिमा को बाल्मीकि ऋषि ने समझा था कि वह एक पतित जाति के व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने ब्रह्म के समान पद प्राप्त किया था । तदनतर इस रामनाम को श्री हनुमान जी समझ पाये थे कि जिन्होंने अपना हृदय चीर करके भी अन्दर राम नाम दिखा दिया था । इसके अतरिक्त बालक ध्रुव ने इस रामनाम को समझा था जिसकी बदौलत सदैव काल के लिये स्वर्ग लोक में इनका

सिंहासन अटल हो गया और समस्त देवगण एवं तारागण इनकी नित्य प्रति परिक्रमा लगाया करते है । और एक बालक प्रहलाद ने इस रामनाम की महिमा को समझा था, जिसके कारण भगवान विष्णु को अप्राकृतिक रूप मे नरसिंह होकर, पत्थर के खम्भे में से निकलकर दर्शन देना पड़ा था । इसके अनन्तर सैकड़ों, हजारों और भी ऐसे भक्त हुए है जिन्होंने इस नाम के प्रताप से, संसार के अन्दर अनेकों आश्चर्यजनक कार्य किये है, उन तमाम भक्तों की गाथाओं को मै कहाँ तक तुमको समझााऊँगा । इसलिये बेटा, तुम्हारे कथन के अनुसार यह तो सत्य है कि इस रामनाम को सभी जानते है, किन्तु यह सत्य नहीं है कि इस रामनाम की महिमा को सभी जानते हो, सारांश यह है, कि संसार में जिस जिस वस्तु का, जो कोई, जितना गहरा पारखी होता है उस व्यक्ति को उतना ही गहरा उसका फल प्राप्त होता है । अतएव अब तुम अपने हृदय में इस रामनाम के मन्त्र को, सबसे बड़ा एवं सबसे अधिक शक्ति शाली समझकर ही इसका नित्य प्रति अधिक से अधिक मात्रा में जप और अहर्निश हृदय में मनन करना प्रारम्भ कर दो, तो कुछ समय के बाद, तुम्ही इसका मूल्य समझने लग जाओगे । अस्तु महात्माजी की वाणी उस व्यक्ति के हृदय में पार हो गयी तथा नाम पर अटूट श्रद्धा हो गई और वह तुरन्त ही हाथ जोड़कर दंड़वत् करते हुए बोला जय गुरुदेव की । इतना कहकर वह व्यक्ति बड़े आनन्द के साथ अपने स्थान को चल दिया ।

चरित्रवान की भारी उन्नति

एक राजा की घुड़साल में अनेकों प्रकार के हजारो घोड़े रहा करते थे । उन घोड़ों के खाने-पीने का, दाने रातब का तथा घास का प्रबन्ध अलग-अलग लोगों को बँटा हुआ था, अर्थात दसघोड़ों के ऊपर एक आदमी का प्रबन्ध रहता था । अतः घुड़साल के प्रायः सभी आदमी घोड़ों के खाने के सामान की चोरी किया करते थे । घोड़ों को आधा सामान खाने को मिलता था और आधे सामान का रुपया लोगों की जेबों में पहुँच जाया करता था । इसलिये राजा के सभी घोड़े बड़े दुर्बल और दुखी रहा करते थे । सिर्फ एक आदमी के पास, जो जाति का घसियारा था, दस घोड़ों के खाने का प्रबन्ध ा था, पर वह घोड़ों के खाने के सामान में से एक पैसे की भी चोरी नही करता था, बल्कि जंगल की जो हरी घास काटकर लाता था, उसे भी वह नदी में खूब धोने के बाद ही घोड़ों को खिलाया करता था, और जो कुछ रातब दाना खिलाता था उसे भी बहुत साफ करके खिलाया करता था । वह घोड़ों की मालिश भी करता रहता था, इसलिये उन हजारों घोड़ों में से केवल इसी के दस घोड़े ताजे, तन्दरुस्त और चमकीले रहा करते थे ।

एकदिन राजा अपने घोड़ों का निरीक्षण करने के दृष्टिकोण से, अपनी घुड़साल में गया और वहाँ जाकर उसने अपने सभी घोड़ों को दुखी और लेटा हुआ देखा, किन्तु केवल इसी घसियारे के दस घोड़ों को ताजा और तन्दुरुस्त पाया । राजा को बड़ा आश्चर्य होने लगा कि मेरे तमाम घोड़े इतने भारी लेट गये है कि जो चलने और दौड़ने में कतई काम नहीं दे सकते । सिर्फ उनमें

से दस घोड़े ही हर प्रकार से सुन्दर प्रतीत हो रहे है। राजा ने उन सभी आदमियों से पूछताछ की, जोकि घोड़ों के खान पान पर नियुक्त थे, तो उनलोगों ने अनेकों प्रकार के बहाने बता दिये और सब लोगों ने एक मुँह होकर राजा को बेवकूफ बना दिया। तब राजा ने लाचार होकर उस घसियारे को एकान्त में बुलाया और कहा कि भाई तुम हमको सच-सच बतलाओ कि इन तमाम घोड़ों के अन्दर केवल तुम्हारे ही दस घोड़ें स्वस्थ और सुन्दर कैसे है और बाकी के सभी घोड़ें इतने भारी थके हए क्यों है तब घसियारे ने उत्तर देते हुए कहा कि अन्नदाता सच बात तो यह है कि मै अपने इन दसों घोड़ों को खूब पेट भर कर दाना-रातब और धुली हुई हरी घास खिलाता हूँ। इन घोड़ों के सामान में से एक पैसा भी बचाकर कतई नही खाता तथा इन घोड़ों की खूब मालिश भी करता हूँ। इसीलिये ये दस घोड़ खूब बहल हो रहे है, और दूसरे सभी आदमी इन घोड़ों को भूखे मारते है। वे इनको आधा सामान खिलाते है और आधे सामान का रुपया खा जाते है। घास भी बगैर धुली हुई खिलाते हैं। इसीलिये ये सब घोड़े लटे हुए दुर्बल हो रहे हैं। घसियारे की इस सच्ची बात को सुनकर राजा को पूरा यकीन हो गया, और उसने उसी वख्त अपनी तमाम घुड़साला का पूरा इन्तजाम इसी घासियारे को देकर इसकी तनखा बढ़ा दी और दारोगा-घुड़साल बना दिया। अंत मे राजा साहब वहाँ से चले गये।

दूसरे दिन से, इस घसियारे ने तमाम घास वालों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा कि देखो तुम सब लोग जंगल की हरी घास नदी में धोकर लाया करो। अगर किसी भी दिन, किसी की घास मैंने खराब देख ली तो उसे जेलखाने में बन्द करवा दूँगा और घोड़ों के कर्मचारियों को बुलाकर कहा कि देखो हम तुम

लोगों को जितना भी दाना रातब, घास बगैरह, प्रति एक घोड़े के लिये देंगे, वह सबका सब तुम ठीक तरीके से सब घोड़ों को खिलाते रहना। अगर मैंने किसी भी व्यक्ति को, कुछ गड़बड़ करते हुए देख लिया तो, उसको तुरन्त ही जेल खाने की हवा खानी पड़ेगी। इतना हुकुम सबको सुना देने के बाद उस घसियारे दारोगा साहब ने, घोड़ों के लिये तमाम दाना रातब अपनी निगरानी में ही घोड़ों के भंडार घर से दिलवाना शुरू कर दिया और फिर बाद में रातदिन घुड़साल के अन्दर चक्कर लगा-लगा कर यह जाँच चालू कर दी कि कोई भी आदमी, इस सामान में से कुछ इधर-उधर तो नहीं कर रहा है। इसकी कठिन मेहनत और दौड़ धूप का परिणाम यह निकला कि, घोड़ों के साथ काम करने वाले जितने आदमी थे वे सब के सब डर गये और ईमानदारी तथा मेहनत के साथ सभी लोगों ने अपना-अपना काम करना शुरू कर दिया। इसलिये सभी घोड़ों को पेटभर कर दानारातब और सुन्दर घास पर्याप्त मात्रा में खूब मिलने लगी और सभी घोड़ों की खुजाई तथा मालिश का काम भी खूब अच्छे ढ़ग से होने लगा। इसका परिणाम यह निकला कि छः महीने के अन्दर राजा के सभी घोड़े खूब तन्दुरुस्त और ताकतवर बन गये।

कुछ महीनों के बाद एकदिन राजा साहब फिर अपनी घुड़साल में घोड़ो का निरीक्षण करने के लिए आये तो, उन्होंने घोड़ों की चढ़ती हुई तन्दुरुस्ती और हिनहिनाहट को बड़े प्रेम से देखा-सुना और दारोगा घुड़साल को बुलाकर कहा कि भाई वाकई में तुम बड़े ईमानदार और मेहनती हो हम तुमसे बहुत ज्यादा खुश है, तुमने तो घोड़ों की जिन्दगी को ही बदल कर नया बना दिया है अस्तु आज से मै तुमको अपने मोदी खाने का भी इन्तजाम दिये देता हूँ और तुमको पाँच सौ रुपया माहवार का वेतन मिला करेगा। इतना

कहकर राजा साहब वहाँ से चले गये ।

दारोगा घुड़साल ने राजा के मोदी खाने का भी इन्तजाम इतने उत्तम ढंग से किया कि जिसकी वजह से राज परिवार को शुद्ध से शुद्ध घी, दूध, आटा, चावल आदि मिलने लगा और कुछ ही दिनों में, राज परिवार के लोगों की भी तन्दुरुस्ती अच्छी बनने लगी और भोजन में भी अधिक स्वाद आने लगा । इसलिये राजा ने इस व्यक्ति के कार्य पर बड़ा संतोष प्रकट किया । इस प्रकार जब कुछ वर्ष और बीत गये तो उस राजा का पुराना बूढ़ा मन्त्री देवलोक को पधार गया । राजा ने तुरन्त ही उसकी जगह पर इस पुराने घसियारे को राजमन्त्री बना दिया और इसके किये हुये कार्यों को देखकर राजा अपने मन में इसकी बुद्धि और ईमानदारी की बड़ी सराहना करने लगे । क्योंकि इसको जो जो कार्य राजा देता गया उन सभी को इसने बड़ी योग्यता और सत्यता के साथ पूरा किया था । अन्त में इस ईमानदार घसियारे की उन्नति पराकाष्ठा पर पहुँच गई और समस्त प्रजा बड़ी निष्ठा और श्रद्धा उत्पन्न हो गई । इससे केवल इसका ही जीवन सुखी नहीं हुआ बल्कि इस की वजह से लाखों आदमियों का और हजारों घोड़ो का जीवन सुखी हो गया!

लाख रुपये का एक ताबीज

एक प्रभावशाली राजा अपने राज्य में बड़े आनंद के साथ समय बिता रहा था। इसके राज्य में, प्रजा भी सब प्रकार से आनन्दित थी। एक दिन इस राजा की सभा में कहीं से एक फकीर आया और कहने लगा कि मैंने बड़ी मेहनत से एक ताबीज तैयार किया है कि जब मनुष्य पर सबसे बड़ी मुसीबत आ जाये और जब कही से भी किसी भी प्रकार का कोई सहारा न मिल सके, तो उस समय यह ताबीज खोलकर देखने से फौरन सहारा मिलता है। यह सुनकर राजा ने फकीर से कहा कि बाबा इस ताबीज की कीमत कितनी है? फकीर ने कहा राजन् इसकी कीमत सिर्फ एक लाख रुपया है। राजा ने तुरन्त फकीर को एक लाख रुपया देकर उस ताबीज को ले लिया, और फकीर के बतलाये हुए, तरीके से, राजा ने उस ताबीज को अपनी दाहिनी भुजा पर बाँध लिया कुछ दिन बाद ही एक बड़े राजा ने इस राजा के ऊपर बड़ी भारी सेना लेकर चढ़ाई कर दी, और यह राजा लड़ाई में हार गया। वह बड़ा राजा उसे कैद करके अपने राज्य में ले गया और नजर बंद करके बन्दीगृह में इसे रखवा दिया और इसके राज्य पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। जाते समय इसके कुछ सिपाहियों को भी वह अपने राज्य में ले गया था। इस घटना के कुछ समय बाद, एक दिन उस राजा को नजरकैद में पड़े-पड़े यह ख्याल हो गया कि आज हमारा जन्मदिन है। जब हम अपने राज्य में थे तो आज के दिन, बड़े-बड़े नौबत, नगाड़े बजते थे, भारी तादाद में

रोशनियाँ होती थी, नाच-गाने, राग-रंग चलते थे, बड़ी बड़ी दावतें मित्र-मंडलियों को दी जाती थी, बड़े-बड़े दान-धर्म की वस्तुएँ गरीबों को मुफ्त बाँटी जाती थीं। राजा के दिल में यह वेदना पैदा हो गई कि आज के दिन जहाँ इतनी भारी खुशियाँ मनाई जाती थीं, वहाँ आज मैं कैदखाने में पड़े अपने समय को बिता रहा हूँ। ऐसा ख्याल पैदा होते ही राजा के नेत्रों में जल भर आया और राजा चिन्ता-मग्न हो गये।

दैव-संयोग से राजा के पहरे पर उस दिन, इसी राजा का एक पुराना नौकर पहरा दे रहा था। जब उस पुराने नौकर ने एकाएक अपने पुराने मालिक को रोते देखा, तो उसने अपने मन में यह अनुमान किया कि आज हमारे राजा साहब के हृदय पर कोई भारी वेदना हो रही है अन्यथा आज तक हमने इनको कभी रोते हुए नहीं देखा था। इसलिए इस नमक हलाल पुराने सिपाही के दिल में बड़ा भारी दुःख उत्पन्न हो गया, और उसने हाथ जोड़कर धीरे से कहा कि मेरे पुराने मालिक, आज आप किस कारण से दुखी है। आप मुझे बतलाने की कृपा करिये, और मेरे लायक कुछ काम हो तो मैं भरसक अवश्य आपकी सेवा करूँगा। राजा ने अचानक अपने उस पुराने सिपाही की तरफ देखा और अपने आँसुओं को जल्दी से पोछते हुए कहा कि कुछ नहीं भैया। मगर उस सिपाही ने पुनः दुबारा बड़े आग्रह और विनय के साथ कहा कि महाराज, मेरे ऊपर दया कर आप अपने दुःख को अवश्य बतलाने की कृपा करिये। तब राजा ने सिपाहियों से कहा–भाई, आज मेरी जन्मतिथि है, आज के दिन हमारे राज्य में, कितनी खुशियाँ मनाई जाती थी, यह तुम अच्छी तरह से जानते हो, और आज हम बजाय खुशियाँ मनाने के जेल की चार दीवारों के अन्दर नजरकैद पड़े हैं। सिपाही ने जरासी देर में राजा का सब

कुछ मतलब समझ लिया और हाथ जोड़कर बड़ी खुशामद के साथ कहा कि, अन्नदाताजी, इस मामले मे मै आपकी अधिक मदद तो नही कर सकता, लेकिन आपको गरम जल तैयार करके देता हूँ। आपने बहुत दिनों से स्नान नही किया है। आप स्नान अवश्य कर लीजियेगा। और मै अपनी तनख्वाह के पैसे से आपको मिठाई लाये देता हूँ उसी का प्रसाद पा लीजियेगा। आपके कपड़ों को धोकर ठीक कर देता हूँ, उन्हें पहिन लीजिये। सिपाही की इस स्वामिभक्ति को देखकर राजा का हृदय उसकी तरफ कुछ आकर्षित हुआ। किन्तु दुखी हृदय होने के कारण राजा ने मना कर दिया, परन्तु उस स्वामिभक्त सिपाही के बार-बार आग्रह करने पर राजा ने उसकी बात स्वीकार कर ली। सिपाही ने तुरन्त ही एक बाल्टी गरम जल राजा साहब को स्नान करने को दे दिया और फिर उनके सब कपड़ों को शीघ्र ही साबुन से धोकर सुखा दिया। बाद में उसने एक आदमी को कुछ पैसे देकर सुन्दर-सुन्दर मिठाई लाने को भेज दिया। इधर राजा साहब जब स्नान करने लगे तो शरीर पर हाथ फेरते वख्त, उनका हाथ एकदम उस ताबीज के ऊपर गया, तो उन्हें ख्याल आया कि हमने इस ताबीज को एक लाख रुपया देकर इसलिए खरीदा था कि सबसे बड़ी मुसीबत के वख्त यह ताबीज फौरन सहारा देगा। राजा साहब ने तुरन्त ही अपने हाथों में से वह ताबीज निकालाा और फिर ताबीज के मुँह को खोलकर देखा तो उसके अन्दर एक कागज लिखा हुआ निकला। उस कागज पर सिर्फ यह लिखा था कि, वह दिन न रहे तो यह दिन भी नहीं रहेंगे। राजा ने इन शब्दो को बार बार पढ़ा और उसे पूरा यकीन हो गया कि, इस ताबीज मे जो कुछ लिखा है वह बिल्कुल ही सत्य है, ये फकीर के लिखे हुए शब्द है कभी गलत नहीं हो सकते। राजा के हृदय में एक बड़ी खुशी की रेखा

दौड़ गई और उसके मुँह से, स्पष्ट शब्दों में, ये शब्द जोर-जोर से निकलने लग गये कि वह दिन नही रहेंगे । कुछ ही देर में उस पुराने सिपाही ने मिठाई लाकर राजा साहब को दे दी, तो राजा साहब ने तुरन्त ही खुशी के साथ उस मिठाई को खाते हुए उस अपने पुराने सिपाही से कहा कि देखो भय्या अब निश्चय हो गया है कि वह दिन ना रहे तो यह दिन भी नहीं रहेगें । अपने पुरानें मालिक के मुँह से इन शब्दों को सुन कर, उस स्वामिभक्त नौकर ने सोचा कि क्या यह सच कह रहे है या इनका दिमाग कुछ खराब हो गया है, कि अब इनके पस ऐसी कोई शक्ति शेष नहीं रह गई है जिसके कारण ये इस कैद के बन्धन से मुक्त होकर, अपने राज्य सिहासन को पुन: प्राप्त कर सकेगे ।

इस सिपाही ने, वर्तमान राजा के डर से भयभीत होकर उनके दरबार में जाकर अपने पुराने राजा की यह बात कह दी कि महाराज आप स्वयं जेलखाने पर चलकर यह देखें कि उनके दिमाग को क्या हो गया है । सिपाही की बात को सुनकर उस राजा को भी आश्चर्य होने लगा कि इतने दिनों बाद यह राजा सभी प्रकार से शक्तिहीन होने पर भी, ऐसी जोशीली बातें किस आधार पर कहने लगा है । अत: वह तुरन्त ही जेलखाने पर आया और जैसे ही उसने, उस पुराने राजा से कुछ पूछना चाहा वैसे ही वह स्वयं बोल उठा कि अरे राजा हमारे वह दिन नहीं रहे, तो ये दिन भी नही रहेंगे । वर्तमान राजा ने गम्भीरता पूर्वक उस पुराने राजा से पूछा कि आप ये शब्द किस कारण से बोल रहे है । तब उस राजा ने उस ताबीज को दिखाते हुए कहा कि मैंने अपने खुशहाली के समय इस ताबीज को एक लाख रुपया देकर एक फकीर से इस शर्त पर खरीदा था, फकीर ने कहा था कि जब मुसीबत के वक्त में कोई भी सहारा न रहे तब यह ताबीज तुम्हारी

मदद करेगा। आज अचानक मै इस ताबीज को खोज बैठा तो इसमें यही लिखा हुआ है कि वह दिन नहीं रहे तो यह दिन भी नहीं रहेगें। वर्तमान राजा ने अपने हाथ में उस ताबीज के कागज का लेकर स्वयं पढ़ा तो उसमें उपरोक्त शब्द साफ हरफों मे लिखे हुए थे। इन शब्दों को पढ़ते ही उसके दिल में यह ख्याल पैदा हो गया कि यह सम्भव हो सकता है कि जिस प्रकार मैंने इसको, इसकी राजधानी को छीन लिया है और इस कैद में डाल दिया है, ठीक उसी प्रकार यदि कोई मुझसे भी प्रबल राजा मेरे ऊपर चढ़ाई कर दे तो वह मेरे राज्य को छीनकर मुझे भी बन्दीगृह में डाल सकता है, और इस राजा को मुक्त भी कर सकता है; क्योंकि प्रकृति का सदैव से यही नियम चलता आरहा है कि समय सदा किसी का एक सा नहीं रहता।

भगवान की माया से जरासी देर में कुछ से कुछ परिवर्तन हो सकता है, इसलिये मुझको इस राजा को राज्य सहित मुक्त कर देना ही उचित होगा। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यही उचित होता है कि अपने से निर्बल पर सदैव दया करना अन्यथा हम यदि निर्बल को सतायेंगे तो हमको भी कोई जबरदस्त सतायेगा। ऐसा सोच उस राजा ने, उसी समय अपने राज्यमन्त्री को बुलाकर आज्ञा दे दी कि इस राजा को स्नान आदि करवा कर एवं राजसी कपड़े पहनाकर, इनको राज्य सहित अभी स्वतन्त्र कर दो।

राजा के आदेशानुसार उनको स्नान इत्यादि करवाकर सुन्दर राजसी कपड़े पहनाये और हाथी पर बैठाकर इनकी सवारी इनके राज्य को रवाना करवा दी और मन्त्री ने स्वयं सभा में जाकर वहाँ का सम्पूर्ण राज्य-अधिकार इस पुराने राजा को सुपुर्द कर दिया और फिर वापस आकर अपने महाराज को सब हाल बता दिया। उधर उस पुराने राजा ने सबसे पहिले उस पुराने नौकर को, जिसने

इन्हें स्नान कराकर मिठाई खिलाई थी, अपने राज्य भंडार और राज्यपरिवार के समस्त कार्यों का प्रधान अधिकारी बना दिया, और फिर अपने राज्य में बड़ी धूम-धाम के साथ खुशियाँ मनायी और गरीब, साधू तथा फकीरों को खूब धन लुटाया गया, और फकीर के दिये हुये उस ताबीज को बड़ी इज्जत के साथ, कीमती डिब्बी में बन्द करके अपने खजाने के अन्दर बड़े ही सुरक्षित रूप से रखवा दिया। और हमेशा अपने जन्मदिन के दिन ताबीज का सर्वप्रथम पूजन करने के बाद, अन्य प्रकार की दूसरी खुशियाँ मनाई जाती थी। और उस दिन साधू-फकीरों को उत्तम पेटभर भोजन और खैरात दी जाती थी, तथा गरीबों की परवरिश तो हमेशा ही की जाती थी।

चमार का घर बैठे तीर्थ

एक छोटे से गाँव में रामू चमार रहता था। उसे अपनी स्त्री के सहित एक जाने हुए प्रसिद्ध तीर्थ करने की बड़ी लालसा लगी हुई थी, किन्तु गरीबी और द्रव्य का अभाव होने के कारण उसने अपनी स्त्री की सलाह से अपने घर में पैसा जाड़ने के लिये एक गुल्लक बनाई और नित्य प्रति अपनी कमाई में से कुछ न कुछ बचाकर वह उस गुल्लक में डाल दिया करता था। उसने यह निश्चय कर लिया कि जब कभी गुल्लक पूरी भर जायेगी तभी हमलोग तीर्थ करने चले जायेंगे, इस प्रकार रामू को पैसा डालते बहुत समय निकल गया था किन्तु गुल्लक पूरी भर नहीं पायी। इस बीच रामू की स्त्री गर्भवती हो गयी। एक दिन पड़ोसी ब्राह्मण के घर से मेथी का साग छौकने की गंध आ रही थी, उसका भी

मन मेथी का साग खाने का ललचा उठा और उसने अपने पति से कहा कि पड़ोसी के घर में मेथी को साग बन रहा है, उनसे थोड़ा-सा साग माँगकर ला दो तो अच्छा रहेगा। मेरा मन खाने को कर रहा है। रामू ने स्त्री की बात मान ली और वह पड़ोसी ब्राह्मण के घर में पहुँचकर कहने लगा कि महाराज आपके यहाँ मेथी का साग बना है यदि कृपा करके थोड़ा-सा मुझे दे दें तो अच्छा होगा। ब्राह्मण ने रामू से कहा भैय्या साग तो मेरे यहाँ जरूर बना है किन्तु मेरी बात को पहिले सुन लो फिर चाहे जितना साग ले लो। रामू तुरन्त ब्राह्मण की बात सुनने को बैठ गया। तब ब्राह्मण बोला कि देख रामू हमने अपने परिवार के सहित चार दिन से अन्न का एक दाना तक नही खाया है; क्योंकि घर में अन्न नही था और पास में एक पैसा भी नहीं था। इसी चिन्ता में मै आज बाजार में घूम रहा था कि सामने एक एक मुर्दे का विमान आता दिखाई दिया। मुर्दा जब चौराहे के पास आ गया तब उन लोगों ने हरी मेंथी उस मुर्दे के ऊपर से उतार कर बाजार में फेंक दी, तो मै तुरन्त उस मेथी को समेट कर घर पर ले आया और उसी का साग बना है। अब अगर तू चाहे तो इसमे से साग ले जा ब्राह्मण की इस बात को सुनकर रामू का जी एकदम भर आया और वह तुरन्त वहाँ से उठकर अपने घर में आया और उसने अपनी पैसा जोड़ने वाली गुल्लक को शीघ्र ही उखाड़ कर ब्राह्मण के घर पर ले आया ओर गुल्लक के सारे पैसे ब्राह्मण के सामने डाल दिये, और हाथ जोड़कर बोला कि महाराज, यह सब पैसे मैंने तीर्थ करने के लिए जोड़े थे किन्तु आपकी इस स्थिति को देखकर मेरी आत्मा पुकार उठी कि अरे रामू इससे बढ़कर और कौन-सा बड़ा तीर्थ हो सकता है, जिसके द्वारा एक पूरे परिवार का आत्म-पोषण हो सकेगा। आज मुझे इस कार्य के करने से बड़ी प्रसन्नता हुई है यह

कहकर रामू उन्हें दण्डवत करके अपने घर चला आया और उसने सारा किस्सा अपनी स्त्री को समझा दिया । रामू की स्त्री भी बड़ी प्रसन्न हुई और बोली कि आपने यह कार्य बड़ा सुन्दर किया । अस्तु आज रामू बड़ी प्रसन्नता के साथ इस प्रकरण की बातें करते-करते रात को जब सो गया तो उसे रात में यह स्वप्न दिखलाई दिया कि उस बड़े तीर्थराज में, सभी देवताओं की सभा एकत्रित हुई है और देवताओं ने तीर्थराज से यह प्रश्न किया कि महाराज अबकी बार में जितने स्त्री पुरुष आपके तीर्थ में आये है उन सभी लोगों में से आपने किस व्यक्ति का तीर्थ पूर्णरूपेण स्वीकार किया है तब तीर्थराज बोले कि देवताओं, अबकी बार तो मैंने आने वोले सभी स्त्री-पुरुषों के मुकाबले में, एक न जाने वाले रामू चमार का तीर्थ सर्वोत्तम रूप से, उसके घर बैठे ही स्वीकार कर लिया है, क्योंकि उस गरीब ने जो पैसे मेरे तीर्थ में आने के लिये धीरे-धीरे गाड़े थे, वे सभी पैसे उसने एक भूखे ब्राह्मण परिवार को सहर्ष श्रद्धापूर्वक दान कर दिये है । रामू ने यह स्वप्न देखा और सुबह उठकर अपनी स्त्री को स्वप्न का सभी वृतान्त सुना दिया । इस कार्य से दोनों को महान आनन्द हुआ, और फिर भगवान की दया से इनका भाग्य जाग उठा और बड़े आनन्द के साथ अपने-अपने परिवार का पालन-पोषण करने लगे । मन को प्रेम से वश में करें मन को एकाग्रता साधक सबसे पहला सोपान है, कारण मन बड़ा चंचल है उसकी गति वायु से भी तेज होती है जो हजारों मीलों की छलांग लगाता है । इसकी गति नीचे की ओर चलती है छोटे कामों में प्रवृत्ति जल्दी होती है । मन और पानी दोनों ही नीचे चलते है । पानी को उठाने के साधन यन्त्र है तथा मन को विद्वान उठाते है । इसलिये सत्संग करते रहना चाहिये । मन के मारने के लिये बल प्रयोग नहीं करना उसको श्रवण, कीर्तन स्मरण

का अभ्यास कराना चाहिये । बल प्रयोग से मन बिगड़ जाता है । भगवत्दर्शन श्रवण कीर्तन आदि मनोरंजन से उसे बहलाना चाहिए । इस प्रकार के अभ्यास से मन की एकाग्रता आती है । उस परमात्मा की कथा श्रवण तो सभी प्रकार की प्रकृति के पुरुषों को आनन्द देने वाली है । जो जिस रस का आदी है उसे वही रस मिलेगा । उस रस को पान करने-करते मिठास बढ़ने लगेगा । जिससे मदिरा पान करने वाला मदिरा पीना छोड़ देगा । चोरी करने वाला चोरी करना छोड़ देगा । जैसे एक चोर चोरी करने को एक सेठ के घर में घुस गया । सेठजी के घर कथा हो रही थी सभी श्रोता भगवत लीला श्रवण कर रहे व आनन्द विभोर हो रहे थे चोर ने आकर उनके ऊपर के कमरों की तलाशी ली पर वहाँ कुछ नही मिला उसने सोचा कि सेठजी का माल उसी कमरे में है । जहाँ कथा हो रही है अस्तु वह छिपकर बैठ गया कथा सुनने लगा उस समय पण्डित जी कह रहे थे कि यशोदा माता ने अपने नीलमणि श्रृंगार करके उसे गाय चराने को भेजा । मैया ने माथे पर मुकुट कानों में कुण्डल, कण्ठ में हार, हाथों में रत्न जडित कंकडि, पैरों में नूपुर पहनाये थें । इस प्रकार पण्डित जी उनका श्रृंगार वर्णन कर रहे थे । चोर भी सुनकर आश्चर्य में भर गया उसके मुंह में पानी भर आया । अहो ऐसा श्रृंगार और अकेला ही गाय चराने जाता है । यदि यह नीलमणि मुझे मिल जाय तो फिर मुझे चोरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । कथा समाप्त हुई सब श्रोता चल दिये । पण्डित जी भी चल दिये । चोर का विचार बदल गया कि इसके यहाँ क्या रक्खा है अब तो यशोदा के नीलमणि का ही पता लगाना है । यह कह कर वह पण्डित जी के पीछे चल दिया । पण्डित जी अपने गाँव को जा रहे थे रात हो गई थी । उस समय चोर ने आकर उनको घेर लिया । ठहरो पण्डित जी । इतना सुनते

ही और सामने उस भयाभय स्वरूप को देखकर पण्डित जी काँपने लग गये उनकी पूजा की पोटली हाथ से गिर गई चोर बोला पण्डित जी आप डरो मत मुझे आपका कुछ नहीं चाहिये । मै तो केवल यशोदा के नीलमणि का पता पूछने आया हूं । वह गाय चराने कहाँ जाता है । और वह कैसे कीमती गहने पहनता है । पण्डित जी ने दम लिया और वह चोर का सन्मान कर अपने घर ले गये तथा अपनी पोथी खोलकर उसको वही प्रसंग सुनाया जो कथा मे सुना रहे थे । भाई पैरों मे नूपुर पहनते है जिसमें अनेक रत्न जड़ रहे है । कमर मे कंधनी सुवर्ण घूंघुरू से सुशोभित तथा हाथों मे कंकड और बाजूबन्द गले मे अमूलय रत्नों के जड़े हुये हार और मुकुट कुंडल । चोर बोला इनकी कीमत क्या होगी । पण्डित जी ने कहा भाई मै इन रत्नों की कीमत का क्या अन्दाजा लगाऊं यह मेरी शक्ति से बाहर है । चोर–अच्छा तो उसका स्थान बताओं यदि वह मिल गया तो मै तुमको खुश कर दूंगा । पण्डित जी ने कहा–भाई इसमें लिखा है वह यमुना किनारे वृन्दावन मे कदम्बखण्डी में गाय चराता है । चोर–अच्छा नमस्कार । चोर के मन को एकाग्रता कथा से ही बन गई वह लट्ठ लेकर चल दिया । रात का समय था भाग्य से उसे एक नदी दीखने लगी तथा कदम्ब वन दीखने लगा उसने समझ लिया कि यही स्थान है । रात बीतने पर प्रात:काल सूर्य उदय होते ही क्या देखता है । सामने से गाँओं के झुण्ड आ रहे है उनके बीच में वंशी एवं लकुटी लिये वह नीलमणि आ रहा है उसके दिव्य आभूषणों की चमक से चोर की आँखों पर अन्धेरा छा गया । सावधानी से उतर कर आया और भगवान श्री कृष्ण के दर्शन किये । वह तो उनको ओर देखता ही रह गया उसकी बात करने की भी हिम्मत नहीं पड़ी । फिर भी साहस करके बोला अरे नीलमणि यह गहने उतारकर मुझे दे दें । नीलमणि

बोला क्यों दे दे तेरी हिम्मत हो तो उतार ले। चोर को क्रोध तो बड़ा आया कि एक लट्ठ मार कर सब गहने उतार लूं पर उनके सौन्दर्य एवं सौकुमार्य ने उसे परवश कर दिया और उसका हाथ एवं उसकी जबान दोनों ही रुक गई मानो किसी ने बाँध रक्खी है। भगवान भी समझ गये अब यह विवश हो गया है। अपने स्वयं अपने गहने उतारकर उसके सामने रख दिये अच्छा यह ले जा। पर अब भी चोर की हिम्मत नहीं पड़ रही। नीलमणि ने कहा भाई तुम संकोच मत करो मेरे पास तो और भी गहने है कल और लाऊंगा तुम इनको ले लो ऐसा कहकर भगवान अन्तहित हो गये। चोर पोटली बाँधकर चल दिया पण्डित जी के पास आया और बोला पंडित जी वह यशोदा का नीलमणि मिल गया और मै उसके गहने ले आया पंडित जी आश्चर्य में रह गये। और एक-एक आभूषण को उठाकर मस्तक से लगाने लगे। और बोले भाई तुझे नीलमणि कहां मिला गया। मुझे भी दर्शन करा दे। चोर ने कहा वह कल और भी गहने लेकर आयेगा। दूसरे दिन चोर के साथ पंडितजी भी चल दिये। प्रातः सूर्योदय होते ही भगवान श्री कृष्ण गौओं के साथ आ गये, उनको देखकर चोर बोला यह देखो पंडित जी वह आ गया। पर वह पंडित जी को नहीं दीखते चोर को भी आश्चर्य हुआ और नीलमणि से बोला भाई तुम पण्डित जी को क्यों नही दीखते भगवान ने कहा भाई तेरा विश्वास, तेरी लगन, तेरी एकाग्रता तेरी भावना से मै तुझे दीख रहा हूं। पण्डित जी में यह गुण नहीं है। चोर ने कहा नीलमणि मुझे तो पण्डित जी ने ही तुमसे मिलाया है आप इनको दर्शन दीजिये।

भगवान भक्तवांच्छाकलपतरु उसी समय पंडित जी को भी दीखने लगे। दोनों ही उनके चरणों में गिर पड़े।

इस प्रकार की सहज साधना से ही भगवत्कृपा होती है।

अतः मन को श्रवण कीर्तन आदि साधनो से प्रसन्न करो इसी से वह ऊँचा उठेगा । और भगवान की कृपा होगी ।

मन के वश में रहने से विघ्न स्वयं नष्ट हो जाते हैं

राजा जयमल सिंह भगवान की सेवा बड़ी लगन से करते थे । कुछ घड़ी का समय तो उन्होंने भगवत्सेवा में ही लगा दिया था। उस समय और कोई काम नही करते थे एक दिन पूजा में बैठें थे । उस समय शत्रुओं ने यह जानकर कि यह पूजा से नही उठेगा इस समय इसके राज्य पर अधिकार कर लो शत्रुओं ने नगर घेर लिया राजा पूजा में थे । माता ने कहा जय मल जल्दी उठो इस राज्य को शत्रुओं से बचाओं । जयमल कहता है मां तू क्यों दुखी होती है भगवान सब अच्छा ही करेगें । उसी समय भगवान भक्त की निष्ठा देखकर आये और शत्रुओं को मार भगवाया । जयमल पूजा करके जब उठे और सेनापति को आदेश दिया । सेना तैयार करो । और आप अपने घोड़े पर सवार होने को तैयार हो गये तो क्या देखा उनका घोड़ा हाँफ रहा है । जयमल ने पूछा अरे इस पर किसने सवारी की है । पर इसका कोई क्या उत्तर दे यथार्थ बात का किसी को पता नहीं इधर राज्य में एक चर्चा हो रही है कि शत्रु कैसे भाग गये । राजा भी रणभूमि की ओर चल दिये संग्राम भूमि में देखा उसका शत्रु घायल अवस्था में पड़ा तड़फ रहा है जयमल को देखकर बोला राजा तुम्हारा वह सांवरा सा सिपाही कौन है । जिस अकेले ने मेरी फौज नष्ट कर दी तथा मुझे घायल कर गया भैया उस सिपाही की अपूर्व छटा थी उसका स्वरूप मेरे मन में बस रहा है ।

राजा यह सुनकर बोला भाई तुम धन्य हो जो तुमको ऐसे स्वरूप के दर्शन हुये । मेरी आँखें तो उसके दर्शनों को तरस रही है । जयमल की वेदना और भी बढ़ गयी भगवान ने मेरे लिये कितना कष्ट उठाया है । भक्त की रक्षा के लिये भगवान ने स्वयं आकर युद्ध में भाग लिया ।

इसके बाद जयमल अपने शत्रुओं को अपने घर ले आये और उनका सम्मान किया । वह शत्रु भी भगवान की महिमा एवं दयालुता पर प्रभावित होकर उसने भी भक्ति का व्रत धारण कर लिया । और बोला मैने इस जयमल को गिराने का कैसा प्रण किया था । पर यह सब कुछ जानकर भी मुझे हृदय से लगा रहा है ।

इस प्रकार मन को एकाग्रता से सभी विघ्न दूर हो जाते है ।

राम की गुरु भक्ति

माता कौशल्या कैकई सुमित्रा तीनों राजभवन में अपने चारों लाढ़लों को सुन्दर खेल खिलौनों से लाड़ लड़ाती थी । एक दिन श्री राम जी रो रहे थे यह देख माता उद्विग्न हो गई । अपने लाल को बार-बार रख रही है पुचकार रहा है गद्दी से उछाल रही है । अनेक उपाय किये पर उनका रोना बन्द नहीं हुआ ।

बहुत सी देवियाँ दुखी हो गई पालना झूला रही है पर राम के नेत्रों से झर-झर आंसू निकल रहे है उनका रोना बन्द नहीं हुआ । सारा परिवार आज चिन्तित हो रहा है । लक्ष्मण भरत व शत्रुघ्न भी उझक-उझक कर देख रहे है । माता सोचती है कहीं राम को देखकर यह भी न रोने लगे । सबने यह निर्णय लिया

इसको किसी की नजर लग गई है। गुरूजी को बुलाया जाय। गुरूजी के दरवाजे पर रथ पहुंच गया किसी दासी ने जाकर समाचार सुना दिये तथा उनसे प्रार्थना की आप शीघ्र ही चलिये। महर्षि वशिष्ठ यह कथा सुनकर मन ही मन बोले देखो प्रभु राम जी की कैसी लीला है मेरे पास क्या है जो उनका रोना बन्द कर सकता हूँ मेरी सम्पत्ति एवं शक्ति तो आप ही है तथापि महर्षि वशिष्ठ रथ में बैठकर राजमहल में आये।

उन्हें देखकर सबने उठकर प्रणाम किया कौशिल्या जी ने कहा गुरूदेव देखों मेरे राम को आज क्या हो गया है रोता ही रोता है सामने कैकई सुमित्रा भी खड़ी है गुरूजी इसे जल्दी देखो क्या हो गया है।

कौशल्या की गोद में श्री राम जी बैठे थे उसी समय गुरूजी ने नृसिंह मन्त्र का जाप किया तथा कुशा लेकर जल में भिगों कर राम जी के छीटा देना प्रारम्भ कर दिया। इसके अनन्तर महर्षि वशिष्ठ जी ने हाथ बढ़ाकर श्रीराम को अपनी गोद में ले लिया और उनके मस्तक पर हाथ रक्खा। श्री राम जी के शरीर को स्पर्श करते ही महर्षि का शरीर पुलकित हो गया और उनके दोनों नेत्र भर आये। उधर श्री राम जी का रोना भी बन्द हो गया और श्री राम जी महर्षि के मुख का दर्शन करने लगे। उनको देखकर राम जी तो एकदम किलकारियाँ मारकर हँस पड़े बार-बार आनन्द में किलकारी मारने लगे। यह चमत्कार देखकर रानियां गुरूजी के चरणों में गिर पड़ी। कहने लगी हे देव आप इस रघुकुल के रक्षक है। रानियाँ बार-बार अपना अंचल लेकर भूमि पर एवं अपने मस्तक से लगाने लगी मानो महर्षि से आशीष ले रही है।

कोई भी परिवार में समस्या आती पहले गूरूदेव को बुलाती। घर में बड़ों को पता भी नही चलता आज क्या हुआ।

उस घर के रक्षक तो महर्षि वशिष्ठ मुनि थे फिर किसका भय सभी बाधायें दूर रहती थी । पहिले इसी प्रकार गृहस्थियो के घरों में आचार्य आया करते थे उनको अन्त:पुर में जाने से भी कोई नही रोकता था । घरों में आकर आचार्य सत्कथा सुनाया करते थे जिससे बाल वृद्ध सबको सद्‌बुद्धि मिलती थी । गृहस्थ वही है जिन घरों में अतिथि पूजन गुरू पूजन गौ पूजन होता है । पहले यह सब गृहस्थियों के दैनिक कर्म थे । जिससे उनके आचार-विचार सद्‌भावना बनी रहती थी भ्रष्टाचार का तो कोई नाम भी नही जानता था ।

कौशल्या के भवन में गुरू का पूजन हुआ वशिष्ठ मन ही मन राम जी को प्रणाम कर अपने आश्रम में चल दिये ।

{रामाष्टक}

दयालु हृदय राम

राजा रामचन्द्र गरीबों पर बड़ा स्नेह रखते थे वह भी गरीब बालकों से करते थे । विशेष कर ब्राह्मणों पर आपकी बड़ी कृपा थी ।

श्री राम जब पाठशाला में पढ़ने जाते थे वहाँ उनकी एक गरीब ब्राह्मण बालक से बड़ी प्रीति थी । सदा उसके साथ रहना खाना पीना तथा अध्ययन करना । राज्य अधिकारी विरोध भी करते थे कि राम तुमको अधिकारी वर्ग के बालकों से प्रीति करनी चाहिये उनके साथ रहने में तुम्हारी शोभा है पर राम जी किसकी सुनते वह तो अपने मन की करते थे । रामजी का मित्र गरीब ब्राह्मण बालक सरयू पार एक कुटिया में रहता था । रामजी

कभी-कभी उसके साथ जाते थे । उसके माता-पिता का बड़ा आदर करते थे । पिता से दादा कहते थे ।

एक दिन रामजी अपने मित्र के साथ उसके घर गये वहाँ उनको आज खेलत-खेलते दिन बीत गया । ब्राह्मण ने कहा रामजी अब मै आपको घर पहुंचा आऊँ क्योंकि संध्या हो गई है आपके माता-पिता चिन्ता करेगें । रामजी ने कहा दादा आज हम आपके घर ही रहेंगे । तथा रामजी ने दादा को भी उनके घर समाचार देने को नही भेजा अब रात में आप कहाँ जायेगें । उस कुटिया में मित्र के साथ भोजन किया था वहीं शयन किया ।

राज्य में बड़ा कोलाहल मच गया आज राम अभी तक नहीं आये कोई दुष्ट उनको पकड़ कर ले गया है । रात भर कर्मचारी राम की खोज करते रहे पर कहीं पता नहीं चला । जब सरयू पार दूसरे दिन राज्य कर्मचारी देखने गये तब उनको एक ब्राह्मण की कुटिया में देखा । तथा ब्राह्मण को अपराधी जानकर पकड़ लाये । नगर में समाचार फैल गया कि एक ब्राह्मण राम को पकड़ कर ले गया है उसे देखने को अयोध्या की अपार जनता उमड़ पड़ी अरे इस दुष्ट को दण्ड मिलना चाहिये । राज्याधिकारियों ने उसे प्राण दण्ड की आज्ञा दी । आज सभा मण्डप दर्शकों से भरा हुआ है । इधर दशरथ महाराज भी अपने पुत्रों के साथ सभा मण्डप के सिंहासन पर विराजमान है ।

उसी समय रामजी ने देखा कि इस खम्ब से तो मेरे दादा बंधे हुये है । राम जी पिता की गोद से उतरकर अपने दादा के पास आकर उनसे लिपट गये दादा तुमको किसने बाँधा है राम की आँखों से आँसू बरस रहे है तथा वह ब्राह्मण भी राम के इस प्रेम को देखकर भाव विभोर हो गया उसके नेत्रों से भी अश्रुधारा बह रही है । राज्य कर्मचारी कह रहे है रामजी इससे दूर रहो यह

अपराधी है बालको को चुराने वाला है । रामजी कहते है नही-नही यह अपराधी नही है यह मेरे दादा है इनको जल्दी छोड़ो । पिता जी इनको बन्धन मुक्त करो अन्यथा मुझे भी इनके साथ बाँध दो मै इनका कष्ट नही सह सकता । यह मेरे मित्र के पिता है । यह दृश्य देखकर राज्य सभा मे सन्नाटा छा गया । महाराज दशरथ ने उनको तत्काल छुड़ाया तथा अपने पास बैठाया । उस गरीब ब्राह्मण ने सभी बातें श्री राम के प्रेम की सुनाई ।

जो अयोध्या की जनता उस ब्राह्मण से घृणा कर रही थी वह उस भाग्यवान ब्राह्मण को अपने घरों मे ले जाकर उसकी पूजा कर रही है । महाराज दशरथ न तो उसको राजा बना दिया । राम की कृपा वह गरीबों की सदा सहायता करते थे । वह किसी को गरीब देखना नही चाहते थे । उनके गुप्तचर भी रात्रि में जाकर देखते कोई दुखी तो नही है । यह राम राज्य था । {रामाष्टक}

राम का एक पत्नी व्रत

रामजी का एक पत्नी व्रत था उसने कठिन से कठिन आपात-स्थिति के आने पर भी अपनी प्रतिज्ञा को निभाया । रामावतार में एक पत्नी व्रत का संकल्प पूरा किया ।

आज उस युद्धभूमि में राम जी वानरों की सेना के मध्य में श्री हनुमान जी की पूंछ में छिपे बैठे है जहाँ कोई भी प्रवेश नही कर सका । उस किले में से ऐरावण राम और लक्ष्मण को आकाश मार्ग से आकर शिला समेत उड़ा कर ले गया । पाताल में उनको छिपा दिया । वानर सब बैचेन हो गये । ऐसी अवस्था में हनुमान जी पाताल लोक में गये । जहाँ ऐरावण ने राम लक्ष्मण के

बलिदान की तैयारी कर रक्खी है । उस स्थान पर पहुंचना भी कठिन था । पाताल के दरवाजे पर मकरध्वज पहरा देता था । वह हनुमानजी के पसीने की बूंद जो एक मत्स्य ने पाली थी उसी से वह पैदा हुआ था हनुमानजी का और मकरध्वज का युद्ध हुआ । हनुमान जी ने उसे बन्धन में बांध दिया ।

अपना मार्ग साफ करके हनुमानजी राम लक्ष्मण को छुड़ाने को पहुंच गये । राम का और एरावण का बड़ा घमासान युद्ध हुआ पर वह पराजित नही हुआ रामजी उसे मार दें पर वह जीवित हो जाता था ।

हनुमान जी बड़ी चिन्ता में पड़ गये कि इसके मारने का कोई साधन मिले । हनुमानजी ने राजभवन में एक बड़ी सुन्दर स्त्री को देखा जो कि दुःख में डूब रही थी उस दुखिया को देखकर पवन पुत्र बोले देवी तू कौन है तुझे क्या चिन्ता है । सुन्दरी ने कहा वीर यह ऐरावण मैरावण दोनों भाई मुझे अपनी पत्नी बनाना चाहते है इससे मै व्याकुल हूं । हनुमान जी ने कहा अब रामजी इनको जल्दी मार देंगे । सुन्दरी ने कहा उनको मारना कठिन है । उनके ऊपर भौरे अमृत बरसा देते है इससे वह जी जाते है । उनके मारने का उपाय मै जानती हूं । पर तुमको एक शर्त पर बताऊंगी कि राम मेरे साथ शैया पर शयन करें ।

हनुमान जी के सामने बड़ी समस्या आ गई कि एक पत्नी व्रत धारी इसे कैसे स्वीकार करेंगे । और यदि वह इसे स्वीकार नहीं करते है तो ऐरावण मैरावण का मारना कठिन है ।

हनुमानजी ने इस समय काम चलाने के लिए कहा अच्छा मै राम को राजी कर लूंगा । पर एक शर्त हमारी भी है उनके लिये शैया मजबूत होनी चाहिये यदि शैया टूट जाती है तब तेरा मनोरथ सफल न होगा सुन्दरी ने कहा यह मुझे स्वीकार है । उस सुन्दरी

ने कहा देखो हनुमान ब्रह्म सामने पर्वत की गुफा में भौरां रहते है उन्हें तुम मार दो वह अमृत लाकर बरसाते है ।

हनुमान जी ने वहाँ जाकर उन भौरों को मारना शुरू कर दिया । भौरे बोले तुम हमको छोड़ दो हम तुम्हारी आज्ञा का पालन करेंगे हम दास है । हनुमान ने कुछ भौरों को छोड़ दिया । अब राम का और ऐरावण का युद्ध हुआ । राम ने उन दोनों को मार दिया ।

पवन पुत्र हनुमान बोले रामजी अब आपको एक सुन्दरी की कामना पूरी करनी है । रामजी बड़े आश्चर्य में पड़ गये पर हनुमान जी के समझाने पर सुन्दरी के पास गये उसने बड़ी सुन्दर शैया सजायी थी ।

हनुमान ने पहले ही उन बचे हुये भौरां से कह दिया कि इस पलग को पोला कर दो ।

रामजी जैसे ही उस शैय्या पर बैठे कि पलंग टूट गया । सुन्दरी का मनोरथ अधूरा रह गया । हनुमान जी राम लक्ष्मण को लेकर आये जहाँ उनकी सेना थीं ।

रामजी के पत्नी व्रत में कितना बड़ा विघ्न आया था पर रामजी ने अपना संकल्प पूरा किया कि मै एक पत्नी व्रत धारण करूंगा । {रामाष्टक}
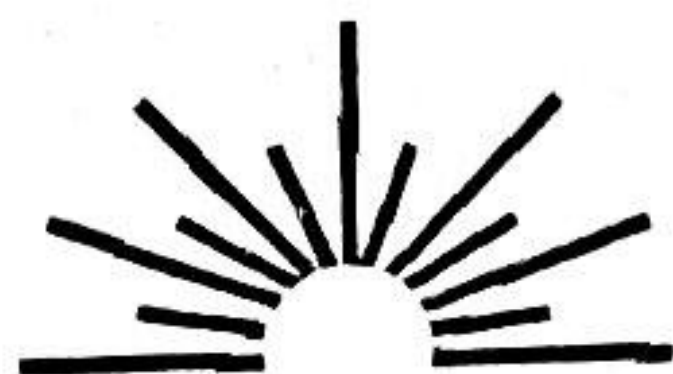
राम की बाली को शिक्षा

श्री रामजी ने कैसे शिक्षाप्रद एवं अद्‌भूत कार्य किये है जिनका लोक रात दिन गान करता है ।

वानर राज सुग्रीव से मैत्री करना यह एक आदर्श कार्य था । वानरों से कौन मैत्री करता है । बाली राजा मदोन्मत्त हो गया था । उसकी शिक्षा कौन दे सकता था । भाई की स्त्री को रखता । वह प्रत्यक्ष अपराधी था, पर उसे ऐसे वरदान प्राप्त थे कि उसे दण्ड देने वाला कोई नही था । जैसे सात शाल के वृक्ष जो चलते फिरते थे उनका भेदन करने वाला ही उसे मार सकेगा । दूसरे कोई योद्धा यदि सामने आता तो उसकी आधी शक्ति को देखते ही छीन लेता था । एक इन्द्र की दी हुई माला जिसके रहते उसे कोई नही जीत सकता ।

सुग्रीव को भी विश्वास नही था कि रामजी इसको मार सकेंगे । सुग्रीव ने रामजी को वह सात चल वृक्ष दिखाये । रामजी उस रहस्य को समझ गये । उन्होंने शेषावतार लक्ष्मण के पैर का अंगूठा दबाया इससे वह वृक्ष सीधे हो गये । उसी समय रामजी ने एक ही तीर में उन सातों वृक्षों को बेध दिया । उन वृक्षों के नीचे से एक सर्प निकला और बोला ''प्रभु आज आपने मेरा उद्धार कर दिया ।'' सर्प ने कहा–एक दिन मै अपने लिए को कुछ फल लेकर चल दिया । उसी समय बाली ने देख लिया और बोला–रे सर्पराज! तू मेरे भोजन में से सात फल चुराकर ले जा रहा है । जो तेरे ऊपर सात वृक्ष पैदा हो जायेगें । तब से मेरे ऊपर यह सात वृक्ष लगे है । रामजी आज मै मुक्त हो गया । अब आप मुझे कोई

सेवा बताइये । राम ने कहा–सर्पराज तुम इतना काम मेरा कर जाओं कि बाली के पास जो माला है उसे वहाँ से हटा दो । सर्पराज ने राम की आज्ञा से बाली के भवन में से वह माला जो पहन कर जाता था, हटा दी ।

आज जब सुग्रीव बाली को युद्ध के लिये ललकार रहा है । उस समयबाली गदा लेकर चला पर वह माला उसको नही मिली इससे चित्त खिन्न तो हो गया पर वह साहसी वीर रुका नही बाली सुग्रीव में युद्ध हो रहा है आज सुग्रीव को लक्ष्मण जी ने पहचान के लिये एक गज पुष्पों की माला पहना दी थी इससे रामजी ने देखा यह सुग्रीव है और दूसरा वाली है । आपने एक वृक्ष की आड़ में आकर एक ही तीर से बाली का वध कर दिया ।

बाली ने अन्तिम समय में कहा था रामजी जैसे आप सुग्रीव से मिले वैसे मुझसे मिलते तो मै आज ही सीता को आपके पास ले आता ।

बाली ऐसा पराक्रमी था । प्रतिदिन चारों समुद्रों पर सन्ध्या करता था । रावण ने छुपके से बाली को दबाना चाहा पर बाली उसके पैरों की आहट पाकर सावधान हो गया तथा रावण को पकड़ कर अपनी बगल में दबा लिया और चारों समुद्रों पर सन्ध्या करके इसे छोड़ दिया उस समय रावण मरे के समान हो गया था । वह लंकाधिपति रावण बाली के पराक्रम से डर गया तथा उसने बाली से मित्रता करली थी । आज वह बाली वीर शैया पर पड़ा हुआ है । श्री रामजी के दर्शन कर रहा है । आंखों मे आंसू भरे हुये हैं । बोला–कारण कवहुं नाथि मोहि मारा । मै वैरी सुग्रीव पियारा ।। रामजी आपने मुझे किस अपराध में यह प्राण दण्ड दिया है । रामजी ने कहा–बाली यह राज्य भरत का है उसके राज्य में अन्याय करने वालों को दण्ड मिलता है । तुम नही जानते तुम्हारा

कितना बड़ा अपराध है । बाली अनुज वधू छोटे भाई की स्त्री तथा बहिन एवं सुति (बेटी) इनको समान भाव से देखना चाहिये । तुम तो भ्रातृ पत्नी को पास रखते हो कितना बड़ा अपराध है । बाली भी बुद्धिमान था बानर भाव में वह भूला हुआ था । किन्तु राम द्वारा स्मरण कराने पर उसको ज्ञान हुआ एवं उसने फिर आगे जीवन की इच्छा भी प्रकट नही की । दयालु राम उसको जीवन भी दे देते । कारण प्रायश्चित्त सब दोषों से मुक्ति कारक होता है ।

{रामाष्टक}

रामेश्वर की स्थापना

श्री रामजी जब समुद्र तट पर पहुंच गये तब आपने रामेश्वर की स्थापना का संकल्प लिया । रामजी के साथ वानरों में ही बड़े-बड़े विद्वान याज्ञिक थे तथा समुद्र तट पर भी विद्वानों की कमी नहीं थी रामजी ने उन विद्वानों को बुलाकर कहा-मेरा विचार शंकर भगवान की स्थापना एवं पूजन करने का है । ब्राह्मण बोले-राम जी उसके लिये पहिले पाषाण (पत्थर) मंगाया जाय । स्थापना निमित्त जहाँ पत्थर मिलेंगे, वह स्थान यहाँ से दूर है ।

अत: हनुमान जी यह काम कर सकते है । पाषाण का स्वरूप बताया तथा जो स्थान ब्राह्मणों ने बताया, वहीं हनुमान जी चल दिये ।

ब्राह्मणों ने बड़ी सुन्दर स्थापना की रचना की । श्री रामजी ने कहा-यहाँ और भी कई विद्वान रहते है समुद्र तट निवासी ब्राह्मणों ने कहा-रामजी वहाँ समुद्र पार महा पण्डितराज रावण रहते है । श्री रामजी बोले-अच्छा, तो उनको भी बुलाइये । रामजी का

निमन्त्रण पाकर रावण विद्वान अपने साथ और भी अनेक पण्डितो के साथ आया तथा सीता को भी साथ लाया कि बिना पत्नी के राम कैसे यज्ञ करेंगे ।

महा पण्डित रावण के आते ही रामजी ने उनका सन्मान किया । रावण ने देखा-यज्ञ मण्डप की रचना शास्त्रीय विधि से सुन्दर हुई है । रावण बोला-रामजी आपके यहाँ के विद्वान योग्य है ।

रावण ने कहा-अब आप रामेश्वर की स्थापना मे देरी क्यों कर रहे है ? रामजी ने कहा-हनुमान जी स्थापना का पाषाण लेने गये है ।

रावण अपनी विद्या योगबल से बोला-रामजी ! हनुमान के आने में तो अभी देरी है और आपका मुहूर्त निकल जायेगा । ऐसी अवस्था में स्थापना से क्या लाभ होगा । रामजी ने कहा-हे पण्डितराज तब इसका उपाय ही क्या है । श्री महा पण्डित ने कहा-मै आपका मुहूर्त शुभ लग्न में ही कराऊंगा । बन्दरों को ओदश दिया कि रेती लाओ । रेती के आने पर रावण ने उसका शिवलिंग बनाकर स्थापना कराई । उसी समय हनुमान जी ने भी एक शिवलिंग बड़ा बनाकर स्थापना कराई । रावण ने कहा-हनुमानजी अब इसकी आवश्यकता नहीं है इसे कहीं डाल दो । हनुमान-तब आपने स्थापना किसकी कराई है । रावण-रेती का यह लिंग है । हनुमान-यह कितने दिन रहेगा । पानी के गिरते ही ढह जायेगा । रावण -अच्छा तो तुम इसको उखाड़ कर देखों । हनुमान जी ने अपनी पूंछ का लपेटा देकर जो लिंग को उखाड़ा उससे क्या हुआ कि धरती कांपने लगी पर वह शिवलिंग न हिला । कैसा आश्चर्य सभी चिकत रह गये । रावण जब यज्ञ पूर्ण कराकर चलने लगा तब रामजी ने उसका सन्मान किया । उसी समय रावण ने

कहा–रामजी आपकी विजय हो । ऐसा कहकर वह अपनी लंका की ओर चला गया । विद्वान का मान सब जगह होता है वहाँ ईष्या, द्वेष नहीं रहता है । तभी कहते है–"विद्वान सर्वत्र पूज्यते ।" जो जिस विषय के ज्ञाता है वह अपना कार्य भेदभाव रहित होकर करता है । अपना शत्रु भी यदि योग्य है तो वह पूजनीय है ।

(रामाष्टक)

राम का न्याय

राम के राज्य में सबके साथ एक सी न्याय व्यवस्था थी । वहाँ पुत्र बन्धु आदि का पक्षपात नही था । और तो क्या उस राज्य में पशु पक्षियों के साथ भी यथोचित न्याय होता था ।

एक समय कोई ब्राह्मण प्रात:काल के समय किसी काम को निकला मार्ग में एक कुत्ता सो रहा था । कुत्तों का कोई स्थान नहीं है वह चाहे जहाँ पड़ जाते है । ब्राह्मण को किसी काम की जल्दी थी और उस कुत्ते ने मार्ग रोक रक्खा था । उस ब्राह्मण ने एक डंडा मार कर कुत्ते को भगाया और अपना रास्ता बनाया । कुत्ते के डंडा जोर का लगा और वह कांय-कांय करता रोता हुआ भागता-भागता रामजी के सभा मण्डप की ओर चल दिया । उस राजद्वार के दरवाजे पर वह चिल्ला रहा है । रामजी ने पूछा–भाई यह कौन चिल्ला रहा है । सभासद बोले–महाराज वह एक कुत्ता है जो रो रहा है ।

रामजी ने कहा–वह क्यों रो रहा है । उसे भीतर बुलाकर लाओ । राम दरबार में किसी को रोक-टोक नहीं है । उसी क्षण द्वारपाल ने कुत्ते को लाकर दरबार में खड़ा कर दिया ।

श्रीराम ने पूछा–भाई तू इतना दुखी क्यों है । तुझे किसने सताया है । कुत्ते ने कहा–नाथ मुझे एक ब्राह्मण ने डण्डे से मारा है । मेरी कमर तोड़ दी । उसी समय रामजी ने उस ब्राह्मण को बुलवाया ।

आज का न्याय देखने को राजभवन में अपार भीड़ लग रही थी ।

कुत्ता और ब्राह्मण दोनों ही खड़े है । श्रीराम जी ने ब्राह्मण देवता से पूछा–आपने इस गरीब कुत्ते को मारा है । इसने तुम्हारा क्या अपराध किया है ? ब्राह्मण बोला–महाराज मै भिक्षा करने जा रहा था । इसने मार्ग रोक रक्खा था इसलिए मारा ।

राम जी ने कहा–भाई यह तो इसका कोई अपराध नही है । कुत्तों की तो आदत ही मार्ग में पड़ने की होती है । हाँ यदि इसने तुझे सताया होता तब तो इसको इतना बड़ा दण्ड देना उचित था । तुमने इस निर्दोष को सताया है । अतः तुमको सजा मिलनी ही चाहिये । रामजी ने कुत्ते से कहा–तुम ही बताओ इसको क्या दण्ड दिया जाये । कुत्ते ने कहा–महाराज इसको मठाधीश बना दिया जाय । हाथी पर बैठाकर सवारी निकाली जाय । एक मठ मन्दिर का मालिक बना दिया जाय ।

कुत्ते की बात सुनकर सभी सभासदों को बड़ा आश्चर्य हुआ । यह कुत्ता अपने अपराधी को राजा बनाने की सजा दे रहा है । सजा है या वरदान । मन्त्रियों ने कुत्ते से पूछा–भाई इस अपराधी को तुमने राजा बना दिया तुम बड़े उपकारी हो या इसमें कोई रहस्य है ।

कुत्ते ने कहा–महाराज मै भी पहिले मठाधीश था । मठ का पैसा खाता था इससे आज मुझे कुत्ता बनना पड़ा है । जब यह ब्राह्मण कुत्ता बनेगा तब इसको ज्ञान होगा ।

राजाज्ञा से उस ब्राह्मण को मठाधीश बना दिया गया । राम

के राज्य में इस प्रकार सभी न्याय होता था ।

(रामाष्टक)

राम की परीक्षा

रामजी के राज्याभिषेक के अनन्तर राज्य में नित्य प्रति ऋषि मुनियों का आगमन रहता था । रामजी महात्माओं की संगति में ही अपना समय निकालते थे । सबकों सन्तुष्ट करते उनके द्वार से कभी कोई निराश होकर नहीं जाता ।

एक समय अयोध्या जी में श्री दुर्वासा महामुनि अपने साठ हजार शिष्यों को लेकर आये । श्री रामजी ने उनका स्वागत सत्कार किया । श्री रामजी बोले–हे महामुने! मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताईयेगा ।

दुर्वासा जी ने कहा–रामजी आज तपस्या की पूर्ति का दिन है तथा आज पारणा करना है । यदि आपकी शक्ति हो तो हमारे भोजन की व्यवस्था कर दे । रामजी ने कहा-भगवन यह घर आपका है आज्ञा करिये । दुर्वासा जी ने कहा–राम पहिले हमारे नियम सुन लो । यदि तुम उनका पालन कर सको तुम्हारी सामर्थ्य हो तो हमको स्वीकृति देना अन्यथा स्पष्ट ना कर देना । श्रीराम–आप आज्ञा करिये, अपने नियम बताइयें । दुर्वासा जी ने कहा–राम पहली बात तो यह है मेरे साथ साठ हजार शिष्य है पहिले उन सबका प्रबन्ध करना है मै अकेला नहीं हूं । राम जी ने कहा–जो आज्ञा । और सुनो राम हमारा भोजन अग्नि एवं मणिद्वारा नहीं बनाया जायेगा तथा भोजन के पहिले पूजन को कुछ पुष्प चाहिये जो कि धरती से उत्पन्न न हों । राम जी ने कहा–तथास्तु । दुर्वासा

हुआ तो बड़ा अनिष्ट हो जायेगा ।

श्री रामजी ने उसी समय एक पत्र लिखा । हे देवराज इन्द्र आज आप कल्प वृक्ष तथा पारजात को लेकर तथा अपने साथ प्रबन्धकों को लेकर शीघ्र आओ । वह प्रत्र एक वाण में लगाकर देवलोक भेज दिया । इन्द्र के सामने वाण गिरा । देवराज ने उस पत्र को पड़ा तथा अपने साथियों के साथ कल्पवृक्ष-पारजात को लेकर आ गया अब दुर्वासा जी भी स्नान कर साठ हजार शिष्यों के साथ आ गये । आते ही कहा–राम पूजन को पुष्प कहाँ है । रामजी ने पारजात के पुष्पों का ढेर लगा दिया ।

तथा भोजन के लिये कल्पवृक्ष के द्वारा अनेक प्रकार के पदार्थ प्रकट हो रहे हैं । जैसे दुर्वासा जी की इच्छा होती है उसी प्रकार के पदार्थ उनके सामने आ रहे हैं । दुर्वासा जी को कोई भी कमी नहीं दीख रही । मुझे क्षीर चाहिये । यह लो क्षीर दुर्वासा जी राम के ऐश्वर्य को देखकर चकित रह गये । उनके मन की शंका दूर हो गई ।

कल्प वृक्ष के पदार्थ जहाँ मणि एवं अग्नि का स्पर्श भी नहीं है । स्वर्ग लोक के पारजात के पुष्प जो मानवों को देखने को भी नहीं मिलते । परात्पर श्री राम को अवतार मानकर दुर्वासा जी अपने वचनों पर पश्चात्ताप करने लगे इस प्रकार अयोध्या में रामजी की अनेक लीला हुआ करती थी । (रामाष्टक)

राम नाम का प्रभाव

विभीषण राम की शरण में आया उसकी श्रीराम जी के चरणों में अनन्य प्रीति थी उसने अपना सर्वस्व त्याग दिया यह उसका महान त्याग था श्री रामजी ने भी उसे लंकापति बना दिया। वह महान सेतु जो राम ने बनाया था उसे श्री राम ने तुड़वा दिया। कारण कोई राजा विभीषण के राज्य में विघ्न न डाल सके।

विभीषण राम भक्त था पर उसकी जाति में ही अटूट भक्ति थी वह मनुष्यों को राम रूप से ही आदर करता था।

एक समय एक व्यापारी अपने माल के जहाज को लेकर जा रहा था। जहाज में सैकड़ों उसके सेवक थे। मार्ग में वह जहाज बिगड़ गया। उसके रक्षक अनेक प्रयत्न कर रहे है पर सफलता नही मिली।

उसी स्थान पर एक आवाज सुनाई दी कि तुम एक मनुष्य का बलिदान करो तो यह जहाज सुरक्षित स्थान पर पहुंच सकता है।

व्यापारी बड़ा चिन्तित मै किस व्यक्ति का बलिदान करूं मेरे सभी सेवक समान है। पर भाई एक बलिदान से सैकड़ों मनुष्यों की रक्षा हो रही है। क्या करूं कोई साधन नही। उस जहाज में एक वृद्ध पुरुष था वह रोगी था उसे कुष्ट का भंयकर रोग था। उसने कहा-मालिक आप मेरा बलिदान कर दीजिये मै जीवन से मुक्त हो जाऊंगा। व्यापारी ने कहा-भाई ऐसा नहीं होगा मेरे लिये सब समान है। पर वह वृद्ध पुरुष स्वयं समुद्र में कूद पड़ा उसके गिरते ही जहाज चलने लगा।

वह वृद्ध पुरुष समुद्र में गोता खाता लंका के किनारे पहुंच गया। राक्षसों ने उसे पानी से निकाला और बोले-यह हमारा भोजन है। पर एक बार महाराज विभीषण से अवश्य निवेदन करना है। राक्षस उस मृत प्राय वृद्ध को विभीषण राजा के सामने ले गये। विभीषण राज तो मनुष्य का राम रूप से आदर करते थे। उस पुरुष का जैसे आपने स्पर्श किया कि वह सर्वांग सुन्दर हो गया।

विभीषण बोले-आपने बड़ी कृपा की जो इस भूमि को पवित्र किया। वह पुरुष भी विभीषण को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला मेरा अहोभाग्य। विभीषण ने कहा-मै आपकी क्या सेवा करूं ? कहिये जो इच्छा हो सो कहिये। वह मनुष्य बोला- मुझे मेरे स्थान पर पहुंचा दीजिये। राजा विभीषण उस प्राणी का पूरा वृत्तान्त जानकर बोला। यह लो सेवा एक रत्नों की पोटली उसके गलें में लटका दी तथा उसके शरीर पर राम राम राम लिख दिया।

यह राम की कृपा से जहाँ से आया है वहाँ पहुँच जाय। ऐसा कहकर उसे समुद्र में डाल दिया गोता खाता उसी जहाज के समीप पहुंच गया। जहाज के वाहकों ने देखा कोई पुरुष बहता आ रहा है। उन्होंनें उसे जाल डालकर निकाला। उसे देखकर सब आश्चर्य करने लगे।

भाई ऐसा सुन्दर शरीर तुमको कैसे मिला। उस पुरुष ने सभी कथा सुनाई एवं वह अभूतपूर्व रत्नों को देखकर बड़े प्रभावित हुये। राम नाम से ही वह मनुष्य स्वस्थ हो गया। राम नाम से ही उसका सन्मान हुआ। राम नाम से ही अपने भक्तों में, मित्रों में आ मिला। भगवान के भक्त जिस पर कृपा करते है। उसको अपना बना लेते है।

सीता का जन्म

राजा मलयाक्ष लक्ष्मी नारायण का अनन्य भक्त था। उसने बहुत बड़ी तपस्या करके लक्ष्मी नारायण को प्रसन्न कर लिया था। स्वयं श्री लक्ष्मी नारायण राजा के सामने प्रगट हो गये। राजा भी उनके चरणों में गिर पड़ा।

श्री नारायण बोले-राजन्! मै तुमसे प्रसन्न हूँ जो इच्छा हो वह वर मुझसे मांग लो। राजा ने कहा--प्रभु! मेरी तो एक अभिलाषा है कि श्री लक्ष्मी जी को कन्या के रूप में लाड़ लड़ाऊ। भगवान ने कहा-भक्त ! तुम और कुछ मांगो! कारण लक्ष्मी के आने से तुम संकट में पड़ जाओगे। पर राजा की तो एक ही थी हट मै लक्ष्मी का लाड़ लड़ाऊंगा। नारायण ने उसका आग्रह देखकर उसे एक फल दे दिया। राजा ने घर जाकर उस फल को तोड़ा तो उसमें से एक सुन्दर कन्या प्रकट हुई। राजा उस लक्ष्मी का पालन करने लगा। कालान्तर से वह कन्या जब बड़ी हुई तब उसका सौन्दर्य बढ़ने लगा। वह रूप गुण युवा अवस्था सम्पन्न कन्या उस घर का प्रकाश बढ़ाने लगी। उस सुन्दरी को देखकर देश-देश के राजा उसके साथ विवाह का प्रस्ताव रखने लगे। राजा भी बड़ी चिन्ता में पड़ गया। यह बड़े-बड़े राजा आ रहे है और मेरी कन्या को मांग रहे है। मै इसे किसको दूं। यह तो एक बड़ा संकट आ गया। राजाओं से शत्रुता बढ़ने का।

राजा मलयाक्ष एक दिन बोला-भाई ! मै तो इस कन्या को उस राजा को दूंगा जिसका आकाश का सा वर्ण होगा। इससे सभी राजा असन्तुष्ट हो गये और मलयाक्ष का नगर घेर लिया और

कहने लगे इस कन्या को जबरन ले चलो । मलयाक्ष ने भी अपनी सेना तैयार कर ली । बहुत बड़ा युद्ध प्रारम्भ हो गया । और उस युद्ध मे मलयाक्ष का राज्य नष्ट हो गया । तथा मलयाक्ष भी मारे गये । इस प्रकार का सर्वनाश देखकर वह कन्या अपने जीवन की रक्षा के लिए नगर से बाहर निकल गई । राजाओं ने उसका पीछा किया पर वह देवी एक महात्मा की कुटिया में घुस गई तथा उनके यज्ञ कुण्ड में कूद पड़ी । राजाओं ने उस यज्ञ कुण्ड मे उसको बहुत तलाश किया पर उसका पता नही चला ।

एक दिन रावण उस मार्ग से आया उसने उस आश्रम में उस सुन्दरी को देखा । रावण राज उसे देखकर मोहित हो गये तथा उसको पकड़ने चले पर वह सुन्दरी उस कुण्ड में फिर कूद गई ।

रावण ने उस कुण्ड को खुदवाया पर उसमें वह सुन्दरी तो नहीं मिली उसमें वह पाँच रत्न मिले । उनको लेकर रावण लंका में आ गया । अपने विश्राम के बाद बोला–मन्दोदरी मै आज बड़े कीमती रत्न लाया हूँ यह सुनकर मन्दोदरी को उनके देखने का बड़ा उत्साह बढ़ा । तत्काल पेटी को उठाया पर वह पेटी तो बड़ी वजनदार थी । मन्दोदरी ने कहा-स्वामी इसमें क्या है यह तो उठाने से भी नही उठती । रावण ने कहा--देवी इसमें पाँच रत्न है । देखो मै तुम को दिखाता हूं । रावण ने उसको खोलकर देखा तो उसमें एक परम सुन्दरी निकल पड़ी । कैसा आश्चर्य कि रावण उसे देखकर चकित रह गया । और बोला--तुम कौन हो । उस कन्या ने कहा--मै मलयाक्ष की बेटी हूँ मेरे कारण मेरे पिता का सर्वनाश हो गया । आज मै लंका में आई हूँ अब दूसरी बार रावण को मारने के लिए आऊंगी फिर तीसरी बार सौ मुहं वाले रावण को मारने आऊंगी । फिर चौथी बार कुम्भ दैत्य को मारने आऊंगी । तू मुझे क्या मारेगी मै तुझे अभी मारे देता हूँ । ऐसा कहकर उसने

तलवार निकाल ली । उसी समय मन्दोदरी ने कहा--स्वामी इसे छोड़ दो आने वाली मौत को आज ही क्यों बुलाते हो । रावण ने उस कन्या को पेटी में बन्द कर सेवकों से कहा-इसको दूर जंगल में जाकर गाढ़ दो । सेवक उस पेटी को जनक की राजधानी के पास जंगल में उसको गाढ़ आये । यह भूमि जनक महाराज ने एक ब्राह्मण को दान करके दे दी थी । उस ब्राह्मण ने जब उस भूमि को खेती के लिये या यज्ञ के लिए शोधन कराया । उसमें हल के अग्रभाग तीर से वह पेटी ऊपर आगई ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ । यह सम्पत्ति महाराज जनक की है उन्ही की भूमि में निकली है । ब्राह्मण देवता उसको लेकर महाराज जनक के दरबार में गये । महाराज यह आपकी सम्पत्ति है इसे सम्भालें । यह भूमि में निकली है । जनक राजा बोले--महाराज इसे आप ही रखिये कारण इस भूमि का मैं दान कर चुका हूं । ब्राह्मण बोला-राजन् भूमि तो मैंने स्वीकार करली पर भूमि का धन तो राजा का ही होता है । इसमें मेरा अधिकार नही । राजा एवं ब्राह्मण दोनों ही अपने-अपने सन्मार्ग पर चल रहे है । दोनों के मन दोनों के मन पवित्र है । उसी समय मन्त्रीगण बोले--महाराज इस पेटी को खोलकर देखना तो चाहिये इसमें क्या है । उसी समय उस पेटिका को खोला गया तब उसमें से यह सुन्दरी कन्या प्रकट हो गई । महाराज जनक ने उस कन्या का लालन-पालन किया यही कन्या सीता है । (सीताष्टक)
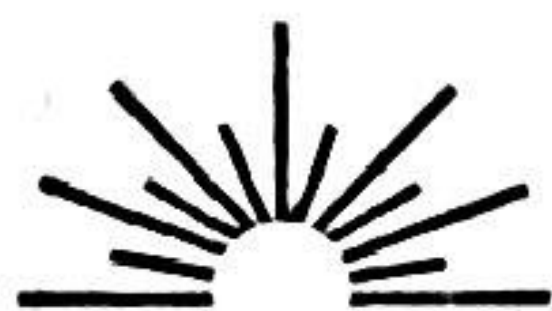
सीता की वन यात्रा

सीताजी ने देखा कि रामजी आ रहे है पर उनके साथ सेना नही है उनके ऊपर राज्य छत्र नहीं है । देखकर आश्चर्य मे पड़ गई । उसी समय राम ने भवन में प्रवेश किया । सीता-रामभद्र वह राज्याभिषेक का मुकट कहाँ है । रामजी ने कहा-सीता वह मुकुट छत्र भरत भैया के लिये रक्खा है, मुझे तो चौदह वर्ष का वनवास मिला है । वह राम पत्नी सीता यह सुनकर बोली-ऐसा क्यों हुआ रामजी । श्रीरामजी ने कहा–माता केकैई की इच्छानुसार पिताजी ने ऐसा ही निर्णय लिया है । सीते अब मै तुमसे यह कहने आया हूँ कि तुम यहाँ रहकर माता कौशल्या की देखरेख रखना मै जल्दी ही पिताजी की प्रतिज्ञा पूर्ण करके आऊंगा । धन्य है वह जनक नन्दनी सीता जिसे थोड़ा भी क्रोध नहीं तथा उनको यह सब कारण पूछने की भी रुचि नही । माता-पिता जैसा करते है पुत्र को वह मानना ही चाहिये । सीता अपनी सभी सासों का समान आदर करती थी । तथा महाराज दशरथ के सन्मान में हर समय खड़ी रहती थी । वह देवी इन सब बातों को क्यों पूंछती उसने तो राम से बस यही प्रस्ताव रक्खा राम जी यदि ऐसी बात है तो मै भी आपके साथ चौदह वर्ष को वन में चलूंगी ।

रामजी ने कहा–सीता वन में बड़े कष्ट है देखो वहाँ कभी धूप कभी भंयकर वर्षा कभी शीत जहाँ उसके निवारण का कोई साधन नहीं है । भोजन भी नहीं मिलते कभी पानी को भी तरसना पड़ता है । वहाँ कंकड कांटे तथा राक्षसों को भय बना रहता है ।

सीताजी ने कहा–रामजी जितने दोष आप जंगल के बता रहे

हो यह सब पति के साथ रहने से गुण हो जाते है ।

रामजी मै आपके साथ चलूंगी । राम मेरे पिताजी के यहां बड़े-बड़े विद्वान रामायण सुनाते है जब जब कल्प में रामावतार हुआ है सीता उनके साथ गई है राम अकेले कभी नहीं गये ।

और भी सुनिये रामजी जिस समय मेरे विवाह का धनुष यज्ञ हुआ था । उस समय आपके दर्शन करते ही मैंने प्रतिज्ञा की मै थी श्री राम से ही विवाह करूंगी । पर मेरे पिताजी ने प्रतिज्ञा की थी जो धनुष को तोड़ेगा उसे अपनी कन्या दूंगा । पिताजी को समझाने वाला भी कौन था और पिताजी भी अपनी प्रतिज्ञा को छोड़ने वाले नहीं ऐसी अवस्था में मैंने भी प्रतिज्ञा की थी । हे धनुषराज तुम हल्के हो जाओ मै चौदह साल का व्रत करूंगी राम के साथ रहूंगी । अतः मै अपनी उस प्रतिज्ञा के अनुसार आपके साथ चलूंगी तथा चौदह साल का व्रत पालन करूंगी ।

रामजी सीता के वचन सुनकर बोले–अच्छा तो तैयार हो जाओ । सीताजी ने उसी समय अपने दास दासियों की खान-पान की व्यवस्था की कि यह सब कहाँ जायेंगे । गुरू वशिष्ठ एवं गुरु पत्नी श्री अरुन्धती को बुलाया उनका पूजन किया यात्रा के समय दान किया । श्री रामजी ने राज्य की कोई वस्तु नही ली । लक्ष्मण से कहा भाई तुम गुरु जी के घर से धनुष तरकस तलवार लेकर आओ यह आयुध रामजी को जनक राजा के द्वारा प्राप्त हुये थे । और गुरुजी के आश्रम में रखे थे वहां इनका पूजन होता था ।

उन्हीं शस्त्रों को लेकर रामजी ने गमन किया माता पिता की आज्ञा का किस प्रकार पालन किया जाता था । मन में जरा भी ग्लानि नहीं होती थी । तभी तो कहते है मातृ देवी भव पितृ देवो भव । (सीताष्टक)

अनुसूया एवं सीता

सीता का अत्रिकी पत्नी अनुसूया जी से जब समागम हुआ तब सीताजी को उस पतिव्रता नारी के संयोग से मानो अपूर्व रत्नों की प्राप्ति हो गई पतिव्रता अनुसूया जो शिक्षा देती थी सीता को मानो वह शिक्षा पहिले ही प्राप्त है। महारानी अनुसूया जो कि पतिव्रताओं मे श्रेष्ठ मानी जाती है वह सीता की शिक्षा से प्रभावित होती थी।

अनुसूया जी का व्रत धर्म तो संसार में प्रसिद्ध है। एक समय नारद और स्वरादेवी ने तो इनसे भी अधिक सत्कार किया। किन्तु नारदजी ने कह दिया देवियों तुम सभी पतिव्रता हो और तुम्हारे हाथ के बने पदार्थ सभी स्वादिष्ट है पर जैसा स्वाद पतिव्रता अनुसूया की रसोई में आता है। वैसा स्वाद और कही नहीं आता। यह सुनकर लक्ष्मी पार्वती स्वरा तीनों ही लज्जित हो गई तथा अनुसूया की प्रशंसा सुनकर उससे ईर्ष्या करने लगी। उनके पतियों विष्णु शंकर ब्रह्मा ने पूछा आज क्या बात है तब वह रानियां बोली स्वामी आप उस अनुसूया के धर्म को गिराओ तभी हम अन्न जल ग्रहण करेंगी।

इस प्रकार तीनों घरों में बड़ा क्लेश पैदा हो गया इस ग्रह क्लेश को दूर करने के लिये तीनों देवता ब्राह्मण का रूपधारण करके अनुसूया जी के घर भिक्षा लेने गये। अनुसूयाजी जी की खातिरदारी लक्ष्मी जी ने की तथा पार्वती जी ने भी उनको दिव्य भोजन कराये। अतिथि का प्रति दिन पूजन सत्कार करती थी। आज इन तीनों देवता ब्रह्माणों को अनुसूया जी ने बड़ी उत्तम

रसोई बनाई । ब्राह्मणों को आसन लगा कर बिठाया । उनके सामने तीन थाल परोसकर रख दिये हाथ जोड़कर कहा आप भोजन करिये । यह देवता बोले देवी हमारा तो ऐसा नियम है कि कोई हमको भोजन कराता है तब भोजन करते है । अपने हाथ से भोजन नही करते । यह तो अनुसूया जी के सामने बड़ी कठिन समस्या आ गई । घर में कोई दूसरा व्यक्ति भी न था । मै तो किसी का स्पर्श नही करती मै आपको भोजन कैसे करा सकती हूं । ब्राह्मण बोले तब हम भूखे ही चले जायेंगें । मित्रो उठो कहीं अन्यत्र भिक्षा करेंगे । एक और कठिन समस्या यह ब्राह्मण भूखे जा रहे है । उस देवी ने तत्काल थोड़ा जल लेकर ब्राह्मणों पर छिड़का यदि मेरा पतिव्रत सत्य है तो तुम बालक हो जाओ । उस देवी के प्रभाव से वह तीनों देवता बाल रूप हो गये ।

अनुसूया जी ने कहा इन बच्चों को भोजन कराने में क्या दोष है । आपने उसी समय उनके पलनाओं की व्यवस्था की उनको दूध पिलाया ।

उसी समय अत्रि मुनि आ गये उसने पूछा देवी यह कौन है । अनुसूया-यह आपके बालक है । कैसा प्रभाव उस देवी का जिसके घर ब्रह्मा, विष्णु, महेश खेल रहे हैं । यहां लक्ष्मी पार्वती स्वरा ने दखा कि हमारे पति कहाँ चले गये । उनका कोई पता नहीं तीनों ही बड़ी व्याकुल हो रही है । एक दिन नारद जी मिल गये रानियों नू पूछा नारद आप तो त्रिलोकी में घूमते है कहीं आपने हमारे पति देखें हो तो बताइये ।

नारद ने कहा देवियों वह तो अनुसूया जी के घर पलना में झूल रहे है । यह सुनकर तीनों देवी अनुसूया जी के घर गई वहाँ अपने अपने पतियों को बाल रूप मे देखा । उसी समय अत्रि मुनि आये और बोले अनुसूया यह तुम्हारे आज कौन-कौन आई है ।

अनुसूया–स्वामी यह आपकी पुत्र वधू है । अगस्त्य–अहा बड़ी बहु बड़े भाग्य । लक्ष्मी पार्वती स्वरा बोली देवी अब आप हमको अधिक लज्जित मत करो हमारे पति हमको दे दो ।

अनुसूया ने जो जल के छींटा मारे वह तीनों देवता प्रगट हो गये । वह पतिव्रता अनुसूया आज श्री सीता के पास बैठी है । अत्रि एवं अनुसूया ने राम का और सीता का श्रृंगार किया । (सीताष्टक)

सीता ही देवी स्वरूपा हैं

सीता को ही अनेक नामों से पूजा जाता है यह जगजननी सीता ही साक्षात्भगवती का स्वरूप है । सभी बड़े-बड़े आश्रमों में कामना पूरक स्त्रियां एक सरोवर के किनारे पर अपने व्रत नियम के समय भगवती की पूजा करने गई । सुन्दर-सुन्दर गीत गाती सरोवर पर आई स्नान किये शुद्ध वस्त्र धारण किये मांगलिक श्रंगार से सुसज्जित होकर सुन्दर थाली में पूजन भोग सामग्री लेकर भगवती के मन्दिर में गई ।

आज रामजी भी वन भ्रमण करते उसी आश्रम के पास आ गये, समय अधिक हो गया था क्षुधा भी सता रही थी । उसी समय जंगल में एक स्त्री राम जी को मिली । श्री रामजी ने कहा देवी यहाँ कही भोजन की व्यवस्था हो सकती है । उस देवी ने कहा यहां पास के सरोवर के किनारे आज स्त्रियां व्रत पूजा करने आई है उनके पास बहुत सामग्री है वहाँ आपको सब कुछ मिल सकता है ।

राम जी ने कहा अच्छा तो तुम्ही थोड़ा कष्ट करो उन स्त्रियों से कहती जाओ कि यहां राम जी बैठे है और उनके भोजन का

समय हो गया है पर वहाँ जंगल में कोई सामिग्री नही है ।

वह देवी तत्काल उन पूजा करने वाली स्त्रियों के पास गई । और कहने लगी अरी देवियों देखो यहां राम जी आये है । उन्होनें मुझे तुम्हारे पास सूचना करने को भेजा है ।

वे सब स्त्रियां राजा रामचन्द्र जी के आगमन के समाचार सुनकर आनन्द में भर गई कहने लगी बहिन जल्दी भगवती का पूजन करके राम जी के दर्शनों को चलो आज उनका भोग लगावेंगी वह दिन हमारे बड़े सौभाग्य का है । सभी देवियाँ पूजन का थाल लेकर भगवती के मन्दिर में गयीं । पर क्या देखती है कि आज मन्दिर का दरवाजा बन्द है । बार-बार किवाड़ों को थपथपाने लगी अन्दर कौन है, किवाड़ खोलो अन्दर कौन है । भीतर से आवाज आती है कि मै सीता हूँ तुम सब यहां मेरा पूजन करने आई हो पहिले रामजी की पूजा करो इस समय वह पास में ही आये हुये है । यह सुनकर सभी देवियाँ अपना पूजन सामान लेकर रामजी के पास पहुंची श्रीराम के दर्शन करके सभी आनन्द विभोर हो गई और उनके पूजन को तैयार हो गई पर राम जो बोले देवियों मै अकेला भोजन नही करूंगा सीता के साथ ही भोजन करूंगा उस मन्दिर में जो सीता बैठी है उसे साथ लेकर आओ । वह स्त्रियां सीता से जाकर बोली यदि आप मन्दिर की सीता ही है तो हमारे साथ चलो कारण श्रीराम तुम्हारे बिना भोजन नही करेंगे । उसी समय मन्दिर का दरवाजा खुल गया और उसमें से साक्षात सीता निकली । वह उन देवियों के साथ राम के पास आ गई । अब सीता राम दोनों की उन देवियों ने पूजा की भोग लगाया बड़े भाव भक्ति से प्रसाद पाया । (सीताष्टक)

सीता के प्रति सरमा की भक्ति

सीता जी अशोक वाटिका में रहती थी । यह वाटिका रावण के अन्त:पुर की ही थी । इसमें रावण के परिवार के विश्वस्त जन ही आ जा सकते थे । वह वाटिका बारह मास एक सी रहती थी मानों यहां से फल पत्र गिरते ही नही बड़ी सुहावनी थी । जहां सीता जी रहती थी राक्षसी उनको घेरे रहती थी । पर वहां दो स्त्रियां ऐसी थी जो सीता जी को सान्त्वना देती ाी । एक तो त्रिजा जिसके स्वप्न प्रसिद्ध थे । दूसरी सरमा विभीषण की पत्नी । विभीषण राम भक्त थे इसी प्रकार उनकी पत्नी सरमा । विभीषण सब राज वैभव त्याग कर राम की शरण चले गये पत्नी को भी छोड़ गये उनको आत्म विश्वास था कि यहां रह कर तुमको सीता को हिम्मत बंधानी है । वह पतिव्रता सरमा भी जानती थी मेरे स्वामी अवश्य लौट-कर आयेगें । कारण विभीषण और हनुमान का जो समागम हुआ उससे श्री राम की सेना के पौरूष का ज्ञान हो गया था । सरमा के पास राम की सेना के समाचार भी आते रहते थे वह रामागमन की बाते सीता को सुनाती रहती थी । राम की शरण जाकर विभीषण ने जैसी राम की सेवा की थी वैसी ही सरमा ने सीता की शरण में आकर सीता की सेवा की । सीता भी सरमा के प्रेम से प्रभावित थी । बहिन सरमा लंका में एक तू ही मेरी हितैषिणी है । राम रावण का जब युद्ध प्रारम्भ हुआ उस समय रावण ने एक वृहद्-यज्ञ प्रारम्भ किया । एकान्त स्थान पर बैठकर मौन धारण करके यज्ञ किया था । श्रीशुक्राचार्य ने यह रावण को विधि बताई थी राजेन्द्र यदि यह यज्ञ तुम्हारा पूर्ण हो गया तब

तुमको मारने वाला कोई न रहेगा । तुम अमर हो जाओंगे । रावण ने इस कठिन व्रत का एकान्त में पालन किया वस्तुतः वह स्थान ऐसा था जहाँ कोई पहुंच नही सकता । रावण ने सभी प्रबन्ध कर लिये पर एक समस्या थी कि यज्ञ का धुँआ तो आकाश में उड़ने लगा उसे कौन छिपा सकता है । उस यज्ञ धूम्र को देखकर विभीषण ने राम जी को बताया । हे राम यह रावण यज्ञ कर रहा है कहीं इसका यज्ञ पूर्ण न हो जाय । विभीषण राजा अपने साथ बहुत बड़ी वानर सेना लेकर लंका में उस यज्ञ को नष्ट करने गये । पर उस स्थान का पता लगाना असम्भव था उसके द्वार का पता लगाना कठिन था बन्दरों के साथ श्री विभीषण जी पूरे भवन में चक्कर लगा रहे है कि कहीं मार्ग मिले पर कोई साधन नहीं मिला । इस प्रकार अपने पति एवं बानरों की भटकते देख वह सरमा आई और उसने इशारे से गुफा का दरवाजा बताया । उस दरवाजे पर एक बड़ी शिला फँस रही थी । जिसका उखाड़ना बहुत कठिन था । पर विभीषण के साथ अंगद जो थे वह तो पर्वतों के चूर्ण करने की शक्ति रखते थे । सरमा का इशारा पाकर अंगद ने उस शिला को उखाड़ कर फेंक दिया अब तो उनको गुफा का मार्ग दीखने लगा । सभी वानर उसमें घुस गये । उन्होंने जाकर देखा रावण एकान्त में बैठा है हवन कर रहा है मौन धारण किये है । वानरों ने यज्ञ नष्ट कर दिया पर रावण बोला नहीं । वानरों ने बड़ी मार दी फिर भी रावण नहीं बोला । वानर हताश हो गये । उन्होंने एक रास्ता निकाला कि वह मन्दोदरी को पकड़ कर ले आये । और रावण के सामने उसका बड़ा अपमान किया उसके वस्त्र फाड़ डाले । मन्दोदरी विलाप कर रही है । उसकी करुण पुकार सुनकर रावण ने मौन तोड़ा और बन्दरों को मार कर भगाया । सरमा ने कितना बड़ा काम किया कदाचित् रावण का मौन व्रत पूरा हो

जाता तब वह अमर हो जाता उसका जीतना कठिन था। यह सरमा को ही राम की विजय का श्रेय है। सीता जी कहती थी सखि मै तेरे अहसान को कभी नहीं भूलूँगी। (सीताष्टक)

सीता की उदारता

सीता जी एवं हनुमान जी विभीषण के राज्याभिषेक के अनन्तर पास पास बैठे है रामजी के आदेश से हनुमान सीता जी को लेने आये है। सीता जी भी हनुमान को देखकर प्रसन्न होकर बोली-हनुमान तुम क्या चाहते हो? हनुमान जी ने कहा माँ आपके आशीर्वाद से मुझे सब कुछ मिल चुका है। हाँ अब तो मै यह चाहता हूँ कि इन राक्षसियों को और समाप्त कर दूं।

माँ मैने इन सबके अत्याचार देखे है। जैसा-जैसा इन्होंने आपको कष्ट दिया है।

माँ रामजी ने उन राक्षसों को तो मार डाला जिन्होंने तुमको सताया था। पर सब से अधिक कष्ट देने वाली यह राक्षसी है। माँ जल्दी आज्ञा करो जो इनका सफाया हो जाय।

सीता जी ने कहा-हनुमान मै यह जानती हूँ कि तुम मेरे कैसे शुभ चिन्तक हो तुम मुझे कितना चाहते हो तुम्हारे इन वचनों से ही ज्ञात हो रहा है। पर पुत्र वैर का बदला वैर से ही लिया जाये यह कोई अच्छा सिद्धान्त नहीं है अपमान का बदला मान से लेना चाहिये तथा अपकार का बदला उपकार से लेना चाहिये पुत्र यह राक्षसी बचारी निर्दोष है इनका कोई अपराध नहीं है। यह जो कुछ करती थीं रावण के कहने से करती थीं वैसे यह सब मुझे चाहती थी। वीरपुत्र, जो सेवक होता है वह अपने मालिक की आज्ञा का

पालन करता ही है हनुमान–इन राक्षसियो के साथ मै बहुत दिन रही हूं । अतः इनसे मेरा बड़ा प्रेम हो गया है मेरा जी तो यह चाहता है कि यह राक्षसी मुझ से जो माँगे वह इनको देकर चलूं । देख हनुमान यह राक्षसियां अब मेरा वियोगभी नहीं सह सकेंगी । इनसे मेरा ऐसा सम्बन्ध बन गया है । इतना सुनकर हनुमान जी एक दम भाव विभोर हो गये सीता तुम धन्य हो । तुम्हारा जैसा हृदय मैने आज तक किसी का नहीं देखा मेरे राम दया के सागर है पर वह भी इन दुष्ट राक्षसों पर दया नहीं करते युद्ध में जो उनके सामने आया कि उसका अन्त किया । माँ तुम्हारा जैसा कोमल हृदय जो अपने साथ अपकार करने वाला उसका भी उपकार धन्य है । (सीताष्टक)

सीता की रामपादुका पूजा

सीता जी बाल्मीकि मुनि आश्रम मे रहा करती थी उनके दो बालक लव कुश बड़े पराक्रमी थे । कुश बड़ा था एवं लव छोटा था । पर लव का प्रभाव कुश से भी ज्यादा था । बड़े भाई की अपेक्षा छोटे भाई मे चंचलता, चतुरता आदि अधिक देखने में आई है एक दिन सीता जी महर्षि बाल्मीकि से कह रही थी कि अब मुझे आपके आश्रम मे रहते बहुत समय बीत गया अब आप रामजी के दर्शनों का उपाय बताइये । सीता जी की यह हृदय वेदना बड़ी करुणा जनक थी । महर्षि का भी हृदय भर आया तथा पास मे बैठे लव का भी हृदय भारी हो गया ।

महर्षि बाल्मीकि ने कहा सीता तुम नौ दिन का व्रत करो । तथा श्रीराम जी की पादुकाओं का कमल के पुष्पों से पूजन करो

तथा दूसरे दिन अठारह पुष्पों से पूजा करो एवं नवे दिन ८१ इक्यासी कमल पुष्पों से पूजा करो। तुमको शीघ्र ही राम के दर्शन हो जायेंगे। सीता ने कहा आपने तो बड़ा कठिन नियम बताया है। मै सब कुछ कर सकती हूँ। पर कमल पुष्प कहां से लाऊँगी आपके आश्रम में से पुष्प कहाँ है। हां राम की अयोध्या में तो हजारों पुष्प पैदा होते है। उसी समय लव बोला माता तुम क्यों चिन्ता करती हो अयोध्या से कमल पुष्प मै लाऊँगा। सीता-लव वहाँ के सरोवरों में बड़ा पहरा रहता है। वहाँ से एक पुष्प लेना भी दुर्लभ है।

लव-माता तुम पूजा प्रारम्भ करो मै पुष्प लाता हूँ। सीता जी श्रीराम की पादुकाओं का पूजन करने लगीं। लव ने प्रथम दिन नौ पुष्प लाकर दिये दूसरे दिन अठारह पुष्प लाकर दिये। इस प्रकार वह वीर बालक सात दिन तक तो पुष्प ले आया पर आठवें दिन विघ्न आ गया कुछ सैनिकों ने उसे घेर लिया। पर उस बालक ने अपना काम किया बहत्तर पुष्प लेकर सैनिको को परास्त करके आश्रम में आया। आज नौवा दिन है व्रत की समाप्ति का दिन है वह बालक पुष्प लेने गया। आज उसको सैनिकों ने रोका और कहा-बालक तू किसकी आज्ञा से यहाँ आया है तू किसका दूत है? वीर बालक लव बाला-मैं महर्षि बाल्मीकि का दूत हूँ उन्हीं की आज्ञा से आता हूँ। सैनिकों के विरोध करने पर भी उसने इक्यासी पुष्पों का चयन किया पर निकलना कठिन था वहां बड़ा संग्राम प्रारम्भ हो गया। उस बालक ने वीरों को वाण पर रख राम के पास फेंक दिया।

रामजी को जब पता चला कि बाल्मीकि के शिष्य ने बड़ी धृष्टता की है उसे दण्छ मिलना चाहिये।

श्रीराम ने एक पत्र लिखकर बाल्मीकि जी के पास भेजा। हे

महामुनि आपका एक शिष्य बिना आज्ञा के कमल पुष्पों को ले जाता था। हमारे सैनिकों के विरोध करने पर वह हिंसा पर उतारू हो गया। उसने यहाँ बड़ा विनाश किया है।

अतः उस अपराधी शिष्य को शीघ्र ही हमारे राज्य सभा में उपस्थित करें।

इस प्रकार का पत्र जब बाल्मीकि जो को मिला तब उन्होंने श्री राम जी को सूचा भेजी कि उस अपराधी बालक को लेकर मैं स्वयं आ रहा हूं।

सीता के नौ दिन के यज्ञ के बाद महर्षि बाल्मीक सीता एवं लव कुश को साथ लेकर राम के यज्ञ-स्थल में आ गये आज ही सीता को राम से मिला दिया तथा उनके दोनों पुत्र लव एवं कुश को राम को ही सोंप दिया। यह नव रात्रि व्रत का प्रभाव है। कमल पुष्प न होने पर गुलाब के पुष्पों से पूजा की जा सकती है। (सीताष्टक)

सीता का प्रेम

सुमित्रा नन्दन लक्ष्मण की पत्नी चित्रकला में बड़ी कुशल थी। एक दिन उर्मिला जी ने सीताराम का चित्र बनाया, वह चित्र भाग्य से सीताजी के हाथ लग गया। उन्होंने उस चित्र को रघुनाथ जी को दिखाया। रामजी उर्मिला जी की चित्रकला एवं उनकी भावुकता को देखकर बड़े प्रभावित हुये सीता भी बार-बार चित्र को देखकर आनन्द विभोर हो रही है। पर उर्मिला जी उस चित्र के न मिलने से बड़ी व्याकुल हो रही है। उर्मिलाजी की व्याकुलता देखकर सीता जी ने उसे अपने पास बुलाया और कहा-बहिन

उर्मिला दुःखी न होओ वह चित्र मेरे पास है। पर यह चित्र तुम्हारा अधूरा है इसे पूरा करो। बताओ इस वित्र मे लक्ष्मण जी को कहाँ बैठाओगी तथा भरतजी शत्रुघ्नजी का स्थान कौन-सा होगा। पहिले लक्ष्मणजी के बैठने का स्थान निश्चित करो। उर्मिलाजी यह सुनकर लज्जित हो गई तथा संकोच बस कोई उत्तर न दे सकी सीता ने कहा मैं ही तुमको सबके स्थान बताती हूँ। देखो लक्ष्मणजी को मेरे पास बैठाओ। और भरत जी को राम के पास बैठाओ। और शत्रुघ्न को लक्ष्मण के पास बैठाओ उर्मिला ने सीता जी के कथनानुसार उस चित्र को पूरा बना दिया। उस राम पंचायत की बड़ी शोभा थी चित्र में बड़ा आकर्षण था।

सीता ने कहा–बहिन यह चित्र अब भी अधूरा दीख रहा है। देखो भरतजी के नीचे माण्डवी बहिन को बैठाओ तथा शत्रुघ्न के नीचे श्रुत कीर्ति को बैठाओ। और तुम? इतना सुनकर उर्मिला लज्जित होकर नीची निगाह करके बैठी रही। पिता जी ने कहा तुम मेरे तथा लक्ष्मण के नीचे बैठो। और हनुमान को राम के चरणों में बैठाओ। उर्मिला ने सीता के आदेशानुसार उस चित्र को बनाया। यह रामजी के परिवार का चित्र सबको अच्छा लगा। तथा उर्मिला की सब प्रशंसा करने लगे। सीता का उर्मिला से बड़ा स्नेह था। उर्मिला ने अपने पति के साथ वन जाना पसन्द नहीं किया कारण उस तपस्विनी को अपने पति की रक्षा करनी थी। अन्यथा मेघनाथ की शक्ति-प्रहार से क्या लक्ष्मण जी बच सकते थे यह उर्मिला की तपस्या का ही प्रभाव है।

लंका में मेघनाथ की पत्नी सुलोचना क्या कोई साधारण पतिव्रता थी उसे गौरव था वह अपने सतीत्व धर्म से ही पति की रक्षा करेगी। दोनों ही पतिव्रता समान थी पर सुलोचना को अपने पतिव्रत धर्म का गर्व था।

उर्मिला एक-दम विपरीत थी उनके पास मान नाम की कोई वस्तु नही थी । वह तो सदा दूसरों का मान रखना जानती थी ।

यही कारण है कि लक्ष्मण जी की शक्ति से रक्षा हुई सुलोचना भी समझ गई कि मुझ से भी श्रेष्ठ पतिव्रता की शक्ति ने लक्ष्मण की रक्षा करली उर्मिला जी की भावना को देखकर ही कोई विद्वान उनके चरित्र का वर्णन करने से उनका अपराध होगा कारण वह कभी मान की इच्छा नही करती थी । सीताजी को भी अयोध्या में उर्मिला से बढ़कर और कौन हो सकता है यह सीता का प्रेम- (सीताष्टक)

गोपियों का उलाहना

भगवान श्री कृष्ण चन्द्र की माखन हरण लीला एक मनोहारिणी लीला है । आपने ब्रजवासियों के परम आनन्द के लिये की थी । सभी गोपियां यह चाहती थी कि श्याम सुन्दर मेरे घर आकर माखन खायेंगे सभी की आस पूरी करने के उद्देश्य से यह परम पावन लीला की थी । जब कभी श्रीकृष्ण गलियों में नही जाते तब व्रज गोपियां कहती नन्द का पुत्र आज कल क्यों नही आता उनके दर्शन के बिना बहुत-सी गोपी तो अन्न जल ग्रहण भी नहीं करती थी । एक दिन ब्रजवाला दु:खी होकर श्यामसुन्दर के दर्शनों को यशोदा की हवेली पर गयी । उस दिन उलाहने का बहाना बनाया । यशोदा के घर एक-दम इतनी गोपियों का आना आश्चर्य जनक था । आज यशोदा के घर कोई उत्सव भी न था । माता यशोदा ने कहा-आओ गोपियों मै तुम्हारा स्वागत करती हूँ । पर यह तो बताओ आज कैसे आना हुआ । उन गोपियों मे एक गोपी

ने बड़ी हिम्मत से उलाहना देना प्रारम्भ किया मां यदि तू कहे तो इस गांव मे रहे अन्यथा किसी दूसरे गाँव में चली जाय। यशोदा-बहिन ऐसी क्या बात है। गोपी-इस तेरे उत्पाती लाला ने गांव का गोदोहन बन्द कर दिया है।

यशोदा-क्यों? गोपी-यह तेरा लाड़ला बछड़ों को बिना समय खोल देता है। बछड़े सब दूध पी जाते है। सांय जब हमारे पति गाय दुहने आते है गायों के जब दूध नहीं मिलता तब वह हमको दोषी बताते है। कि तुम बछड़ों की भी देखरेख नहीं कर सकती। इस प्रकार घर-घर में क्लेश पैदा कर देता है।

यशोदा-बहिन जब यह ऐसे उपद्रव करता है तब इसे घर में मत आने दो इसे मार लगाया करो। गोपी-यशोदा जब तेरे पुत्र पर हम क्रोध करती है तब यह हंसने लगता है। अब बताओ इस प्रकार हंसते बालक पर कौन हाथ उठा सकता है।

मैया यशोदा यह बात तो सब हम सहती है पर तेरे इस पुत्र में एक बड़ा दोष आ गया है। यह चोरी करने लग गया है। मैया यह सुनकर आवेश में आ गयी अरी गोपी क्या इस गांव में एक तू ही साहूकारिनी है तेरे घर मेरा बेटा चोरी करने गया। आज तक किसी गोपी ने ऐसी पुत्र की निन्दा नहीं की। बता तेरे घर से मेरा नीलमणी क्या चुरालाया। तेरे कितने हार चुराकर लाया कितने कंगन चुरा लाया है। गोपी-यशोदा बहिन यह कृष्ण किसी के रत्नों की चोरी नहीं करता यह तो दूध दही की चोरी करता है। यशोदा-बस इतनी-सी बात पर मेरे पुत्र को चोर बताया है। बहिन तू मेरे घर से ले जाया कर जितना माखन मेरा नीलमणि तेरे घर खा आता है। और उससे दूना ले जाया कर। तू इतनी-सी बात पर उलाहना देने आयी है। गोपी-बहिन यशोदा देख तेरा नीलमणी तो कितना सा माखन खाता है उसका हमको दुःख नहीं है। यह

अपने साथ इस बीस मित्रों को रखता है । उनको खिलाता है । बन्दरों को मोरों को और भी सुन इससे भी मटकी में बचा रहता है । तो उस मटकी को भी फोड़ आता है । माता यशोदा अपने नीलमणि की चपलता समझी और हँसकर बोली बहिन वास्तव में यह तुम्हारा बड़ा अपराध करता है । अब तुम इसको संभालो अपनी चीजों को छिपाकर रक्खो । जब इसे कुछ नही मिलेगा तब इसकी आदत बदल जायेगी । बहिन यह तो तुम जानती हो कि मैंने जाने कैसे करके इस एक पुत्र को पाया है । इसे अपना समझो । इसे गाली मत दो यह तुम्हारे आशीष का ही भूखा है । यशोदा की बात सुनकर सभी गोपियाँ लज्जित हो गई । वास्तव में गोपियाँ तो निरन्तर आशीष देती थीं । उनको संसार में कृष्ण से प्यारा कोई नहीं था । उलाहना तो एक श्रीकृष्ण जी के दर्शन मात्र का था ।

(कृष्णाष्टक)

राधा कृष्ण विवाह

भगवान श्री कृष्ण चन्द्र ने जब विचार किया कि पृथ्वी का भार हरण करूंगा । उस समय श्री राधिका जी भी वृषभानु राजा की कीर्ति रानी के प्रगट हुई । यशोदा जी के श्री कृष्ण जन्म लिया ।

दोनों घरों में उत्सव बधाई होने लगी । नन्द जी अपने नीलमणि को गोद में लकर गायों के साथ जंगलों में भी जाते थे । कारण वह कृष्ण के बिना रह नही सकते भाद्रपद शुक्ल को अष्टवी में श्री राधाजी का जन्म हुआ । राधिका जी का प्रागट्य पहिले हुआ है । एक दिन नन्दराय अपने नीलमणि को लेकर गायों

की सेवा के लिये वन उपवन मे गये । उस दिन अचानक बड़ा भारी तूफान आ गया । आंधी चल रही है वर्षा हो रही है चारों ओर अन्धेरा छाया हुआ है । नन्द जी बड़े व्याकुल थे । हाय ! आज इस भयंकर दिन मे मै अपने नीलमणि को क्यों ले आया । उसी समय उस अन्धकार में बिजली की तरह प्रकाश करती हुई । वृषभानु राजदुलारी राधा आ गई तथा नन्द की गोदी से नन्द के नीलमणि को ले गई । उस देदीप्यमान शोभा मण्डप में आते ही श्रीश्याम सुन्दर किशोर रूप मे हो गये । दिव्य आसन पर दोनों विराजमान हुए । अग्नि स्थापना आदि सभी वैवाहिक विधी ब्रह्माजी ने कराई । उस समय अग्नि की सात परिक्रमा कराई है । जिसे सात भाँवर प्रसिद्ध है इसके तो बहुत से उदाहरण है । जब हमारी ब्रजभूमि में भगवान श्रीकृष्ण के विवाह में ब्रह्माजी वेद बनाने वाले सात परिक्रमा काते है तब ऐसी अवस्था में सात ही भांवर पड़नी चाहिये । अग्नि की सात परिक्रमा होती है । विवाह कार्य होने पर भगवान ने अपना वही बाल रूप धारण कर लिया तथा श्रीराधिका जी श्री कृष्ण को लेकर यशोदा जी के पास पहुंच गई । माँ अपना लाला सम्भारो उसी दिन से राधा भी मैया यशोदा के हृदय में समा गई । (कृष्णाष्टक)

गोपियों का गर्व

भगवान श्रीकृष्ण अपने मन्त्रों की रक्षा के लिये उनका गर्व हरण करते है । कारण गर्व भगवान की भक्ति में बाधक है । रास यज्ञ का आरम्भ हुआ जैसे ही मृदंग वीणा वादन हुआ गोपियों का उत्साह बड़ा वह चारो ओर से श्रीकृष्ण के दर्शन करती हुई बोली

अहा यह त्रिलोकी का ईश्वर हमारे बीच में नाच रहा है । हमने अपने वैभव में इनको बांध लिया है ।

ऐसा गोपियों का जहाँ भाव प्रकट हुआ कि तत्काल रास रासेश्वर उनके बीच से अन्तर्धान हो गये । गोपियों का सब गर्व नष्ट हो गया । पूरी रात टक्कर खाती रहीं कहीं श्याम-सुन्दर नहीं मिले । एक गोपी को श्री कृष्ण अपने साथ ले गये जिसका कि शुकदेवजी ने स्पष्ट नाम नहीं बताया । कारण यह सखि उनकी आराध्य देवता थी । दिन रात हृदय में इसका ही चितवन किया करते थे । शुकदेव जी कभी अपने आराध्य देवता का नाम जोर से नहीं लेते थे । महारास की कथा का समय यदि यहाँ वह राधा ऐसा कह देते तो उनको छ:मास की समाधी लग जाती थी । श्री राधे ऐसा कहते ही भाव विभोर हो जाते थे ।

आज यदि वह राधाजी का नाम उल्लेख करते तो समाधि लगने पर परीक्षित को कौन कथा सुनाता । अत: उसका भला सोचकर आपने एक सखि कहकर ही बोध कराया है ।

जिस सखि को लेकर श्रीकृष्ण अन्तर्धान हुये है वह राधा थी । राधा को भी रात्रि में श्रीकृष्ण के साथ रहने में गर्व हो गया । कि श्री कृष्ण सब गोपियों को छोड़कर मुझ अकेली को ही अपने साथ लाये है । उस समय राधाजी पर भी आप ने कृपा की जो उनको भी छोड़कर अन्तर्धान हो गये । अब तो गोपियों को बड़ा पश्चात्ताप हुआ रात भर प्रभु को कुंजो में ढूढ़ती रहीं पर श्याम-सुन्दर के दर्शन नहीं हुये । तब चन्द्रानना ने कहा आओ हम सब मिलकर श्रीकृष्ण की लीला करें । यदि किसी लीला को भूल जायेगी तो श्याम सुन्दर आयेगे यह रास लीला है ब्रज मण्डल की भगवत्प्राप्ति की प्रधान शिक्षा । गोपियों ने पूतना बध तथा शकटासुर वध गोवर्द्धनलीला, दामोदर लीला आदि लीलाओं का अनुकरण किया ।

इसका फल मिला कि रज में श्री कृष्णचन्द्र एवं राधारानी के चरण चिन्ह दीखने लगे। यह लीलाओ का तात्कालिक फल है। श्रीराधाजी के चरण चिन्हों को देखकर कह रही है। अरी बहिन यह किसके चरण है। इसका कोई बड़ा पुण्य है जो श्री कृष्ण हम सबको छोड़कर इसे अपने साथ ले गये। चन्द्रानना कहती है सखियों यह राधा के तुलसी पूजन का प्रभाव है इसने तुलसी देवी की बड़ी पूजा की है श्रीराधारानी की आराध्य देवता तुलसी है। एक दिन राधाजी के मन्दिर में साक्षात तुलसी अपने सिंहासन पर बैठी प्रगट हो गई। और कहने लगी राधा तुमने बहुत बड़ी साधना की है तुम्हारा श्रीकृष्ण से कभी वियोग नहीं होगा।

कृष्ण लीलानुकरण से जब चरण चिन्ह तो दीखने लगे पर श्रीकृष्ण से साक्षात्कार नहीं हुआ तब गोपियों ने गोपिका जीत का गान किया। उसमें श्याम-सुन्दर का सभी वैभव वर्णन किया तथा अपनी दशा का भी वर्णन किया।

अन्त में जब गोपियां हताश होकर रोने लगी तब भगवान प्रगट हो गये। गोपी बोली प्रभु आप कहां गये थे। श्री कृष्ण ने कहा गोपियों एक मगर मच्छ ने हंस मुनि को पकड़ लिया था उस भक्त की करुण पुकार सुनकर मुझे जाना पड़ा इस प्रकार परमात्मा की अनन्त लीला है। (कृष्णाष्टक)
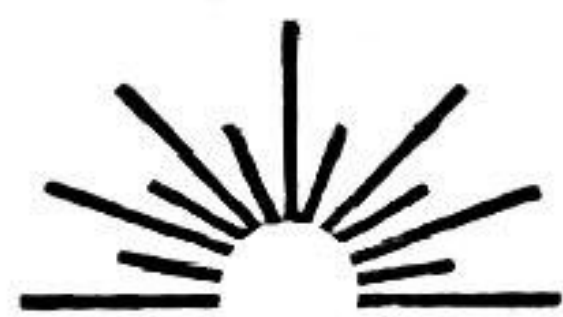
रास में शंकर

वृन्दावन बंशीवट यमुना तट पर रास बिहारी श्री कृष्ण चन्द्र ने जब रास यज्ञ प्रारम्भ किया। उस समय आपने वंशी बजाकर ब्रज नारियों को बुलाया था। उस समय वह वंशी नाद चारों ओर फैल गया सभी लोकों में वंशी की सुमधुर ध्वनि गूंज उठी। उस समय पार्वती जी अपना श्रृंगार कर रही थी। अचानक वंशी की ध्वनि सुनकर उनका मन वृन्दावन रास मण्डल के दर्शनों को मचल गया। वह सब काम छोड़कर चल दी। उस समय शंकरजी ने पार्वती को दखा उसकी अद्भुत छटा देखकर शंकर जी ने कहा देवी इस समय यह सज धजकर कहां के लिये प्रस्थान हो रहा है।

पार्वती जी ने कहा भोला नाथ वृन्दावन में रास हो रहा है मैं उसके दर्शन करने जा रही हूँ। शंकर जी ने कहा अच्छा तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।

पार्वती-भोलानाथ वहाँ कोई पुरुष नहीं जा सकता। पुरुष तो केवल श्री कृष्ण ही रहेंगे, कारण वहाँ रस रासेश्वरी राधा की आज्ञा से ही प्रवेश हो सकता है। शंकर जी ने कहा तुम रास रासेश्वरी राधा से स्वीकृति लेना और मैं रास रासेश्वर श्री कृष्ण से विकृति लेकर चलूँगा। पार्वती-नाथ वहां कृष्ण का कोई अधिकार नहीं है। दोनों ही चल दिये। रास मण्डप के दरवाजे पर ललिता एवं विशाखा द्वार रक्षा को खड़ी थी। उसी समय पार्वती जी आई वह सीधी मण्डप में चल दी। उनके सगं ही शंकर ने प्रवेश किया पर ललिता विशाखा ने छड़ी लगाकर उनको रोक

दिया । भगवान शंकर उदास हो कर लौट गये । श्री पार्वती जी उनकी उदासीनता देखकर दुखी हो गई । तथा लौटकर आई

बोली-भोलानाथ रास देखना चाहते हो । शंकर-देवी बड़ी इच्छा है । पार्वती-अच्छा आप गोपी का रूप-धारण करो मै आपका श्रृंगार करती हूँ । भोलानाथ ने गुणसुन्दरी का रूप धरण किया । अब तो वह सुन्दरी देव सुन्दरी जैसी दीखने लगी । पार्वती के साथ जब गुणसुन्दरी रास मण्डप के द्वार पर आई । तब ललिता विशाखा बोली बहिन यह तो अलोकिक रूप है ऐसी तो हमारे रास मे कोई सखी नहीं है । यह तो किस लोक से आई है । उसके तेज से आंखों मे चका-चौध आ गया और वह गुण सुन्दरी देखते ही देखते रास की डयोढ़ीयों को पार करती श्रीकृष्ण के पास पहुँच गई और तो कोई उन्हें पहिचान न सका पर रास रासेश्वर से कब छिप सकते है । श्रीकृष्ण ने कहा आओ गोपेश्वर सखि तुम्हारे कारण ही रास में विलम्ब हुआ है । अब इस रास का आरम्भ आपको ही करना है । शंकर जी बड़े लज्जित हो गये । अब में क्या करूं यदि मेरे बहरूपियापन का नाच थोड़ा भी रहस्य खुल गया तब मेरी क्या दशा होगी । यहां से निकलना भी कठिन है । पर क्या करूं प्रभु की आज्ञा है शिरोधार्य । श्री गुणसुन्दरी नाचने लगी कैसा अद्भुत नृत्य हुआ कि श्रीबृशभानु दुलारी राजा जो कि रास की मालिकनी थी यह भी चकित रह गई । फिर रास में श्रीकृष्णचन्द्र का नृत्य हुआ जिनसे श्याम रंग की वर्षा की चारों ओर मण्डप में श्यामता छा गई । फिर श्री राधारानी नृत्य को पध ारी उसने गौर रंग की वर्षा की सबको गौरा बना दिया । और तो क्या श्यामसुन्दर भी गौरे ग्वाल बन गये । फिर गोपियों का श्रीकृष्ण के साथ नृत्य हुआ इस प्रकार रास-मण्डल का उत्सव वृन्दावन वंशीवट यमुना तट पर हुआ । (कृष्णाष्टक)

मथुरा में श्री कृष्ण

मथुरा तो स्वर्ग से भी अधिक धन्य है। श्री कृष्ण चन्द्र ने सभी के दुःख हरण करने को यह अवतार लिया है। ग्याह वर्ष बाद भगवान श्री कृष्ण मथुरा लौटकर आये। मथुरा वासियों का कैसा उत्साह सभी जनता उनके दर्शनों को निकल पड़ी। पूरे नगर मे आपकी सवारी निकली। भगवान के साथ भगवान के व्रजवासी सखा भी थे। जब वह मथुरा जी की गलियों में गये तब भीड़-भाड़ कम हो गई तब श्रीकृष्ण को भी शान्ति मिली अब आपने अपना आगे का कार्य आरम्भ किया। नगर वासियों से पूछा भाई यहां ध नुष यज्ञ कहां हो रहा है पर किसी ने उस धनुष स्थल का पता नहीं बताया। नगर के सेठों ने भी राम कृष्ण का बड़ा पूजन किया। श्रीकृष्ण ने उन सेठों से भी पूछा कि धनुष कहाँ रक्खा है। पर सेठों ने भी आना कानी करदी कारण वह धनुष कंस का था। उसके द्वारा पूजा हो रही है। इन बालको का कैसा विचार है कहीं कोई अनिष्ट हो गया तो कैसे कहेगा किसने धनुष का पता दिया। इस भय से किसी ने धनुष का पता श्रीकृष्ण को नहीं बताया। प्रभु को मथुरा आकर अपने सभी काम करने थे। जब प्रभु मथुरा की गलियों में आगे बढ़े तब माथुरों के मुहल्ला में पहुँच गये। माथुरों के बालको की भीड़ लग गई भगवान श्री कृष्ण के सौन्दर्य को देखकर वह बालक भी बड़े आकर्षित हुये और उनके साथ लग लिये। श्री कृष्ण ने उन माथुर बालको को देखा। बड़े सुन्दर बालक गौर वर्ण तथा उन सुन्दर बालको को देखकर अपनी मध पुरी के उन गौरव शाली बालकों से बोले आओ मित्रो हमारे साथ

आओ बालकों ने भी अपना बड़ा सौभाग्य समझा वह माथुर बालक भगवान कृष्ण के आज सब सच्चे सखा बन गये ।

भगवान श्री कृष्ण उन बालकों से बोले मित्रो यहाँ धनुष यज्ञ कहां हो रहा है । माथुर बालक बोले कृष्ण यहां से वह स्थान दूर है अभी तो आप माथुरों के मौहल्ले में घूम रहे हो आओ हमारे साथ चलो हम धनुष स्थल पर ले चलेंगे ।

उन बालको का साहस देखकर श्रीकृष्ण और भी प्रसन्न होकर बोले तुम मेरे सच्चे साथी हो । श्रीकृष्णचन्द्र माथुर बालको के साथ धनुष यज्ञ स्थल की ओर चल दिये । मार्ग में एक धोबी मिला वह बड़े कीमती वस्त्र लेकर जा रहा था। भगवान के सखा बोले यह वस्त्र तो बड़े अच्छे है इनको देखकर मन चल रहा है श्री कृष्ण बोले–अच्छा आओ चले उस धोबी के पास श्रीकृष्ण ने उससे वस्त्र माँगे पर उस अभिमानी ने इनका अनादर कर दिया तब श्रीकृष्ण ने उसे मार दिया । बालक बड़े प्रसन्न हुये और उन वस्त्रों को लेकर पहनने लगे । वस्त्र तो कीमती थे पर वह कंस के पहरने के थे । अतः बालक उदास हो गये । यहाँ ऐसा लगता है कि ब्रजवासी सखाओं के वस्त्र तो श्री कृष्ण ने वायक द्वारा ठीक करा दिये पर माथुर बालको ने उनको वैसे ही पहन लिया । जिससे भगवान को बड़ी प्रसन्नता हुई । यही कारण है कि मथुरा में कंस के मेला पर माथुरी अनोखे वेश-भूषा में आते है । जामा पायजामा फेंटा कलंगी साफे आदि से सुसज्जित रहे है । भगवान् श्रीकृष्ण बालकों के साथ धनुष स्थल पर गये । धनुष तोड़कर दूसरे दिन कंस को मार उस समय माथुर उनके संग थे और इसी लिये माथुर कहते है । कंस मार मधुपुया आये कंस के घर के घबड़ाये । श्रीकृष्णचन्द्र की और माथुरों को मिलन समागम साथ में रहने का प्रमाणीक उदाहरण है । कंस को मारकर विश्राम किया इसलिये

यह एक विशेष तीर्थ बन गया । यही कारण है माथुरों और श्री कृष्ण का परस्पर प्रेम । (कृष्णाष्टक)

कृष्ण की गुरु भक्ति

एक दिन द्वारिकापुरी में भगवान श्री कृष्ण के गुरु दुर्वासाजी आये थे । द्वारिका की जनता ने भगवान श्रीकृष्ण के गुरु दर्वासा जी के दर्शन करे । द्वारकानाथ भी अपने गुरुदेव के दर्शन को आये गुरुजी के चरणों को पकड़ कर द्वारकानाथ ने कहा मेंरे मन्दिर को पवित्र करिये । दुर्वासाजी बोले हे कृष्ण हमको अपने घर मत ले चलो । कारण हमारा स्वभाव तेज है । हमारे द्वारा तुम्हारा कोई अनिष्ठ न हो जाये । द्वारकानाथ बोले गुरुजी आप कैसी बात बोल रहे है । मै तो आपका शिष्य हूँ । ऐसा कहकर द्वारकानाथ अपने गुरुजी को लेकर मन्दिर में चले गये । आज रुकमणी और द्वारकानाथ अपने घर में दुर्वासा मुनि को देखकर बहुत प्रसन्न हुए । और दोनों ने उनकी खूब सेवा की । एक दिन दुर्वासा मुनि ने रात्रि के बारह बजे द्वारकानाथ से कहा-शिष्य इस समय में खीर-पूरी का भोजन करूंगा । श्रीकृष्ण ने तत्काल एक खीर पात्र लाकर उनके सामने रख दिया कि गुरुदेव खीर का भोग लगाइये । गुरुजी को भी बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसी रात्रि में यह खीर कहाँ से ले आया । गुरुजी ने उस खीर में से दो चार ग्रास खाये और खाकर बोले कृष्ण इस खीर को तुम अपने सारे शरीर में लपेट लो । गुरु जी को बहुत आश्चर्य हुआ भगवान श्री कृष्ण को झूठी खीर शरीर में लपेटने पर जरा भी घृणा नही आयी । तब दुर्वासा जी ने कहा हे कृष्ण अब हम रात्रि में घूमने चलेंगे ।

भगवान कृष्ण ने अपना रथ मँगवाया और रात्रि में ही घूमने को चल दिये। और साथ में रुकमणी जी को भी ले लिया। थोड़ी दूर चलकर दुर्वासा जी ने का–कृष्ण हम इन घोड़ों के रथ में नहीं बैठेंगे। इन घोड़ों को हटाकर तुम दोनों घोड़ों के स्थान पर लग जाओ। द्वारकानाथ ने घोड़ों को हटाकर एक ओर रुक्मिणी को लगवा दिया एक ओर आप लग गये। दोनों ही इस रथ को खीचने लगें। उसी समय दुर्वासाजी ने कहा अरे कृष्ण तुमने हमारी आज्ञा का पालन नहीं किया। देखो तुमने अपने पैरों के तलुओं में खीर नहीं लगवायी। अब तुम्हारा सारा शरीर वज्र मय हो गया। पर ये तलवे कच्चे रह गये। यदि इस तलवे में खीर लगा लेते तो तुम्हें किसी का भय न रहता यह सब लीला शिष्य की परीक्षा के लिये दुर्वासा जी ने की और बात की बात में अपने शिष्य को वज्र मय बना दिया। गुरुदेव की ही कृपा का यह फल था कि महाभारत की लड़ाई मे अर्जुन के रथ में बैठे हुए श्री कृष्ण के शरीर पर वीरो के वज्र तुल्य अस्त्रों ने स्पर्श तक नहीं किया।

जब समय आया तब तक ऐ साधारण से व्याधका वाण आपके चरणों में लगा जिस से आपने भूलोक को त्याग दिया।

भगवान श्री कृष्णचन्द्र की सभी लीला अपार है। (कृष्णाष्टक)

पारिजात का लाना

द्वारकानाथ गृहस्थाश्रम में गृहस्थ सुख भोग रहे थे । उस समय नारदजी को बड़ा आश्चय्र हुआ कि अकेले श्रीकृष्ण सोलह हजार एक सौ आठ रानियों में कैसे रहते होंगे कारण स्त्रियों को प्रसनन रखना बड़ा कठिन है । यह जानकर नारदजी स्वर्ग से एक पारिजात का पुष्प लेकर द्वारकानाथ के मन्दिर की ओर चल दिये बड़ा मन्दिर रुक्मिणी का था । उसमें जाकर नारद जी ने देखा कि द्वारकानाथ और रुकमणि दोनों एक सुन्दर गलीचे पर बैठे हुए चौपड़ खेल रहे थे । नारदजी को आता देखकर श्रीकृष्ण एवं रुक्मिणी ने उनको नमस्कार किया । उसी समय नारदजी ने वह पारिजात का पुष्प द्वारिकानाथ को दे दिया । और द्वारकानाथ ने उस पुष्प को रुक्मिणिजी को दे दिया । वह लीला देखकर नारदजी वहां से उठकर सत्यभामा के मन्दिर में चल दिय । सत्यभामा जी ने नारदजी का बड़ा सत्कार किया । नारदजी बोले सत्यभामा इस घर में तुम्हारा आदर नही है । देखों मे एक पारिजात नाम का एक पुष्प लाया था । वह पुष्प द्वारकानाथ ने रुकमणि जी को दे दिया। यह सुनकर सत्यभामा जी क्रोध में भर गयी तथा कहने लगी नारद जी आज श्रीकृष्ण को आने दो मे यह अपमान नहीं सह सकती । नारदजी के चल जाने पर श्री कृष्णजी आये तब सत्यभामा जी ने कहा द्वारकानाथ हमारा इस घर में बड़ा अपमान हो रहा है । देखिये स्वर्ग से पारिजात नाम का पुष्प आया । और वह आपने रुकमणि जी को दे दिया भगवान श्रीकृष्ण जी के घर मे एक बड़ा क्लेश हो गया। उसे दूर करने के लिये भगवान बोले–सत्यभामा तुम एक

पुष्प के कारण दुखी हो मै तुम्हारे धर में पारिजात का वृक्ष लगवादूँगा । ऐसा कहकर सत्यभामा को साथ लेकर भगवान श्रीकृष्ण स्वर्ग की ओर चल दिये । वहां जाकर जैसे ही आपने वृक्ष को उखाड़ा उसी समय इन्द्र अपनी पत्नि की ललकार सुनकर ऐरावत हाथी पर बैठकर श्रीकृष्ण से युद्ध करने को चल दिया और बोला आप पारिजात को कहाँ ले जा रहे है । बस जैसे ही युद्ध प्रारम्भ हुआ उसी समय ब्रह्माजी आ गये । इन्द्र से आकर बोले हे देवराज इन्द्र जो श्रीकृष्ण सदा आपकी असुरों से रक्षा करते है उन्हीं से आप युद्ध करने जा रहे हो तुमको एक पारिजात के वृक्ष का भी सन्तोष नहीं है ।ब्रह्माजी के वचन सुनकर इन्द्र लज्जित हो गया और भगवान श्री कष्ण के चरणों में गिर गया । भगवान भी पारिजात नामक वृक्ष को लेकर क्षरका आये और उस वृक्ष को लेकर सत्यभामा के महल में पारिजात नामक वृक्ष लगा दिया है । भगवान बोले-अच्छा तो तुम्हारे घर में प्रतिदिन पुष्प आया करेंगे । यह सुनकर रुकमणी जी को सन्तोष हो गया । इस पकार भगवान की और रानियों मे भी विरोध पैदा हो गया कि रुकमणी सत्यभामा के घर में पारिजात आते है और हमारे घर में कुछ नही इस प्रकार के बढ़े असन्तोष को देखकर भगवान ने ऐसा किया कि सभी रानियों के घर मे पारिजात के पुष्प जाने लगे यह श्री द्वारकानाथ की गृहस्थ आश्रम की लीला है । (कृष्णाष्टक)

सत्संग की महिमा

कहते हैं एक काक और हंस की परस्पर मित्रता हो गई एक दिन हंस को काक अपने घर ले आया और एक सूखे हुए बबूल के वृक्ष पर बैठा दिया। जिसके आस-पास पड़े हुए किसी माँस और अस्थियों की दुर्गन्धि आ रही थी।

हंस ने कहा-भाई! मैं तो ऐसी गन्दी जगह पर एक पलभर भी नहीं ठहर सकता, हां यदि कोई तुम्हारा पवित्र स्थान हो तो वहाँ ले चलो। तब काक उसको राजा के प्राईवेट बगीचे में ले गया और जिस वृक्ष के नीचे बैठा राजा आराम कर रहा था उसी पर लाकर बैठा दिया और पास ही आप्र भी बैठ गया। हंस ने जब नीचे देखा तो उसे मालूम हुआ ही राजा साहिब बैठे हैं, और उनके सिर पर धूप आ रही है।

हंस का स्वभाव तो महात्माओं के स्वभाव जैसा होता है उसे दया आई उसने अपने दोनों पंख फैला दिये जिससे राजा के सिर पर छाया हो गई और वह सुख का अनुभव करने लगा।

परन्तु काक का स्वभाव तो दुष्टों जैसा होता है उसने अपने स्वभाव के अनुसार ऊपर से राजा के सिर पर विष्टा कर दिया। राजा ने मंत्री से कहा। मंत्री ने गोली चलाई काक तो झट से उड़ गया और हंस फड़फड़ाता हुआ नीचे आ गिरा प्राअण देता हुआ बोला-

नाऽहं काको हतो राजन! हंसोऽहं निर्मले जले।
नीच संग प्रभावेन जातं जन्म निरर्थकम ॥१॥

अर्थ - हे राजन ! जो मारा गया, सो (विष्टा करने वाला) काक नहीं हूं। में तो निर्मल जल में रहने वाला हंस हूं। परन्तु नीच (काक) की संगति के प्रभाव से मेरा जीवन बरबाद हो गया।

श्री रामचरित्र मानस के सुन्दर काण्ड में भगवान रामचन्द्र जी विभीषण के प्रति कथन करते हैं।

वर भल वास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देई विधाता।।

अर्थ हे तात् नरक में रहना वरं अच्छा है मगर विधाता दुष्ट का संग कभी न दे (क्योंकि दुष्ट का संग बारम्बार जन्म मरण और नरकादि के देने वाला होता है)

'होवन हैं गुण उत्तम नास कुसंगत ते सनाकोदि डर ही'

सम्पूर्ण ग्रन्थ और महात्मा पुरूष इस जीव को कुसंग से बचाने की बहुत प्रेरणा करते हैं। इसका कारण यह है कि कुसंग से मनुष्य का अधः पतन बहुत शीघ्र हो जाता है जैसे वृक्ष पर चढ़ने के लिए पुरूषार्थ की आवश्यकता होती है मगर गिरने में कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता एक मिनट में ही ऊपर से नीचे आ गिरता है।

इसी प्रकार से आत्मिक बल प्राप्त करने के और साधन सम्पन्न होने के लिए बहुत परिश्रम की आवश्यकता होती है, परन्तु कुसंगत से बहुत काल का किया हुआ परिश्रम और साधन मिनटों में नष्ट हो जाता है। विवेक और विचार का पता नहीं चलता कि कहां लुप्त हो गए और मनुष्य अधः से अधोगति को प्राप्त होता जाता है।

राधा का गोलोक

ब्राह्मादिक देवता जब पृथ्वी के भार उतारने के उद्देश्य से गोलोक गये और उनने गोलोक वासी श्रीकृष्णचन्द्र से प्रार्थना की आप चलकर के पृथ्वी के कष्ट का निवारण करें। भगवान श्रीकृष्ण ने जब देवताओं से कहा–आप सभी अवतार धारण करें। मैं मथुराजी में जन्म धारण करूंगा।

देवता जब चले गये तब श्री राधा जी बोली–नाथ आप अवतार धारण करेंगे। तब मै यहां कैसे रहूँगी। आपके बिना मै एक क्षण भी नहीं रह सकती। तब श्रीकृष्ण बोले–आप भी अवतार धार करो। श्रीराधा–नाथ मेरा मन गोलोक के सिवाय और कहीं नहीं लगता। जहाँ वृन्दावन है जहाँ गोवर्धन है जहाँ यमुना है वहीं मेरा मन लगता है। श्री कृष्ण बोले–अच्छा मै इन सब को पृथ्वी पर भेजता हूँ। तब तो मुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा पितृश्वरो की तीन मान-सी कन्या थी। मैना, रत्नमाला, कलावती।

मैना के पार्वती हुई और रत्नमाला के सीताजी उत्पन्न हुई। तीसरी कलावती सुचन्द्र तपस्वी थे उनने बहुत वर्ष तक साधना की तब ब्रह्माजी प्रसन्न हुये। ब्रह्माजी बोले सुचन्द्र जो तुम्हारी इच्छा हो सो माँगो सुचन्द्र ने कहा ब्रह्मन् मुझे मुक्ति दो। ब्रह्माजी जैसे ही वरदान देने को तैयार हुये कि सुचन्द्र की पत्नी कलावती आकर बोली ब्रह्माजी मेरे पति को मुक्ति मत दो मै इनके बिना नहीं रह सकती। हे ब्रह्मन् यदि आपने मेरे पति को मुक्ति दी तो मै आपको शाप दे दूंगी पतिव्रता कलावती के वचन सुनकर ब्रह्माजी डर गये और बोले-देवी तुम अपने पति के साथ जाकर देवलोक में निवास

करो । सुचन्द्र राजा अपनी पत्नी के साथ दिव्यलोक का आनन्द अनुभव करने लगे । समय आने पर राजा सुचन्द्र वृषभानु के रूप में प्रगट हुये और उनकी पत्नी कलावती कीर्ति के रूप में प्रगट हुई यहाँ इस जन्म में कीर्ति रानी के एक कन्या हुई जो राधा नाम से प्रसिद्ध हुई ।

इसी प्रकार नन्द राय को यशोदा पत्नी के श्री कृष्ण ने जन्म धारण किया ।

इसके पहिले वृन्दावन यमुना गोवर्धन भी आ गये । जहाँ राधा कृष्ण ने अपने भक्तों की कामना पूरी की । श्री कृष्ण श्रीराधा के परम प्रिय भक्तों का भी मण्छल पर अवतार हुआ । जिनने हरिनाम कीर्तन कर सहस्रों प्राणियों का उद्धार किया । सतयुक में बड़ी तपस्या करने से भगवत्प्राप्ति होती है । त्रेता में बड़े यज्ञ करने से भगवत्प्राप्ति होती है । द्वापर में पूजन यज्ञ करने से भगवत्प्राप्ति होती है । तथा कलियुग में तो केवल कीर्तन मात्र से ही भगवत प्राप्ति होती है । सर्वात्मा भगवान ने देखा यह कलियुगी कोई कठिन काम नही कर सकते अतः उनको एकसहज साधन बना दिया ।

वस्तुतः इस कलियुग में ही भक्तों के दर्शन हुये है और युगों मे ऐसे भक्त नही हुये एक पाँच सौ वर्ष के अन्तर्गत इस भूमि में अनन्त भक्तों का लोक कल्याणार्थ प्रागट्य हुआ है । (राधाष्टक)

राधा-मिलन

भगवान श्री कृष्णचन्द्र गोचारण को बरसाने की ओर गये। दिन भर गाय की सेवा करते रहे। साय समय होते ही बलराम बोले-श्रीकृष्ण अब गायों को लौटाओ। भगवान श्री कृष्ण बोले- भैया आज बरसाने होकर चलेंगे। गायों के झुण्ड सखाओं के समूह मुरली बजाते बरसाने के मार्ग से चल दिये। बरसाने के चारो ओर घरों में समाचार फैल गये कि आज नन्दलाल आ रहे है। सभी सखिया श्रीवृषभानु राजदुलारी राधा के साथ उनके दर्शनों को आई। देखा कृष्ण बलराम दोनों भैया सखाओं के साथ मुरली बजाते आ रहे है। उनके आगे भी गाय है-पीछे भी गाय है चारों ओर गायों से घिरे हुये हुये है। आज राधा कृष्ण का प्रथम मिलन हुआ है। श्री कृष्णराधा को देखते है तथा राधा श्रीकृष्ण को देख रही है। राधिकाजी की तो श्याम सुन्दर से बोलने की शक्ति नहीं पर श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे सुन्दरी तुम कौन हो तुम्हारे माता पिता कौन है तुम्हारा क्या नाम है हमने तुमको कभी ब्रज मण्डल में नहीं देखा। श्रीराधाजी बोली हे सुन्दर हम कभी अपने घर से बाहर नहीं जाती अपने प्रांगण में सखियों के साथ खेलती रहती है। हाँ हमने इतना सुना है कि इस ब्रज में नन्द के पुत्र ने बड़ा उत्पात मचा रक्खा है वह रात दिन चोरी करता है।

श्री कृष्ण उन बातों को हंसी में उड़ाने लगे आप हमको क्यों लांच्छन लगाती हो हम तुम्हारे यहां तो कभी चोरी करने नहीं आये दोनों का सुन्दर हास्य होने लगा। परम सुन्दर श्याम एवं सुन्दरी राधा का यहाँ प्रथम मिलन हुआ। ब्रज में एक यूथ गोपियों का

और भी रहता था उसकी स्वामिनी चन्द्रावली थी । यह भी राधा से किसी प्रकार कम नही थी जब चन्द्रावती ने सुना श्यांम-सुन्दर राधा से आकर मिले है वह ईर्ष्यावश दर्शनों को भी न आई । कुछ सखियों ने श्याम-सुन्दर से कहा आप चन्द्रावली के यहां चलें श्याम सुन्दर ने कहा अब तो देर हो गई है मैया प्रतीक्षा कर रही होगी ।

प्रभु अपने घर पधारे माता ने उनका नित्य भोजन आदि की व्यवस्था की माता बोली लाला अब तुम थोड़े घूम आओ पर प्रभु ने काह मां मेरी अब शक्ति घूमने की नहीं है । आज मै थक गया हूँ । माता ने ऊपर की अटरिया में आपकी शैया लगा दी । पर प्रभु को निन्द्रा नहीं आई । मैया ने काह लाला मै कहानी सुनाती हूँ । तब तुझे नींद आ जायेगी । हां माँ यशोदा-एक राम नाम का राजा था उसकी पत्नी सीता थी । एक दिन राम सीताके साथ जंगल में घूम रहे उस समय रावण ने आकर उनकी पत्नी सीता का हरण कर लिया । बस श्रीकृष्ण इस पुरानी कथा को सुनकर रावण क नाम सुनते ही उनको क्रोध आ गया तथा जोर से बोले अरे लक्ष्मण अरे लक्ष्मण मेरा धनुष ला । माता इस प्रकार की अपने पुत्र की घबराहट देखकर डर गई मेरा लाला रावण के नाम से डर गया । भगवान श्री कृष्ण भी बोले माता मुझे नींद आ रही है । माता सो गई पर प्रभु तो आज चन्द्रावली को प्रसन्न करने चल दिये रात का समय चन्द्रावली भी यह जानती थी कि प्रभु दर्शन अवश्य देंगे । उसने सभी पूजा की सामिग्री एकत्रित कर रक्खी थी ।

श्याम-सुन्दर द्वार पर आ गये बोले चन्द्रावली किवाड़ खोलो । चन्द्रवली बोली रात में कौन आया है । श्री कृष्ण ने कहां मै हूँ । घनश्याम! चन्द्रावली आप मधुसूदन भ्रमर है फिर तो किसी बगीचा में पुष्पों की गन्ध का आनन्द लें । श्रीकृष्ण अरी मैं चक्री

हूँ । चन्द्रावली-यदि चाक रखने वाले है तो बर्तन बनाइयेगा । श्रीकृष्ण नही भाई मै धरणीधर हूँ । चन्द्रावली फिर तो आप अपनी धरणी को समाले यहां रात में मेरे घर शेष के आने का क्या काम श्री कृष्ण अरी मै तो शेष सर्पों को भी मारने वाला हूँ । चन्द्रावली वह तो गरुण है । गरुण मेरे घर रात में क्यों आया है । इस प्रकार के उत्तरों से भगवान भी हैरान हो गये । अन्त में बोले मै मुकुन्द हूँ । अब चद्रांवली पर कोई उत्तर न रहा मुकुन्द तो एक श्रीकृष्ण है । मन्दिर का द्वार खुला । और श्री चन्द्रावली ने देखा श्याम सुन्दर उसके द्वार पर खड़े है । चन्द्रावली भगवान श्रीकृष्ण को देखकर उनके श्री चरणों में प्रणाम करके बोली प्रभु आज आप की बड़ी कृपा है चन्द्रावली ने श्यामसुन्दर का पूजन किया आरती की इस प्रकार ब्रज देवियों का परमात्मा श्रीकृष्ण के चरणों में दिव्य भाव था । (राधाष्टक)

राधा का कृष्ण लीला दर्शन

ब्रज सुन्दरियां राधारानी के पास बैठी श्रीकृष्ण की मनोहर कथाओं का वर्णन कर रही थी । उसी समय एक ब्रजदेवी बोली अरी राधे तुम सब उसी कृष्ण की कथा कह रही हो जो चोरी करता है और जोरी करता है तथा वर जोरी भी करता है । राधिका जी बोली बहिन न तो कविता करने लग गई है । चोरी जोरी वरजोरी कैसे प्यारे शब्दों का संग्रह किया है । अब इनका अर्थ भी बता दे सखी ने कहा-राधे अर्थ ही नही मै उनकी प्रत्यक्ष लीला भी दिखा सकती हूं । आज राधा की सखियों में बड़ा उत्साह पहिले चोरी देखेंगी ।

सखि ने कहा–राधे आज श्याम सुन्दर गोपाल गोप के घर चोरी करने जायेगे । सखियां राधजी को लेकर गोपाल के घर में छिप गई । आज गोपाल की बहु केबड़ी पूजा थी उसने घर में सब तैयारी की दूध दही माखन मधु फल पकवान सब सजाकर आंगन में रख दिया । और वह जमुना जल लेने चल दी । उसी समय श्रीकृष्ण ग्वाल बालों के साथ उस गोपी के घर में आ गये । मित्रों से बोले भाई आज तो सगुन से निकले हो देखो इसके घर सभी सामग्री रक्खी है । मित्र ने कहा–कृष्ण इनको मत छूना इसके आज बड़े देवता की पूजा है । श्रीकृष्ण ने कहा–भाई मुझ से बड़ा और कौन देवता है यह कहकर उसकी सभी सामिग्री अरोगी एवं नष्ट कर दी उसके आंगन में कूड़ा कड़कट भर दिया राधे देखी श्रीकृष्ण की चोरी लीला अब मै तुझे जोरी लीला दिखाऊँगी । एक दन विशाखा सखि राधा जी को साथ लेकर पानी के कलश लेकर यमुना तट पर गई । वहीं श्यामसुन्दर आ गये । उन देवियों से परिहास करने लगे । किसी की गगरी फोरी किसी की चूनर खेंची किसी के पात्र में कंकड़ भर दिये सखियों का मार्ग रोक दिया । उन सुन्दरियों ने बड़ी दीन बनकर अपना निकलने का मार्ग बनाया । राधे देखी कृष्ण की जोरी ।

अब सुन वरजोरी जो रात में भी चैन से नहीं सोने देता । मै रात्रि मै सो रही थी उस समय मैने स्वप्न देखा कि श्याम सुन्दर ने आकर मेरा आँचल पकड़ लिया है, मै कह रही हूँ अरे कृष्ण मेरे वस्त्र को छोड़ मुझे क्यों कष्ट दे रहा है मै जोर से चिल्लाई सो इससे मेरी सास जग गई और बोली अरी सुनन्दा क्या बड़बड़ा रही है बहिन राधे मेरा लज्जा के मारे माथा नीचा हो गया यह श्याम सुन्दर की बरजोरी है । राधाजी आज श्याम की इन पवित्र लीलाओं को सुनकर एक दम आनन्द विभोर हो गई । (राधाष्टक)

उद्धव सन्देश

उद्धवजी को द्वारकानाथ ने सन्देश देकर वृन्दावन भेजा था भगवान के परम स्नेही सखा जब वृन्दावन आये तब वह वहां की छटा देखकर मोहित हो गये । पहिले आप श्री कृष्ण श्री सुदामा आदि सखाओं से मिले तदन्तर नन्द यशोदा से मिले । दूसरे दिन गोपियों से मिलन हुआ । वह वृज नागरी उद्धवजी को कदली वन राधा निकुंज में ले गई । श्रीराधा ने उनका बड़ा सन्मान किया । उद्धवजी ने एक-एक पत्र सबको दिये जो श्याम सुन्दर ने भेजे थे । भगवान श्रीकृष्ण राधा रानी से कह गये थे कि मैं एक महीने में तुमको दर्शन देता रहूंगा । आज प्रभु के आने का दिन था । बात ही बात में रधा जी ने कह दिया आज श्रीकृष्ण आये है । ऐसा सुनते ही उद्धवजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह मै क्या सुन रहा हूँ मुझे तो आपने संदेश लेकर भेजा है और आप यहां बैठे है राधे मै भी श्री कृष्ण के दर्शन करना चाहता हूं । राधा उद्धव वहाँ किसी को जाने की आज्ञा नहीं है । उद्धव–एक बारमुझे श्री कृष्ण से मिला दो । उद्धवजी का विशेष आग्रह देखकर राधिका जी ने उद्धव के नेत्रों से पट्टी बँधवा दी कारण कि यह कही निकुज का मार्ग न देख ले । भीतर मन्दिर में उद्धव जी की आँखो की पट्टी खोल दी । उद्धव जी ने एक सिंहासन पर राधा कृष्ण को देखा । यह कुछ बोलना ही चाहते थे कि सखियों ने उनकी आँख की पट्टी बाँधकर उनको बाहर निकाल दिया । दरवाजे पर आकर पट्टी खोल दी उद्धवजी बोले ललिता मै एक बार श्याम सुन्दर से मिलूंगा ललिता ने विरोध किया कि यहाँ राजेश्वरी की आज्ञा के

बिना कोई नहीं जा सकता। इतना विरोध बड़ा कि एक दूसरे को शाप दे दिया। उद्धव ने काह तू मनुष्य लोक में फिर जनम लगी ललिता ने का उद्धव तू भी अन्धा होकर दुनियां में घूमेगा। फल यह हुआ दोनों ने जन्म लिया। ललिता तो एक बादशाह की दासी हुई। और उद्धव सूरदास के रूप में घमने लगे। ललिता दासी बड़ी सुन्दर थी तथा सांयकाल नवीन वस्त्र धारण कर दरवाजे पर खड़ी जो जाती थी। एक दिन महारानी ने पूछा दासी तू रोज कहां जाती है ललिता दासी ने कहां मै श्याम सुन्दर के दर्शन को जाती हूं। वह रोज गौ चराने जाते है। महारानी ने काह मुझे भी दर्शन करा दो पर उसे दर्शन न हो सके। एक दिन बादशाह का रानी से विरोध हो गया। रानी बड़ी उदास बैठी। ललिता दासी ने पूछा आज तुम उदास क्यों हो? रानी ने काह आज मेरा बादशाह से विरोध हो गया है। दासी ने कहा–महारानी! मै आपका विरोध दूर कर दूंगी। ऐसा कहकर ललिता दासी ने महारानी का अलौकिक श्रृंगार किया। जिसे देखकर बादशाह प्रसन्न हो गया और बोला यह श्रृगांर तुम्हारा किसने किया है। रानी–महाराज! एक मेरी हिन्दुमानी दासी की पुत्री है उसने यह श्रृंगार किया है। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ बोला उसे मेरे ामने लाओ। जिस समय ललिता दासी महाराज के सामने आई तो उसे देखते ही राजा मोहित हो गये। मोहित ही नहीं उनक शरीर में ज्वर पैदा हो गया। ऐसा भंयकर ज्वर जिसके कारण राजा का शरीर जलने लगा। अब तो सभी राज कर्मचारी व्याकुल हो गये। अनेक उपचार किये पर कोई लाभ नहीं हुआ।

महारानी ने ललिता दासी से कहा बेटी जबसे राजा ने तुझे देखा है तबसे उनके शरीर में ज्वर पैदा हो गया है। तुम्हीं कोई उपाय बताओ। ललिता दासी बोली–देखो, वह जो सूरदास घ्रमता

है उसे बुलाओ उसके पदों से इसका ज्वर चला जायेगा । राज कर्मचारी सूरदास जी को लाये । उनने आकर जो पद गान किये उनके सुनते ही बादशाह का ज्वर दूर हो गया तथा वह ललिता दासी भी उसी क्षण अन्तर्धान हो गयी । (राधाष्टक)

राधा का तुलसी पूजन

श्री वृषभानु राजदुलारी श्री राधा सदैव भगवान श्री कृष्ण के चरणों की चिन्तवन किया करती थीं तथा श्री कृष्ण के दर्शनों की लालसा प्रतिदिन बढ़ती जाती थी । एक दिन अपने हृदय के विचार चन्द्रानना नाम की सखी के सामने रख दिये । सखि कोई ऐसा उपाय है जो श्री कृष्ण के दर्शन प्राप्त हो । चन्द्रानना बोली सखि उसके लिये सहज साधना है कि आप तुलसी पूजन करें । राधाजी ने एक सुन्दर तुलसी थामरा बनवाकर विधिवत तुलसी जी की स्थापना करके पूजा आरम्भ कर दी । तुलसी पूजन का फल तत्काल मिलता है पर होनी चाहिये सच्ची भावना । आज राधिका जो के पूजन यज्ञ की समाप्ति थी कि श्री राधा क्या देखती है एक सुन्दरी उनके प्राँगण में आकर खड़ी हो गई । उस गोप सुन्दरी के सौन्दर्य को देखकर राधाजी एकदम लज्जित हो गई । कारण उस गोपी की आयु श्याम सुन्दर की सी थी । राधिका जी जैसा मन मोहन श्री कृष्ण के स्वरूप का वर्णन सुना करती थीं वैसी ही झलक इस सुसन्दरी के मुख-मण्डल पर थी ।

राधिका जी ने उसका सवागत सत्कार किया । बहिन तुम्हा कौनससा गांव है तथा तुम्हारा क्या नाम है । तुम्हारे रूप तो श्याम सुन्दर का सा प्रतीत होता है । सुन्दरी ने कहा बहिन मैं नन्दगांव में

रहती हूँ। यशोदा की हवेली के पास ही मेरा घर है। अब तो राध ाजी की और भी प्रीति बढ़ गई। बहिन तुम अब मेरे पास रहो। दिन भर परम प्रीति की बात होती रहीं। सांयकालहोते ही गोप सुन्दरी बोली–बनि मै जा रही हूँ। कल फिर आऊँगी। राधिका जी का मन उसे छोड़ने को नही था पर उसे तो अपने घर जाना। गोप सुन्दरी प्रतिदिन समय पर आती और समय पर चली जाती। एक दिन उसके आने में देरी हो गई जब गोप सुन्दरी आई तब पूछा बहिन आज इतनी देर से क्यों आई है। अरी बहिन तेरे आँखों में आँसू क्यों आ रहे है? क्या तेरा पति से या सास-ससुर से कुछ विरोध हो गया है। जल्दी बोल क्या बात है। गोप सुन्दरी नेत्रों के आँसू पोंछकर बोली बहिन आज वह ननद का नटखट मिल गया। उसने मेरा मार्ग रोक दिया। देख य मेरी चुनरी फाड़ दी। राधे तू उस कलूटा पर इतनी क्यों रीझ रही है? ग्वारिया है चोर है एक साधारण से गोप का बेटा है।

श्री कृष्ण की निन्दा सुनकर राधिका जी व्याकुल हो गई। गोप सुन्दरी तू कृष्ण की बुराई मत करे। गोप सुन्दरी बाली राधा यदि उस कृष्ण को मै यहाँ बुला दूँ तो तू मुझे क्या देगी। राध ा–बहिन मै तुझे सब कुद दे सकती हूँ। सुन्दरी–अच्छा तू अपनी आँख बन्द कर जैसे ही आँख बन्द की तथ आँख खोलते ही क्या देखती है कि गोप सुन्दरी के स्थान पर श्री कृष्ण चन्द्र खड़े है। वृषभानु राजदुलारी राधा श्री कृष्ण के चरणों में गिर पड़ी। आरती की श्रीकृष्ण भगवान की जै। (राधाष्टक)

राधा की प्रतिष्ठा

ब्रज मे सभी राधा कृष्ण के चरणों में दिव्य श्रद्धा रखते थे। पर भलाई बुराई भी लोक में चली आई है। श्री कृष्ण चन्द्र ने गिरराज धारण किया इससे भी बहुत से गोप ईर्ष्या करने लगे। और आलोचक कहते यह नन्द का पुत्र नही है। इसी प्रकार ब्रज में कुछ स्त्रियाँ भी आलोचक थी। उसमें जटिला प्रसिद्ध थी उसे यह गर्व था कि मेर समान कोई पतिव्रता नही है। वह राधा में लांच्छन लगाती थी। यह उस ग्वारिया कृष्ण के साथ घाटों पर घूमती फिरती है। यह भी कोई पातव्रत धर्म है। वह अपने परिवारी जनो को राधा से मिलने में विरोध करती थी। पर परिवार की स्त्रियाँ राधा में बड़ी श्रद्धा रखती थीं। अपनी सास एवं विराधियों से छिपकर दर्शन करती थी। गाँव में राधा को अपमानित करने को जटिला अनेक उपाय सोचा करती थी। गाँव भर में एक मात्र पतिव्रता होने का प्रभाव डाल दिया।

वृषभानु दुलारी राधा सोचती थी कि यह अकारण मुझसे क्यों द्वेष रखती है।

भगवान श्री कृष्ण भी राधा की वेदना को समझते थे। एक दिन श्याम सुन्दर एक रोगी का रूप बनाकर घर मे पड़ गये। मैया मेरे पेट में दर्द हो रहा है। माता यशोदा ने अनेक उपाय किये। बड़े-बड़े वैद्यों को दिखाया पर कोई लाभ नही हुआ। और वेदना बढ़ती जा रही है। उसी समय नारद मुनि एक वैद्य का रूप धारण कर आ गये। वह इस रहस्य का समझ गये। आकर बोले मैया मै इस दर्द को दूर कर दूँगा। मेरे पास दवा है। पर मुझे थोड़ा

जमुना जल चाहिये । मैया ने कहा–वैद्य जी जमुना जल की क्या कमी है वैद्य जी बोले कोई गांव की पतिव्रता स्त्री सौ छेद वाले कलश में पानी लेकर आये और मैया कच्चे सूत का फूल बना हो उस पर जाकर बीच जमुना से पानी लेकर आये । बड़ी कठिन समस्या मैया का घर स्त्री-पुरुषों से भरा हुआ था । स्त्रियां बोली यह काम तो जटिला ही कर सकती है उसे बुलाया गया वह गर्वीली बड़े नखरे से आई और कलश लेकर चल दी जैसे ही उसने सूत के पुल पर पैर रक्खा पुल टूट गया।

जटिला जमुना में गोता लगाने लगी । अरे कोई मुझे बचाओ लोगों ने जाकर उसे पानी में से निकाला अब यह काम कौन कर सकता है गांव में तो इससे बढ़कर कोई पतिव्रता नहीं । मैया यशोदा नन्द बाबा बड़े व्याकुल हो रहे है कोई मेरे लाढले को बचाओ ।

उसी समय वैद्य जी बोले उस राधा को भेजो यह काम वह कर सकती है । उसी समय राधिका जी सौ छेद के कलश को लेकर सूत के पुल पर गई तथा बीच यमुना से पानी लेकर आई । वैद्य जी ने उनको औषधि दी ।

भगवान कृष्ण की वेदना दूर हो गई । श्री राधा का मान बढ़ गया जटिला का मान गिर गया । (राधाष्टक)

मानिनी राधा का मान

भगवान श्रीकृष्ण महारास में जब अन्तर्धान हो गये तब गोपियों ने उनके प्राप्ति के अनेक साधन देखे अन्त में हताश गोपियां रोने लगी । गोपियों का रोना भगवान पर नहीं सहा गया । तब उनकी मण्डली में आप प्रगट हो गये । गोपियों को कितनी प्रसन्नता

जो कि शीघ्र ही अपने वस्त्रों का सिंहासन बना रही है कोई मुकुट सम्भाल रही है कोई आपको ताम्बूल अर्पण कर रही है। पर एक गोपी भृकुटी तानकर दूर जा कर बैठ जाती है। यह श्री राधा है जो सेवा कुंज मे एकान्त मं जा कर बैठी है अब रास आरम्भ कैसे हो बिना रास रासेश्वरी के सब सुना है। श्री बिहारी जी कह रहे है गोपियों तुम राधा को मना कर लाओ। गोपियाँ भगवान की आज्ञा पाकर राधे से विनय कर रही है। राधे अब मान तजो तुम्हारे बिना श्याम सुन्दर की मदन व्यथा को कौन दूर कर सकता है। देखो वह तुम्हारे बिना पुकार रहे है कि वृषभानु ननदनी कहां है वृषभानु नन्दनी कहां है करोड़ों गोपियों के होते भी उनकी विरह व्यथा दूर नही हो रही है।

राधिका जी का तो आज इतना मान बढ़ा है कि वह किसी की नही सुन रही। गोपियों ने श्याम सुन्दर से कहा प्रीु आप ही उस माननी को मना सकते। यह सुनकर श्याम सुन्दर सेवा कुन्ज में पधारे। मानिनी राधा ऊंचे सिहासन पर बैठी है और श्याम सुन्दर उनके पैरों में बैठे है यह भाव आपको सेवा कुंज में ही मिलेगा। श्याम सुन्दर-राधे अब मान तजो बहुत समय हो गया। तुम्हारी तो बड़ी भोरी प्रकृति है। मैंने तो तुम को कभी क्रोध करते नहीं देखा।

. देखो, अब रात्रि भी बहुत थोड़ी रहगई है और जो कुछ अपराध हुआ है। उसे क्षमा करो। मै। आपकी शपथ खाकर कहता हूँ। अब आप अपने प्रसन्न नेत्रों से हमको अभय दान करो। श्याम सुन्दर आज मानिनी राधा को मना रहे है। यह एक आपको अद्भुत मान लीला दिखानी थी। श्री वृषभानु किशोरी आज श्याम-सुन्दर की अति दीन अवस्था को देखकर उठकर खड़ी हो गई। दोनो ही राधा बिहारी रासमण्डल में पधारे राधारानी के आते

ही मानो रासमण्डल का श्रृंगार हो गया। बीच में राधा कृष्ण एवं गोल मण्डलों का रासमण्डल जिसमें दो गोपी एक कृष्ण दो गोपी एक कृष्ण कोई गोपी यह नहीं कह सकती कि श्याम-सुन्दर मेरे पास नही है। यह मान लीला है। (राधाष्टक)

कुरु क्षेत्र में श्री राधा

भगवान श्री कृष्ण चन्द्र ब्रज छोड़कर मथुरा गये तब से ब्रज वासियों को उनके दर्शन नहीं हुये। जब सूर्य ग्रहण का पूर्व आया तब भारत की प्रजा कुरुक्षेत्र स्नान करने को आई। यहाँ यादव पाण्डव ब्रजवासी सबका मिलन हुआ है। सबके सरभ्य आश्रम बने हुये थे। नगर में बड़ी चहल पहल थी सभी अपने अपने बन्धुओं से मिलकर प्रसन्न हो रहे है। एक दिन राज रानी रुक्मिणी जी द्वारका नाथ से बोली द्वारका नाथ यहां ब्रज मण्डल से गोपियां आई है पर सबके रूप एक से है इनमें वह राधारानी कौन सी है वह आपके बालक पन की जोरी जिसने आपको यह छल बुद्धि विद्या प्रदान की है। द्वारका नाथ अभी तक तुम राधा को नहीं पहचानी आओ चलो मेरे साथ आज राधा से तुम्हारा परिचय कराऊंगा। द्वारकानाथ ने गोपों के आश्रम में जाकर दूर से ही राधा रानी का सभा मण्डप दिखाया। देखो प्रिये वह जो छत्र के नीचे गोपियों के बीच में बैठी है। जिसका गौर वर्ण है, नीली साड़ी है, दिव्य आभरणों से शोभायमान है यही राधा है रुक्मिणी जो एक समय राधा रानी के पास आई। श्री राधिका जी ने उनका बड़ा सन्मान किया तथा अपने पास बिठाया एक सुन्दर गलीचा पर छत्र के नीचे बैठी दोनों ऐसी मालूम पड़ रही है मानो दोनों बहिन है। दोनों का एक सा

वर्ण एक सा स्वभाव तथा दोनों पर द्वारका नाथ की एक सी कृपा । राधिका जी के स्वभाव व्यवहार से रुक्मिणी जी बड़ी प्रभावित हुई । और उनने अपने हृदय का समस्त प्रेम अर्पण कर दिया । तथा बड़े आदर के साथ रुक्मिणी श्री राधा को अपने आश्रम में ले आई । आज प्रातः काल से सांय काल तक की विधिवत सेवा की तथा रात्रि में उनकी शैया लगाकर उनको शयन कराके श्री रुक्मिणी जी अपना नित्य नियम करने को द्वारका नाथ के पास आई (उनका नित्य नियम था कि द्वारका नाथ के चरण दावना) द्वारका नाथ राधा का स्वभाव बड़ा सरल है एकदम निरभिमान जो सेवा होती है उसी से प्रसन्न । द्वारकानाथ बोले–रुक्मिणी आज आपने राधा की बड़ी सेवा की है तथापि उसको अभी नींद नहीं आई कारण राधा बिना दूध के नहीं रह सकती । इतना सुनते ही रुक्मिणी जी बोली नाथ यह तो बड़ा अपराध हुआ । और दूध मेरा रक्खा है मुझे राधा को देने का स्मरण ही नही रहा । रुक्मिणी जी तत्काल उठकर गई । तथा दूध का गरम पात्र लेकर ही राधा के पास पहुंच गई । राधे यह लो दूध मुझ से बड़ा अपराध हो गया । राधा जी ने तत्काल दूध का पात्र ले लिया तथा वह गरम दूध ही पी लिया राधा जी ने सोचा यदि मैं यह कहूँगी इसको रख जाओ तो यह बुरा मानेगी । रुक्मिणी जी भी दूध पिलाकर जो श्रीकृष्ण की चरण सेवा को आई ता आपने देखा द्वारकानाथ के चरणों में फफोले पड़ रहे है । बड़ा आश्चर्य नाथ यह क्या हुआ आप कहां चले गये आप के चरणों में यह फफोले कैसे पडत्रे । श्रीद्वारकानाथ बोले–रुक्मिणी तुमने राधा को गरम दूध पिलाया है । राधा के हृदय में मेरे रचण सदा रहते है वह गरम दूध मेरे चरणों मे गिरा इससे फफोला पड़ गये । श्री रुक्मिणी जी राधा की भक्ति देखकर आश्चर्य करने

लगी। ऐसी सच्ची भक्ति किसकी हो सकती है । रुक्मिणी जी ने अपने हृदय का सर्वस्व राधा के अर्पण कर दिया ।

सुमति के घर में लक्ष्मी रहती है

एक सेठजी को रात्रि में लक्ष्मी जी ने स्वप्न दिया कि सेठजी अब मै तुम्हारे घर से जा रही हूँ । तुमको कुछ माँगना हो सो मांगलो । सेठ जी घबरा गये कहने लगे मै क्या मागूं अपने घर वालों से विचार कर लूं । लक्ष्मी ने कहा मै कल फिर आऊंगी सेठ जी ने दूसरे दिन अपनी पत्नी से कहा देवी आज रात को लक्ष्मी ने कहा है मै तुम्हारे घर से जा रही हूँ । कुछ मांगना हो सो मांगलो पत्नी ने कहा स्वामी लक्ष्मी से कुछ जेवर रकम व नगीना मांगलो जिससे अपना गुजारा होता रहेगा । इसी प्रकार अपने पुत्र सें पूछा पुत्र ने कहा पिता जी लक्ष्मी से कुछ जमीन जायदाद मागलो जिससे कि समय सकुशल निकल जायेगा इसी प्रकार पुत्रवधू से पूछा तब पुत्र वधू ने कहा पिता जी लक्ष्मी से यह सब चीजें मांगने से क्या लाभ जब वह जा रही है तो उससे तो केवल इतना ही माँगलो कि हमारे घर मे सुमति बनी रहे सेठ जी को यह बात पसन्द आई ।

दूसरे दिन सेठ जी ने फिर स्वप्न में लक्ष्मी को देखा । लक्ष्मी ने कहा सेठ जी बोलो क्या चाहते हो अब मै जा रही हूँ । सेठजी ने कहा माता यदि ऐसी ही बात है तो मुझे यह आशीष दो कि मेरे घर में सुमति बनी रहे । लक्ष्मी जी ने कहा सेठ जी यह सलाह तुमको किसने दी सेठ जी बोले मेरी पुत्र वधू ने ऐसा बताया है । लक्ष्मी ने कहा सेठ जी तुमने तो मुझे बाँध लिया । जहाँ सुमति रहती है वहीं मै निवास करती हूँ लक्ष्मी जाते जाते रुक गई । इसलिये

जिन घरों में सुमति रहती है, सुमति से काम करते है परस्पर प्रेम रखते है जहाँ कलह नही होता वहां लक्ष्मी निवास करती है ॥ १॥

विद्वान का सदा मान होता है आडम्बर कुछ समय का रहता है

विद्वान का सभी जगह मान होता है । आडम्बरी का रहस्य खुल ही जाता है । एक गांव में पण्डित जी रहते थे वह अपने आंकड़ों से पण्डिताई करते थे । वह पंचांग देखना भी नहीं जानते थे पर गाँव के प्रसिद्ध पण्डित थे । पूरा गाँव उन्ही से परामर्श करता था । उन्होंने एक लकड़ियों का पंचांग बना रक्खा था । १५ लकड़ी सफेद तथा १५ लकड़ी काली । बैठक में प्रतिदिन लकड़ियाँ बदलते थे । काली लकड़ी कृष्ण पक्ष में चलती एवं सफेद लकड़ी शुक्ल पक्ष में काम आती । १ लकड़ी से पड़वा २ लकड़ी से दोज ३ से तीज । कोई पूछता पण्डित जी आज क्या तिथी है । वह लकड़ी गिनकर बताते आज सप्तमी तिथि है । एक दिन उनकी पत्नी ने बैठक को स्वच्छ किया और सब लकड़ियाँ बाँधकर टांड़ पर रख दी । इधर गांव वाले आये पण्डित जी आज क्या तिथी है । पण्डित ने कहा भाई पत्रा देखकर बताता हूँ । घर के अन्दर जाकर देखा तो उनका पत्रा गायब । स्त्री से पूछा तो उसने जवाब दिया कि मैने तो सब लकड़ियां टाड़ पर पटक दी है । अब पण्डित जी का मन व्याकुल हो गया। आज क्या तिथी बतलाऊँ । गांव वाले पुकार रहे है मिसुर जी आज क्या तिथी है । मिसुर जी बोले भाई आज तो घपल चौथ है । महाराज घपल चौथ कैसी है । मिसुर जी–अरे भाई आज कुण्ड पर स्नान करो, दान करो बड़ा पर्व का

दिन है। गांव वाले मिसुर जी की इज्जत करते थे। उनके कहने से गांव में स्नान दान पूजा हवन होने लगे। कुण्ड पर मेला लग गया। पण्डित जी के घर दक्षिणा आने लगी। उसी गांव का एक लड़का काशी पढ़कर आया था। गांव के मेला को देखकर बोला भाई आज कौन सा पर्व है। गांव वाले बोले भाई आज घपल चौथ है। तू काशी पड़कर आया है तुझे नहीं मालूम। शास्त्री बालक बोला भाई घपल चौथ कोई पर्व नहीं होता। गणेश चौथ होती है, बगुला चाथ होती है। यह घपल चौथ किसने बताई है। हम तुम्हारे पण्डितजी से शास्त्रार्थ करेंगे। पण्डित जी ने सुना एक शास्त्री आ रहा है शास्त्रार्थ को हाय अब तो प्रतिष्ठा समाप्त हो जायेगी। पर गांव के पण्डित जी बड़े चतुर थे। वह मौन धारण करके बैठ गये। वह शास्त्री बहुत से गाँव वालों को लेकर आया। पर पण्डित जी का तो आज मौन है। शास्त्रार्थ कैसे हो। शास्त्री बोला हम इशारे ही स शास्तार्थ कर लेंगे शास्त्री ने पण्डित जी को एक उगली दिखई। पण्डित जी ने उत्तर में दो उंगलियां दिखाई दी। तीन उंगली दिखाई पण्डित-चार उंगलियां दिखादी। शास्त्री ने पांच उंगलियांदिखाई। पण्डित ने एक घूंसा दिखा दिया बस शास्त्रार्थ हो गया। शास्त्री भी वहां से चल दिया गांव वालों ने शास्त्री से पूछा आपकी पंडितजी से क्या बात हुई। शास्त्री -मैंने उनसे कहा ईश्वर एक है उसने उत्तर दिया जीव ईश्वर दो है। मैने कहा तीन गुण है। सत रज तम। उसने कहा धर्म अर्थ काम मोक्ष चार पदार्थ है। मैने उनको पाँच उंगलियों से कहा कि पंचतत्व है। उसने एक घूंसा दिखाकर कहा सबका दक ब्रह्म है। भाई यह इशारे की बात है।

अब गाँव वाले पण्डितजी से बोले मिसुरजी आपकी शास्त्री से क्या बात हुई। मिसुरजी ने कहा भैया वह छोकरा शास्त्री मेरी

एक आँख फोड़ने की कहता था मैंने दो उंगलियों से उसे समझाया मै तेरी दोनों आंख फोड़ दूंगा। उसने तीन उंगली दिखाई मैंने चार उंगली का तमाचा दिया था। उसने पांच उंगली का तमाचा दिखाया मैंने उसे घूंसा दिखाया सोई भाग गया। गाँव वाले आज समझ गये हमारे मिसुरजी मूरख है वह लड़का पण्डित है। धीरे-धीरे पण्डितजी की बात बिगड़ गई। गाँव में शास्त्री का प्रभाव बढ़ गया विद्या से ही मान मिलता है।

दोष एवं रोग कभी छिपते नहीं

मनुष्य अपने दोषों को छिपाता है पर वह छिप नहीं सकते। एक दिन अवश्य प्रगट हो जाते हैं। इसी प्रकार रोग भी नहीं छिपता।

एक सेठजी थे पर उनको रात्रि में रचोंध आती थी। इस संकोच में वह अपनी ससुराल भी नहीं जाते कारण कोई क्या कहेगा। एक दिन उनका नाई बोला लालाजी आप कभी अपनी ससुराल नहीं जाते। सेठजी ने कहा भाई हमको रात में रचौंध आती है। इस संकोच से नही जाते। नाई ने कहा मेरे साथ चलिये मैं आपको सावधानी से ले चलूंगा। नाई वास्तव में बहुत चतुर होते है। उनकी याददाश्त भी अच्छी होती है। अपने व्यवहारी जनों को शीघ्र जान जाता है। उसे लिस्ट की जरूरत नहीं होती। वह चतुर नाई सेठ जी को उनकी ससुराल ले गये। पहुंचते-पहुचंते सायंकाल हो गया। उनके ससुर साले सभी स्वगत करने को आये। जिस समय घर में घुसने लगे। उस समय वह चतुर नाई बोला। सेठजी आपके दरवाजे बहुत छोटे है। कुँवर जी समझ गये कि दरवाजे

छोटे है नीचे होकर चलना वह झुककर निकल गये । एक बार तो सेठ जी की रक्षा हो गई । अब उनको भोजन कराया गया । सेठ जी को रात में कम दीखता था । वह थाली की ओर पीठ करके बैठ गये । उनकी सालियाँ हँसने लगीं । उसी समय चतुर नाई बोला–बहिन जी हमारे सेठ जी शरमीले है । आप सब सामने से हट जाओ लड़कियाँ चली गई सेठ जी थाली की ओर मुंह करके भोजन करने लगे । उसी समय एक बिल्ली आकर सेठ जी की थाली में मुँह लगाकर खाने लगी । अब तो सब लड़कियाँ हँसने लगी । सेठ जी की समझ में कुछ नहीं आया उनको रात मे दीखता ही नहीं था । पर चतुर नाई बोला । बहिन हमारे सेठजी परोपकारी है । अकेले खाना नहीं खाते । घर पर तो पिल्ला, बिल्ली, चूहे सबको साथ खिलाते है । सेठजी समझ गये उसने बिल्ली को हाथ हिलाकर भगा दिया । चतुर नाई ने दूसरे बार भी सेठ की रक्षा कर दी । अब सेठजी की सास खीर परोसने आई थाली में खीर के गिरने के शब्द को सुनकर सेठजी ने समझा बिल्ली फिर आ गई उसने एक थप्पड़ मारा कि बार बार आ जाती है । अब तो सभी जोर-जोर से हँसने लगे । अरे कुँवर जी को दीखता नहीं है । चतुर नाई बोला–मैं कहाँ तक सहायता करूँ । दोष कभी किसी के छिप नहीं सकते । ॥ ३॥

गुरु को शिष्य के लिये अधिकारी जानकर ही दीक्षा देनी चाहिये

गुरु शिष्य को पहचान कर तथा शिष्य गुरु की दीक्षा का महत्व समझकर ही दीक्षा का अधिकारी होता है अन्यथा दोनों ही हास्य के पात्र बनते है।

एक किसान कही यह सुन आया था कि बिना गुरु दीक्षा के मनुष्य को कोई काम करने का अधिकार नहीं है। उसी दिन से उसकी लालसा बढ़ी कि कोई गुरु बनाना चाहिये।

एक दिन किसी आश्रम मे एक बृद्ध महात्मा के पास गया। और उनसे बोला आप मुझे गुरु दीक्षा दे दीजिये। महात्मा जी बोले भाई हम वृद्ध है कहीं जाने आने मे असमर्थ है तुम यही आकर दीक्षा ले जाना। किसान बोला महाराज आप मेरे घर पधारें। तभी मेरा घर पवित्र होगा। मै आपको कन्धे पर बैठाकर ले चलूँगा। आपको कोई कष्ट नहीं होगा। आप मुझे सामिग्री तथा दिन बता दीजिये। महात्मा जी ने परचा लिखकर दे दिया आज का शुभ दिन जानकर किसान महात्मा जी को घर ले आया। उसकी स्त्री ने घर मे सवा गज का चौका लगाया तथ सब सामिग्री सजाकर रख दी। गुरुजी ने कहा भाई जैसा हम बतावें वैसा ही तुम करते जाना। हम वृद्ध है हमसे अधिक बोला नही जाता।

पूजन प्रारम्भ हुआ महात्मा जी बोले अक्षतान् समर्पयामि। किसान देवता भी बोले अक्षतान समर्पयामि। महात्मा जी ने कहा हम जैसा कहें वैसा करो। किसान ने भी कहा–हम जैस कहें वैसा करो। महात्माजी–तुम हमारे अनुसार काम नहीं करते।

किसान-तुम हमारे अनुसार काम नही करते । महात्मा तुम बड़े मूर्ख हो । किसान-तुम बड़े मूर्ख हो । महात्मा जी को क्रोध आ गया। उसने किसान में एक तमाचा मार दिया । अब तो दोनों में गुत्थम गुत्था होने लगी । पूरे आँगन में दौड़ लगने लगी। किसान की पत्नी कहने लगी मुझे क्या मालूम थी कि पूरे आँगन में दीक्षा सली जाती है । मैंने तो सवा गज का ही चौका लगाया था । अन्यथा पूरे आंगन को लीपकर स्वच्छ रखती । दोनों स्त्री पुरुष यह समझ रहे है कि इसी प्रकार दीक्षा होती है । अन्त में महात्मा जी थक गये । उस जवान की क्या बराबरी कर सकते । उस शिष्य को गाली देते हुये अपनी लठिया लेकर चल दिये । हाय आज कैसे दुष्ट शिष्य से पाला पड़ा है । वह बेचारे पोथी पत्रा छोड़कर अपनी जान बचाकर अपने आश्रम की ओर चल दिये । किसान बोला मैं आपको कन्धे पर बैठाकर पहुंचा दूँगा । महात्माजी, अरे दुष्ट मेरे सामने से चला जा नहीं तो सिर फोड़ दूंगा । किसान अपने घर चला आया । अपनी स्त्री से बोला-देख गुरुजी सब सामान छोड़ गये है । तू सामान पहुचा दे बहुरानी सब सामान लेकर आश्रम में पहुँची । महात्मा जी तो जले भुने थके हुए बैठे थे । उस पत्नी ने जाकर प्रणाम किया । गुरुदेव यह आपका सामान रह गया था और आपका सीदा सामग्री भी लाई हूँ । गुरुदेवे तो ज़ले हुये बैठ थे । इसके पति ने आज हमारी पिटाई की है । उन्होंने दो चार लट्ठ उस बहुरानी के जमा दिये । वह बेचारी सामान रखकर आई और अपने पति से बोली मुझे क्या मालूम थी कि सीदा देते समय भी गुरु दीक्षा की मार पड़ती है । यह सब गुरु चेला की ना समझी का प्रभाव है । इसलिये पहले दोनों को दीक्षा का महत्व समझना या समझाना चाहिये ।।४।।

भक्ति से भगवान मिलते हैं

भक्ति के द्वारा बुलाये हुये भगवान एक नीच के घर भी चले आते है उनको इसमें संकोच नहीं कारण भक्ति प्रियोहि माधवः ।

एक समय उदयपुर नाथद्वारे में श्रीनाथजी के मन्दिर में कोई नये अधिकारी प्रबन्धक आये थे । मन्दिर की अच्छी व्यवस्था बनाई । पर एक दिन अधिकारी जी का ध्यान गया कि इस मन्दिर में रास्ते में चलते फिरते भी मनुष्य दर्शन करते है एक छोटी जाति की छाया पड़ने से मूर्तियां पुनः संस्कार के योग्य हो जाती है ऐसा सोचकर अधिकारी जी ने मन्दिर के दरवाजे पर एक दीवाल खड़ी करवा दी । जिससे कोई चलता फिरता न देख सके दरवाजे पर एक चांडाल की श्री श्रीनाथ जी में सच्ची निष्ठा थी । आज वह प्रतिदिन की भाँति बुहारी लगाने आया पर उसे आज श्रीनाथ जी के दर्शन न हो सके । भक्त चांडाल बड़ा विकल हो गया । हाय आज यह दरवाजा किसने रोक दिया है । आज बिना दर्शन के ही वह चल दिया । दूसरे दिन फिर आया । आज भी दर्शन नहीं हुये । इस प्रकार उसे सात दिन बीत गये । आज उसने सात दिन बाद भोजन बनाये । कढ़ी चावल तैयार किये तथा सामग्री परोसकर श्री नाथ जी का ध्यान करने लगा प्रभु जी आप आओगे तभी मै प्रसाद ग्रहण करूँगा । चाण्डाल की सत्य प्रतिज्ञा देखकर श्रीनाथ जी आ गये तथा उसने भोग लगाया । फिर तो हर्षित मन भक्त ने भी प्रसाद पाया ।

इधर दूसरे दिन प्रातःकाल मुखियाजी मन्दिर खोलकर सेवा में आये तो उनने देखा ठाकुर जी के मुख में तथा हाथ में कढ़ी लग

रही है। मुखिया जी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अधिकारी जी से कहा। अधिकारी जी आज श्रीनाथ जी के मुख से कढ़ी लगी हुई है। अधिकारी-मुखिया जी यह आपके कढ़ी का हाथ लग गया है यह आपकी ही असावधानी है। मुखिया-सरकार हमारे मन्दिर में सात दिन से कढ़ी का भोग नहीं आया इसमें हमारी असावधानी क्या है। अधिकारी- और कोई कारण हो ही नहीं सकता आप अपना दोष छिपा रहे है। इसका दण्ड भोगना पड़ेगा ।

मुखिया दुःखी हो गये यह अकारण कलंक लग रहा है। हे श्रीनाथ जी आप ही हमारे रक्षक है।

आज रात्रि में श्री नाथ जी ने अधिकारी को स्वप्न दिया अधिकारी जी इसमें मुखिया जी का कोई दोष नहीं है। एक मेरा भक्त चाण्डाल मेरे दर्शन करने आता था तुमने दरवाजा बन्द करा दिया। इसलिये उस भक्त ने बिना दर्शन के अन्न जल त्याग दिया था। तथा कल उसने ऐसी प्रतिज्ञा की कि बिना आपके प्रसाद के अन्न जल ग्रहण न करूंगा। उसने कढ़ी चावल का भोग लगाया तथा मै उसके घर प्रसाद लेने गया था इसी से मेरे हाथ एवं मुंह से कढ़ी लग गई है। मुखिया जी का कोई दोष नही है। उनको मत सताओ।

दूसरे दिन अधिकारी जी ने उस चाण्डाल का पता लगाया। एवं यथार्थ बात जान कर अधिकारी जी ने मन्दिर में एक झांकी झरोखा बनवा दिया जिसमें बाहर से भी भक्तों को दर्शन हो सका। अभी तक मन्दिर में ऐसी झांकी बनी हुई है। यह भक्ति का माहात्म है कि भक्ति के द्वारा बुलाये भगवान एक चाण्डाल के घर भी चल आते है भक्त सर्वस्व भगवान के साम्राज्य में जाति पाति का कोई विधान नही है। वहां भक्ति प्रियोहि माधवः ॥५ ॥

मन्त्री मुनीम मित्र सलाहकार योग्य होना चाहिए

परोपकार उत्तम धर्म है अच्छे मन्त्री राज की उन्नति करते है ।

एक राजा के मन्त्री बड़े परोपकारी थे । एक दिन एक गरीब दुखी: ब्राह्मण उनके पास आया । मन्त्री जी हमारा कोई काम लगा दो । मन्त्री जी ब्राह्मण की दयनीय अवस्था देखकर बोले तुम एक महीना मन्दिर में रामायण का पाठ करो । प्रतिदिन भोजन मिलेगा तथा समाप्ति पर दक्षिणा मिलेगी । ब्राह्मण मन्दिर में बैठ गया रामायण उनके सामने रख दी । वह पढ़े लिखे तो थे नही पुस्तक देखकर बोले राजा पूछेगा तो क्या कहेंगें । इसी प्रकार दूसरे पण्डित जी भी पाठक बनकर आ गये वह भी कुछ नहीं जानते थे वह पुस्तक लेकर बोले-तेरी गति सो मेरी गति अब तीसरे विद्वान् भी आ गये वह भी इन्हीं की कोटि के थे । कहने लगे भाई ऐसे कब तक निभेगी चौथे पण्डित भी समान कोटि के विद्वान् थे । वह भी पुस्तक लेकर कहने लगे जब तक निभै तभी तक सही । इसी प्रकार चारों पण्डित पाठ करने लगे ।

एक दिन महाराज ने कहा मन्त्री जी आज हम मन्दिर मे चलेंगे तथा पाठ सुनने की इच्छा है मन्त्री जी राजा को साथ लेकर मन्दिर में आये । प्रथम पण्डित कह रहे थे । राजा पूछेगा तो क्या कहेगे । ऐसा पाठ सुनकर राजा ने कहा मन्त्री जी यह कहां का प्रसंग है । सुबुद्धिमान मन्त्री ने कहा-महाराज यह लक्ष्मण जी का बचन है । जिस समय रामजी मारीच वध करने गये थे । उस समय मायावी मारीच ने कहा हा लक्ष्मण हा सीते ऐसा सुनकर सीताजी

ने लक्ष्मण से कहा कि तुम्हारे भाई राम पर कोई विपत्ति आई है आप जल्दी उनकी सहायता के लिये जाओ। श्री लक्ष्मण ने कहा मेरे भाई पर कोई विपत्ति नही आ सकती इस पर सीता जी ने क्रोध में लक्ष्मण से कठोर वचन कहे जिनको सुनकर लक्ष्मण जी चल दिये तथा मार्ग में कह रहे है। राजा पूछेगा तो क्या कहेंगे मैं सीता को छोड़कर आया हूँ। राम जी से क्या कहूँगा।

अब दूसरे विद्वान का पाठ सुना वह कह रह थे। तेरी गति सो मेरी गति। राजा ने कहा मन्त्री जी यह प्रसंग क्या है। मन्त्री जी ने तत्काल उत्तर दिया। राजन् यह राम सुग्रीव मिलने का प्रसंग है। राम की पत्नी को रावण ले गया है और सुग्रीव की पत्नी को बाली ने ले लिया। दोनों पत्नी वियोगी कह रहे है 'तेरी गति सो मेरी गति'। अब तीसरे पण्डित जी के दर्शन किये। वह कह रहे थे ऐसे कब तक निभैगी। यह भी राजा ने मन्त्री से शंका की पर मन्त्री ने समाधान किया। भगवन् यह रावण मन्दोदरी का सम्वाद चल रहा है। मन्दोदरी कह रही है स्वामी इस सीता को विदा करो देखो लंका में कैसी विपत्तियां आ रही है। ऐसे कब तक निभेगी।

अब चौथे पण्डित जी के वचन सुनकर राजा बोला मन्त्री यह क्या अस्त-व्यस्त बात कर रहा है कि जब तक निभे तभी तक सही। मन्त्रीजी ने कहा राजन् यह रावण का वचन है मैं सब कुछ जानता हूँ जब तक निभे तभी तक सही।

मन्त्रीजी ने अपनी चतुराई से ब्राह्मणो की बात साध दी अन्यथा ब्राह्मणों का अपमान होता दक्षिणा देकर मन्त्री ने उनको विदा किया। अच्छे पुरुष सबको निभा लेते है। अच्छा मन्त्री राज की बाग डोर सम्भालता है। तथा दुष्ट मन्त्री राज्य को डुबा देता है ॥६॥

स्वतः आई हुई वस्तु का अनादर न करे

बगीचा में एक बाबा रहते थे उनक पास बहुत से नागरिक अपनी अपनी कामना लेकर आते थे । महात्मा जी उनको साधन बताते थे । बहुतो की कामना पूरी होती थी । एक दिन एक सेठ जी आकर बोले बाबा मेरे कोई सन्तान नहीं है । बाबा ने काह तुम ५०० ब्राह्मण जिमाने की प्रतिज्ञा करो तुम्हारे सन्तान होगी । सेठजी ने प्रतिज्ञा की दैव संयोग से एक पुत्र हुआ तथा सेठ जी ने ५०० ब्राह्मण जिमाने का आयोजन किया । सेठ जी ने कहा बाबा आप भी मेरे घर भोजन को पधारें । बाबा ने कहा बच्चा हम किसी के यहाँ भोजन करने नहीं जाते हम तो केवल कन्द मूल खाकर अपना गुजारा करते है । सेठ जी ने बहुत कुछ अनुनय विनय करी पर बाबा ने स्वीकार नहीं किया । अब ब्राह्मण भोजन का दिन आया ब्राह्मण भोजन करके बाबा के बगीचा में कहने लगे बाबा आज तो आपके चेला ने बड़े स्वादिष्ट भोजन बनाये है । ऐसा सुनकर बाबा के मुँह में पानी भर आया । उसी समय उस समाज में सेठजी एक थाल में सभी सामिग्री लेकर आये । कहने लगे बाबा आप थोड़ा सा प्रसाद यहीं लेलो यदि सेठजी एकान्त में आते तब तो बाबा रख लेते कारण उनका मन लोलुप था । पर वह तो सबके सामने लाया है जिनके सामने बाबा त्याग दिखा रहे है । उसी समय बाबा ने कहा भाई यह सब हमारे भोजन के पदार्थ नहीं है हम तो कन्द मूल फल खाते है सेठजी ने बहुत प्रार्थना की पर बाबा ने उसे स्वीकार नही किया सेठ अपना थाल लेकर चला

गया ।

कुछ समय बाद चेला आकर फिर भोजनों की प्रशंसा करने लगे । अब बाबा का मनुआ नहीं रुका वह एक कंबल ओड़कर रात्रि के समय सेठजी के घर चल दिये । इस समय मुझे कोई न देखेगा । भीड़ में बैठकर भोजन कर आऊँगा । दरवाजे पर पहुँचते ही देखा उनके परिचित नागरिक आ रहे है । बाबा उनसे अपना मुँह छिपाने को पीछे चल दिये । पर भाग्यवश वहाँ एक हौज था । अन्धेरे मे बाबा उसमें गिर गये । उस समय बड़ी भीड़ लग गई भाई कौन गिर गया सेठ भी आ गये । देखा कि यह तो हमारे बाग वाले बाबा है । हाय बाबा आप यहाँ क्यों आये । मै तो आपके लिए भोजन लेकर आपके घर भी गया भी । आपके यहाँ आकर ऐसा अपमान क्यों कराया । जो पुरुष स्वतः प्राप्त वस्तु का अनादर कर देता है तथा फिर उस वस्तु की चाहना करता है उसका मान घट जाता है इसलिये आई हुई वस्तु का अनादर नहीं करना चाहिये ।।७।।

विद्याभ्यास से दोष दूर हो जाते है

"शास्त्रों के अध्ययन से मनुष्य के दोष दूर हो जाते है"

एक विद्वान ब्राह्मण के पुत्र ने छोटी अवस्था में ही अच्छी विद्या प्राप्त करली थी सभी उसकी योग्यता को देखकर प्रभावित होते थे । पर उस बालक में एक दोष था कि वह चोरी करता था । पिताजी ने बड़ी शिक्षा दा पर बालक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । तब तो पिता जो ने उसको धर्मशास्त्र पढ़ाना आरम्भ

किया । वह उन कठिन ग्रन्थों को भली प्रकार मनन करने लगा । धर्म श.ास्त्र के ग्रन्थों में सभी अपराधियों की सजा लिखी हुई है बालक ने सबका अध्ययन किया फिर भी चोरी की आदत बनी रही । एक दिन वह पण्डित चोर राजमहल में चोरी की भावना से घुस गया । महाराज का विशाल भवन रत्नजडित स्तम्भों से सुशोभित था । सभी सामिग्री सुवर्ण रत्नमय थी वहां दिव्य आवरण भी देखे । वह अमूल्य थे जिनके मिलने पर चोरी करने की जरूरत नहीं होती पण्डित चोर जिस चीज को उठाता है उसमें उसे दोष दीखने लगे । सोना चुराता हूँ तो रोरव नरक मिलेगा रत्न की चोरी करता हूँ तो कालसूत्र मिलेगा । चाँदी में भी दोष है वस्त्र हरण करने से भी नरक वास मिलता है । धान की चोरो भी अशुभ है इस प्रकार उस बालक को धर्मशास्त्र पढ़ने से बड़ा ज्ञान मिल गया । वह बालक राजा की शैया के पास पहुच गया । महाराज सो रहे थे वह राजा भी विद्वान था । उसने दीवाल पर एक श्लोक लिखा था उसके तीन चरण तो बना लिये पर चौथा चरण शेष रह गया । वह उसी अवस्था में सो गया । श्लोक में लिखा था । मैं एक राजा हूँ प्रजा पर शासन करने वाला हूँ मेरा राज्य भी बहुत बड़ा है मेरे यहां उत्तम कुल के हाथी है घोड़ा रथ सेना रत्न वैभव से सम्पन्न हूँ । चोर पण्डित इस तीन चरण के श्लोक को पढ़कर उसके चौथे चरण की पूर्ति करने लगा ।

"सम्मीलने नयनयौ नंहि किंचदस्ति"

इसका यह अर्थ है राजन् यह इतना बड़ा आपका वैभव नेत्र बंद होने अर्थात् मरने पर सब यहाँ ही रक्खा रह जायेगा ।

ऐसा लिखकर वह बालक चल दिया पर चोरी की जो आदत थी कुछ लेकर ही चलना चाहिये राजमहल के कोने में कुछ छिलका पड़े हुये थे वह उठा लिये कारण धर्मशास्त्र में छिलकों की

चोरी का कोई विधान नही लिखा ।

प्रात: होते ही राजा ने अपना श्लोक देखा तो वह पूरा बन गया । बड़ा आश्चर्य हुआ आज मेरे भवन में कौन आया है । द्वारपालों को बुलाया तुम सब कहां रहते हो मेरे घरके अन्दर चोर आ गया । द्वारपाल कहने लगे महाराज यहाँ कोई चोर नहीं आया आपकी सभी वस्तु सुरक्षित है । राजा ने कहा भाई चोर आया है तथा पण्डित चोर आया है । द्वारपाल उसी विद्वान बालक को पकड़ लाये । राजा ने कहा तुम मेरे घर में आये थे । चोर ने कहा जी आया था और आपके श्लोक की पूर्ति कर गया । आया तो चोरी की भावना से पर पिताजी ने जो धर्मशास्त्र पढ़ाया है उसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि किसी वस्तुके हरण करने की हिम्मत नहीं हुई ।

पर कुछ दाल के छिलके उठाकर ले गया कारण दाल के छिलके की चोरी का कहीं कोई विधान नही पढ़ा । राजा उस विद्वान बालक की सत्यता पर प्रसन्न हो गये तथा उस बालक को वैभवशाली बना दिया ॥८॥

गुरु निन्दा से नरक मिलता है

गुरु का कभी अपमान न करे अन्यथा नरक मिलते है पहिले सोचना चाहिये किसको गुरु बनाया जाय । गुरु दीक्षा लेने के अनन्तर यदि कोई गुरु में दोष दीखें तो उनकी निन्दा नहीं करनी । उनके द्वारा जो मन्त्र प्राप्त हुआ है उसका निरन्तर स्वाध्याय करे । गुरु निन्दा करने से नरक मिलता है ।

एक समय नारद जी बैकुण्ठ लोक मे गये । बैकुन्ठनाथ से कहा-मैं आपका पूजन करुंगा । बैकुन्ठ नाथ ने कहा-नारद जी!

आपके गुरु कौन है । नारद ने कहा आप ही मेरे गुरु है आप ही मेरे स्वामी है । भगवान ने कहा नारद मै किसी का गुरु नही हूँ । आप मेरी पूजा करना चाहते है तो पहिले गुरु दीक्षा लेकर आओ । नारद जी ने कहा भगवन् अब मै किसके पास जाऊँ मुझे यहां कौन मिलेगा । बैकुण्ठ नाथ ने कहां नारद जी देखो बैकुण्ठ के दरवाजे पर जो कोई प्रथम मिले उसको अपना गुरु बनाकर आना । नारदजी बैकुण्ठ के द्वार पर गये वहां उनको एक किसान मिला जो कि हल लेकर खेत पर जा रहा था । उसी समय नारदजी ने उसको प्रणाम किया और कहने लगे आप मेरे गुरु है । किसान बोला भाई मै किसी को चेला नहीं बनाता आप किसी विद्वान के पास जाओ उनको अपना गुरु बनाओ । नारद जी ने कहा मुझे भगवान बैकुण्ठ नाथ की आज्ञा है कि जो द्वार पर मिले उसे गुरु बनाना अतः आप मेरे गुरुदेव है । किसान ने भी अपना पीछा छुड़ाया अच्छा भाई मै तेरा गुरु और तू मेरा चेला बाबा मेरा पीछा छोड़ मुझे खेत पर जाना है नारद मुनि किसान को गुरु बनाकर आये । नारायण ने पूछा नारद गुरु मिल गये । नारदजी बोले हाँ प्रभु गुरु तो मिल गये पर ऐसे ही मिले । बैकुण्ठनाथ को बड़ा दुःख हुआ कहने लगे नारद तुम गुरु निन्दक हो इसलिये तुम चौरासी लाख नरक योनियाँ भोगो । अब नारद को ज्ञान हुआ कि मैने गुरु निन्दा की है इससे प्रभु ने मुझे शाप दे दिया । नारद जी भगवान के चरणों में गिरकर बिनती करने लगे नाथ! मुझे उबारो मै इन नरको को कहां तक भोगूँगा । बैकुन्ठनाथ ने कहा, नारद जी मै कोई उपाय नही जानता नरकों से उद्धार करने वाले तो एक गुरु है उनकी सात्वकी वाणी से ही उद्धार हो सकता है और कोई साध् ान नही है । हताश नारद को गुरुदेव के पास जाना पड़ा । और उस किसान गुरु के चरणों मे गिरकर बोले गुरुजी मुझे बचाओ

बैकुण्ठनाथ ने मुझे शाप दे दिया है कि नरकों में गिरो।

यह किसान गुरु ने भी नारदजी को अपनी यथा योग्यता से एक उपाय बता दिया नारदजी प्रसन्न हो बैकुन्ठनाथ के पास पहुंच गये। भगवान ने पूछा नारद जी गुरुजी मिल गये। नारद हाँ प्रभुजी गुरुदेव ने कहा है कि पहिले बैकुन्ठनाथसे चौरासी लाख नरकों के नाम लिखवाकर लाओ। भगवान बड़े आश्चर्य में पड़ गये यह गुरु बड़े विचित्र मिले है। आज तक किसी ने इसका साहस नही किया। फिर भी देखना है इसमें क्या रहस्य है। एक बार तो भगवान ने कहा नारद मै इतने नरकों के नाम कहां तक लिखूँगा। नारद-प्रभु मै तो नरक भोगूँगा आप लिख भी नहीं सकते। उसी समय बैकुन्ठनाथ ने एक बड़े कागज पर नरकों के नाम लिख दिये। नारद मुनि उस कागज को बिछाकर उस पर लोट लगाने लगे। भगवान-नारद यह क्या हो रहा है। नारद-प्रभुजी नरक भोग रहा हूँ जो आपने बताये है और कुछ बाकी नरक रह गये है उनको और लिख दीजिये। ऐसा सुनकर बैकुण्ठनाथ को हँसी आ गई समझ गये यह उन ग्रामीण गुरु की सलाह है। बैकुण्ठनाथ-नारद जी आज तो मै। आपके अपराध को क्षमा किये देता हूँ पर आगे याद रखना गुरु निन्दक की गति नहीं है सदैव गुरु का मान करों इससे मै प्रसन्न रहता हूँ। गुरुदेव में तथा मुझमे कोई अन्तर नहीं है ॥९॥
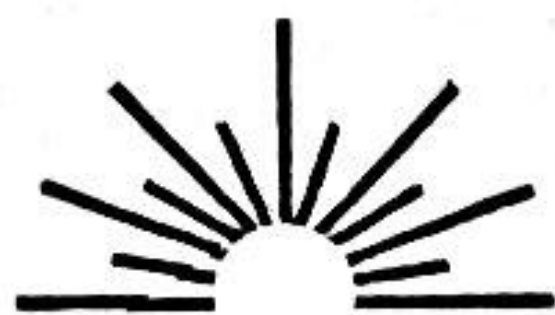
लोभी का पैसा खोटे काम में लगता है बिना जाने भी अच्छे काम में लगादे तो कल्याण है

एक लाला जी बड़े स्याने थे तथा बड़े मक्खीचूस थे सब काम अपनी बुद्धि से करते थे लोभी ऐसे थे कभी किसी को कुछ देना नहीं जानते एक बार वह असाध्य बीमार हो गये । तब लड़कों ने कहा पिताजी एक गाय का दान करदो आपके पास बहुत-सी गाय है । लड़कों के विशेष आग्रह से एक गाय जो कि उनकी गौशाला में सबसे कमजोर वृद्धा रोगिणी थी उसका दान करना स्वीकार कर लिया लालाजी ने दान किया तथा दो घन्टे बाद उसकी मृत्यु हो गई उधर वृद्धा गाय की भी ब्राह्मण के घर जाकर मृत्यु हो गई लाला जी यमलोक पहुंचे । वहाँ यमराज लालाजी को देखते ही बोले इस पापी को नरक में डाल दो । उस समय चित्रगुप्तजी लालाजी के पुण्य पापों का खाता देखरहे थे उनने एक वृद्धा गाय के दान का प्रसंग पढ़ा तथा यह भी लिखा था वह गाय दो घन्टे बाद ही मर गई । यह सुनकर यमराज बोले तुमने एक गाय का दान किया था और वह गाय दो घन्टे बाद मर गई । इससे तुम्हारा दो घन्टे का पुण्य है इसमें तुम जो चाहो सो कर सकते हो । लालाजी ने काह हे गौमाता तुम इस यमराज का पेट फाड़ डालो । अब तो वह गाय हुंकार कर यमराज को मारने के लिये चल दी यमराज भी भयभीत होकर अपने प्राणों की रक्षा के लिये भगवान के पास पहुंचे । लालाजी को भी जैसे-तैसे पकड़वाकर भगवान के सामने पहुँचाया । यमराज का संकट देखकर तथा

लालाजी का दु:साहस देखकर भगवान ने आज्ञा दी इस पापी को नरकाकों मे डाल दो। लालाजी ने कहा हे नारायण क्या आपके दर्शन करके भी मुझे नरक भोगने पड़ेंगे। भगवान ने उसकी रक्षा कर दी देखिये गौदान तो हर समय सहायक है कैसी भी गोदान करो वह उद्धार करने वाली है ॥ १०॥

बुराई होना नरक है
भलाई होना स्वर्ग है

नरक एवं स्वर्ग सब यहीं है अन्यत्र नही ऐसा कपिल जी ने अपनी माता को बताया है। वस्तुत: यह ठीक है कारण जिसकी यहाँ प्रशंसा हो रही है वह स्वर्ग भोग रहा है जिसकी निन्दा हो रही वह नारकीय जीव है।

एक समय काशीजी के एक महान् विद्वान महात्मा महन्त स्नान करने को भागीरथी की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक वेश्या का मकान था। महात्मा उसके घर के दरवाजे से गुजर रहे थे कि उनके कान में यह शब्द सुनाई दिया अरे मुन्ने देख यह मुर्दा जा रहा है पता लगाकर आ कि स्वर्ग में गया कि नरक में गया। ऐसा सुनकर महात्माजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस वेश्या को कैसे पता चलता है कि यह व्यक्ति स्वर्ग में गया या नरक में गया। मैंने अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया है बड़ी साधु संगती की है और इतनी बड़ी मेरी तपस्या पर यह नही समझ सका स्वर्ग कौन जा रहा है एवं नरक कौन जा रहा है। इस वैश्या से शिक्षा लेनी चाहिये।

पर वह एक नगर में प्रतिष्ठित विद्वान उस वैश्या के घर कैसे

जायँ इसमें निन्दा होगी पर एक ज्ञान प्राप्त करने की अभिरुचि भी प्रबल थी पर वह विद्वान लोकापवाद की चिन्ता न करके उस वेश्या के घर में घुस गये। वेश्या भी उनको देखकर सन्नाटे में रह गई। आश्चर्य बड़ा आश्चर्य यह महाराज मेरे घर आ रहे है। वेश्या ने उनका दिव्य सन्मान किया चरणों में प्रणाम किया एवं प्रार्थना की कि मेरे योग्य सेवा। महात्माजी ने कहा देवी तुम यह बताओ तुमको कैसे पता चलता है कि कौन स्वर्ग जाता है और कौन नरक में जाता है।

वैश्या ने कहा महाराज जी यह तो कोई बड़ी बात नही है आप बैठिये अभी मुन्ने उसे मुर्दे का समाचार लाता है। थोड़ी देर में मुन्ने बाबू आ गये। कहने लगे सरकार वह मुर्दा तो सीधा स्वर्ग में गया। सुनकर महात्मा चकित रह गये। भाई तुमको यह कैसे ज्ञात हुआ कि यह स्वर्ग में गया है। वेश्या बोली महाराज जो यह मेरा नौकर मुरदे के पीछे-पीछे बहुत देर तक जाता है। मुर्दनी में जाने वालों की बातें सुनता है कि लोग इस व्यक्ति के विषय में कैसी चर्चा कर रहे है वह चलने वाले व्यक्ति उस प्राणी की प्रशंसा कर रहे है कि बड़ा सत्पुरुष था विद्वान था साहसी था परोपकारी था चरित्रवान था जीवन में कभी किसी को नहीं सताता। आदि बातों को सुनकर आता तब कहता है यह स्वर्ग में गया। तथा इसके विपरीत कोई कहता है कि यह पापी था इसके बड़े खोटे कर्म थे यह वेश्यागामी था चोर-जुआरी था आदि बातें सुनकर यह कहता कि सरकार यह नरक में गया महात्माजी यह कोई बड़ी बात नही है। साधु तत्काल उस वेश्या का आदर कर बाहर आ गये। अत्रैव नरक: सवर्ग इति मात: प्रचक्षते। इसलिये नरक एवं स्वर्ग कही अन्यत्र नहीं है। अपने आचरण उज्जवल बनाओ जिससे कोई आपकी ओर उंगली न उठा सके। जिसकी

बढ़ाई हो रही है वह स्वर्ग जाता है जिसकी बुराई होती है वह नरक में जाता है ।। ११।।

सभी काम विश्वास से करना तभी सफलता मिलती है

विश्वास एवं श्रद्धा से ही सफलता मिलती है अन्यथा कितना भी द्रव्य खर्चो कितने ही अनुष्ठान करो कोई लाभ नहीं पहिले हठ प्रतिज्ञ बनो श्रद्धा से कार्य करो अवश्य सफलता मिलेगी ।

एक समय पार्वतीजी महादेवजी से बोली शंकर भोलेनाथ यह बताओ कि गंगा स्नान करने वालों की क्या गति है । भोला नाथ ने कहा देवी जो गंगा स्नान करता है वह स्वर्ग को चला जाता है । पार्वती ने कहा शम्भौ यह ठीक है । एक समय महादेव पार्वती हरद्वार भागीरथी गंगा हरकी पैड़ी जहां लाखों भक्त स्नान करने आते है उस स्थान पर शंकर पार्वती गये वहां का दिव्य भक्तों का समुदाय देखकर पार्वतीजी हर्षित होकर बोली भोलानाथ यह लाखों आदमी स्वर्ग में चले जायेगें देखों यह गंगा स्नान करके आ रहे है । भोलानाथ ने कहा देवी यह सब स्वर्ग में नहीं जायेंगे । पार्वती ने कहा प्रभु उस दिन तो आपने कहा था कि जो गंगा नहाता है वह स्वर्ग जाता है आज आप ऐसा क्यों कह रहे हैं । शंकरजी ने कहा आओ मेरे साथ चलो तुमको यह बताऊँगा इनमें कौन-कौन स्वर्ग में जायेगा ।

महादेवजी ने एक वृद्ध ब्राह्मण का रूप बनाया तथा पार्वती एक तरुणी सुन्दरी का रूप बनाकर चल दी उस अपार जन समुदाय में पहुंच गये । वहां भीड़ का ऐसा ठेला लगा कि वह वृद्ध

गिर गया तथा उसके ऊपर होकर सैकड़ों आदमी निकल गये। अब तो वह तरुणी विलाप करने लगी। हाय स्वामी आप कहाँ चले गये अब मेरा क्या होगा उसी समय बहुत लोग इकट्ठे हो गये। कोई मन चला कहता है यह बुड्ढा इस सुन्दरी को कहाँ से ले आया। पण्डा कह रहे है इसे नदी में फेंक क्या हाय-हाय मचा रही है रास्ता रोक रक्खा है। कोई कहता है होनी थी सो हो गई अब इसकी क्रिया करम कर। कुछ दयालु हृदय सहानुभूति प्रकट कर रहे हैं। कुछ देर बाद धैर्य धारण करके सुन्दरी ने कहा भैया कोई एक कलश गंगा जल ला दो मै अपने पति को स्नान कराकर क्रिया करूँगी उसी समय एक सहृदय व्यक्ति एक कलश जल लेकर आया बोला ले पानी इनको स्नान करा दे। सुन्दरी ने कहा भाई एक बात बताओ तुमने कभी कोई पाप तो नही किया वह पुरुष बोला देवी मै ऐसा कैसे कह सकता हूँ यह मानव शरीर है कभी कोई गलती भी हो सकती है सुन्दरी बोली तब तुम मेरे पति पर पानी नहीं डाल सकते हो। इस प्रकार कितने व्यक्ति आये पर वह सुन्दरी सबसे ऐसा ही प्रश्न करती सभी डर जाते कोई भी पानी डालने में सफल नहीं हुआ। उस समय एक व्यक्ति बड़ी दृढ़ता से बोला मै इसे स्नान कराऊँगा। युवती ने कहा भाई तैने कोइ पाप तो नहीं किये। उस विश्वासी पुरुष ने कहा पाप जब किये तब किये अब तो मै गंगा स्नान करके आ रहा हूँ अब मेरे शरीर में पाप कहाँ है। ऐसा कहकर उसने पानी से उसके पति को स्नान करा दिया बस उसी समय वह वृद्ध पुरुष एवं सुन्दरी दोनों ही अदृश्य हो गये। यह लीला दिखाकर शंकर पार्वती से कहने लगे देवी इतने पुरुषों मे यह पुरुष स्वर्ग जायेगा। जिसको गंगा में पूर्ण आस्था है विश्वास है वही स्वर्ग का अधिकारी है इसलिये विश्वास एवं श्रद्धा से ही साधना-आराधना, जप,तप, यज्ञ-अनुष्ठान

दान करने चाहिये ॥ १२ ॥

स्वार्थी अपना ही भला सोचता है उसको दूसरे के कष्ट का ध्यान नही

स्वार्थी मनुष्य किसी के कष्टों को नही जानता। यदि जानता है तो भी किसी से ऐसी वस्तु नही माँगेगा जो कि दूसरा संकट में पड़ जाय।

एक दिन एक ब्राह्मणी अपने पति से बोली आप बाजार जा रहे है लौटते समय घी लेते आना कल त्यौहार का दिन है। ब्राह्मण ने कहा पैसा मिल जायेंगे तो अवश्य ले आऊँगा। ब्राह्मणी बोली नही नही मै यह सब नहीं सुनना चाहती कल त्यौहार है घी लेकर ही घर में घुसना अन्यथा मुँह नहीं दिखाना ब्राह्मणी ने बड़ी कठोर बात कह दी अब तो ब्राह्मण बड़े संकट में पड़ गये। दिन भर उद्योग किया पर एक पैसा आज नही मिला। बड़ी चिन्ता में पड़ गये घर कैसे जांय। पत्नी क्लेश करेगी घी नहीं लाये घर में नही घुसने देगी।

अब और तो कोई सहारा नही ब्राह्मण देवता ने चोरी की कि कुछ पैसे मिल जाँय तो घी ले चलूँ। चोरी करते पकड़े गये। उनको राज सभा में उपस्थित किया तथा राजा ने यह दण्ड निर्धारित किया कि इस ब्राह्मण को मुण्डन करके काला मुँह करके गधे पर बैठाकर निकाला जाय। इस प्रकार अपमानित होने पर फिर कोई अपराध न करेगा।

आज उसकी कैसी दशा। सिर मूड़ दिया काला मुँह कर दिया गधे पर बैठाकर नगर में घुमाया गया। आगे ढोल बज रहा

जनता पुकार रही है यह चोर है यह चोर है । नगर में एक विचित्र तमाशा बन गया । उसको गलियों में भी ले जाया गया वह अपने मुहल्ले में जा रहा है लज्जा से माथा नव रहा है पर क्या करे राजा की आज्ञा ऐसी ही थी । जल्दी चलो ।

इधर ब्राह्मण देवता की पत्नी भी स्वांग देखने आ गई वहां उसने अपने पति को ही देखा वह तो देखकर एकदम क्रोध में भर गई और कहने लगी देखो कैसा स्वांग बनकर डोल रहा है ठीक है कैसी भी अनीती कर ले घर में आना है तो घी लेकर ही आना । कैसा स्वांग? उस ब्राह्मण के ऊपर प्राण संकट आ रहे हैं तथा पत्नी कहती है घर आना है तो घी लेकर आना । यहीं बात इन्द्र दधीचि मुनि से कह रहा है भगवन् यह संसार बड़ा स्वार्थी है यह दुसरे की वेदना को नहीं समझता अपना काम बनना चाहिये दूसरा चाहे मौत के मुँह में चला जाय ॥१३॥

संसारी को संसार ही प्यारा है

एक दिन महादेव पार्वती नन्दीश्वर पर बैठे किसी उपवन में आ रहे थे । रास्तें में पार्वतीजी ने एक गुफा के द्वार पर एक उदास सूअर बैठा देखा । पार्वतीजी बोली महाराज यह कोई गरीब दास मालूम पड़ता है । चलिये इसे कुछ दे चलें । शंकरजी ने कहा पार्वती इसको कुछ नही चाहिये यह तुमसे भी ज्यादा सुखी है । पर पार्वती को शंकर की बात से सन्तोष नही हुआ शंकर ने कहा जैसी इच्छा तुम्हारी है ।

गलियों में अपार भीड़ लग गई स्त्रियाँ देखने को आ रहीं थी । पार्वती जी उस सूअर के पास गई । और बोली–अरे

गरीबदास देख आज शंकर प्रसन्न है तुझे कुछ मांगना हो सो माँग ले। गरीबदास बोला मै अपनी स्त्री को लिवा लाता हूँ। गरीबदास अपनी स्त्री के पास गया और बोला-देख आज शंकर पार्वती आये है। तुझे कुछ माँगना हो सो जल्दी बता दे। सूअरिया बोली-उनको मेरी दण्डोत कर देना मेरे पास सब कुछ है। सुअर ने आकर पार्वती से कह दिया। यह सुनकर पार्वती को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा अरे गरीबदास उस बड़ी आदमिन को मेरे पास तो लिवाला। सूअर फिर अन्दर गया बोला चल तुझे पार्वती देखना चाहती है। तब वह सूअरिया अपने बच्चों के साथ फुंकार मारती आ गई। पार्वती ने कहा क्यों री तू इतनी बड़ी आदमिन हो गई तुझे कुछ नहीं चाहिये। सूअरिया बोली पार्वती माँ मै क्या मांगू तुम्हारी कृपा से मेरे पास सब कुछ है। देखो मनुष्य एक घर के लिये तड़फता है मेरे पास बहुत घर है चाहे जिस कन्दरा में रह सकती हूँ। मनुष्य सन्तान के लिए तरसता है मेरे एक साथ बारह बच्चे होते है। मनुष्य भोजन को तरसता है। मेरे लिये चारों ओर विष्ठा मिल जाता है और यह मेरे पति है इनकी मार्कण्डेय जैसी उमर बनी हुई है। पार्वती सब कुछ सुनकर शंकर के पास आई और बोली शंकरजी आप ठीक कहते हो नाली का कीड़ा नाली में ही प्रसन्न रहता है। इस ससांरी को यह संसार ही प्यारा लगता है ॥ १४ ॥

अन्तकाल में जैसी मती होती है वैसी ही गती होती है

अन्तकाल में जैसी मति होती है । वैसी ही गति होती है इसलिये सदैव अपना अन्तिम समय सम्भालना चाहिये ।

एक महात्मा उल्टे टंगकर तपस्या किया करते थे । एक दिन एक वेश्या ने उनको देखा वह देखकर बोली बाबा उलटा टंग या सीधा टंग अन्त मति सो गति । फिर वह वेश्या आई यही बात कहने लगी बाबा कैसे भी उल्टे टंग कर तपस्या करो अन्त में जैसी मति होगी वैसी गति होगी बाबा ने दो चार दिन सुना । एक दिन उनको क्रोध आ गया और वे पेड़ से उतर कर अपना चीमटा लेकर वेश्या के पीछे भागे । अरे दुष्टनी आज तेरी अन्त मति और गति देखूँगा । वह बेचारी वेश्या वहाँ से भाग निकली पर वह कहाँ जाय बाबा तो चिमटा लेकर उसके पीछे-पीछे आ रहे है । ऐसी अवस्था में वह राजसभा में पहुँच गई वहाँ जाकर कहने लगी महाराज मुझे बचाओ यह बाबा मुझे मारना चाहता है । राजा ने पूछा बाबा तुम इतने बड़े सन्त होकर क्रोध करते हे इस गरीबनी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? बाबा बोले महाराज यह मुझे प्रतिदिन सताती है मै तपस्या में लगा रहता हूँ यह विघ्न डालती है । राजा ने वेश्या से कहा क्योंरी तू इनको क्यों सताती है ।

वेश्या बोली महाराज मै साधु से जो कहती हूँ वह सत्य कहती हूँ अन्त में जैसी मति होती है वैसी ही गति होती है । मै तो आपबीती बात इनको समझाती हूँ ।

देखिये पूर्व जन्म में मै एक धनवान की बेटी थी जब मुझे

रोगों ने घेर लिया तब डाक्टर वैद्य मेरा इलाज करने आते थे। दुर्भाग्य से मुझे कुछ लाभ नहीं हुआ। बीमारी बढ़ती चली गई। अब मेरे अन्तिम साँस चल रहे थे फिर भी माता पिता को सन्तोष कहाँ वह एक बड़े डाक्टर को ले आये। डाक्टर सुन्दर था उसकी वाणी में रस था सभी उसे देख रहे थे मै भी उसके सौन्दर्य से मोहित हो गई तथा कुछ देर में ही मेरी मृत्यु आ गई। मृत्यु के बाद मुझे दूसरा जन्म मिला तब मै वेश्या बनी अपने जीवन को धिक्कारती हूँ हाय मैंने क्या किया अपना अन्त बिगाड़ लिया यदि मेरी अन्तिम क्षण में अच्छी भावना होती तो आज यह दुर्दशा न होती। जन-जन से अपमान सहती हूँ। यह सोचकर महात्मा जी से कहती हूँ। बाबा उल्टा टंग या सीधा टंग अन्त मति सो गति। महाराज और तो मैंने बाबा का कोई अपराध नहीं किया। राजा की सभा भरी हुई थी उस वेश्या की ज्ञान वार्ता को सभी लोग बड़े ध्यान से सुन रहे थे। बाबा भी उसकी बात सुनकर लज्जित हो गये। उनका क्रोध विलीन हो गया। कहने लगे देवी तुम ठीक कहती हो तुम्हारा कोई दोष नहीं। आज सभी को ज्ञान मिला कि अपना-अपना अन्तिम समय बनाना चाहिये। शरीर वृद्ध हो गया है रोगों ने घर बना लिया है ग्रह योग भी विपरीत चल रहे है यह जानकर सबसे ममता त्यागकर बस एक ही साधन बनाना। कथा सुनना कीर्तन करना सत्संग मे समय लगाना। यह सब उपाय दुर्गति नाशक है। तभी कहते है अन्त जिसका बन गया वह सुखी है। राजा पुरंजन भी अन्तिम समय अपनी प्रिया का ध्यान करते मरे इसी से उनको स्त्री का ही शरीर मिला॥ १५ ॥

साधु की बात साधु ही जान सकते हैं

बाबा जी की बात बाबा ही समझ सकते है। गृहस्थी आदमी क्या जाने। महात्मा गंगादास के पास दो चेला रहते थे। उनकी सदा सेवा करते थे और दोनों को ही महन्तजी की गद्दी का लोभ था। जब महन्तजी स्वधाम चले गये तब उन दोनों चेला गरीबदास शीतलदास में झगड़ा होने लगा। परिणाम यह हुआ कि राज दरबार में उनका केस पहुंच गया। राजा ने पूछा तुम दोनों साधु क्यों झगड़ा करते हो। गरीबदास बोला महाराज इसने मेरा हीरा ले लिया है। शीतलदास बोला महाराज इसने मेरा पारस ले लिया है। राजा दोनों कीबात सुनकर कहने लगे इन साधुओं के पास हीरा और पारस कहाँ से आ गये। प्रगट में राजा ने कहा गरीबदास तुम्हारा हीरा कैसा है उसका रंग रूप बतलाओ। गरीबदास बोले मेरे गुरुजी उसे कण्ठ में धारण करते थे वह शुद्ध तुलसी का कण्ठा है उसके बीच का दाना हीरा मणि कहलाता है वह इस शीतलदास के पास है। राजा ने कहा शीतलदास तुम इसका हीरा क्यो नही देतें। शीतलदास महाराज इसने मेरा पारस ले लिया है राजा ने कहा तुम्हारा पारस कैसा है शीतलदास ने बताया-महाराज पारस परोसा को कहते है उसमें आठ लड्डू थे आठ कचौड़ी थीं महाराज दोनों की बात सुनकर कहने लगे भाई साधुओं की बात साधु ही समझ सकते है। इसी प्रकार यहाँ नारदजी ने प्राचीन वर्हि राजा को पुरंजन चरित सुनाया पर राजा की समझ में न आया। फिर नारद मुनि ने उसी चरित्र को राजा

को अध्यात्म मे समझाया ॥६॥

कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ झूठ का दोष नही है

शुक्राचार्य बलि को समझा रहे है राजन् इतने स्थानों पर झूठ बोलने का कोई दोष नहीं हे । जैसे स्त्रियों मे बैठकर हास्य करते समय तथा विवाह किसी की २४ वर्ष की अवस्था है वहाँ बीस कह देना दोष नहीं है । किसी की जीविका झूठ बोलने से लगती है वहाँ झूठ का दोष नहीं । प्राण संकट आ रहा है यदि झूठ बोलने से टल जाता है तो कोइ दोश नहीं । गौ एवं ब्राह्मण की रक्षा हेतु झूठ बोलना पाप नहीं । पाप तो ऐसी जगह है जहाँ साठ वर्ष को बीस वर्ष बताना । जैसे एक साहूकार विवाह करना चाहता है और उसकी अवस्था साठ वर्ष की है वह अपने चतुर नाई से बोला तुम हमारा विवाह करा दो तो तुमको ५००/- रुपया इनाम देंगे । नाई चतुर था वह एक गाँव मे गया और एक कन्या के पिता से बोला आप अपनी कन्या का विवाह क्यों नहीं करते । उसने कहा भाई कोई लड़का बताओ हम तो तैयार है नाई बोला अजी यहाँ पास के गाँव में एक लड़का है पैसे वाला है बड़ा सज्जन है न किसी से बोलता है न किसी को देखता है न किसी की सुनता है । न अपने हाथ पैरों से काम करता है बड़ा खुशहाल है आप आँख मीचकर रिश्ता पक्का कर दीजिये ।

भाई उसकी अवस्था कितनी है नाई चुप रहा फिर पूछा भाई उसकी अवस्था कितनी है नाई फिर अनसुनी कर गया । तीसरी बार फिर पूछा भाई तैने सब कुछ बताया पर उम्र नही बताई । इस

पर नाई झुंझलाकर बोला बीस बीस बीस कितनी बार कहना पड़ेगा। यह सुनकर सेठ प्रसन्न हुआ और बोला अच्छा भाई हमारी कन्या का सम्बन्ध करा दो। सम्बन्ध पक्का हो गया। विवाह का दिन आ गया। आज साहूकार बूढ़ा लाला बरात लेकर आया उसके सेहरा बँधा था अच्छी पोशाक पहिने था। दरवाजे पर जो आया उस बुड्ढे के पैर कमजोर थे समधी बोला ठाकुर इसके पैर कमजोर मालूम पड़ते है सेठजी मैंने कहा था हाथ-पैर काम नहीं करते। भाई हमने तो यह समझा पैसे वाला सवारियों में चलता होगा। अब विवाह कार्य प्रारम्भ हुआ तो देखा उसके हाथ काँपते है सुनता भी कम है तथा दृष्टि भी कमजोर है अब तो समधी को दुःख हुआ कहने लगे ठाकुर यह तो सुनता भी कम है इसे दिखाई भी कम देता है। ठाकुर बोला अजी मैंने आपको बताया था वह किसी को देखता न किसी की सुनता नहीं। भाई हमतो यह समझ रहे थे कि पैसे से काम करते है न किसी को देखते हैं न अपने हाथों से काम करते है उनके यहाँ नौकर चाकर सवारियाँ रहती है। भाई तुमने हमको धोखा दिया। अब कुमरजी का सेहरा हटाकर देखा गया वह तो एकदम बूढ़ा था मालिक बोला ठाकुर यह तो बुड्ढा है तैने तो बीस वर्ष की उमर बताई थी। ठाकुर बोला अजी मैंने तो आपको ठीक बताया था २०-२०-२० तीन बार कहा था आपकी समझ का फेर रहा। इस प्रकार धोखा देकर किसी कन्या का विवाह वृद्ध से कराना पाप है जहाँ २५ से २० बता दिये तब कोई बड़ा दोष नही। शुक्रजी ने काह राजन् यहां तुम्हारी जीविका जा रही है। ऐसी अवस्था में यदि तुम वामन को ना कर दो तब कोई अपराध नही है ॥१७॥ लोभ से घर वालों से भी तिरस्कृत हो जाता है। लोभ से अपमान होता है प्राणान्त भी हो जाता है लोभी का पैसा किसी काम में नहीं आता घर वालों से भी

तिरस्कृत हो जाता है ।

एक वैश्य अत्यन्त लोभी थे कभी एक पैसा किसी को देना नहीं सीखे । एक दिन उनकी पत्नी ने कहा आज सोमवती अमावस्या है दुनियां गंगा स्नान करने जा रही है आप भी स्नान कर आओ । सेठजी बोले देख वहाँ पण्डा सतावेंगे कैसे जायँ सेठानी ने कहा तो क्या हुआ पर्व का दिन है वर्षो में आता है पण्डाजी को कुछ दक्षिणा देना । सेठजी ने कहा मूर्ख पैसा बड़ी कठिनाई से संग्रह होता है व्यर्थ में कैसे खर्चा जाय । पत्नी ने कहा आप दान करेंगे आपको और पैसा मिलेगा । यह बड़ा पर्व है सेठजी के मन में गंगा स्नान की तो भावना बनी पर पैसा खर्चने की भावना नहीं हुई । अस्तु सेठजी मध्यान्होत्तर गंगा स्नान को चल दिये अब तो पंडा अपने घरों पर भोजनों के लिये गये होंगे तथापि घाट पर पंडा पड़े रहते है इसलिये एकान्त जंगल में गंगा स्नान करना ठीक है । सेठजी ने जैसे ही गंगाजी में गोता लगाया कि भाग्य से एक पण्डाजी आ गये । जय गंगा मैया की सेठजी आज सोमवती है कुछ संकल्प करो । सेठजी बोले यह तो यहां भी आ गया अस्तु पाँच पैसे का संकल्प कर अपना पीछा छुड़ाया पर पैसे पीछे देने को कहा । दूसरे दिन पंडाजी सेठजी के घर पहुंच गये अपना संकल्प लेने को सेठजी ने कहा फिर किसी समय आना पंडाजी भी अपना संकल्प का पैसा क्यों छोड़ने लगे और सेठजी भी फोकट में पैसा क्यों देने लगे ।

एक दिन पंडाजी संकल्प लेने गये उस समय उनका लड़का मिला । उससे कहा लालाजी अपने पिताजी से कहो पण्डाजी संकल्प लेने आये है । पुत्र पिताजी के पास आकर बोला पिताजी पण्डाजी को क्या देना है वह बाहर खड़े है । सेठजी बोले उनसे कह दो पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है । लड़के ने ऐसा ही कह

दिया पर पण्डाजी ने कहा बेटा तब तो हम उनको देखकर जाँयेगे। लड़के ने पिताजी से कहा पिताजी वह पण्डाजी आपको देखना चाहते है। सेठ-पुत्र कह दो वह ज्यादा बीमार है। पंडा जी तब तो हम उनसे अवश्य मिलेंगे। पुत्र-पिताजी उसको कुछ देना हो वह बताओ दे दूँ। बेटे–पैसा बड़ी कठिनता से आता है ऐसे बेकार नहीं गँवाया जाता। तुम सब रोने लगो पण्डा लौट जायेगा कि मृत्यु हो गई लड़के ने कहा पंडाजी
हमारे पिताजी की मृत्यु हो गई है। यह सब जानकर पण्डाजी ने कहा भाई अब तो सेठजी को श्मशान पहुँचाकर ही जायेंगे।

सेठजी को काठी में बाँध लिया श्मशान की ओर चल दिये। देखिये कितना पैसा खर्चा हो रहा है पर दान को पैसा नहीं निकलता है। पुत्र ने कहा पिताजी इस पण्डा को कुछ दे दो। सेठ–नहीं बेटे चिता लगाओ। पैसा व्यर्थ नहीं दिया जाता चिता लग गई सेठजी को चिता में रख दिया गया अब अग्नि का प्रवेश किया। अग्नि के पतंगा लगते ही सेठजी चिल्लाये अरे मुझे उतारो उस पण्डा को पाँच पैसे जल्दी दो।

आंच लगती है तभी कुछ करने को बनता है। पहिले से ही दान-धर्म करता रहे तब आंच लगने का समय ही क्यों आये।

लोभी की कैसी दशा होती है शरीर में अग्नि ज्वाला लगती है लोक में अपकीर्ति होती है लोभ सर्वथा पाप का मूल है इससे सभी दोष शरीर में उत्पन्न हो जाते है॥ १८॥

साधु को संग्रह नही करना चाहिए अन्यथा दुःख भागी बनता है

साधु को संग्रह नही करना चाहिये जो मिल जाये उसमें निर्वाह करले कल की न सोचे । यदि साधु संग्रह करने में लगेगा तो कष्ट पायेगा । एक साधु भिक्षा मांगकर अपना निर्वाह करता था । पर पैसे का संग्रह करता था । एक दिन वह एकान्त में नदी किनारे पर बैठकर अपने खेरीज पैसो को सम्भाल रहा था । उस समय एक ठग आ गया उसने देखा बाबा के पास तो बहुत रुपये है । वह बराबर छिपकर देखता रहा । साधु अपने रुपये पैसे सम्भालकर अपने बटुआ में रखकर उसको जटाओं में छिपाकर चल दिया ठग ने भी उसके रुपये सम्भाल लिये कि बाबा के पास ६० रूपया है । ठग आया उसने बाबा को साष्टांग प्रणाम की तथा बोला बाबा महाराज आज आप मेरे घर ही प्रसाद पायेंगे । बाबा बोले अच्छा बच्चा जैसी तेरी इच्छा आज तुम्हारे घर हरि प्रसाद ग्रहण करेंगे । ठग बोला आप मेरे साथ चलो फिर मैं आपको कहाँ खोजता फिरूँगा । बाबा उसके साथ चल दिये । उस भक्त ने बाबा का आसान बिछाया पूजा की फल फूल चन्दन जल लाकर रख दिये । बाबा पूजा कर रहे है । जब मध्यान्ह का समय हुआ । तब ठग अपनी स्त्री से बोला देवी मेरे इस आले में रुपये पैसे रक्खे थे वह कहाँ रख दिये बाबा के लिए मिठाई ले आऊँ । पत्नी ने कहा पैसे नहीं देखे । ठग बोला तो यहाँ से कौन ले गया घर में हम तुम दो ही तो सदस्य है तीसरा कौन आ सकता है ठीक-ठीक बता पैसे कहाँ है ।

पत्नी-मैंने तो आपके पैसे नही देखे पति-अरे तू झूठ बोलती है वह तो जोर-जोर से चिल्लाने लगा तथा पत्नी को मारने लगा मेरे पैसे बता। उसी समय पड़ौसी आ गये भाइ तू बहु को क्यों मार रहा है? पति-अजी यह मेरे पैसे नही बताती मैंने इस आले में रक्खे थे। आज साधु मेरे घर आये है कुछ मिठाई लाना चाहता हूँ। यह मेरा फजीता करवा रही है। पड़ौसी बोले भाई कोई ले गया होगा यह तो कसम खा रही है बेचारी दुःखी है इसे क्यों सताता है। ठग बोला अजी मेरे घर में और कोई नहीं आया। बस साधु भोजन करने आये है पड़ोसी बोले भाई कितने रुपये थे। ठग ने कहा ६० रुपया थे। एक आदमी साधु से बोला बाबा तुमने तो इसके रुपये पैसे नहीं देखें। साधु बोला राम-राम हम तो कभी पैसा छूते ही नहीं केवल भोजन जरूर करते है पैसे की इच्छा होती तो घर ही क्यों छोड़ते भाई तुम्हारा हम पर सन्देह है तो हमारी झोली देख लो। बाबा की झोली देखली उसमें एक भी पैसा नहीं था।

उसी समय ठग बोला इसकी जटा और देखो जैसे ही उसकी जटा खुलवाकर देखी उसमें एक बटुआ मिला खोलकर देखा तो उसमें ६० रुपये थे अब तो लोगो ने साधु में मार लगाई पैसे छीन लिये चोर की तरह उसका अपमान किया। साधु पैसा रखना भूल गया। उसने झूठ बोलना छोड़ दिया। यह पैसा कैसा अपमान कराता है। साधु जिसने सब कुछ त्याग दिया वह फिर संग्रह करने में लग जाय तो उसकी ऐसी ही दशा होती है।
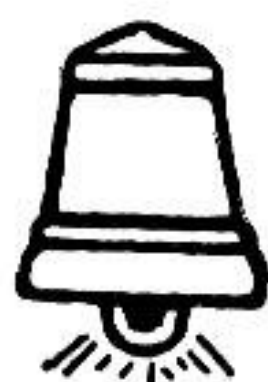
जीवों का बलिदान करना अपने लिये ही घातक होता है

राजा प्राचीन वर्हि ने नारदजी से कहा भगवन् मुझे कुछ ज्ञान दीजिये जिससे मेरा कल्याण हो । नारदजी ने कहा भाई हम क्या उपदेश करें जैसा किया है वैसा ही भोगना है देख यह कौन खड़े है । राजा ने कहा प्रभु यह सब पशु कहाँ से आ गये । नारदजी ने कहा राजन् आपने जो पशुओं की बलि की है यह सब बदला लेने आ रहे है । जीव की बलि करने वाले का कोई सहायक नहीं है । एक राजा के राज्य में चारों दरवाजों पर बलिदान हुआ करता था । इससे उनकी बड़ी प्रसिद्धि थी । जब महाराज का समय आया उनको काल ने घेर लिया भयानक आकृति वाले पशु उसे डराने लगे । वह अपने मन्दिर में भगवती दुर्गा की शरण में गया । माता मुझे बचाओ मुझे बचाओ । माँ ने कहा भाई मै क्या कर सकती हूँ राजा बोला मैंने तो आपकी बड़ी बलि चढ़ाई है आप मुझे न बचायेंगी । भगवती ने कहा भाई मै तो हलुआ पूरी से ही प्रसन्न हो जाती हूँ इतने जीव हिंसा की क्या जरूरत । राजा अपना मुँह लेकर लौट आया । जब देवता सात्वकी पदार्थों से ही प्रसन्न है फिर हिंसा की क्या जरूरत है ।

अनोपान अच्छा होने से कुपथ्य वस्तु भी हानि नहीं पहुँचाती

एक मकान में वैद्यजी रहा करते थे । उसी मकान की ऊपरी भाग में एक सेठजी रहते थे । एक समय सेठजी का स्वास्थ्य खराब हो गया उस समय ऊपर वाले वैद्यजी का ही उपचार चल रहा था । पर बीमारी बढ़ती जा रही थी ।

एक दिन सेठजी अपनी पत्नी से बोले सेठानी आज तो मेरा मन दही खाने पर है । जाओ थोड़ा सा दही लेकर आओ । सेठानी ने कहा दही तो आपको नहीं दूँगी इस बीमारी में हानि कारक है । पर सेठजी का आज विशेष आग्रह है कि मैं तो आज दही जरूर खाऊँगा ।

नीचे वैद्यजी उन दोनों सेठ सेठानी की बात सुन रहे थे । वह अपनी पत्नी से बोले वैद्यनी जी सुनो खुशखबरी वैद्यनी भी आश्चर्य करने लगी अजी ऐसी क्या बात है । वैद्यजी ने कहा देखो वह ऊपर वाला मरीज दही माँग रहा है । दही खाते ही इसकी बीमारी बढ़ेगी और मुझे बुलायेगा । मै भी इससे अच्छी रकम वसूल करूँगा और तुमको सोने की रकम बनवा दूँगा ।

ऊपर सेठजी दही को मचल रहे है सेठजी के बहुत जिद्द करने पर सेठानी ने उनको दही लाकर दे दिया ।

सेठजी कहने लगे इसमें थोड़ा नमक और डाल दें । बस नमक का नाम सुनते ही वैद्यजी अपनी वैद्यनी से बोले देखो तुम्हारी रकम चाँदी की रह गई कारण दही मे नमक का अनोपान लगने से उसके दोष कम हो जायेंगे ।

सेठ कह रहे है सेठानी इस दही में थोड़ा जीरा और डाल दे ।

अब तो वैद्यजी के प्राण सूखने लगे और बोले वैद्यानी अबतो तुम्हारी रकम ताँवे की रह गई देखो यह नमक जीरे का अनोपान दही के दोषों को दूर कर देगा तब इसकी बीमारी पर कोई असर नहीं पड़ेगा । किसी भी कुपथ्य की वस्तु में यदि अनोपान अच्छा मिल जाता है तब उसके दोष अवगुण दूर हो जाते है । इसी प्रकार यहाँ भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र के मारने को वह पूतना राक्षसी अपने स्तनों में हलाहल विष भरकर लाई है ।

यह यशोदा के नीलमणि को पिलाना चाहती है भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने सोचा इस विष के साथ यदि कोई अनोपान अच्छा मिलेगा तब विष हानि न करेगा । यही सोचकर अपने विष के साथ पूतना के प्राणों का अनोपान लगाया ।

गुरु के लोभ में चेला मारा गया

बाबा गंगादासजी का नदी के किनारे पर सुन्दर आश्रम था आपके बहुत शिष्य थे जिनसे आश्रम की शोभा थी । एक दिन गंगादासजी नदी के किनारे पर बैठकर नदी को सुन्दर तरंगों का आनन्द ले रहे थे उस समय देखा एक काला कम्बल बहता जा रहा है वास्तव में वह रीछ था । बाबा उसको कम्बल समझकर अपने शिष्य से बोले बच्चा देखो वह कम्बल बहता जा रहा है इसे लेकर आओ सरदी में काम आयेगा । जमुनादास अपने गुरु के आदेश से नदी में कूदकर कम्बल के पास पहुंच गया । जैसे ही कम्बल पकड़ा वैसे ही कम्बल ने जमुनादास को पकड़ लिया । अब तो उन दोनों में खींचातानी होने लगी । जमुनादास कम्बल समझकर

रीछ के फन्दे में पड़ गया बड़ी देर पानी में खीचातानी होने लगी। जमुनादास ने जी पर आज कैसी बीत रही है पर किनारे पर खड़े गुरुदेव कह रहे है बच्चा यदि कम्बल हाथ नही आता तो तुम उसको छोड़ दो। जमुनादास कह रहा है बाबा मै तो उसे छोड़ना चाहता हूँ पर कम्बल मुझे नहीं छोड़ता परिणाम यह हुआ रीछ ने उसे मार डाला।

कथा सब प्रकार से रक्षा करती है

एक गाँव में एक चोर रहता था वह एक दिन अपनी माता से बोला माँ मै जिस रास्तें से जाता हूँ वहाँ मार्ग में एक पण्डितजी कथा कहते है। माँ ने कहा बेटा कथा कभी मत सुनना इससे तेरी रोजी नष्ट हो जायेगी।

उस दिन से चोर उस रास्ते से जब निकले तब अपने कानों मे उंगली देकर निकले कहीं कानो मे कथा सुनाई न पड़ जाय। उसके मार्ग में कथा का बड़ा बन्धन हो गया एक दिन वह चोर सांयकाल को उसी मार्ग से जा रहा था कि उसके पैर में कांटा लग गया। अब वह बड़े संकट में पड़ गया। यदि कांटा निकालता हूँ तो कान में कथा जायेगी माँ ने काह कथा कभी मत सुनना। पर काँटा निकाले बिना आगे कैसे बढ़ा जाय। उसी समय चोर ने एक उपाय सोचा वह उसी जगह बैठ गया। एक कान की उंगली निकालकर घेंटू लगा लिया तथा हाथ से कांटा निकाला। पर इतने पर भी उसके कानों मे पण्डित जी की कथा की आवाज सुनाई दी कि देवता धरती में नही चलते। चोर कांटा निकालकर चोरी करने

गया। तथा राजमजल में से अच्छी रकम लाया। आज माता भी प्रसन्न है और चोर भी प्रसन्न है।

राजभवन में जब चोरी के समाचार फैले तब सभी राज कर्मचारी बोले महाराज इस गाँव में एक चोर है उसको सजा मिलनी चाहिये।

मन्त्रियों ने निश्चय किया कि कल देवी चोर के घर जायेगी नगर में दुन्दुभी बजने लगी चोर सावधान रहे उसके घर देवी आयेगी। यह समाचार सुनकर माता का हृदय काँपने लगा बेटा देवी आयेगी जिसने राजभवन में चोरी की है उसके घर देवी आयेगी बेटा घर छोड़ दो कहीं दूसरी जगह चलो जल्दी चलो जल्दी चलो। चोर बोला मां तू क्यों चिन्ता करती है आने दे देवी को मैं सब देख लूँगा।

दूसरे दिन एक विराट् भगवती का स्वरूप चोर के घर गया। मां तो डर गई पर चोर बड़ा हिम्मत वाला निकला उसने एक डण्डा निकाला और उस देवी को मारने को चला देवी भी नकली थी उसको डराने आई थी उसके डण्डे के प्रहार को देखकर भाग गई। मां तो बड़े आश्चर्य में पड़ गई बेटा तुझे देवी से भी डर नहीं लगा।

चोर बोला मां यह नकली देवी मुझे डराने आई थी। देख मां मैंने कल कथा मे सुना था कि देवी देवता धरती में नही चलते। मां आज तो कथा ने ही मेरी जान बचा ली नहीं तो यह ठगिया देवी मुझे बाँधकर ले जाती। मां अब मै प्रतिदिन कथा सुनने जाऊँगा। इस प्रकार चोर अब कथा सुनने लगा धीरे-धीरे उसके सभी दोष समाप्त हो गये यह कथा सुनने का प्रभाव है।

गंगा स्नान के बहाने से ही चोर पकड़ा गया

एक सेठ जी रात्रि में अपनी शैया पर शयन कर रहे थे। उस समय अर्द्ध रात्रि के बाद एक चोर उनके घर आ गया उसने सेठजी का सामान बांध लिया। एक पोटली बाँधकर जैसे ही वह चलने लगा उस समय सेठजी उठ आये घर में कुछ जगार हो गई। चोर भी सेठजी के पलंग के नीचे छिप गया। यह दृश्य सेठजी देख रहे थे।

उसी समय सेठजी ने अपनी पत्नी को जगाया। सेठानी सेठानी उठो उठो ! सेठानी बोली क्या काम है रात को भी चैन से नही सोते। सेठजी ने कहा देखो मेरी इच्छा गंगा स्नान करने की है और आज अभी चलना है सेठानी से कहा यह समय चलने का नहीं है कल सुबह सब सामान बाँधकर तैयार कर दूंगी तब चलेंगे। सेठजी-अरी भाग्यवान सामान तो बँधा रक्खा है अब तुम तैयार हो जाओ। आओ देर मत करो हाथ मुँह धोने को पानी शीघ्र ले आओ। सेठानी पानी ले आई सेठजी कुल्ला करने लगे और बार-बार कुल्ला उस चोर के ऊपर करे जो उनके पलंग के नीचे छिप रहा था। चोर भी बेचारा क्या करे। वह तो अपनी जान छिपा कर बैठा है। उसी समय सेठजी ने एक कुल्ला सेठानी पर कर दिया। सेठानी आवेश में भर गई और कहने लगी यह भी कोई कुल्ला करने का तरीका है ऐसी हँसी मुझे पसन्द नही अब तो दोनों मे विवाद बढ़ गया उसी समय जगार हो गई कुछ पड़ौसी भी आ गये। कहने लगे लाला रात मे क्यों झगड़ा कर रहे हो। देखते

देखते सेठजी के घर में बड़ा समाज लग गया । अब चोर विचारा कहाँ जाय सेठजी बोले मित्रो यह मेरी पत्नी एक ही कुल्ला मे बिगड़ गई और इस गरीब के ऊपर उस चोर की ओर इशारा करके बोले बीसियों कुल्ले कर चुका हूँ । यह तो नाराज होना ही नहीं जानता । सभी पलंग के नीचे देखने लगे । तथा उस चोर को सब सामान के साथ पकड़ लिया । अब तो चोर पर मार पड़ने लगी बेचारा जान बचा के भाग गया । सेठजी ने गंगा स्नान के बहाने से ही चोर को पकड़ लिया ।

अपना कर्म करता रहे फल तो ईश्वर के आधीन हैं

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था । वह भिक्षा मांग कर अपने परिवार का पालन करता था । उनके एक पुत्र तथा एक कन्या थी । एक दिन वह ब्राह्मण किसी मन्दिर में दर्शन करने गये वहाँ देखा कथा हो रही है ब्राह्मण देवता कथा सुनने को बैठ गया । कथा मे उसने सत्संग की महिमा सुनी तथा उनकी ऐसी इच्छा हुई कि मै भी प्रतिदिन सत्संग किया करूँगा ।

दिन मे भिक्षा का कार्य पूरा करके सायं काल एक आश्रम में सत्संग मे जाकर ज्ञान प्राप्त करते रहे । इस प्रकार ब्राह्मण की वृद्धा अवस्था आ गई पर बच्चे अभी छोटे है । एक दिन ब्राह्मण देवता सत्संगी गुरुदेव के पास एकान्त में जाकर बोला गुरुदेव मेरी वृद्धावस्था है और यह मेरे बालक अबोध है । मेरे मर जाने पर इनकी क्या दशा होगी? इनका भरण पोषण कौन करेगा । गुरुदेव ने कहा मूर्ख तू इनकी चिन्ता क्यों करता है । जिसने इनको जन्म

दिया है उनको इनके प्रबन्ध करने की भी चिन्ता है तू व्यर्थ में चिन्तित क्यों हो रहा है । मनुष्य को अपना काम करते रहने चाहिये । फल तो ईश्वर के आधीन है अपने कर्तव्य से न हटना ब्राह्मण देवता को गुरुदेव के वचनों से कुछ सान्त्वना मिली । पर कुछ समय बाद फिर मोह ने दबाया ।

आज फिर गुरुदेव के पास गया । गुरुदेव ने कहा भाई आज तुम कुछ उदास दीख रहे हो क्या कारण है ब्राह्मण बोला–गुरुदेव मुझे तो एक ही चिन्ता है कि मेरे मरने के बाद इन बच्चों का कौन सहारा है ।

महात्मा जी ने कहा भाई तुम इतने समय से सत्संग में आ रहे हो पर तुमको ज्ञान नहीं मिला । अच्छा अब आप एक काम करें उससे सन्तोष हो जायेगा । आप कुछ समय के लिये प्रदेश भ्रमण करने चले जाओ फिर देखना तुम्हारे इन बच्चों का कौन पालन करता है । ब्राह्मण भी विश्वास प्राप्त करने की इच्छा से परदेश चले गये ।

यहाँ महात्मा जी ने उसको शिक्षा देने के उद्देश्य से एक रूपक बनाया । एक दिन अपने अपने एक शिष्य को उस बाह्मण की पत्नी के पास भेजा ।

वह शिष्य जाकर बोला–बहिन जी आपके पतिदेव परेदश गये पर मार्ग में उनको सिंह ने भक्षण कर लिया है ऐसा दुःखद समाचार सुनते ही पत्नी पछाड़ खाकर गिर पड़ी विलाप करने लगी उसके बालक भी विलख रहे है । गाँव भर मे हा हा कार मच गया । सभी पड़ौसी उसको सान्त्वना देने लगे । अन्त मे उसने अपने पति का द्वादशाह क्रिया-कर्म सभी विधि से सम्पन्न किया ।

पर पड़ौसी उस ब्राह्मणी की दयनीय अवस्था पर दुःखी थे । पड़ोसियों ने मिलकर उसकी सहायता की । जिससे उसको अपना

तथा बालकों के निर्वाह का साधन मिल गया । अब वह सुख पूर्वक अपना गुजारा करने लगी । उसे कहीं माँगने नहीं जाना पड़ता ।

कुछ समय बाद पतिदेव लौटकर आये और सीधे महात्मा के आश्रम में पहुंचे । कुशल सम्वाद के बाद ब्राह्मण बोले-गुरुदेव मेरे घर में तो सब कुशल है । अब मुझे आज्ञा दो जो घर वालो से मिलूँ । गुरुदेव ने कहा बच्चा आज का दिन ठीक नहीं है कल मिलना आज आश्रम में रहो । उसी दिन गुरुदेव ने एक शिष्य ब्राह्मण की पत्नी के पास भेजा । शिष्य ने जाकर ब्राह्मणी से कहा देवी तुम्हारे पति प्रेत हो गये है और वह कल तुम्हारे घर आयेंगे तू उनको घर में मत आने देना अन्यथा वह प्रेत तेरे बच्चों को कष्ट देगा । यह सुनकर ब्राह्मणी सावधान हो गई । दूसरे दिन जब पतिदेव आये अपने पुत्र को पुकारा अरे विजय किवाड़ खोलो । सांय काल का समय था पुत्र पुत्री पत्नी डर गये प्रेत आ गया । पत्नी ने कहा आप यहां से चले जायें आपको सिंह ने मारा है आपको प्रेत गति मिली है मै अपने घर में नहीं आने दूँगी ।

ब्राह्मण आश्चर्य चकित रह गया यह क्या कह रही है । ब्राह्मण बोला तू बड़ी निर्मोह है अब तुझे मुझसे कोई काम नहीं । ब्राह्मणी ने कहा मुझे आपसे कोई काम नहीं आपके सामने तो हमको भरपेट अन्न भी नहीं मिलता था । अब तो अन्न वस्त्र का कोई घाटा नहीं है ब्राह्मण हताश होकर लौट आया और गुरुदेव को आज की सब घटना सुनाई । गुरुजी ने कहा–देख भाई अब भी कुछ समझ इनको तू कितना चाहता था । रात दिन कहता था । कि मेरे मरने के बाद इनका निर्वाह कैसे होगा । और यह सब तेरे जीते जी तेरा कैसा अपमान कर रहे है । अब ब्राह्मण को ज्ञान हुआ बोला गुरुदेव संसार में कोई किसी का नहीं है ।

गुरुजी ने कहा अब मेरे साथ चल तुझे परिवार से मिलाऊँगा। गुरुजी उसे साथ लेकर आये उसकी पत्नी बच्चों को समझाया।

यह सब रूपक तुम्हारे पति को ज्ञान प्राप्ति के लिये रचा है। यह तेरा पति है तू इसकी पत्नी है व्यर्थ का झूठ बोलना अपमान जनक है। एक पुरुष झूठ बोला करता था। व्यर्थ का झूठ जिससे कोई लाभ नहीं। स्त्री भी बार-बार समझाती थी। आप इतना झूठ क्यों बोलते है पर उसकी तो आदत पड़ गई।

एक दिन आकर अपनी पत्नी से बोला आज एक हलवाई की दूकान के छप्पर पर ५०० बिल्लियाँ बैठी थी। पत्नी ने कहा–तुम बहुत झूठ बोलते हो सच बताओ कितनी बिल्ली थीं। पत्नी के क्रोध को देखकर बोला भाई २५० बिल्ली थीं। पत्नी ने और भी उसको डाटा झूठ इतनी बिल्ली कहाँ से आई। वह बोला ५० थी आज तो पत्नी छड़ी लेकर बैठी है ठीक बोलो इस तुम्हारी झूठ बोलने की आदत ने तुमको बदनाम कर दिया है। तब वह बोला अरे भाई मै ठीक कहता हूँ। पाँच बिल्ली बैठी थी। पत्नी नहीं-नहीं अब भी तुम झूठ बोल रहे हो सच बताओ कितनी बिल्ली थीं।

फिर वह बोला एक काला कपड़ा छप्पर पर पड़ा था। मैंने समझा बिल्लियाँ बैठी है। सब लोग उस की बात सुनकर हँसने लगे। हास्य में भी ऐसी अनर्गल झूठ नहीं बोली जाती वहाँ भी लगती हुई झूठ बोली जाती है की दूकान के छप्पर पर ५०० बिल्लियाँ बैठी थी। पत्नी ने कहा–तुम बहुत झूठ बोलते हो सच बताओ कितनी बिल्ली थी। पत्नी के क्रोध को देखकर बोला भाई २५० बिल्ली थीं। पत्नी ने और भी उसको डाटा झूठ इतनी बिल्ली कहाँ से आई। वह बोला ५० थी आज तो पत्नी छड़ी लेकर बैठी है ठीक बोलो इस तुम्हारी झूठ बोलने की आदत ने तुमको बदनाम कर दिया है। तब वह बोला अरे भाई मै ठीक

कहता हूँ। पाँच बिल्ली बैठी थी। पत्नी नही नही अब भी तुम झूठ बोल रहे हो सच बताओ कितहनी बिल्ली थीं।

फिर वह बोला एक काला कपड़ा छप्पर पर पड़ा था। मैंने समझा बिल्लियाँ बैठी है। सब लोग उस की बात सुनकर हँसने लगे। हास्य में भी ऐसी अनर्गल झूठ नही बोली जाती वहाँ भी लगती हुई झूठ बोली जाती है। बताया है। कि ससुराल में सदा भारी भरकम रहना चाहिये। ससुर–लाला तुम इसका भी अर्थ नहीं समझे देखो भारी भरकम का यह अर्थ है कि सदा गम्भीरता से रहना कोई ओछी बात न करना। हटाओ इस पत्थर को अब लाला ने बातचीत शुरू की लड्डू, पेड़ा, जलेबी, गुलाब जामुन, इमर्ती। ससुर–लाला आज तुमको क्या हो गया है। कैसी अछपटी बात कर रहे हो। लाला–अजी हमारे मित्र ने बताया है। कि ससुराल में सदा मीठी-मीठी बातें करनी चाहिये। ससुर–लाला मित्र ने तुमको ठीक बताया पर तुम्हारी समझ में नही आया। देखो मीठी बात का यह अर्थ नहीं होता कि मिठाइयों के नाम लेना। मीठी बात का यह अर्थ है कि कभी किसी से कुवचन न कहना जिससे किसी की आत्मा को कष्ट पहुंचे। अब लाला ने चटपटी बात शुरू कर दी। सेब त्रिकौन खाजा खस्ता। ससुर–क्या आज भाँग पीकर आये हो। लाला–नहीं ससुरजी हम भाँग नही पीते हमारे मित्र ने बताया है कि मीठी बात के बाद में कभी-कभी चटपटी बात भी कर देना चाहिये।

ससुर–ठीक है इसका भी अर्थ आप नहीं समझे मित्र ने तो आपको ठीक ही बताया है। सुनो चटपटी बात का यह अर्थ होता है। कि ससुराल में कभी-कभी हास्य की भी बातें कर देना उचित है।

अब हाँ और ना का जवाब सुनिये–

ससुरजी ने कहा-लाला आये बहुत दिन में आये । लाला-हाँ । ससुरजी-आपके घर में सब राजी खुशी है । लाला ने कहा-ना । ससुरजी तब क्या सब मर गये । लाला ने कहा-हाँ । ससुरजी-तब तुमने उनका करनी करतब कुछ किया । लाला ने कहा-ना । ससुरजी तब क्या धूल उड़ाई । लाला-ने कहा-हाँ । देखिये वह लाला यह नही समझता कि कहाँ हाँ करना और कहाँ ना करना वह तो एक बार हाँ और एक बार ना भाई मनुष्य समझदारी से उत्तर देता है तो हाँ या ना इससे सभी बातों का समाधान हो जाता है ।

शुक्राचार्य राजा बलि स कह रहे है राजा यहां आपको वामन सेना कहना है । हाँ करने पर तुम्हारा सब राजपाट चला जायेगा । वामन जी से कह देना । मुझे कुछ नहीं देना । जब तुम्हारे राज्य की रक्षा हो रही है तो तुमको झूठ बोलने में कोई दोष नहीं है ।

भक्त की वाणी भाग्य बदल देती है

भक्त की वाणी विधाता के लेख को मिटा देती है ।

एक गांव में एक सेठजी रहते थे । स्त्री पुरुष दोनों ही परम धार्मिक थे । पर उनके कोई सन्तान नहीं थी । सन्तान प्राप्ति के अनेक उपाय भी किये पर सफलता नहीं मिली । एक दिन उनके घर नारदजी पधारे जिनको देखकर पति पत्नी ने उनका बड़ा सम्मान किया । सेठजी ने काह नारदजी मेरे कोई सन्तान नही है आप कोई उपाय बताओ । यह इतना बड़ा मेरा वैभव बिना सन्तान के व्यर्थ है । नारद जी ने कहा हम अभी तुम्हारे भाग्य का निर्णय करते

है । महामुनि नारद ने उसके ललाट के अक्षर जो विधि ने लिखे थे । उनको पढ़कर देखा तो उसमें सन्तान का नाम नही था । नारदजी बोले सेठजी आपको सन्तान सुख प्राप्त है पर इस जन्म मे सन्तान का सुख नहीं है । ऐसा कहकर नारदजी चले गये । कुछ समय बाद गाँव मे एक साधु आया वह गलियों में पुकारता था कि एक रोटी देगा तो एक बेटा पायेगा । दो रोटी देगा तो दो बेटा पायेगा । सेठानी सुनकर दरवाजे पर आई तथा उस साधु की बार-बार की यह पुकार कि एक रोटी देगा तो एक बेटा पायेगा । दो रोटी देगा तो दो बेटा पायेगा । सेठानी का हृदय भर आया । उसने कहा भाग्य में सन्तान तो नहीं है । क्योंकि नारदजी ने बताया है पर साधु को रोटी देने में तो लाभ ही है ।

सेठानी ने उसको दो रोटी दी । साधु बोला तेरे दो बेटे होयेंगे । एक साल बाद साधु के आशीष से सेठजी के पुत्र हुआ उसका उसने बड़े समारोह के साथ नाम करण किया । साधु की कृपा से एक साल बाद फिर एक लड़का हुआ । कुछ समय बाद नारदजी सेठजी के घर आये तथा उसके दो पुत्रों को देखकर बड़े आश्चर्य मे पड़ गये । लड़कों ने नारद जी को प्रणाम किया नारद जी ने उनको आशीर्वाद दिया । पर मन में वही उथल पुथल हो रही है । मेरा वचन झूठा हो गया । महामुनि नारदजी नारायण के पास गये और कहने लगे भगवन् आज तो बड़ा अपमान हुआ है वचन झूठा पड़ गया । पर आश्चर्य इस बात का है कि ऐसा क्यो हुआ जिस सेठ की भाग्य रेखा मे सन्तान का नाम नही उसके दो पुत्रों का होना सन्देह में डाल रहा है । नारायण ने कहा नारद जी मै भक्तों के आधीन हूँ । मेरा वचन चला जाय इसकी मुझे चिन्ता नहीं पर भक्त के वचन की रक्षा मै हर प्रकार से करता हूँ । भक्त का वचन विधाता की ललाट रेखा की भी पलट देता है । उस सेठ को

एक भक्त का आशीष मिला है। एक भक्त कह रहा था कि एक रोटी देगा उसको एक बेटा मिलेगा, दो रोटी देगा उसको दो बेटा मिलेंगे। सेठानी ने उसे आदर भावना से दो रोटी दी थी उसको दो पुत्र मिल गये। नारद जी मैं तो भक्तों के आधीन हूँ।

घर त्याग कर साधना करने को चले तब घर की किसी वस्तु से ममता न रखे

एक पण्डित जी गृहस्थी थे पूरा परिवार था एवं सम्पन्न थे। काम काज भी पुत्रों को सम्भलवा दिया। एक दिन सोचा कि अब कहीं एकान्त आश्रम में चलकर रहेंगे। पुत्र एवं पत्नी को समझाकर बिस्तर लेकर वह एकान्त वास करने को पास के ही किसी आश्रम में चले गये। अब भोजन की व्यवस्था क्या हो तब पण्डित जी ने सोचा गाँव से माधुकरी ले आया करेंगे। ऐसा क्रम उन्होंने अपना लिया।

एक दिन उनके पुत्र ने देखा पिता जी गाँव में भिक्षा लेने आते है इसमें तो हमारी बात गिरती है। बड़े लड़के ने आकर कहा पिता जी आप गांव में भिक्षा मांग कर तो हमारी बात बिगाड़ रहे है। यह अच्छा नहीं आप प्रति दिन भोजन घर में कर जाया करें या घर से मंगवा लिया करें। पिता जी ने भी सोचा लड़का ठीक कहता है, यह इनकी इज्जत की ही बात है। कहने लगे अच्छा भाई हम भोजन घर पर ही कर जाया करेंगे।

पण्डित जी को अब व्याधियां घेरने लगी। मनुष्य बहुत

सोचता है कि इन व्याधियो से मुक्ति मिले पर यह व्याधियां तो मानव को ग्रसने को चली आ रही है ।

एक दिन पण्डित जी घर में भोजन कर रहे थे उसी समय एकान्त पाकर उनकी पत्नी ने कहा । आप जंगल में ऐसे कष्ट क्यों सह रहे है वृद्धावस्था है रोज का वर्षा शीत ग्रीष्म में आना जाना कितना कष्ट दायक है । लड़के तुम्हारे सुपात्र है सभी सेवा भाव रखते है । अब रहा भजन करना यह यहां भी एकान्त में कर सकते हो ।

पत्नी के इन मधुर वचनों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि पण्डित जी दूसरे ही दिन अपने बिस्तर लेकर घर आ गये । कुछ दिन बाद पण्डित जी को फिर ज्ञान हुआ हाय मै इस पत्नी की बातों में आ गया जैसे तैसे घर से निकला फिर बन्धन में पड़ गया ।

आज आपने निश्चय किया कहीं दूर जाकर रहूँगा जहां पुत्र पत्नी परिवारी जनों का सम्पर्क न हो । ऐसा विचार एक कम्बल लेकर पण्डित जी चल दिये । कम्बल साथ में लिया यह भी एक व्याधि ले ली । पण्डित जी इस बार गंगा किनारे पहुच गये, यहाँ कोई नहीं आ सकता । पर व्याधियां तो वहां भी पहुँच गई । एक दिन पण्डित जी ने सोचा गंगा किनारे एक कुटिया बनाना जरूरी है वर्षा शीत ग्रीष्म निवारण को । ऐसा विचार कर जंगल से फूंस बांस रस्सी लाकर एक पर्ण शाला बना ली । उसमें रहने लगे । भाग्य में एक चूहा आ गया और उनके कम्बल को काटने लगा । एक ही तो कम्बल था उसे भी चूहे ने काट डाला बड़ा दुःख हुआ । उस चूहे के भगाने को पण्डित जी एक बिल्ली लेआये इससे चूहा तो भाग गया पर बिल्ली को रोजाना दूध चाहिये । पण्डितजी कमण्डल लेकर ग्वालों से दूध मांगकर लाते और बिल्ली का पालन करते थे । एक दिन ग्वाला बोला पण्डित जी तुम रोजाना

दूध लेने आते हो एक गाय ले जाओ। पण्डितजी गाय बछड़ा भी ले आये। देखिये घर के गृहस्थ को तो छोड़कर आये पर उनका यहां नया गृहस्थ बन गया पण्डित जी बिल्ली गाय बछड़ा और कुटिया अब क्या हो। अब वह गाय को रोजाना घास खोदकर खिलाने लगे तब एक दिन ग्वाला बोला बाबा आप घास खोदते अच्छे नहीं लगते देखो मेरा भाई है इसको आप चेला बना लो वह तुम्हारी सेवा करेगा। बाबा के परिवार में एक जीव और बढ़ गया। अब बाबा ने सोचा इस परिवार के निर्वाह के लिये कुछ साधन भी चाहिये। कुटिया के सामने की जमीन में खेती कर ली। पूरा नया गुहस्थ बन गया। जिस स्थान पर खेती की उसके मालिक ने दावा कर दिया। मुकदमा चालू हो गया। बाबा को कागज लेकर अदालत में हाजिर होना पड़े। यह है साधुओ की दशा। परिणाम यह हुआ बाबा हार गये पकड़ें गये और मार पड़ी तथा कारागार में बन्द कर दिये गये। व्याधियां मानव को कहा तक सताती है कहना यह है कि जब घर बार का त्याग करना है तो सभी वस्तुओं से मोह ममता त्यागनी पड़ेगी तभी सच्चा सुख मिलेगा।

मनोरथ सदा अच्छे करने चाहिये

एक गरीब आदमी घर से मजदूरी करने को निकला। रास्ते में एक सेठजी मजदूर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अरे भाई कुछ काम करेगा। हां मालिक बताओ क्या काम है सेठ ने कहा यह तेल का का घड़ा ले चलो तुमको एक रुपया मिलेगा। मजदूर ने तेल के घड़े को सिर पर रख कर चल दिया। रास्ते में वह मनोरथ करने

लगा । कि यह मालिक मुझे एक रुपया देगा और भी मजदूरी करूँगा कुछ रुपये हो जायेगे फिर एक बकरी खरीदूंगा । उसका दूध बेचूगा पैसा आने पर और भी बकरी खरीदूगा, इसके बाद एक गाय खरीदूंगा उससे और भी पैसा आयेगा । फिर भैस खरीदूंगा फिर तो पैसा वाला हो जाऊँगा । फिर मेरी शादी हो जायेगी । इसके बाद बच्चे हो जायेगे । मेरे प्यारे बच्चे जब मुझसे पैसे माँगेगे । तब कभी उनको खुश करूंगा और हुं कहकर टालूँगा । सेवक इस प्रकार रास्तें भर मनोरथ कर रहा है उसके जोर से हूँ कहते ही सिर से तेल का घड़ा गिर गया । मालिक बड़ा नाराज हुआ अरे तेने यह क्या किया मेरा कितना नुकसान हो गया । इसे कौन भरेगा, मजदूर बोला तेरा तो तेल का ही नुकसान हुआ है, मेरा तो बना बनाया घर ही बिगड़ गया ।

इस प्रकार मनुष्य नष्ट मनोरथों को किया करते है फल तो ईश्वराधीन है ।

मौत सब जगह होती हैं

ऐसा कोई घर नहीं जहाँ मौत न होती हो । एक गौतमी ब्राह्मणी का इकलौता बालक मर गया । वह बालक ही उसका जीवन का आधार था वह अपने बालक को छाती से लगा कर विलाप कर रही है । हाय! पुत्र! हाय पुत्र!! नगर के सभी स्त्री पुरुष उसको समझा रहे है । पर वह कहती है मेरे पुत्र को जिवा दो । मेरे पुत्र को जिवा दो । जब वह देवी किसी प्रकार शान्त न हुई तब एक महाजन ने कहा अच्छा देखो वह सामने आश्रम है । उसमें एक साधु रहते है उनके पास जाओ वह तुम्हारे पुत्र को

अवश्य जीवित कर देंगे ।

वह ब्राह्मणी अपने शिशु को हृदय से लगाये बौद्ध मुनि के आश्रम में पहुंच गई । वहां जाकर पुकारने लगी बाबा मेरे पुत्र को जिवा दो । बाबा मेरे पुत्र को जिवा दो । कैसी ममता-बाबा ने बार-बार समझाया पर उस पर कोई प्रभाव नही पड़ा उसकी तो एक ही रटना थी मरे पुत्र को जिवा दो । मेरे पुत्र को जिवा दो साधु ने कहा-अच्छा बेटी तुम्हारी इस बालक में इतनी ममता है । तो हम इस को जीवित करते है । तुम किसी के घर से थोड़ी सी सरसों मांगकर ले आओ । पर एक बात का ध्यान रखना सरसों ऐसे घर से मांग कर लाना । जिस घर में कभी कोई मरा न हो ।

ब्राह्मणी बड़े उत्साह से सरसों लेने गई उसकी दयनीय दशा को देखकर उसे कौन सरसों न देगा । ऐसे घर से सरसों लानी है जहाँ कोई मरा न हो । सभी उसको समझाने लगे देवी ऐसा घर तो तुमको कोई नहीं मिलेगा, जहां कभी कोई मरा न हो । जिस घर में ब्राह्मणी जाती है । एक ही बात सुनाई पड़ती है जो जनमता है वह मरता है । मृत्यु किसी उपाय से नहीं टलती । जगत भर में मृत्यु का विस्तार है । ऐसा सुनकर ब्राह्मणी लौटकर आश्रम में आ गई उसकी यह बात समझ में आ गई । अपने पुत्र को लेकर श्मशान पर जाकर गाढ़ आई । तथा लौटकर सभी बातें भगवान बुद्ध को बता दी । बुद्ध ने समझाया देवी जन्म लेने वाले को मरना ही पड़ेगा । जैसे हमारे घर के मर गये उसी प्रकार हमको भी मरना पड़ेगा । इसलिये मृत्यु का शोक नहीं करना चाहिये । हाँ ऐसा काम करना चाहियें जिससे जन्म ही न लेना पड़े ।
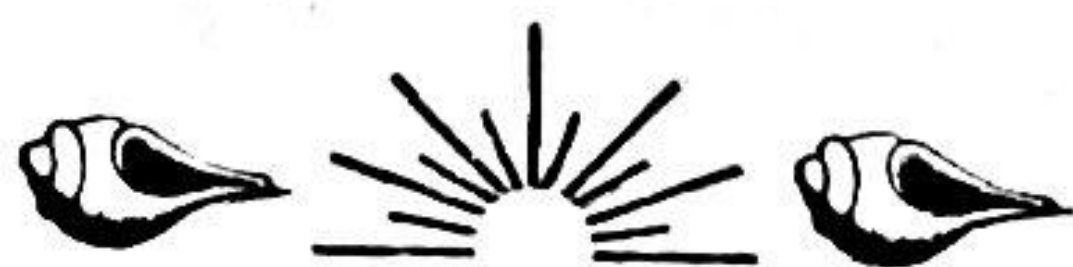
ईश्वर सबका एक है
किसी देवता में भेदभाव न रखना

एक साहूकार विटठलनाथ जी का भक्त था। प्रभु की कृपा से उसकेपुत्र उत्पन्न हुआ। उसने भगवान को वस्त्र चढ़ाने का संकल्प किया वह एक रत्न की पेटी कन्धनी बनवाना चाहता था। गाँव में एक नरहरि नाम का सुनार रहता था। वह बहुत बड़ा कारीगर था। वह शाक्त था शंकर का उपासक था। अनन्य भाव था। वह कभी विट्ठलनाथ जी के दर्शन भी नहीं करता यहाँ तक कि मन्दिर के सामने से भी नहीं निकलता था। उस नरहरि सुनार का नाम उस साहूकार ने सुना तथा वह ही रत्न के आभरण बनाना जानता है। ऐसा जानकर साहूकार नरहरि सुनार के पास आया बोला भाई एक सुवर्ण की रत्न जडित कंधली विट्ठलनाथ जी की बना दो। सुनार ने कहा? भाई मुझे अवकाश नहीं है। व्यापारी बोला–मैं आपको खुश कर दूंगा, आप अपनी पूरी मजूरी बादो मै आपको दूंगा। नरहरि बोला भाई उनका नाप ला दो बना दूंगा। व्यापारी ने कहा, आप ही चलकर नाप ले आइये। इस पर दुकान पर बैठे लोग बोले–भाई यह मन्दिर में नहीं जायेगा। यह तो कभी मन्दिर की शिखिर को भी नहीं देखता यह अनन्य शिव का भक्त है व्यापारी ने उसे सोना रत्न लाकर दे दिये तथा वह स्वयं विट्ठलनाथ जी का नाप ले आया। सोनी जी ने बड़ी सुन्दर पेटी बना दी। जब साहूकार उसे बिट्ठलनाथ जी को पहिनाता है। तब वह कोधनी ओछी पड़ गई। सुनार ने अपनी योग्यता से उसे बढ़ा दिया पर अब की बार वह ढीली हो गई।

व्यापारी का मन बड़ा उदास हुआ। और बोला भाई बिना तुम्हारे नाप लिये यह काम नहीं बनेगा।

वयापारी बड़ा चिन्तित हुआ, प्रभु मेरी सेवा स्वीकार नहीं कर रह है। फिर एक बार व्यापारी ने नरहरी से कहा-भाई मेरे ऊपर दया करो और नाप लेकर इस कंधनी को ठीक कर दो। सोनी जी को अब व्यापारी पर कुछ रहम आ गया और बोले अच्छा एक काम करो मेरी आँख से पट्टी बाँधकर मन्दिर में ले चलो मै नाप ले लूँगा पर देखूँगा नहीं।

व्यापारी ने यह बात मान ली और नरहरि सुनार की आंख से पट्टी बांधकर मन्दिर में ले गया। नरहरि सुनार विट्ठलनाथ जी का नाप ले रहे है पैरों पर जो हाथ लगा देखा एक पैर से भगवान शंकर की तरह नृत्य कर रहे है उनके अंग पर हाथ लगा तो देखा कमर में सर्प लिपट रहे है। यह तो शंकर की मूर्ति है उसने आंख की पट्टी खोली तो क्या देखता है। पीताम्बर धारी विट्ठलनाथ फिर आंख की पट्टी बाँध ली और उनको टटोलने लगा, वह तो शंकर की मूर्ति है। आँख खोल कर देखा तो विट्ठल नाथ आज सोनी जी का भ्रम दूर हो गया। ईश्वर एक है बिना भेद भाव के उसकी पूजा करनी चाहिये। नरहरी ने कमर का नाप लेकर बहुत सुन्दर नाप की पेटी बनाई। व्यापारी भी प्रसन्न हो गया उसने सोनी जी को प्रसन्न किया।
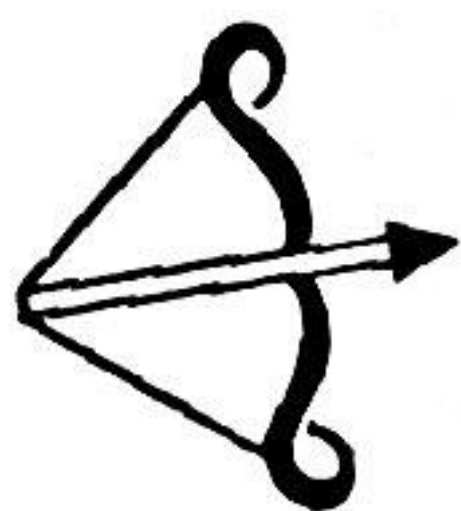
सदैव मनुष्य को गुण ग्रहण करने चाहिये

एक राजकुमार बाजार में भ्रमण करने गये वहाँ देखा कोई व्यापारी एक कागज बेच रहा था । ग्राहक उसके पास आते पर उसकी कीमत सुनकर लौट जाते पर उसके पास ग्राहको का झुण्ड लगा हुआ था । उसी समय एक राजकुमार भी आ गया । उसने उसे कागज को चार हजार रुपये देकर खरीद लिया । उसमें केवल चार बात लिखी थी । पहली बात मनुष्य को जल्दी उठना चाहिये । दूसरी बात अपने घर आने पर शत्रु का भी सत्कार करना चाहिये । तीसरी बात स्त्री पर शासन रखना चाहिये । चौथी बात भोजन के समय घी अवश्य खाना चाहिये ।

राजकुमार उस पत्र के अनुसार कम सोता था । प्रात:काल घूमने जाता था । यह उसका दैनिक क्रम था । एक दिन राजकुमार बहुत सबेरे घूमने को निकल दिये, जंगल में देखा कि एक वृद्धा रो रही है । राजकुमार ने पूछा मां तू क्यों रो रही है । वृद्धा ने कहा बेटा कल के दूसरे दिन एक सर्प इस नगर के राजकुमार को छसने आयेगा ऐसा मालूम हुआ है । बैटा तू उस राजकुमार से कह देना कि वह सावधान रहे अपनी रक्षा का साधन बना ले । राजकुमार बोला अच्छा माँ में जा कर आज ही कह दूँगा ।

राजकुमार बड़े साहस से घर आया और सोचने लगा क्या प्रबन्ध करूँ पर कोई साधन नहीं मिला । अन्त में उसने उस कागज को पढ़ा उसमें लिखा कि घर आये हुये शत्रु का आदर करें ।

अब तीसरे दिन राजा ने अपने भवन में तथा भवन के आने

के मार्ग में सर्पों के आदर का सामान जुटाया। मार्ग को स्वच्छ किया तथा उनके उपयोगी भक्ष भोज्य लगवा दिये।

आज कुछ सर्प राज भवन की ओर चल दिये। मार्ग में उनके अनुकूल भक्ष भोज्य पदार्थ जो मिले उन्हें पाकर सब विश्राम करने लगे अब आगे बढ़ने लगे अब आगे बढ़ने का उनका मन ही न करे। पर एक सर्प कह रहा है भाई आगे चलो पर वहां से कोई आगे न बढ़ा, सुख निद्रा में आनन्द मग्न हो गये। वह सर्प ही राज भवन में राजा को डसने के लिये गया किन्तु देखा कि शैय्या के चारों ओर भी मन हर्षित करने वाले पदार्थ लगे हुये है। उसने उसमें से भी थोड़ा-थोड़ा सवाद लिया अब वह राजा के पास पहुँच गया। राजा ने हाथ बढ़ा कर सर्प का आदर किया। इससे सर्प प्रसन्न हो गया। राजा से बोला–राजन् मै तुमसे प्रसन्न हूँ तुम मुझसे इच्छानुसार वर माँगो।

राजा ने कहा देव मैं यह चाहता हूँ कि इन पशु पक्षी जीवों की भाषा मै समझने लगूँ। सर्प बोला अस्तु। पर एक बात का ध्यान रखना, उन जीवों की बात किसी को बताना नही अन्यथा तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। यह कह सर्प लौट गया। उसकी कागज की कीमत वसूल हो गई। पहली बात प्रातः जल्दी उठने से राजकुमार को अपने मरण का ज्ञान हुआ। दूसरी बात शत्रु के आदर करने से मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करना अब तीसरी बात सुनिये।

एक दिन राजकुमार अपनी पत्नी के पास बैठे भोजन कर रहे थे पत्नी भी पंखा लेकर महाराज की बयार कर रही थी। उस समय राजा ने देखा एक चींटी राजकुमार की थाली में से कुछ भोजन कण लेकर चली पर वह कण कुछ भारी थे, वह अपने पति चेटा से कह रही थी कि आप भी सहारा दो। उनकी इस प्रकार

की बात सुनकर राजकुमार को हंसी आ गई ।

उसी समय रानी ने प्रश्न किया कि आप अकारण क्यों हँस रहे है । राजकुमार ने उस बात को टाला कि कोई बात नहीं पर रानी का हठी स्वभाव था और कहने लगी । आप ठीक बताइये कि आप क्यों हँस रहे हो तुम मुझे देखकर हँसे हो तो उसका कारण बताइये । राजा ने रानी को बार-बार समझाया पर वह रानी का आग्रह कि मै अन्न जल जब करूँगी । जब आप इसका समाधान करेंगे । आप मुझे देखकर इस समय क्यों हँसे । राजा ने कहा रानी इन चैटा चेंटी की बात सुनकर हँसी आ गई थी । पर इनकी बात नहीं बताऊँगा अन्यथा एक बड़ा अनिष्ठ हो जायेगा । रानी बोली देखिये कैसा भी बड़ा अनिष्ट हो आपको यह बात बतानी ही है । राजा रानी के विशेष आग्रह को देखकर बोले--अच्छा गंगा किनारे चलो वहाँ एकान्त मे बताऊँगा राजा एवं रानी दोनों नौका में बैठकर गंगा जी की धारा में पहुंच गये । राजा ने यह विचारा कि इस रहस्य को बताने पर मेरी मृत्यु हो जायेगी । अतः गंगा किनारे चलकर शरीर छोड़ा जाय ।

उसी समय राजा ने क्या देखा कि एक बकरी अपने पति बकरा से कह रही देखो यह कैसा फल है इसे आप जल्दी लाओ मै इसे खाऊँगी । बकरा ने कहा भाई वह पानी की दूर धारा में है । बकरी बोली मेरी तो बड़ी इच्छा है । बकरा अपनी पत्नी का आग्रह देखकर पानी में गया पर पानी के वेग को देखकर लौट आया । बकरी ने फिर कहा इस पर बकरे को क्रोध आया यह मेरे प्राण लेना चाहती है । बकरे ने निषेध कर दिया अब बकरी बड़ा कलह करने लगी । तब बकरे ने सींगों की मार दी तब वह भाग गई । यह देखकर राजकुमार को उस पत्र की बात याद आ गई कि स्त्री पर शासन करना चाहिए ।

बस अब तो राजकुमार ने अपनी रानी में मार दी उसे कोड़ों की मार से घायल कर दिया । तब वह माफी मांगने लगी ।

अब दोनों वहां से चल दिये, रानी के हृदय में राजा के प्रति द्वेष को ज्वाला तो उठ ही रही थी । वह बोली मै अपनी बहिन से मिलना चाहती हूँ । उसका पास ही घर है । दोनों बहिन के घर चल दिये । बहिन ने उनका सम्मान किया । बहिन ने देखा कि बहिन का शरीर बड़ा घायल हो रहा है शरीर में नील पड़ रही हैं वह बोली बहिन यह हालत तुम्हारी कैसे हुई । उसने अपने पति का अपराध बता दिया । इन्होंने ही मुंझे मारा है । बहिन आवेश में भर गई तथा अपने अपराधी बहनोई को मारने का विचार कर लिया तथा उसने खाने में जहर मिला दिया । राजकुमार भोजन करने बैठे पर उनका नियम था कि भोजन में घी जरूर खाना । उन्होंने अपनी साली से कहा एक कटोरी घी लाओ तब मैं भोजन करूँगा । उसने घी भी लाकर रख दिया । अब राजकुमार ने घी मिला कर भोजन किया । बाद में सो गये उनको बड़ा नशा सा बढ़ गया ।

अब दोनों बहिन भोजन करने को बैठी । तब बहिन बोली मैं अपने पति की थाली में ही खाना खाती हूँ मेरा ऐसा नियम है । तब बड़ी बहिन बोली उस थाली में तो मैंने विष मिला दिया है । उसे तुझे कैसे दे सकती हूँ । इतना सुनकर वह रानी व्याकुल हो गई और पति के पास दौड़ी-दौड़ी आई कुछ समय बाद पति को होश आ गया । घी के प्रयोग से विष वेग कम हो गया । उस पत्र की चारों बातें राजा को हितकर हई उसके चार हजार रुपये वसूल हो गये ।

नारद जी की कला से भगवान भी आश्चर्य करते हैं

एक दिन भगवान नारद जी से बोले–नारदजी तुम सभी घरों में कलह करा देते हो। यह आपकी बहुत बड़ी कला है। यदि आप शिव शर्मा ब्राह्मण के घर में कलह करा दो तब आपकी कला का प्रदर्शन हो।

नारद जी बोले–प्रभु यह कौन सी बड़ी बात है। आज ही मेरे खेल को देखना। दूसरे दिन नारद जी शिव शर्मा ब्राह्मण के घर पहुंच गये, वहां जाकर देखा कि एकान्त में शिव शर्मा की पत्नी बैठी हुई है। पत्नी ने नारद जी का दिव्य सन्मान किया। कहने लगी नारद जी आज कैसे कृपा करी। नारद जी बोले–देवी मैं तुम्हें एक बात समझाने आया हूँ। देख यह तेरा पति पहले जन्म में बैल था। यदि तुम्हें मेरी बात का विश्वास न हो तो अर्द्ध-रात्रि के समय में अपने पति के शरीर को चाटना उसका शरीर खारी है। वह पूर्व जन्म में नमक ढोने वाला बैल था।

स्त्री ने कहा–नारदजी बहुत अच्छा मैं आज ही इसकी परीक्षा लूँगी। नारद जी यह कहकर चले गये। रास्ते में यमुना किनारे पर शिव शर्मा (उसके पति) उन्हें मिल गये। नारद जी ने कहा–मित्र तुम्हारी पत्नी पूर्व जन्म की कुतिया है। शिव शर्मा बोले नारद जी आप ऐसा क्यों कहते हो। नारद जी ने कहा आज परीक्षा करके देखो। वह रात्रि में सोते हुये तुमको चाटती है।

शिव शर्मा ब्राह्मण बोले–नारद जी मै आज ही इसका निर्णय करूँगा। ऐसा कह कर दोनों अपने मार्ग से चले गये।

आज रात्रि शिव शर्मा को निद्रा तो आयी नहीं । पर नींद का बहाना करके सो गया । उसी रात्रि उसकी पत्नी परीक्षा करने को अपने पति को चाटने लगी । उसी समय पति ने कहा तू पूर्व जन्म की कुतिया है । स्त्री ने कहा–तू पहले जन्म का बैल है । अब तो दोनों में वाद-विवाद होने लगा ।

पति कहता है कि तू कुतिया है पत्नी कहती है, कि तू बैल है । थोड़ी देर में पति-पत्नी में विवाद बढ़ गया भगवान ने आकर कलह शान्त कराया । इस प्रकार नारद जी की कला का प्रदर्शन हो गया ।

काल प्राणी को कहीं नहीं छोड़ता

गरुड़ जी का मित्र गीध था । जो कि गरुड़ जी के मकान से दस हजार कोस की दूरी पर रहता था । दोनों मित्र कभी-कभी एक दूसरे से मिल लिया करत थे ।

एक दिन यमराज उसगीध के सामने से निकले और गीध को देखकर हँस दिये इससे गीध बड़ा चिन्तित हो गया । उसने एक दिन अपने मित्र गरुड़ से कहा मित्र आज यमराज मुझे देखकर हँस कर निकल गये ।

गरुण ने कहा–मै यमराज से पूछूँगा । कि तुम मेरे मित्र को देखकर क्यों हँसे । और तुम चिन्ता मत करो तुम मेरे घौसले में सुरक्षित रहो । गरुण जी अपने मित्र को अपने घर पहुंचा कर यमराज के पास गये ।

इधर गरुण के घौसले के नीचे एक विलाव रहता था । उसने गीध को चीर फाड़कर खा लिया ।

उधर गरुण जी यमराज से कह रहे है । आप मेरे मित्र को देखकर क्यों हँसे । यमराज ने कहा भाई उसका काल उससे दस हजार कोस की दूरी पर था वह इसे कैसे खायगा यह जानकर मुझे हँसी आ गई । अब तुम उस गीध को स्वयं काल के पास पहुँचा आये । वह मर गया । काल हजार कोस पर भी नही छोड़ता ।

गर्व किसी का नहीं रहता

एक सेठ जी की कन्या कुछ विद्या पढ़कर गर्वीली हो गई । अपनी शिक्षा का घमण्ड हो गया था । एक दिन पिता जी ने सोचा कि इसका अब विवाह कर देना चाहिये । कन्या ने अपनी माता से कहा मां मै उससे शादी करूँगी, जो मेरे प्रशनों का उत्तर देगा । अब उसके सम्बन्ध की बात होती है, कई लड़के उसके प्रश्नोत्तर में असफल रहे । एक योग्य लड़का आकर बोला हम आपकी कन्या के प्रश्नों का उत्तर देंगे ।

अब उनकी बात चीत प्रारम्भ हुई । कन्या ने कहा एक कौन सी वस्तु है । वर-एक ब्रह्म है । कन्या-दो वस्तु कौन सी है । वर-जीव और ईश्वर है । कन्या-तीन वस्तु कौन सी है । वर ने कहा-सत्व-रज-तम है । कन्या-चार वस्तु कौन सी है । वर ने काह-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है । कन्या पांच वस्तु कौन सी है । वर-पंच तत्व है, पृथ्वी, अप, तेज, वायु और आकाश । कन्या ने कहा-छै वस्तु कौन सी है । वर- छ रस है । कड़वा, तेज, कसेल, सलौना, खट्टा, मीठा । कन्या ने कहा-सात वस्तु कौन सी है । वर-सात ऋषि है । कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, भारद्वाज, जमदग्नि । कन्या ने कहा-आठ वस्तु कौन सी है । वर ने

कहा-आठ वस्तु है। द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वस, विभावसु। कन्या ने कहा नौ वस्तु कौन सी है। वर-नव ग्रह सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु-केतु। कन्या ने कहा-दस वस्तु कौन सी है। वर-दस दिशा नाथ है। इन्द्र, अग्नि, यम, निभृति, तरुण, वायु, सोम ईशान, ब्रह्मा, अनन्त।

कन्या ने पूछा ग्यारह वस्तु कौन सी है। वर-ग्यारह रुद्र है। मन्युः महिनस-महान, शिव, ऋतध्वज, उग्ररेता, भव, कालवामदेव, धृत, व्रत। कन्या-बारह वस्तु कौन सी है। वर-बारह आदित्य सूर्य है। धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, इन्द्र, विवस्वान, पूषा अंमु, भग, त्वष्टा, विष्णु। कन्या तेरह वस्तु कौन सी है। वर-तेरह विश्वे देवता है। कन्या-चौदह वस्तु कौन सी है। वर चौदह मनु होते है। कन्या-पन्द्रह वस्तु कौन सी है। वर-पन्द्रह तिथि होती है। कन्या सोलह वस्तु कौन सी है। वर-सोलह कला होती है। कन्या सत्रह वस्तु कौन सी है। वर-सत्रह तत्व होते है। कन्या अठारह वस्तु कौन सी होती है। वर-अठारह पुराण होते है। कन्या उन्नीस वस्तु कौन सी होती है। वर को इस बार क्रोध आ गया इसने प्रश्नों की लड़ी लगा दी है। अपना हमारा दोनों का समय खराब कर रही है। वर एक दम आवेश में आकर बोला रांड उन्नीसवी तू है और बीसवां मै हूँ। इस प्रकार उत्तर पाकर कन्या चुप हो गई। और उसके साथ शादी कर ली।
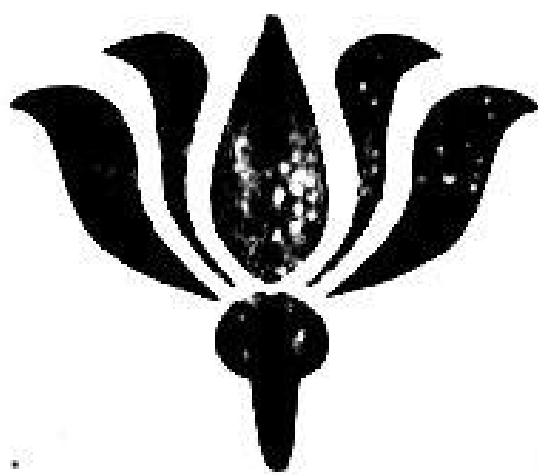
कभी किसी की वस्तु देखकर ईर्ष्या न करें

जो अपने लिये जैसा प्राप्त हुआ है । उसमें ही मनुष्य को सन्तोष करना चाहिये । यह एक परम सुख का साधन बताया है । एक ब्राह्मण सब की वस्तुओं को देखकर ईर्ष्या करता था । इससे उसका नाम जरेला हो गया वह दिन रात घर मे पड़ा रहता था । एक दिन उसकी पत्नी ने क़हा इस प्रकार आप इस घर में कब तक पड़े रहेंगे । कुछ उद्योग करो घर मे आटा भी नहीं है । जरेला बोला मै कहा जाऊँ । घर से निकलते ही जलन पैदा हो जायेगी । यह बड़ी बड़ी हवेलियाँ यह सुन्दर वेष-भूषा से सुसज्जित स्त्रियां उनके सुन्दर बाल बच्चे मै कैसे देख सकूंगा । पत्नी ने कहा तब क्या भूखें मरना पसन्द है । जरेला ने भी सोचा ऐसे पड़े-पड़े कैसे काम चलेगा । वह घर से चल दिया सीधा समुद्र के किनारे पहुंचा । वहां जाकर उसने समुद्र की उपासना प्रारम्भ कर दी । ऊँवरुणाय नतः ऊँ वरुणाय नमः समुद्र प्रसन्न हो गया और उसे पहचान गया यह जरला है समुद्र ने भी उसको एक शंख दे दिया और बोला भाई इस शंख से तू जो मांगेगा वही मिलेगा, पर तेरे पड़ौसी को दूना मिल जायेगा । यह सुनकर जरेला और भी जल गया और चुपचार घर आकर उस शंख को छीकें पर रख दिश । एक दिन उसकी पत्नी ने उसको उठाकर आँगन मे रखकर उसकी पूजा की और प्रार्थना की । हे शंख देवता यदि आप सच्चे हैं तो मेरे घर एक अन्न का कोठा भर जाय । उसका प्रार्थना करना कि अन्न से कोठा भर गया ।

एक दिन पत्नी ने कहा हे शंख देवता मै किराये के मकान में रहती हूँ। मुझे एक मकान दे दीजिए। उस पत्नी को एक मकान भी मिल गया। पर पड़ोसी के घर दो अन्न के कोठे तथा दो मकान खड़ें हो गये। जरेला को बड़ा दुःख हुआ। एक दिन पत्नी ने कहा हेशंख देव मेरे एक पुत्र हो जाय। कुद समय बाद इसको एक पुत्र मिला पर पछोसी को दो पुत्र रत्न प्राप्त हुये। जरेला ने पत्नी से कहा तू मुझे क्यों जरा रही है। पत्नी बोली जी हमको दूसरे से क्या हमारी जरूरत तो सब पूरी हो रही है। पर वह जरेला दूसरे की उन्नति नहीं देख सकता।

एक दिन उस जरेला ने शंख से कहा हे शंख देवता मेरे दरवाजे पर एक कुँआ खुद जाये इसके दरवाजे पर एक कुँआ खुदा पड़ोसी के दरवाजे पर दो कुँआ खुद गये। एक दिन जरेला ने कहा हे शंख देवता मेरी एक आँख फूट जाय। पड़ोसी की दोनों आंख फूट गई। एक दिन पड़ोसी घर से निकला विचारा अन्धा था दरवाजे पर दो कुये थे। एक से बचा दूसरे में गिर गया।

देखा कैसे कैसे जरेला मनुष्य होते है। पर उनको यह ज्ञान नहीं इसका परिणाम क्या होगा लोक निन्दा तथा दुर्गति। इस लोक का तथा परलोक का सुख उनको नहीं मिलता।

रघुकुल ही क्यों कहा जाता है

इक्ष्वाकु वंश में राजा रघु राजा ही प्रभावशाली राजा हुये है। रघु राजा त्याग मूर्ति था। सत्य प्रतिज्ञ थे। उदार हृदय थे। कोई काम आपको कठिन नहीं था। वह अपनी आत्मा भी समर्पित कर सकते थे।

एक समय वशिष्ठ जी से प्रश्न किया कि गुरुदेव जिस प्रकार इक्ष्वाकु वंश एवं रघुवंश कहलाता है उस प्रकार राम वंश क्यों नही कहलाता ।

इक्ष्वाकु वंश में राजा रघु राजा ही प्रभावशाली राजा हुये है । रघु राजा त्याग मूर्ति था । सत्य प्रतिज्ञ थे । उदार हृदय थे । कोई काम आपको कठिन नही था । वह अपनी आत्मा भी समर्पित कर सकते थे ।

एक समय वशिष्ठ जी से प्रश्न किया कि गुरुदेव जिस प्रकार इक्ष्वाकु वंश एवं रघुवंश कहलाता है उस प्रकार राम वंश क्यों नही कहलाता । वशिष्ट ने कहा रघु बड़े दानी थे । इसी से उनका वंश प्रमुख कहलाया । एक समय राज रघु एवं उनकी महारानी प्रयाग राज गये । रघु ने कहा रानी दान करते समय यह ध्यान रखना कि कोई काला ब्राह्मण न हो तथा काना ब्राह्मण न हो । इनसे सावधान रहना । रानी ने कहा ठीक है । राजा रानी ने प्रयाग में खूब दान किया उस गांव में एक ब्राह्मणी अपने पति से बोली कि आप घर में सो रहे हैं । देखो महाराज रघु की रानी ब्राह्मणों को इच्छानुसार दान दे रही है । आप भी जल्दी जाओ ब्राह्मणी का पति काला भी था और काना भी था । महारानी के सामने पहुंच गया और उनकी प्रशंसा करने लगा । महारानी आपने इस तीर्थराज में बड़ा दान किया है कुछ मुझे भी मिलना चाहिये । रानी ने अपने हाथ का सोने का रत्न जडित कंकड़ का संकल्प कर दिया । उसने उसके कालेपन का तथा काने पर का ध्यान नहीं दिया । उस समय ब्राह्मण बोला महारानी आपने कंकड़ उतार कर संकल्प नहीं लिया । इससे आपका भी दान हो गया । दान पात्र दान वस्तु के सहित रहता है । अब आप मेरे साथ चलिये । उसी समय महाराज रघु आ गये रानी ने राजा को सब कुछ बता

दिया । राजा रघु बड़े आश्चर्य में पड़ गये । राजा ने ब्राह्मण से कहा तुम मेरी रानी को पहुँचान सकते हो । ब्राह्मण बोला जरूर पहचानूँगा । राजा रघु की २७ रानी थी सभी एक समान थी । ब्राह्मण के सामने सबको सामने खड़ा कर दिया । ब्राह्मण उन सबको एक सी देखकर बोला यह सभी रानियां है जो एक सी है अतः यह सब रानी मेरी ही है राजा रघु ने सभी रानी ब्राह्मण को दे दी । देखिये कितना बड़ा त्याग किया श्री राम ने तो एक रानी के कारण महायुद्ध मचा दिया । रावण के कुल का नाश कर दिया । बताइये वह रामवंश कैसे कहा जा सकता है

व्यवसाय में ठगी

एक दिन चार मित्र ब्राह्मण क्षत्रिय एवं वैश्य और शूद्र द्रव्योपार्जन करने को चले । बोले भाई पैसा पैसा से मिलता है । हमारे पास तो कुछ है ही नहीं नौकरी करते हैं । तो जमानत भी हमारे पास नहीं । इस से तो कोई जाल रचा जाय । वह चारों एक समृद्ध शाली नगर में गये और उसने एक रूपक बनाया क्षत्रिय तो बना सेठ और वैश्य को बनाया सेठानी एक दुकान कर ली । ब्राह्मण तथा शूद्र के द्वारा पैसा पैदा करने का षडयन्त्र रचा । ब्राह्मण से कहा तुम शहर में तुलसी बांटा करो और किसी से कुछ याचना नहीं करना । शूद्र से कहा तुम श्मशान पर भस्म लगाकर बैठ जाना और किसी से बोलना नहीं । चारों ने अपना काम शुरू कर दिया ।

ब्राह्मण के सदाचार एवं त्याग से सब नगर वासी सन्तुष्ट थे । एक दिन वहाँ के नागरिक बोले भाई यह ब्राह्मण बड़ा सन्तोषी

है और निःस्वार्थ भाव से तुलसी बाँटता है, किसी से कुछ नहीं मांगता । भाईयों इस ब्राह्मण का कुछ सत्कार अवश्य होना चाहिये । सबने मिलकर ५० पचास हजार रुपया देने का निश्चय किया । पर उस त्यागी ब्राह्मण ने उसे लेना स्वीकार नहीं किया । लोगों में और भी ब्राह्मण के प्रति श्रद्धा बढ़ गई और ब्राह्मण की भी नगर में ख्याति बढ़ गई । कुछ समय बाद शूद्र का भी प्रभाव बढ़ा । वह एकान्त में श्मशान पर अकेला रहता है । एक दिन सेठ जी ने मृत्यु का बहाना बनाया सेठानी विलाप कर रही है । अड़ोस पड़ोस के सभी सहानुभूति को एकत्रित हो गये । सेठजी को काठी में रखकर शमशान ले गये । सेठानी विल्लिख रही है । वह अपने पति के साथ सती हाने का आग्रह कर रही है ।

शूद्र श्मशान पर बैठा सब तमाशा देख रहा है । वह किसी से बोलता नहीं था । सेठानी शूद्र सन्यासी के पैरों में गिर पड़ी और बोली मेरे पति को बचाओ । शूद्र आज बोला जा जा इस मुर्दे को यहां ले आई है । यहाँ क्यों लाई है भाग जा ऐसा कह कर उस आत्मा ने उठकर उस मुर्दे के एक चिमटा मारा क्यों बे उठता क्यों नहीं है । सोई मुर्दा उठ खड़ा हुआ । अब तो नगर वासी आश्चर्य में पड़ गये भाई यह तो चमत्कारी बाबा है । नगर का राजा भी आश्चर्य में रह गया । वह उस साधु के दर्शनों को आया । राजा आकर बोला महाराज बताओ मेरी आयु कितनी है । पर साधु न बोला फिर राजा उसकी अनुनय विनय करने लगा । तब साधु बोला जा तीन दिन की उम्र है परसों मर जायेगा । यह सुनकर राजा घबड़ा गया । बोला महाराज कोई उपाय हो तो बताओ । जिससे मेरी मृत्यु टल जाय साधु बोला देख किसी ऐसे ब्राह्मण को दान दे जिसने कभी दान न लिया हो । राजा ने कहा महाराज क्या दान करूँ । साधु-देख एक सोने का पुरुष बना कर दान कर इससे तेरी

मृत्यु टल जायेगी। आयु बढ़ जायेगी । अब तो उसी ब्राह्मण को बुलाया जो तुलसी बांटता था । जिसने ५० हजार ठुकरा दिये थे । राजा ने उस ब्राह्मण को सोने का पुरुष बनवा कर दिया । ब्राह्मण बोला महाराज दान के लेने से हमारी जान को भी खतरा है । राजा बोला महाराज और रत्न लीजिये । तुम तो तपस्वी हो परोपकारी हो तुम्हारी तो तपस्या रक्षा करती है । राजा ने बड़े कीमती रत्न दिये । ब्राह्मण उस दान को ले आया फिर चारो ने मिल कर बांट लिया व्यवसाय मे ठगी

राजा या सेठों से मिलने के लिए उनके सेवकों को खुश रखना जरूरी है

एक ब्राह्मण बड़े सन्तोषी थी, विद्वान भी थे किसी से याचना भी नहीं करते थे । इच्छा से जो मिल जाता उसी में निर्वाह करते थे उनकी पत्नी भी पतिव्रता एवं पढ़ी लिखी व्यवहार कुशल थी । पति के साथ वह संतोष से जीवन बिताती थी ।

एक दिन पत्नी ने कहा आप इतने बड़े विद्वान हैं कि किसी राजा का सहारा ले लें तो आपका कल्याण हो जाय । मैं तो स्त्री हूँ अन्यथा अपनी विद्या का प्रभाव आपको दिखाती । आप एक बार राजा से मिलिये । ब्राह्मण देव स्त्री के विशेष आग्रह से राजभवन में गये । दरवाजे पर द्वारपाल ने रोक दिया । आप कहां जा रहे है? ब्राह्मण बोला राजा से मिलना है । द्वारपाल बोला महाराज बिना हमसे मिले राजा के पास कैसे जा सकते हो । ब्राह्मण ने कहा अच्छा तो आप हमको मिला दीजिये । द्वारपाल बोला आप हमको क्या देंगे । ब्राह्मण बोला भाई हम को उसमें से

दशांश तुमको देंगे। द्वारपाल ने उनको अन्दर भेज दिया पर दूसरी डयोढी पर उनको फिर रोक दिया यहाँ भी पहरेदारों ,रों ने हिस्सा तय कर लिया।

आगे और भी दो जगह उनको रोका गया सबको हिस्सा का प्रमाण बताकर ब्राह्मण राजमन्दिर में पहुंच गये। राजा इस ब्राह्मण को देखकर प्रसन्न हुये तथा उनको सौ रुपये भेंट किये। जब विद्वान ब्राह्मण मन्दिर से निकले तो उनको भेड़ियों ने पकड़ लिया। पण्डित हमारा आपका क्या तय हुआ था। वह साधु पण्डित बोले भाई हमारा तुम्हारा आधा तय हुआ था यह लो पचास रुपये। आगे चले फिर भेड़िया आ गया। पण्डित जी क्या मिला है। हमारा हिस्सा दो पच्चीस रुपये इसने झपट लिये। आगे फिर भेड़िया आ गये। उनको भी हिस्सा देना पड़ा। अन्त तो गत्वा ब्राह्मण देव पर एक रुपया बचा जो अपनी पत्नी को लाकर दे दिया।

इस पर पत्नी को बड़ा क्रोध आया। पूरे दिन में एक रुपया लेकर आये हो। वह राजा भी अन्धा है। जो विद्वान का परख नहीं कर सकता। जाओ इस रुपये को राजा के माथे ही मारकर आओ। ब्राह्मण ने सब किस्सा सुनाया। कि रुपया तो मुझे सौ मिले थे पर राजा के कर्मचारियों ने ले लिये। कारण वह कर्मचारियों ने मुझे इसी वायदे पर जाने की मिलने की स्वीकृति दी थी। मैं भी वचन बद्ध था। सबका मान करके आया हूँ। मेरे पास तो यह एक ही रुपया बचा है।

पत्नी ने कहा इसको तुम राजा को ही दे आओ। वह गरीब विद्वान ब्राह्मण फिर राज भवन में गया पर उसको किसी ने घुसने नही दिया। कही यह ब्राह्मण हमारी शिकायत न कर दे एक दिन ब्राह्मण देव राजमार्ग में खड़े हो गये। राजा की गाड़ी आ रही

थी। उसका कोई राजा के पास तो जाने नही देते। पर वह दूर से ही राजा को रुपया दिखा रहा है। राजा ने कहा देखो वह ब्राह्मण क्या कह रहा है, उसको इधर लाओ। सेवक चालाक भेडिये बोले महाराज यह ब्राह्मण की जात ऐसी ही होती है। उस दिन जो आपने ब्राह्मणको सौ रुपये दिये थे। उनमें एक रुपया खोटा आ गया है। उसे यह ब्राह्मण दिखा रहा है। सेवकों ने गाड़ी नहीं रोकी तथा वह महाराज को दूसरे मार्ग पर ले गये। ब्राह्मण अपना मुँह लेकर घर आ गया। पत्नी को उन भेड़ियों की चाल तथा अपने पति का अपमान देखकर बड़ा दुःख हुआ। वह सिंहनी पतिव्रता उठकर खड़ी हो गई उसको भी अपनी विद्या पर अधिकर था। उसने एक ब्राह्मण युवक का रूप बनाया। सुन्दरी थी वह सुन्दर युवा ब्रह्मचारी स्वरूप धारण करके राजभवन की ओर चल दी। भेडियाओं ने उसको भी रोका वह सबको वचन देती चली गई। किसी को दस रुपये किसी को बीस रुपये और किसी को पचास रुपये का वचन देकर राजमन्दिर में पंहुच गई। राजा उस ब्रह्मचारी के सौन्दर्य को देखकर बड़ा प्रभावित हुआ। और बोला (कुत् आगम्यते ब्रह्मन्) हे ब्रह्मन् आप कहां से आ रहे है। ब्रह्मचारी बोला (कैलाशादागतोस्म्यहम्) मैं कैलाश से आ रहा हूँ।

राजा-शिवस्य चरणौ स्वस्ति्। श्रीशिव जी तो प्रसन्न हैं। ब्रह्मचारी-(कि प्रच्छसि शिवोमृत:) महाराज आप क्या पूछते है शिव जी मर गये। राजा एक दम डर गया आप क्या कह रहे है। तो भगवन् उनके परिवार की क्या दशा होगी। ब्रह्मचारी ने कहा महाराज उनका आधा शरीर विष्णु के पास है। तथा आधा शरीर गिरजा के पास है। उनके मस्तक पर रहने वाली गंगा सागर में मिल गई। तथा उनके मस्तक का चन्द्रमा आकाश में चला गया उनके मस्तक पर विराजमान शेष भगवान पाताल में चले गये।

उनका सर्वज्ञत्व उनका ऐश्वर्य महाराज आप में आ गया और उनका भिक्षा मांगना मुझ में आ गया जो एक-एक के दरवाजे पर भटकना पड़ रहा है ।

राजा उस ब्रह्मचारी से बड़ा प्रभावित हुआ और बोला आपकी जो इच्छा है सो मांगिये । ब्रह्मचारी बोला राजा वचन दे रहे हो । राजा बोला मै सत्यवादी हूँ । ब्रह्मचारी ने उन चारों भेडिये सेवकों को बुलवाया । वह चारों भेडिये सामने खड़े हैं । ब्रह्मचारी कहता है। महाराज इनके दस कोड़े लगवाइये । इसने आपसे मिलाने के दस रुपये मांगे थे । दूसरे में बीस कोड़े लगाये गये । इस प्रकार उन भेडियों की खाल खींची गई । राजा ने ब्रह्मचारी का अच्छा सन्मान किया वह राजी खुशी अपने घर लौटकर आ गई पतिदेव भी उसको चातुर्य से प्रभावित हुये राजा ने आदेश निकाला कि । मेरे दरवाजे पर ब्राह्मण के आने जाने में कोई रोक टोक नहीं है । राजा ब्राह्मण था ।

चतुर स्त्री खोटे पति को भी निभा लेती है

एक सेठजी बड़े क्रोधी थे सदा कलह ही उनको अच्छा लगता था । पर भाग्य से स्त्री ऐसी मिली कि वह कभी कलह का अवसर ही नहीं आने देती थी । इससे सेठजी का मन भीतर ही भीतर जलता था । एक दिन सेठजी ने सोचा आज कहल जरुर करूंगा और इस स्त्री में मार लगाऊँगा । घर आते समय बेगन ले आये सब्जी के लिये । घर में स्त्री को यह नहीं बताया आज क्या साग बनेगा । स्त्री ने सोचा आज यह जरुर मार लगायेगा । उस बेचारी

ने अपनी समझ से कई साग बना लिये । सेठजी भोजन को आ गये उनका आसन लगा दिया तथा थाल में पूरी साग सब रख दिये ।

सेठ जी बोले यह क्या साग बनाया है हम तो बेगन का भुरता खाना चाहते है । उस गरीबनी ने थोड़ा सा भुरता भी बना लिया था । वह उसकी प्रकृति जानती थी पर सेठजी भुरता देखकर बोले अरी भुरता तो है पर हम तो बेगन का आचार ख़ाना चाहते थे । उसने अचार भी लाकर दे दिया । सेठजी बोले हमको तो सूखे बेगन चाहिये उसने सूखा बेगन भी दे दिए ।

अब तो सेठ जी की बात जा रही है बड़े शर्मिन्दा हो गये । क्रोध में आकर बोले हमको छी-छी चाहिये । अब यह कहां से लायेगी यह मौका मिल गया मार लगाने का पर भाग्य से उसके बच्चे ने कुछ पूर्व ही छी-छी करी थी उसी समय सेठजी आ गये वह उसे उठा न सकी । पर गन्दगी दूर करने को एक डलिया में ढक दी थी । सेठ जी को छी-छी की जरुरत पड़ी सो सेठानी ने डलिया उघाड़ कर दिखा दी । लीजीये यह लाला की छी-छी सेठजी बड़े लज्जित हुये उसी समय चुपचाप उठकर चल दिये ।

कथा में सोने से खारी अकृत मिलता है

एक सेठानी नित्य कथा सुनने जाती थी । एक दिन उसके पति ने कहा भाई तुझे बड़ी कथा की चाट लग गई है । वहाँ क्या होता है । तुझे क्या मिलता है । सेठानी ने कहा अजी वहां तो अमृत की वर्षा होती है । सेठजी बोले अच्छा तब तो मै भी आज तेरे साथ

चलूँगा। सेठजी आज नये कपड़े पहिन कर बड़े चाव से कथा सुनने गये। वहां एक वृक्ष के सहारे बैठ गये। ठण्डी पवन लगते ही सेठ जी को निद्रा आ गई उस समय एक बन्दर ने ऊपर से मूत्र कर दिया। सो सेठजी उसे चाटने लगे कि अमृत वर्षा हो रही है। अहा पत्नी ने ठीक कहा था कि अमृत बरसता है।

कथा सुनकर सेठजी घर आये। सेठानी ने पूछा कहो कथा में कैसा आनन्द रहा सेठ जी बोले भाई आनन्द तो रहा पर खारी अमृत बर्षा। सेठानी बोली आप कहीं सो तो नही गये सेठजी-हां थोड़ी नीद तो आई थी। सेठानी-ठीक है जी जो सोता है उसे खारी अमृत मिलता है और जो जागता है उसे मीठा अमृत मिलता है। इसलिये कथा में सोना नही चाहिये।

ब्राह्मण को भोजन कराने से देवता प्रसन्न होते है

एक राजा गंगा जी का भक्त था। वह एक मन दूध गंगा जी पर चढ़वाता था। यह काम उसके पुरोहित जी करते थे। प्रतिदिन एक मन दूध गंगाजी पर चढ़ाना। एक दिन पुरोहित तथा पुरोहितानी दूध चढ़ाने गये, उस दिन गंगा किनारे कुछ ब्राह्मण बैठे थे। उनको देखकर पुरोहित ने अपनी पत्नी से कहा आज इस दूध की खीर बना कर ब्राह्मणों को खिलाओ।

पत्नी ने कहा राजा ने तो दूध चढ़ाने को कहा है आप उनकी आज्ञा की अवहेलना कर रहे है। पुरोहित बोले इस दूध को हम अपने काम में तो नहीं ले रहे। तुम खीर बनाओ पत्नी ने खीर तैयार की ब्राह्मण भोजन का गंगा किनारे पर उत्सव हुआ। उसी

रात राजा को भगवान ने स्वप्न दिया राजा जैसी तुम्हारी गंगा में दूध चढ़ाने से मुझे प्रसन्नता नहीं हुई । जैसी ब्राह्मणों को खीर खिलाने से हुई है । राजा ने प्रातः पुरोहित जी को बुलाया । पुरोहित जी ने कहा महाराज गंगा किनारे पर कुछ ब्राह्मण बैठे मैंने थे । उस दूध की खीर बनवाकर भोजन करा दिये । राजा ने कहा पुरोहित जी अब आप गंगा किनिारे पर ब्राह्मण भोजन कराया करो ।

पढ़ने के बाद मनन करना चाहिये

विद्या पढ़ने से काम नही चलता उसका मनन करना सुनना चाहिये अनुभव होने पर ही विद्या सफल होती है ।

चार मित्र थे वह चार विषय के धुरन्धर विद्वान थे एक दिन द्रव्योपार्जन को चले । मै किसी राजा से मिलेंगे । अपने पाण्डित्य से उससे धन कमायेंगे । चारों विद्वान तो थे पर अनुभव हीन पहिला काम राजा से मिलने का समय निश्चित करना उनमें ज्योतिषी ने मुहूर्त निकाला आज रात के दो बजे मुहूर्त सर्वश्रेष्ठ है (उन्होंने यह नही सोचा रात मे राज से कैसे मिलेंगे) अब दिन में भोजन की व्यवस्था को वैद्य शास्त्री को साग लेने भेजा यह कोई अच्छा सा साग देखकर लेगा पर वह अनुभव हीन वैद्य सर्वरोग हरो निम्ब नीम सब रोगों का नाशक है । इससे अच्छा और कौन सा साग हो सकता है । वह नीम के पत्ते लेकर आ गये । तीसरे विद्वान् नैयायिक जा कि घी लेने को गये वह बाजार से एक पात्र में पतला घी ला रहे थे । उनको शंका हुई कि (पात्रधारे घृतयां घृता धारे पात्रं) इस शंका की निवृत्ति के लिये उसने पात्रको ओंधा कर दिया सब घी फैल गया । चौथे विद्वान् खिचड़ी बना रहे थे । हांडी

में भाव से ऊपर पात्र उधर रहा था । उनकी शंका हुई यह कौन लिंग है । उसकी परीक्षा करने को हांडी फोड़ दी ।

इस प्रकार खिचड़ी भी नष्ट हो गई । घी भी नष्ट हो गया । साग भी नीम के पत्तो का है वह भी प्रयोग में न आया । अब रात्रि को शुभ मुहूर्त में राजा से मिलने गये । वहां उनको चोर समझ कर पकड़ लिया । विद्या कितनी भी प्राप्त कर लो पर लौकिक व्यवहार में कुशल होना जरूरी है । अन्यथा हास्य होता है । हरिदास जी की सेवा हरिदास का परम प्रिय स्थान वृन्दावन पानी घाट मिट्टी स्थान यहाँ आपको प्रिया-प्रियतम की अनन्त लीलाओं का दर्शन हुआ है ।

एक बार स्वामी जी साधना में बैठे थे प्रिया-प्रियतम की फाग लीला होली का दर्शन कर रहे थे । श्री बिहारी जी पिचकारी चला कर जल बरसा रहे थे अबीर गुलाल की वर्षा हो रही है । प्रिया-प्रियतम दोनों ही आनन्द विभोर हो रहे है ऐसी रहस्य लीला का दर्शन किसको हो सकता है । यह तो हरि के हो गये उन पर ही हरी की कृपा हो सकती है । इस आनन्द समय दर्शनी भी बैठे थे ।

एक भक्त ने बड़ा कीमती इत्र हरिदास जी को भेंट किया हरिदास जी ने तत्काल इस इत्र को रेती में उड़ेल दिया । उस भक्त को थोड़ा दुःख हुआ कि मै तो यह कीमती इत्र स्वामी जो इस लिये लाया था । कि स्वामी इसे बिहारी जी की पूजा में रखेंगे, पर इन्होंने रेती में नष्ट कर दिया । उसी समय स्वामीजी ने कहा भाई तू बड़ा भाग्य शाली है । देख मन्दिर में फाग हो रहा है । बिहारी जी की पिचकारी छूटकर गिर गयी वह इत्र तुम्हारा होली के प्रयोग में गया । जाओ मन्दिर में दर्शन करो सेठ जी जो मन्दिर में गये तो क्या देखते है उसी इत्र की गन्ध से मन्दिर सुरभित हो रहा

है । भक्त आकर आपके चरणों में गिर गया ।

स्वामी जी से सभी प्रेम करते थे उनके दर्शनों के लिये दूर-दूर से भक्त आया करते थे । एक सेठजी ने आकर देखा स्वामी जी मिट्टी के पात्र का प्रयोग करते है तथा सेवा में उनके पास कोई अच्छे पात्र साहित्य नही है । अतः सेठ ने अपना पारस का टुकड़ा स्वामी जी को दे दिया बोला आप इससे सभी पात्रों को सोने के बनाकर सेवा में रखिये ।

स्वामीजी ने उस पारस टुकड़े को उठाकर यमुनाजी में फेंक दिया । अब तो सेठजी को बड़ा कष्ट हुआ । स्वामी जी बोले सेठ जी जाओ घाट की सीढ़ी के नीचे आपका पारस पड़ा है उसे उठा लाओ । सेठजी ने जो पानी में हाथ डाला तो उनकी मुट्ठी मे पचासों पारस के टुकड़े आ गये यह चमत्कार देखकर सेठजी चरणों मे आकर गिर पड़े । उनके साम्राज्य में किस चीज की कमी है स्वामी जी तो सदा उस गोलोक में ही निवास किया करते थे जहां सबसे बड़ा राज्य वैभव है । भक्तों पर सदा कृपा करना । सहज में अभिमानी के अभिमान को उतार देना उनके पास जाकर अभिमान स्वयं नष्ट होजाता था । तानसेन को जब अपनी विद्या का घमण्ड बढ़ गया । उस समय एक परिवार हीन बालक उनके आश्रम में आ गया जो कि थोड़े समय में उनकी सेवा प्रभाव से एक बड़ा संगीतज्ञ बन गया । वह भक्त बालक सदा प्रेमा वेश में रहता था न उसको भोजनों में रुचि न उसको वस्त्र धारण में रुचि शीत ग्रीष्म वर्षा सदा उसको एक समान वहीं बालक स्वामी जी की कृपा से बैजू बाबरा नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसकी विद्या को देखकर तानसेन भी लज्जित हो गये ।

स्वामी हरिदास जी को अकबर बादशाह को दर्शन देना

बाबा हरिदास सन्त शिरोमणि वृन्दावन में श्रीकुंजबिहारी जी की नित्य लीलाओं का दर्शन करते थे प्रभु उनकी सेवा भाव से इतने सन्तुष्ट थे उनके साथ ही रहा करते थे । श्री हरिदास जी आश्रम की रतिया में सदा बुहारी लगाया करते थे वहां उनको प्रिया प्रियतम के चरण चिन्हों के दर्शन होते थें । कभी किसी से कोई इच्छा नही रखते थे केवल निज आनंद मगन रहा करते थे । संगीत शास्त्र शिरोमणि दिव्य राग रागनियों का ज्ञाता तानसेन आपका शिष्य था । जो कि अकबर बादशाह के दरबार में गायन किया करता था । श्रीहरिदास जी के द्वारा वह दिव्य संगीत का ज्ञानी हुआ जैसे दीपक राग से दीपकों को जलाना, मेघराज से वर्षा करना अकबर बादशाह तानसेन की विद्या से प्रसन्न था ।

एक दिन बादशाह ने कहा तानसेन तुम्हारे गुरु कौन है जिनसे तुमने यह विद्वा प्राप्त की है । एकबार आप उनके दर्शन कराइये । तानसेन ने कहा महाराज मेरे गुरु किसी को दर्शन नहीं दते । बादशाह अति दीन होकर बोला तानसेन मै दर्शन करना चाहता हूँ । अति दीन राजा की अवस्था देखकर तानसेन बोले अच्छा आप वैष्णाव का स्वरूप बनाइये तब कहीं उनके साम्राज्य में आपको प्रवेश मिलेगा । अकबर बादशाह तिलक कण्ठी बगली बन्दी धारण कर तानसेन का तमूरा लेकर उनके शिष्य बनकर वृन्दावन चल दिये । वृन्दावन की सुरम्य लता कुंजों में शोभायमान हरिदास जी के आश्रम को देखकर मन प्रसन्न हुआ बाबा के दर्शन किये ।

हरिदास जी बोले तानसेन आज बहुत दिन में कुंज बिहारी जी के दरबार में आये हो । एक पद सुनाओ । तानसेन ने पद प्रारम्भ किया पर अशुद्ध गान हुआ । जिसे देख बाबा ने वीणा ले ली । उसकी वह दिव्य झनकार हुई मानों पुष्प बरस रहे है । एक ही झनकार में बादशाह का मन मोहित हो गया । स्वामी जी ने उसको शुद्ध करके सुनाया । बादशाह का सौभाग्य वह गद्‌गद् हो गया कैसे बनवा सकता है । राजा ने आकर कहा स्वामी जी मैं अपने की पूरी सम्पत्ति लगा कर भी इसको नहीं बनवा सकता और कुछ साधारण सेवा बताइये । राजा को अति दीन जान कर स्वामी जी ने कहा तुम मोरों को दाना डलवा दिया करो ।

अकबर बादशाह एक साधु के प्रभाव से प्रभावित होकर उनके चरणों को नमस्कार कर उनही का ध्यान करते अपने राज्य में लौट गये । यह श्री हरिदास जी की सेवा का चमत्कार देखा ।

हरिदास जी का बिहारी जी से साक्षात्कार

एक बृजवासी के मुख से सुनी वार्ता-श्री हरिदास जी निधिवन में बिहारी जी की नित्य लीलाओं का दर्शन किया करते थे । वैष्णव भी उनके पास दूर-दूर से आते थे । उनका भी उनके आश्रम में अतिथि सत्कार होता था । बिहारी जी सेवा गुसाई जी करते थे । बाबा हरिदास जी तो बड़े निःस्पृह थे । एक लगोटी करुआ के अतिरिक्त उनके पास और कुछ नहीं था वैसे उनके साम्राज्य मै कोई कमी नही थी । बाबा को तो अंगा रोटी के बनाकर बिहारी जी का भोग लगाना उसी प्रसाद को रुचि से पाना

ऐसा क्रम था। एक दिन बिहारी जी उनके सामने आकर बोल यह अंगा मुझे अच्छे नही लगते देखो मेरे मसूड़े छिल गये है। आप अच्छी रसोई बनाया करो।

हरिदास जी बोले बिहारी मै तुमको चिकनी चुपड़ी कहां से लाऊँ जैसा मै खाता हूँ वैसा ही तुमको खाना पड़ेगा। बिहारी जी बोले मै तुमको खर्चा दे दूँगा। लो एक मुद्रा रोज इससे अच्छा भोजन बनेगा तथा आये गये का सत्कार भी हो जायेगा। बाबा बोले भैया यह तो बड़ी व्याधि है, रोज सामग्री इकट्ठी करना, भोजन बनाना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। तुम एक काम करो इस मुद्रा को गुसाईजी को दे दिया करो वह तुमको चिकनी चिपड़ी का प्रबन्ध करेंगे। गुसाई जी तो बड़े प्रसनन हुयें उन्हें एक मुद्रा रोजाना मिल जाय। बिहारी जी का भोग लगा कोई आ जाय तो उसको जिमाना बाकी पैसा अन्टी लगाना। चरणों गिर पड़ा नेत्र आनन्द विभोर हो गये मानो दिन रात इसी स्वरूप का दर्शन किया करूँ।

सावधान होकर बादशाह ने कहा महाराज मेरे लिये कोई सेवा बताइये मै देश का राजा हूँ स्वामी उसक गर्व युक्त वचन का सुनकर बोले राजन् हमारे बिहारी जी के घाट की मिट्टी का एक कोना टूट गया है उसे जाकर बनवा दो।

राजा का बड़ा भाग्य जो बिहारी जी के घाट के दर्शन मिले। उसने देखा उस घाट का एक कोना टूटा है पर वह घाट तो रत्न जडित है उसे राजा एक दिन एक गोप नन्द गांव का भक्त ग्वारिया उसने सुना वृन्दावन में बिहारी जी के बहुत गाय है। मै वृन्दावन जाकर बिहारी जी की नौकरी करूँगा। बिहारी जी का पता लगाता वह ग्वारिया हरिदास बाबा के पास आ गया और बोला बाबा मै आपके बिहारी जी की सेवा करूँगा। हरिदास

ग्वारिया की भक्ति से बड़े प्रसन्न हुये और बोले भैया पहले तुम प्रसाद पाय लो गुसाई जी या ग्वारिया को भोजन कराओ। गुसाई जी झुँझलाय के बोले बाबा एक मुद्रा तो मिलती है। मै किसको भोजन कराऊँ। यह सुन ग्वारिया बोला बाबा मै भोजन नही करूँगा। बाबा बोले भाई हमारे अंगा को प्रसाद लेले। ग्वारिया ने बाबा की सेवा में अपना जीवन लगा दिया। बिहारी जी भी उस अनन्य भक्त ग्वारिया से बड़े प्रसन्न जैसे हरिदास जी से बतराते वैसे ही ग्वारिया से बतराते यह सौभाग्य गुसाई जी को नहीं। रात्रि के समय बिहारी जी ग्वारिया के कन्धा पर बैठकर सेवा कुंज में रास मण्डप में जाते थे। एक दिन ग्वारिया के साथ सेवाकुंज में गये तब बिहारी जी ग्वारिया से बोले देख दरवाजे पर बैठ जा कोई अन्दर न आये। कुछ समय बाद शंकर भी रास में आये पर ग्वारिया ने उनको रोक लिया आप भीतर नहीं जा सकते। अब दोनों मे विवाद होने लगा। शिवजी कह रहे है भाई हम तो रोज आते है तुम रोकने वाले कौन हो।

रास मण्डल में बिहारी जी ने देखा कि अभी शंकर नही आये कहीं दरवाजे पर विवाद तो नही हो रहा।

बिहारी जी ने देखा शंकर का और ग्वारियां का बड़ा विवाह हो रहा है तब श्रीबिहारी जी बोले भैया इनको मत रोके यह प्रतिदिन आते है। शिवजी और बिहारी जी रास मे ये। आज रास में बहुत विलम्ब हो गया।

सभी रास की सहचरी अपने स्थानों मे चली गई। श्री शंकर बाबा भी कैलाश की ओर चल दिये। बिहारी जी ग्वारियां के कन्धा पर बैठ कर अपने मन्दिर की ओर चल दिये। ग्वारिया ने शैयां पर शयन करा दी। थोड़ी देर बाद ही गुसाई जी अपने समय से पूजा मंगला आरती करने आये। जेसे ही पुजारी ने घन्टा बजाई

उसी समय मंगला ने घन्टारी छीन ली और बोला अजि मंगला नहीं होगी । अब तो दोनों में वाद-विवाद होने लगा । गुंसाई जी मंगला आरती करना चाहते है । पर मंगला ग्वारिया उनको रोक रहा है । उसी समय बाबा हरिदास जी डर गये बोले भाई सवेरे ही सवेरे यह कैसा कोलाहल मचा रक्खा है । आपने दोनों की बात सुनी । मंगला ग्वारिया बोला बाबा आज बिहारी जी अभी तो रस से लौटकर आये है । आँख लगी होयगी कि गुसांई जी घन्टारी बजा कर जगा रहे है । बाबा हरिदास भक्त ग्वारिया की बात सुनकर बोले गुसांई जी आज मंगला नहीं होगी ।

बस तभी से ही बिहारी जी मे मंगला नहीं होती तथा घन्टारी का भी प्रयोग नही होता बिहारी जी की आरती बिना घन्टारी के ही होती है । भगवान की भक्तों पर कैसी कृपा है ।

पतिव्रता पति की सेवा में अपने शरीर की भी आहुति दे देती है

सिद्धकेतु नाम के राजकुमार शिकार खेलने को निकले उनके साथ निषाद भी जाया करता था निषाद परम भक्त था इसी प्रकार उनकी पत्नी शवरी भगवदभक्त एवं पतिव्रता थी ।

आज राजकुमार जब जंगल में गये तब उसने अपने निषाद को आदेश दिया देखो कहीं शिकार है । निषाद जंगल में गया वहां उसे एक शिवलिंग पड़ा हुआ मिला जो कि जल हरी से अलग हो गया था। उस सुन्दर शिव लिंग को निषाद ने बड़ी भावना से उठा लिया एवं राजकुमार से बोला यह कैसा सुन्दर शिवलिंग है । आप विद्वान है मुझ इसके पूजन की विधि बतलाइये । राजकुमार ने

कहा-भाई शिव लिंग को षोडषोपचार, विधि से पूजा करनी चाहिये । जैसे जल, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आरती आदि सविधि पूजाकर इसमें विशेषा विधि शंकर पर चिताभस्म चढ़ाने की है । ऐसा सुनकर निषाद बड़ा प्रसन्न हुआ तथा उसने शिव लिंग का पूजन प्रारम्भ कर दिया । वह चिंता की भस्म का बराबर ध्यान रखता । चिता भस्म लाकर बड़ी सावधानी से रखता था । एक दिन जब पूजा के बाद चिता भस्त चढ़ाने लगा तो देखा आज उसके पास चिता भस्म नही रही । बड़ा दुखी हुआ कि आज पूजा अधूरी रह गई अब मै क्या करूँ । इसके बिना मै एक क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकता । इस प्रकार की निषाद की वेदना देखकर पत्नी भी बड़ी व्याकुल हो गई । मै पति के बिना एक क्षण जीवित नही रह सकती । उसी समय शबरी ने कहा स्वामी आप चिन्ता न करों मै आपको उपाय बताती हूँ । देखो यह हमारी झोपड़ी पुरानी हो गई है इसमें बैठकर अग्नि लगा देती हूँ मै भस्म हो जाऊँगी । आपके पूजन को बहुत दिन को भस्म मिल जायेगी । पूजन में श्रद्धा एवं विश्वास वह भी पूजा के प्रेम मे पत्नी को भूल गया उसी समय पत्नी ने अपने आपको भस्म कर दिया । अब तो निषाद को भस्म मिल गई । पूजा के भाव में भरे हुये निषाद ने अपनी पत्नी को आवाज दी कि कहां है प्रसाद ले जा ।

ऐसा कहते ही क्या देखते है कि पत्नी निकलकर आ गई । निषाद को जब पूर्व घटना का ध्यान आया कि तू तो भस्म होगई । कहां से आ गई । पत्नी ने कहा मै जब झोपड़ी मे गई तथा उसमें अग्नि की ज्वाला उठने लगी तब मुझे ऐसा मालूम हुआ कि कोई मुझे सरोवर के किनारे ले जा रहा है । उस अग्नि की तो गरमी भी मुझे नहीं मालूम पड़ी । यह चमत्कार देखकर निषाद शंकर के चरणों मे गिर पड़ा एवं फूट-फूट कर रोने लगा । निषाद दम्पति

आज शंकर की इस अपूर्व अनुकम्पा का स्मरण कर रहे थे कि उसी समय एक प्रकाश हुआ उसमें से विमान दीखने लगा तथा निषाद दम्पति उसमें बैठकर चले गये ।

सब के साथ सद्भाव रखना ही धर्म है

आप प्रातः काल उठते है स्नान करते है । पूजा करते है दो घन्टे आसन लगाकर साधना करते है । बड़ा अच्छा है बाकी समय व्यवसायमें झूट बोलते है रिश्वत लेते है निन्दा करते है दूसरो से कहते है कि आप आन्हिक नहीं करते आपका कल्याण कैसे होगा । यह सब लोक के दिखाने का रूपक है यदि आप देर से उठते है तथा आसन लगा कर बैठने का समय नहीं है तो लोग कहते है यह अधार्मिक है ।

बहुत से व्यक्ति रूपक बनाते है पर कर्म उनके अच्छे नहीं है । रूपक की अपेक्षा सद्भाव रखना अच्छा है । किसी का तिरस्कार मत करो किसी से दुर्भाव मत रक्खो । किसी के पापों का चिन्तन मत करों । सब को अच्छी नजर से देखो । किसी से बुरी भावना रखना, परमात्मा से द्वेष करना है । किसी से द्रोह मत करो । इससे तुम्हारी सदवृत्ति बनेगी वासना नष्ट हो जायेगी । अभिमान भी अपने आप किनारा कर जायेगा ।

अहंकार को नष्ट करने का साधन यही है कि द्रोह का त्यागना । यदि कोई अपराध भी करता है उसको सह लेना परमात्मा की कृपा का द्योतक है एक महात्मा स्नान करके आ रहे थे उनको किसी दुष्ट ने छू लिया महात्माजी फिर स्नान करे चले गये । उस

दुष्ट ने आकर फिर उनका स्पर्श कर लिया । वह फिर स्नान करने चले गये किसी प्रेमी ने कहा बाबा आप इसको ड़ाटते नही है ।

महात्मा जी बोले भाई साधु का काम साधुता है तथा दुष्ट का काम दुष्टता जब वह दुष्ट अपनी आदत नहीं छोड़ता तो मै साधु होकर अपना मार्ग क्यों छोड़ दूँ । अंभी तो भगवान मेरे सहायक है यदि मै इसको दण्ड देताहूँ ता वह परमात्मा मुझसे दूर हो जयेगा । एक महात्मा के साथ एक यवन ने ऐसा ही व्यवहार किया । वह महात्मा आता था उसे यवन छू लेता था उस यवन ने १०८ बार महात्मा से चक्कर लगवाये यह देखकर भगवान लक्ष्मी के साथ उस महात्मा की सहायता करने आये । इधर वह महात्मा भी सौ चक्कर लगाकर थक गया और उसको आवेश आ गया वह एक दण्डा लेकर उस यवन को मारने चला । यह देखकर भगवान लक्ष्मी से बोले चलो लौट चलो । लक्ष्मी ने कहा महाराज आप तो इस साधु की सहायता करने को आये थे । भगवान ने कहा लक्ष्मी वह साधु अभी तक तो मेरे भरोसे पर था पर अब वह स्वयं अपनी रक्षा करना चाहता है । यदि एकमात्र भगवान पर ही विश्वास करते है । फिर उनको दूसरी जगह सहायक देखने का विचार नहीं बनता । इसलिये सबके साथ सद्भाव रखना साथ मात्र परमात्मा में विश्वास रखना यही सद्धर्म है ।

जीवन सबको प्यारा है

आप कैसी भी संगति करते रहें पर ज्ञान किसी बिरले को ही प्राप्त होता है अन्यथा मोह ममता सबको सताती रहती है एक स्थान पर भागवत की कथा होती थी वहां कथा वाचक एक सन्यासी थे वह विरक्तों की कथा अधिक सुनाते थे । एक भक्त

कथा में प्रतिदिन नियम से आता था । पर बीच में ही उठकर चला जाता था ।

एक दिन एक सन्यासी गुरु ने पूछा भाई तुम कथा में से क्यों उठ जाते हो । भक्तों ने कहा जी घर मेरा दूर है देर होने से माता पिता एवं मेरी पत्नी चिन्ता करने लग जाती है, आप तो कहते है परमात्मा ही एकमात्र साथी है, पर आप तो सन्यासी ठहरे इन गृहस्थियों की वेदना को क्या जाने । मेरा तो घर गृहस्थ से प्रेम है तथा घर गृहस्थी भी मुझ से अधिकतर प्रेम करते है । महात्मा ने कहा बेटा तुम अभी नही समझते यह सब दिखावटी प्रेम है । हम एक दिन इसकी परीक्षा करेंगे । देखा मैं तुमको एक रूखड़ी देता हूँ इसे तुम खा लेना इससे तुम्हारा शरीर ज्वर के समान दीखेगा उस समय मैं तेरा इलाज करूंगा तुझे मालूम होगा कि घर वालों का कैसा प्रेम है ।

भक्त ने ऐसा ही किया इससे उसको एक भयंकर ज्वर जैसा बन गया । डाक्टर वैद्य उपचार कर रहे हैं पर कोई लाभ नहीं हो रहा है यह ज्वर नहीं है । उसी समय महात्मा जी आ गये उनको देखकर सब उनके पैरों में पड़ गये । श्रीस्वामी जी ने कहा कि इस पर किसी ने घात चलाई है सभी घर के सदस्य कह रहे है ।

आप ही इसका उपाय करिये । स्वामीजी बोले भाई इलाज तो है पर घात किसी दूसरे पर लग जायेगी यह तो अच्छा हो जायेगा ।

स्वामी ने एक कटोरा में पानी मंगवाया उसको लड़के पर घुमाया और सामने रख दिया लो भाई अब इसे कोई पी जाये यह लड़का ठीक हो जायेगा । पानी पीने वाला चला जायेगा । सबको अपना-अपना जीवन प्यारा । माता पिता पत्नी सभी आँख बचाने लगे ।

पिता कहते है मै मर गया तो मेरी स्त्री कहां जायेगी माता कहती है मै मर जाऊँगी तो मेरे पति मेरे बिना नही रह सकते। पुत्र वधू कहती है मेरी अभी उमर ही क्या है मैंने तो अभी कुछ देखा नहीं पानी पीने को कोई तैयार नही। कुछ लोग कह रहे है स्वामी जी आप ही इस पानी को पीकर इस लड़के को बचाइये। आप तो परोपकारी साधु है। हम आपको कथनानुसार सब आपका काम करेंगे आपकी कीर्ति अमर हो जायेगी।

स्वामी जी ने कहा अच्छा तो मै ही पीता हूँ और वह उस पानी को पी गये वह बालक उठ खड़ा हुआ। और बोला स्वामी जी संसार में कोई किसी का नहीं है सब सम्बन्ध स्वार्थ परायण है। स्वामी बोले बेटा एक मुरारी भगवान के चरणों की सेवा ही सच्ची है और तो सब मृग तृष्णा है इसलिये प्रेम करना है तो एक मुरारी भगवान से करो बालक को बड़ा ज्ञान प्राप्त हुआ।

हरिनाम का प्रभाव

श्री चैतन्य महाप्रभु के समय एक यवन बालक जोकि छोटी सी अवस्था से हरि भक्त था। निरन्तर हरि कीर्तन करना ही जीवन का लक्ष्य था। उनका कीर्तन जोर-जोर से होता था जिससे प्राणी मात्र का उद्धार हो।

एक बार कुछ लोगों ने उनको बदनाम करने को एक सुन्दरी वेश्या उनके पास भेज दी। वेश्या अपना श्रृगांर कर हाव-भाव से उनको आकर्षित करना चाहती है पर हरिनाम दास रात भर कीर्तन करते रहे। इस प्रकार तीन रात बीत गई। तब आपके नेत्रों में अश्रु बरसने लगे। वेश्या से बोले तुमको बड़ा कष्ट हुआ है। वेश्या भी हरिभक्त हरिदास की सच्ची भक्ति देखकर अपना पेशा छोड़कर

अपनी सभी सम्पति साधुओ को बांटकर हरिभक्ति में लीन हो गई ।

यवन अधिकारी हरिदास के इस प्रभाव को न देख सके । उनने न्यायाधीश से कहा कि एक मुसलमान हरिकीर्तन करता फिरता है इसे बन्द कराइये । न्यायाधीश ने उनको दरबार में बुलवाया । कहा तुम इस काम को छोड़ दो । हरदास ने कहा जो हृदय में विराजमान है । वह कैसे निकल सकता है । न्यायाधीश उसकी सच्ची भक्ति को जानता था । पर अपने आसन की रक्षार्थ उनको सजा सुना दी । मुसलमानों ने उस भक्त में बेतों की मार दी पर उसने हरि कीर्तन नहीं छोड़ा । इसे मरा जान कर गंगा नदी में बहा दिया । बहते-बहते किसी घाट के किनारे लग गये वहां कुटिया बनाकर हरि कीर्तन करने लगे अब तो उनका और भी प्रभाव बढ़ गया । भक्त हरिदास ने भी चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द जी आदि भक्तों के साथ हरिनाम कीर्तन का प्रचार देश देश में गांव-गांव में किया ।

वृद्धावस्था में पैसा ही सहारा है

एक सेठ जी बड़े व्यापारी थे । उन्होंने बड़े परिश्रम से पैसा पैदा किया था । वृद्धावस्था आने पर अपना सब कारोबार लड़कों पर सौप दिया । तथा अपनी जमा रकम पूँजी भी लड़कों को बाँट दी । कुछ समय तक तो लड़कों ने पिता जी की देख भाल की पर (ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय) लड़कों ने उसकी देख-रेख कम कर दी ।

वृद्धावस्था, में पैसा पास में नहीं, शरीर कमजोर पड़ गया

ऐसी अवस्था में सभी अनादर करते है। सेठ जी न कुछ खा सकते न धर्म कर सकते। उनको लड़कों की बहुओं ने कमरे से भी हटा दिया कमरे में ससुर जी चाहे जहां थूक लेते है। सब घर को गन्दा करते है। उनको पोरी में रहने को बोल दिया। एक टूटी खटिया एवं जीर्ण शीर्ण बिस्तर दे दिये। बड़ी दुर्दशा थी। कोई खाने को दे गया तो ठीक है, अन्यथा भूखे पड़े रहे। बिस्तरों में दुर्गन्ध आ रही है। कोई साफ करने वाला नहीं। बिना पैसे के आज सेठजी की कैसी दशा हो गई। इसलिये कहते है। वृद्धावस्था को अपने पास कुछ अवश्य रखना चाहिये। सब कुछ घर में बूढ़े सेठ जी का था पर अब उनको कोई रखने वाला नहीं और दिन रात उनको सब दुत्कारते थे। नाती कहते है बाबा तुम कितने गन्दे हो सेठजी अत्यन्त दुःखी थे। एक दिन उनके एक पुराने मित्र उनसे मिलने आये तथा मित्र की दशा देख कर बड़े दुःखी हुये दोनों बराबर उम्र के थे।

मित्र ने कहा भाई तेरी कैसी दशा है क्या तुम्हारे कोई पुत्र नही है। तथा तुम्हारा सब पैसा कहाँ गया। सेठ जी ने कहा भाई सब कुछ है। पैसा तो मैंने सब लड़कों को बाँट दिया। मित्र बोला भाई यही तुमने गलती की है। बुढ़ापे के लिये पैसा जरूर रखना चाहिये अच्छा अब तुम दो थैली बनवाना। मै जो कुछ आपको दे जाऊँ उसे अन्त तक सम्भालकर रखना। कोई पूछे तो कह देना मेरे मित्र से कुछ लेन-देन था वह दे गये है।

मित्र के चले जाने पर सेठजी ने बहुओं से कहा मुझे दो थैली बना देना। वह बड़ी खुश हई वह समझ गई कि इनके मित्र आये थे इनकी कुछ सहायता करेगें। बहुओं ने बड़ी जल्दी दो थैलिंया बना दी। दूसरे दिन मित्र उन थैलियों को ले गये दूसरे दिन मित्र उन थैलियों को ले गया था उनमें माल भर कर रख गये। सेठ जी ने अपने सिरहाने लगा ली। बहुओ ने देखा कि बाबा के पास दो

थेलियां आ गई है। उन्होंने अपने पतियों से कहा कि बाबा के मित्र इनको कुछ दे गये है और यह यहां पोरी में पड़े रहते है। इनको कोई मारकर सब माल ले जायेगा।

लड़के भी समझदार थे। एक दिन बोले पिता जी आपको यहाँ बहुत तकलीफ होती है। तो आप ऊपर कमरे में रहिये अब तो बाबा की बड़ी खातिर होने लगी। बड़े पलंग पर बिस्तर लगाये गये। सुन्दर वस्त्र पहिनाये अब बाबा को रोजाना हलुवा मिलने लगा। बाबा भी समझते थे कि यह सेवा इस माल की हो रही है। बेटा ने पूछा पिता जी यह पैसा कहां से आया है।

बाबा ने कहा बेटा यह पैसा मेरे मित्र के पास था। वह दे गया है। अब मेरी इच्छा है किसी तीर्थ पर रह कर कुछ दान पुण्य कर दूँ कारण अब शरीर का भरोसा नहीं है। लड़कों ने कहा नही नही पिता जी अब आप ऐसी अवस्था में कहा जायेगे। आप मेरे पास आनन्द से रहिये। दूसरा कहता है नहीं नहीं पिताजी आप मेरे साथ रहें। बड़े लड़के की बहू ने कहा पिता जी आपको बड़े लड़के के पास ही रहना चाहिये। अब तो बाबा की सेवा होने लगी। एक दिन बाबा का अन्त दिन आ गया था। उनको नीचे सुला दिया। बाबा को वाय आ गई। कोई कहता है बाबा राम राम कहो तो बाबा कहते है कि रामदास पर भी मेरा पैसा है। बाबा का एक दिन देहान्त हो गया। सभी बान्धव आ गये पुत्रों ने भी उसका संस्कार विधिवत किया। बहुत पैसा लगाया। सभी लोग कह रहे है भाई सेठजी की फुलवारी फल रही है सेठ जी बहुत पैसा छोड़ गये है। लड़कों को भी ऐसी आशा थी। भीड़ भाड़ हटने पर जो सेठजी का रोकड़ा सम्भाला गया तो कुछ नहीं निकला उसमें खीपड़ाओं के रुपये भर रहे है। स्वार्थ बस लड़कों ने सेवा की। जो सेवा करते है वह पैसे की सेवा करते है। माता पिता की

कौन सेवा करता है । इसलिये वृद्धावस्था के लिये थोड़ा धन का संग्रह जरूर करना चाहिये । जिससे किसी से हाथ न पसारना पड़े ।

राम का विश्वासी भक्त

श्रीराम के भक्तो की अद्भुत भावना वह अपने सर्वस्व को सर्व भाव से चिन्तवन करते है । दक्षिण प्रान्त में एक तुलसीदास नाम के राम भक्त हुयें । सदा राम की माधुरी मूर्ति के चिन्तन में रहते थे । प्रतिदिन राम कथा सुनना जहां भी रामायण की कथा होती वहां बड़ी श्रद्धा से कथा रस का पान करते थे । एक दिन एक मन्दिर में रामायण के विद्वान् वक्ता आये थे ।

उनकी कथा में अपार जनसमुदाय एकत्रित होता था । वह आनन्द रस वर्धनी कथा के लोभी श्रोता बड़ी जल्दी स्थान घर कर बैठ जाते थे । इसी लगन से तुलसी दास भी सच्चा भावुक राम भक्त श्रोता भी एक ओर आकर बैठ जाता था । कथा रस पान करता आनन्द में विह्वल हो जाता था । आज की कथा सीता हरण की थी । कथावाचक पंचवटी का वर्णन कर रहे रावण ने आकर सीता हरण किया । यह सुनते ही राम भक्त तुलसी दास क्रोध में भर गया । कथा में ही चिल्लाने लगा कहा है वह रावण जो जगज्जननी सीता का हरण कर ले गया । मै उस दुष्ट को मार कर अपनी माता को अभी छुड़ाकर लाता हूँ ।

उसके इस प्रकार के भावावेश को देखकर श्रोतागण उसे समझाने लगे भाई यह कथा हो रही है यह त्रेता युग की बात है । पर उसे उनकी बातों पर श्रद्धा नहीं कथा में से उठकर चल दिया

कुछ पुरुष उसे समझाने को उसके साथ चल दिये पर वह किसकी सुनता है। घर आकर धनुष बाण ले घोड़ा पर बैठ लंका की ओर चल दिये। कुछ लोग कह रहे है यह विक्षिप्त हो गया है।

भक्त तुलसी दास दक्षिण दिशा की ओर चला जा रहा है। समुद्र के किनारे पहुंच गया उसने समुद्र में भी अपना घोड़ा दौड़ाया। उसी समय रामजी ने दर्शन दिये। रामजी बोले तुलसी दास मै आ गया हूँ भैया यह त्रेता युग की कथा है। सीता तो मेरे पास है। इस पर भी उसे विश्वास नहीं हुआ बोला जब तक मै अपनी माँ सीता को प्रत्यक्ष न देख लूँगा। तब तक मै किसी का विश्वास नहीं करूँगा। श्रीराम ने भक्तों की हठ को देखकर सीता के साथ दर्शन दिये। वह राम भक्त सीता को देखकर उनके चरणों में गिर गया। यह भक्त की सच्ची श्रद्धा।

भक्त तुलसी दास तीर्थ यात्रा को गये वृन्दावन भी आये इसके अनन्तर वह कहां गये यह कोई वृतान्त नहीं मिलता।

अनन्य भाव की सेवा ही फलदायक है

एक ब्राह्मण सदाचारी अपने कुटुम्ब का यह इच्छा प्राप्त वस्तु से पालन करता था। कभी किसी से याचना नहीं करता था कष्ट भी पाता था। किसी दिन भोजन भी नही मिलता था। स्त्री भी पतिव्रता थी पति सेवा परायण जो कुछ पति देव लाकर देते उसी से निर्वाह करती थी। कभी अपने परिवारीजनों के वैभव को देखकर ईर्ष्या नही करती। भाई बन्धु सब सुखी सम्पन्न थे पर उनसे भी सहायता नहीं लेती थी पतिदेव विद्वान थे पर याचना

करना तथा किसी के द्वार पर जाना अच्छा नही समझते । ब्राह्मण देव गीता के एक श्लोक के उपासक थे ।

अनन्याशिचन्तयन्तो मां येजना: पर्युपासाते,
तेषां नित्यामियुक्तानां योगक्षेम वहाम्यहम् ।

अनन्य भाव से जो परमात्मा का चिन्तवन करता है । उनके योगक्षेय निर्वाह का साधन स्वयं भगवान बनाते है ब्राह्मण की इस श्लोक मे बड़ी श्रद्धा थी । परमात्मा के चिन्तवन में वह एक चित्त था ।

एक दिन उनकी स्त्री ने कहा स्वामी आप इतने बड़े विद्वान है अपने भाईयों से भी अधिक योग्यता रखते हो । पर तुम कष्ट पा रहे हो और तुम्हारे भाई सब वैभव भोग रहे है । आप भी उनकी तरह उद्योग क्यों नही करते । आदि कुछ ऐसी बातें पत्नी ने कही इनको सुनकर तत्काल उनकी दृष्टि उसी श्लोक पर पड़ी अनन्या इसको पढ़ते ही बोले यह श्लोक क्या झूंठा है ।

ब्राह्मण तत्काल श्लोक के पूर्व भाग पर पीला रंग लगा दिया । तथा दूसरे भाग पर लाल रंग लगा दिया कि यह अशुद्ध है और श्लोक के द्वितीय भाग के प्रति कुछ अश्रद्धा हुई ।

उसी समय विचार मे मग्न ब्राह्मण घर से निकले कहीं एकान्त में बैठूँगा । उस समय पश्चात भगवान एक सुन्दर बालक के रूप में घोड़े पर बैठ कर उसके घर आये साथ में बहुत सा समान आटा दाल घी शक्कर आदि अपने अनुचरों पर रखवा कर लाये । और उस ब्राह्मण के घर में अन्न भंडार भर गया ।

उसकी पत्नी ने देखा कैसा सुन्दर बालक है उसके आधे अंग पर रेशमी पीताम्बर है । तथा आधे अंग पर लाल वस्त्र है । पत्नी ने कहा आप कौन है और इतना सामान क्यो रख चले है मेरे स्वामी आकर नाराज होगे । आप इस सबको जल्दी हटाओ ।

बालक ने कहा देखो तुम इसको इस समय तो रख लो तुम्हारा पति यदि विरोध करेगा तो मै सब सामान वापिस ले जाऊँगा ।

ऐसा कहकर बालक चला गया । कुछ समय बाद जब पति देव आये और उनने घर के भंडार को देखा । तब अपनी पत्नी से बोले, यह सब सामान किसका है । पत्नी ने कहा एक बालक आया था बड़ा सुन्दर आधे शरीर में पीला वस्त्र तथा आधे शरीर में लाल वस्त्र पहिने था । वह यह सब सामान रख गया है । मैंने तो बहुत विरोध किया था । पर वह फिर आने को कह गया था । अब आप कुछ भोजन कर लीजिये । ब्राह्मण ने कहा मै तो उस बालक के आने पर ही भोजन करूँगा । उसी समय वह बालक आ गया । देखते ही ब्राह्मण उनके चरणों में गिर गया । बालक ने कहा देखो मुझे बड़ा कष्ट है । तुमने मेरा आधा अंग लाल कर दिया है । पहले उस श्लोक के चरण को पीला करो । ब्राह्मण को बड़ा पश्चाताप हुआ । उसने तत्काल (योगक्षेम ब्रहाम्य) हूँ । इसको पीला कर दिया । बालक का पूरा पीताम्बर एक सा दीखने लगा । यह सत्य है अनन्य निष्ठ का सहारा वही भगवान है ।

शंकर से बड़ा कौन है

एक समय पार्वती जी महादेव जी से बोली भोलानाथ आप अपने राम की और राम के भक्तों की बड़ी महिमा सुनाते हो एक बार किसी भक्त के दर्शन तो कराओ जिससे मै यह समझ सकूँ कि आपके स्वामी के भक्त कैसे है ।

शंकर अपनी प्रिया के साथ हरि भक्त के दर्शन करने चल दिये । शंकर ने विचारा कि अर्जुन भक्त के घर चलना चाहिये ।

अर्जुन के दरवाजे पर दोनों पहुंच गये । द्वार पाल ने कहा शंकर आप थोड़ी देर बैठिये हमारे राजा सो रहे है । शंकर वहाँ की मार्यादा के अनुसार बैठ गये । पार्वती जी ने कहा भोलानाथ बहुत देर हो गई अब आप मुझे भक्त के दर्शन जल्दी कराइये । श्री भोलानाथ ने उसी समय द्वारकानाथ का स्मरण किया ।

बस श्री द्वारकानाथ आ गये और उनके साथ रुक्मिणी सत्यभामा तथा उद्धव जी भी आ रहे है । द्वारकानाथ ने कहा भोलानाथ आपने मुझे कैसे याद किया । शंकर ने कहा द्वारकानाथ आज पार्वती भक्त का दर्शन करना चाहती है और भक्तराज सो रहे है । मै उनके दरवाजे की मर्यादा को भंग नही करना चाहता । आपकी तो बहिन का घर है आप जाकर अर्जुन को जगा सकते है । जल्दी करिये पार्वती की भक्त दर्शन करने की बड़ी उत्कण्ठा है ।

द्वारकानाथ बोले शम्भों मै अभी जाता हूँ । द्वारकानाथ ने जैसे ही अर्जुन के मन्दिर में प्रवेश किया तो देखा सुभद्रा बहिन अर्जुन के पलंग पर बैठ कर पंखा से वियार कर रही है । सुभद्रा ने देखा कि भैया कृष्ण आये है । यह भी शीघ्र पलंग से उठकर उनके स्वागत को दौड़ी । द्वारकानाथ ने देखा अर्जुन के शरीर से पसीना बह रहा है । उनके इशारे से सब एक-एक पंखा लेकर अर्जुन को हवा करने लगे । सिरहाने की और द्वारकानाथ बैठे है । पंगायत की ओर रुक्मिणी जी बैठी है तथा दाँये उद्धव और सत्यभामा आमने सामने बैठे है। ।

उस समय उद्धव तथा सत्यभामा में कुछ इशारा होने लगा । द्वारकानाथ ने पूछा कि तुम दोनों क्या इशारा कर रहे हो । दोनों ने कहा प्रभु देखों अर्जुन के रोम-रोम से श्री कृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण की ध्वनि निकल रही है । रुक्मिणी जी ने कहा नाथ यह

नाम ध्वनि तो इधर पैरों से भी निकल रही है । द्वारकानाथ ने कहा यह तो इसके एक-एक बाल भी कह रहे है ।

अब तो पांचों ही आनन्द विभोर हो गये साथ में पांचवी सुभद्रा जी भी श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण एक स्वर में कहने लगी अर्जुन का मन्दिर आनन्द गंगा मे डूबने लगा । द्वार पर बैठे महादेव जी उन चारों की प्रतीक्षा कर रहे है । कोई तो अन्दर से जवाब लेकर आयेगा पर चारों ही मन्दिर में सो गये इस मन्दिर में क्या है । पार्वती जी बोली हे शम्भो मुझे भक्तराज के दर्शन जल्दी कराओ ।

इस प्रकार पार्वती की दर्शनों की उत्कट अभिलाषा देखकर आपने ब्रह्मा जी का ध्यान किया कि उसी समय ब्रह्माजी आ गये । ब्रह्मा जी ने कहा शंकर आपने मुझे कैसे याद किया । शंकर जी ने कहा ब्रह्मा जी मैने अर्जुन के मन्दिर में अर्जुन के जगाने को चार आदमी भेजे है पर एक भी लौटकर नहीं आया न जाने मन्दिर में क्या हो रहा है, मै मार्यादा का उल्लंघन करना नहीं चाहता हूँ । आप ही पता लगायें वहां क्या हो रहा है क्या इस मन्दिर में सभी सो जाते है । ब्रह्मा जी ने कहा भगवन् मै अभी अर्जुन को जगाता हूँ । तथा उन चारों का पता लगाता हूँ । ब्रह्माजी भी अर्जुन के अन्त:पुर में पहुंच गये और वहां का महोत्सव देखकर शंकर को भूल गये और वह भी चार मुखों से श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण गान करने लगे । अब तो वहां जाकर ब्रह्मा भी उस आनन्द में विभोर हो गये तो बाहर वालो की कौन सुनता है । उसी समय शंकर ने एक अन्तिम प्रयत्न और किया कि नारद जी को याद किया । उसी समय नारद जी आ गये । भोलानाथ आज आपने मुझे कैसे याद किया शंकर जी बोले नारद जी तुमको सबके अन्त:पुर में जाने का अधिकार है । तुम ही अर्जुन को जगा दो आज पार्वती दर्शन करना चाहती है । नारद जी ने कहा जो आज्ञा मै अभी

जगाकर आता हूँ। नारद जी भी अन्त:पुर में गये वहां के आनन्द को देखकर अपनी वीणा पर श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण इस प्रकार गान करने लगे तथा उस आनन्द मन्दाकिनी की लहर में एक दूसरे को भूल गये, अन्त में शंकर ने कहा जाओ देवी अब हम तुमको चलना ही पड़ेगा। कि यहां क्या कोई सोने की चिपक लग रही है जो कोई लौटता ही नही यह सब कहां जाते है। अब तो भोलानाथ चल दिये वहां का दृश्य देखकर तो शंकर और पार्वती भी दोनों बेसुध हो गये। श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण । अब हो गये वहां द्वादश रूद्र रूद्र तो अपने को भूल गये वह ताण्डव नृत्य करने लगे पार्वती भी उस नृत्य में लीन हो गई

नारद जी ने अपनी वीड़ां उठा लिया उसकी स्वर लहरी गूँजने लगी। महादेव जी ने भी अपने डमरु का ध्यान किया वह डमरु भी आ गया, वीड़ा और डमरू में भी श्री कृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण इस प्रकार स्वर निकलने लगे। जब अर्जुन की निद्रा खुली तब अर्जुन भक्त भी अपने घर का महोत्सव देखकर सब के बीच में आकर श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण इस प्रकार कीर्तन करने लगा। अर्जुन के नेत्रों में आनन्द अश्रु निकल रहे है। कुछ समय बाद जब वह कीर्तन समाप्त हुआ तब अर्जुन अर्जुन सब का आदर सन्मान करने लगे वह और सुभद्रा जी अपने घर आये हुओं को प्रणाम कर रहे है।

पार्वती जी भी सुभद्रा जी के भाग्य की बढ़ाई करने लगीं तथा भक्तराज अर्जुन की भक्ति जिसके रोम-रोम से श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण नाम की अहर्निश ध्वनि निकलती रहती है उनके दर्शनकर वह कृप-कृत्य हो गई भक्त रक्षक राम सच्चिदानन्द राम की कृपा की कमी नही है उनके प्रति भाव होना चाहिये। श्री नारायण दास भक्त सदा परमात्मा की याद में ही लगे रहते थे। वैभवशाली थे पर उन्हें

उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं । इसी प्रकार उनकी पत्नी मालती पतिव्रजा दिव्य चरित्र वाली उनकी संगिनी थी यद्यति मालती को कभी-कभी पुत्र न होने की पीड़ा सताती थी पर पतिदिव के सत्संग में सिब कुछ भूल जाती थी ।

एक दनि नारायण भक्त तीर्थयात्रा की भावना से घर से चले । पत्नी भी साथि में थी कई एक सेवक उनके साथ चलने को तैयार हुये पर उनको साथ नहीं लिया अकेले ही चल दिये । पहिले चित्रकूट गये । यही तो सीता राम का आश्रम है ।

वहां की पावन भूमि में वह लौट पौट हो गये चित्रकूट में रहकर श्रीराम की जन्म भूमि अयोध्या नगरी के दर्शन करने की कामना उत्पन्न हुई । वहाँसे अपनी पत्नी के साथ अयोध्या जी चल दिये । मार्ग में सोचा जिस रास्ते से होकर राम जी (बीहड़ जंगलों से होकर) आये थे । मै उसी मार्ग से होकर चलूँगा । ऐसा सोचकर पैदल ही अयोध्या की यात्रा करने को चल दिये । आज आप एक भयानक जंगल में पहुंच गये । जहां डाकुओं के रहने के स्थान थे ।

उस जंगल में डाकुओं ने आकर भक्त नारायण दास को आकर पकड़ लिया औ उनको बुरी तरह पीटने लगे । राम भक्त में इतनी मार दी कि वह बेहोश हो गये । उस अवस्था में डाकुओं ने उन्हें मरा समझकर एक गड्डे में डाल दिया । ऊपर से पत्थरों के टुकड़े डाल दिये । खोटी भावना वाले उन डाकुओं ने नारायण भक्त की पत्नी को पकड़ लिया और उसको पीटने लगे । मालती अपनी रक्षा के लिये श्रीराम जी को पुकारने लगी ।

हे शरणागत रक्षक, हे गरीबो पर कृपा की वर्षा करने वाले आप कहाँ हो बचाओ इन दुष्टों से मेरी रक्षा करो । हे जगत के नाथ इनको सद्बुद्धि प्रदान करो ।

मालती देवी के इस प्रकार पुकारने पर भक्त वत्सल श्री राम जी घोड़े पर चढ़कर उस जंगल में चले आये । डाकुओं ने देखा कि घोड़ों की टाप की आवाजें सुनाई पड़ रही है । वह लोग भयभीत हो गये । घुड़सवार को अपनी ओर आते हुये देखकर प्राणों की रक्षा करने हेतु भयभीत होकर भागे । गिरते-पड़ते भाग भाग रहे है किसी का हाथ टूटा किसी का पैर टूटा किसी का सिर फट गया इस प्रकार किसी दूर जंगल में जाकर पड़े मालती ने देखा कि घोड़े पर एक बड़ा सुन्दर बालक बैठा है । मेघ के समान वर्ण है रेशमी पीताम्बर धारण किये हुये है । कमल के समान नेत्र है । मुकुट से शोभायमान मुख कमल दिव्य आभूषणों से सुशोभित उस दिव्य बालक को देखा ।

मालती उस बालक को देखकर गद्‌गद् वाणी से कहने लगी कि आप कौन है? बालक ने कहा–मै रामदूत हूँ इन दुष्टों से आपकी रक्षा करने आया हूँ । देवी इस घनघोर जंगल में आप अकेली क्यों घूम रही हो । मालती ने कहा–मैं अपने पति के साथ अयोध्या जी जा रही थी । इन दुष्टों ने मेरे पति को मार दिया है । अरे बालक तुम मेरे धर्म के भाई हो मेरे लिए एक चिता तैयार कर दो मै तुम्हारा अहसान कभी नहीं भूलूँगी । बालक ने कहा–देवी तुम चिन्ता न करो तुम्हारा पति जीवित है । मैने रास्ते में आवाज सुनी थी मालती तुम कहां हो? ऐसा कहकर वह बालक मालती को लेकर उस गद्‌ढे की ओर चल दिया । वहां बालक ने उन पत्थरों को हटाकर उसके पति को निकाला । बालक के अंग स्पर्श होते ही भक्त नारायण उठकर खड़ें हो गये और भगवान श्रीराम के चरणों में गिर पड़े । प्रभु हमारे कारण आपको कष्ट सहना पड़ा हम तो अयोध्या आ रहे थे । किन्तु आपने मार्ग में ही कृपा कर दी । श्री राम जी अपने भक्तों पर ऐसी कृपा करते है ।

भक्त की रक्षा के लिए भगवान अपने प्राण भी दे देते हैं

राम के राज्यभिषेक के अनन्तर जब विभीषण की विदाई हुई तब विभीषण ने नारायण की प्रतिमा माँगी थी यह मूर्ति रंगनाथ की थी। एक समय इस मूर्ति की एक दक्षिणी ब्राह्मण ने भी इच्छा की थी। पर वह मूर्ति विभीषण को मिली। राम जी ने कहा– इस मूर्ति को कही मार्ग मे मत रखना सीधे लंका में ले जाना। पर विभीषण इस बात को भूल गये। मार्ग में नित्य नियम करने को रुक गये। स्नान किया। फिर मूर्ति को लेकर लंका जाने का विचार किया। पर वह मूर्ति उठी नहीं। बड़ा प्रयत्न किया दिन भर बीत गया रात्रि बीत गई। राजा ने कुछ अन्न जल भी ग्रहण नहीं किया। इस प्रकार चार दिन हो गये। तब एक रात महाराज को स्वप्न हुआ। श्रीरंगनाथ नारायण कह रहे है। विभीषण अब मैं यहीं रहूँगा कारण यहाँ भी मेरे बहुत भक्त रहते हैं। तुम्हारी लंका भी यहां से पास है तुम यहीं पूजा करने जाया करो।

विभीषण नारायण की आज्ञा से लंका चले गये तथा प्रति दिन पूजन करने आते थे। एक दिन राजा बड़ी भावना से फूल तोड़ रहे थे। उनको शरीर का भी होश न था। जिस स्थान पर पुष्प चयन कर रहे थे वहां एक तपस्वी ब्राह्मण जो कि अति वृद्ध थे वह अपनी साधना कर रहे थे। विभीषण भी पुष्प चयन करते आगे बढ़ गया। भाग्य से उस ब्राह्मण में ठोकर लग गई तथा वृद्ध महाशय का अन्तकाल हो गया। नगर में यह समाचार फैल गया कि विभीषण ने ठोकर से ब्राह्मण की हत्या कर दी। ब्राह्मणों का

ऐसा कोप बढ़ा उन्होंने विभीषण को सांकल से बांध लिया तथा उसमें मार लगाने लगे अरे इस ब्रह्म हत्यारे को जान से मार डालो। उसी समय उन्होंने श्रीराम जी को समाचार मिला। श्रीराम जी भी अपने मन्त्री और पुरोहितों के साथ चले आये और उनने अपने भक्त विभीषण की यह दयनीय अवस्था देखी ब्राह्मण कह रहे है राम जी यह ब्रह्म हत्यारा है। इसने एक ठोकर मार कर ब्राह्मण की हत्या कर दी है आप इसे दण्ड दीजिये। राम जी ने कहा ब्राह्मणों यह इस प्रकार नहीं मरेगा, कारण मैंने इसको कल्पान्त आयु का वरदान दे रक्खा है। इसने अपराध किया है। यह मेरा ही अपराध है आप लोग मुझे प्राण दण्ड की सजा दीजिये। सभी ब्राह्मण भगवान राम की भक्त वत्सलता देखकर चुप हो गये। गुरु वशिष्ठ ने कहा भाई इससे प्रायश्चित कराओ और कोई उपाय नहीं है। विभीषण को बन्धन से मुक्त किया। विभीषण के नेत्रों से अश्रु बरस रहे है वह रामजी की शरण में आये पर राम जी ने कहा आप मुझ से दूर रहे। पहले प्रायश्चित करें देखिये राम जी की उदारता ब्रह्मण्यता एवं भक्त वत्सलता एक ही उदाहरण में प्रभु का दिव्य दर्शन हो रहा है

बृजवासी ने नवाब को सन्ध्या सिखाई

एक चौबे जी हाजिर जवाब थे। उनसे एक नवाब बहुत खुश था। एक दिन नवाब ने कहा चौबे जी हमारा तुम्हारा बहुत दिन से साथ है पर आपने अपनी सन्ध्या हमको नहीं सिखाई अब आप हमको अपनी संध्या बतलाइये। चौबेजी बड़ी चिन्ता में पड़ गये

क्या वेद माता गायत्री का उपदेश आज नवाब साहिब को देना पड़ेगा । अन्यथा मेरा सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा नवाब के घर से मेरी इनकम भी अच्छी है । कुछ समय तक बहाना बनाते रहे । आज तो नवाब भी स्वच्छ होकर बैठ गये । चौबे जी से कहा आज सिखाइये अपनी सन्ध्या ।

चौबे जी बड़े चतुर हाजिर जवाब थे बोले सरकार (स प्रणव गायत्रयां शिखां वद्धा) पहिला काम है आसन पर बैठते ही गायत्री मन्त्र से शिखा बाँधना अब आप सन्ध्या के प्रारम्भ में शिखा बाँधिये । नवाब साहब बोले चौबे जी तब तो हमको सन्ध्या नहीं सीखनी शिखा कहां से लायें सिर पर हाथ फेरकर नवाब लाचार हो गये इधर चौबै जी भी अपने घर चले आए ।

बृजवासी की हाजिर जवाबी

एक बार नवाब साहब ने कुछ पण्डितों से प्रश्न किया कि वर्ण कितने होते है । पण्डितों ने कहा सरकार चार वर्ण होते है ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नवाब साहब को तो सन्तोष हो गया पर उनके अधिकारियों को सन्तोष नहीं हुआ । और उन्होंने नवाब से कहा देखिये, यह पण्डित तो आपका कोई वर्ण नहीं बताते । कर्मचारियों ने राजा को बहुत भड़काया पर वह सुबुद्धि मान राजा बोला तुम चौबेजी को बुलाकर लाओ वह ठीक प्रकार उत्तर देंगे ।

अब तो हमारी शंका का समाधान करो वर्ण कितने होते है । चौबे जी तो बड़े कुशल व्यक्ति थे उनने तत्काल उत्तर दिया सरकार वर्ण आठ प्रकार के होते है । उनमें चार हमारे हिन्दुओं के और चार आपके मुसलमानों के होते है नवाब साहब खुश हो गये

और कहने लगे चौबे जी हमारे चार वर्ण कौन से है ।

चौबे जी ने कहा शेख, सैय्यद, मुगल, पठान नवाब खुश हो गये और चौबे जी को इनाम दिया ।

बृजवासी का समाधान

अलवर के राजा ब्राह्मणों का बड़ा सम्मान करते थे उनके राज्य से कोई भी ब्राह्मण हताश होकर नहीं जाता था । उनके दानाध्यक्ष भी विद्वान् थे उनका नाम पं लक्ष्मीनारायण शास्त्री था वह भी बड़े धार्मिक विचार के थे ।

एक दिन शास्त्री जी ने अलवर नरेश से कहा आपके राज्य में खूब दान होता है पर मै यह चाहता हूँ कि ब्राह्मणों में विद्या का प्रकाश हो और उनका सन्मान हो । महाराज ने कहा शास्त्री जी यह तो बहुत अच्छी बात है आप कोई सुझाव रखिये । शास्त्री जी ने कहा राजन् मै यह चाहता हूँ कि ब्राह्मण सन्ध्या करना सीखें आपके द्वारा यह काम सहज में हो सकता है । आप सन्ध्या की परीक्षा चालू कर दें । प्रथम परीक्षा देने वाले को १००/- रु० इनाम मध्यमा परीक्षा देने वाले को २००) रु० इनाम दिया जाय तथा उत्तमा परीक्षा देने वालों को ३००)रु० इनाम दिया जाय । इस प्रकार सन्ध्या का प्रकाश होगा तथा ब्राह्मणों का सन्मान होगा । अलवर नरेश को यह धर्म, यज्ञ अनुकूल दीखा तथा उन्होंने अपने राज्य में सन्ध्या की परीक्षा प्रारम्भ कर दी । चारों और से ब्राह्मण तैयारी करके आने लगे उनका सन्मान होने लगा । महाराज की कीर्ति चारों दिशाओं में फैल गई । कोई प्रथम परीक्षा दे रहा है । कोई मध्यमा और कोई उत्तमा । परीक्षा देने जो आता था वह दानाध्यक्ष

के पास अपना नाम लिखाता था । दानाध्यक्ष जी उनको परीक्षा की तिथि बता देते थे कि दस दिन बाद आना या २० दिन बाद आना उत्तने ही दिन के लिये उनके रहने की तथा खान पान की समुचित व्यवस्था कर दी जाती थी तथा तारीख को परीक्षा देने आते थे तब उत्तीर्ण होने पर इनाम मिलता तथा अनुत्तीर्ण होने पर आधी दक्षिणा दे देते थे ।

एक दिन एक ब्रजवासी पहुंच गये । उनकी कुछ तैयारी भी नही थी । उन्होंने अलवर में आकर सुना कि यहां सन्ध्या की परीक्षा हो रही है । ब्रजवासी ने आकर अपना नाम लिखा दिया उनके खाने पीने ठहरने की अच्छी सुविधा थी । आज उनको परीक्षा देनी है पर पुस्तक तो खोलकर भी नही देखी । ब्रजवासी जी गणेश जी का ध्यान कर दरबार में पहुँच गये । बड़ी सुन्दर पिण्डी थी गौर वर्ण विशाल वक्ष स्थल प्रकाशवान ललाट पगड़ी
दुपट्टा पटलीदार धोती पोथी हाथ में सभा मण्डप की शोभा आ गई मानो कोई अवतारी पुरुष आ रहा है । उनके शरीर पर उनका वैदुष्य चमक रहा था । बड़ी धोता बड़ा पोथा पण्डिता पगड़ा बड़ा । सभी उनकी ओर देखने लगे । दरबार में विद्वान सभासद मन्त्री एवं महाराज उनके वेश भूषा से ही प्रभावित हो गये तथा उनको एक उच्च आसन पर बैठाया गया ।

परीक्षा प्रारम्भ हुई अब ब्रजवासी का भी नम्बर आया । शास्त्री जी ने पूछा पंडित जी आप कौन सी परीक्षा देगें । ब्रजवासी भैया पहले हम प्रथमा देगें, फिर मध्यमा उत्तमा शास्त्री जी ने कहा अच्छा आप प्राणायाम का मन्त्र सुनाइये । ब्रजवासी जी चक्कर में पड़ गये । अभी तो तुम्हारी दरबार में बड़ी इज्जत हो रही है । अब मन्त्र बोलेंगे अभी भांग छान कर आये है । नेक सी तम्बाकू की पत्ती मुख में रक्खी है कुछ उच्चारण में विसर्ग अनुस्वाद की भी

कमी रह गई तो यहां बड़ा उपहास होयेगा ।

ब्रजवासी बोले शास्त्री जी यहां दरबार में तो माता गायत्री को कैसे बोल सकंगे भैया यहां सभी जाति के पुरुष विद्यमान है । शास्त्री जी तथा सभी विद्वान उनसे प्रभावित हो गये । पर शास्त्री जी बोले ब्रजवासी जी इस मन्त्र को आप मुझे सुना दीजिये । ब्रजवासी जी हां तो को सुनावेगे तू तो ब्राह्मण का बेटा है । ऐसा कहकर शास्त्री के कान में ब्रजवासी बोले भैया जी काहू के लेवे देवे में भांजी मारे वह असल बेईमान होंवे है ।

शास्त्री जी सुनकर चुप हो गये और १००) रु० देकर ब्रजवासी जी को विदा किया । तब से वह परीक्षा बन्द हो गई ।

बृजवासी की चतुराई

एक राजा के यहां एक ब्राह्मण रसोईया रहता था भोजन बनाने में बड़ा कुशल था । राजा साहब उसे पसन्द करते थे । राजा की रसाई में राजा के मित्र भी सम्मिलित होते थे । इस लिये रसोईया को यथेष्ट सामिग्री मिलती थी उसमें एक पीपा शुद्ध घी का रोजाना मिलता था । रसोईया दो चार मिठाई बनाता तथा सबको पूड़ी आदि सुन्दर भोजन देता था शेष बचे हुये घी को अपने घर ले जाता था इसको कोई कर्मचारी जानता भी न था ।

एक समय राजा के यहाँ एक नया अधिकारी आया वह बड़ा तेज था । राजा के प्रसन्न करने को राज्य की कमजोरी देख राजा को बताता था । उसने कितने ही पुराने सेवकों को अलग कर दिया था। आज रसोईया पर उसकी बारी थी । राजा से बोला अप एक दिन की रसोई में एक टीन घी देते है । घी का दुरुपयोग होता

है । सरकार आपकी रसोई में ५ सेर घी पर्याप्त है । राजा ने भी इस पर कभी ध्यान नही दिया था । पर आज अधिकारी ने ध्यान दिलाया । तथा रसोईदार को बुलाया । उससे पूछा तुम इतने घी का क्या करते हो । रसोईया सरकार की रसोई बनाता हूँ । अधिकारी अच्छा अब आप कल हमारे सामने रसोई बनायेगें देखना है कि एक टिन का खर्चा कैसे करते हो ।

अब तो रसोईया डर गया समझ लिया कि नौकरी गई । स्त्री बालक सभी आज विलख रहे है हमारे पिताजी की नौकरी जायेगी और न जाने क्या सजा मिलेगी हम सब कहां जायेंगे । घर में हाय हाय मची हुई है । कुछ लोग सान्त्वना भी दे रहे है उसी समय एक ब्रजवासी आ गये जै जमुना मैया की और उसके घर की दशा देखकर बोले भाई आज क्या बात है तुम इतने दुखी क्यों हो । रसोईदार बोल पड़ा जी आप फिर किसी समय आना इस समय हम मुसीबत में है ब्रजवासी ने कहा भाई हम पहिले मुसीबत के साथी है फिर खुशहाली के साथ है । हमसे तेरा यह दुख देखा नहीं जाता जल्दी बता क्या बात है हम जी जान से तेरी सहायता करेंगे । रसोईदार ने एकान्त में ब्रजवासी को सब बातें बता दी ब्रजवासी बस इसी बात से दुःखी है बेटा एक पीपा क्या हम दो पीपा भी एक दिन की रसोई में लगा सकते है । कल हमको साथ ले चलना हम उस अधिकारी के मुँह में ही एक टीन घी भर देंगे । रसोइया-गुरु कोई और झगड़ा मत बढ़ा देना नहीं नहीं भाई हम सब कला जानते है सांप मरे न लाठी टूटे । दूसरे दिन रसोई की तैयारी हुई ब्रजवासी सहायक थे । पहिले मिठाइयां बनाई गई ।

अधिकारी परीक्षा को बैठा है । ब्रजवासी बोले-भैया भोजन तैयार है साग पात खस्ता सब तैयार है । राजा साहिब अपने

परिवार के साथ आ गये थालों की सजावट से आज सभी सन्तुष्ट है। मिठाइयां भी आज अच्छी बनी है।

भोजन प्रारम्भ हुए ब्रजवासी ने कढाई में एक पूड़ी छोड़ी वह गेद की तरह फूल गई राजा के थाल में डाल दी बाकी घी नाली मे या दूसरे पात्र में डाल दिया। फिर दूसरी पूरी इसी प्रकार उतार कर राजा को दी बस अब तो अधिकारी बोले देखो महाराज घी का कैसा दुरुपयोग होता है। राजा को भी वह शिकायत उचित मालूम हूई। कहा भाई तुम बड़ा नुकसान करते हो। उसी समय बजवासी ने कहा सरकार एक पूड़ी के निकलते ही घी ढड़ेल हो जाता है उसमें शक्ति नही रहती हम आपकी शक्ति बढ़ाने को शुद्ध माल बनाते है। इसी से आप पर सुरखी है। यह अधिकारी आपको कमजोर बनाना चाहता है थोड़े दिन आत ढड़ेल घी की पूड़िया खाकर देखो राजा की रसोई का स्वाद दूसरा क्या जाने। महाराज हम तो आपके सेवक है जैसा हुक्म दो वह हमें स्वीकार है।

राजा ने कहा भाई तुम हमारे शुभ चिन्तक हो और यह अधिकारी छिपा हुआ दुश्मन है तुम जैसी रसोई बनाते रहे हो वैसी ही बनाओ अधिकारी को उस विभाग से भगा दिया। रसोई दार बड़ा खुश हुआ ब्रजवासी आज आपने मेरा जीवन बचा लिया। ब्रजवासी–भैया या शरीर से उपकार न हो वह शरीर नरकन में पड़ें वहां कोई बचायबे वाला नही है।

परोपकाराय सदां विभूतय:।

बृजवासी का हास्य

एक दुकानदार अपनी मिठाई की दुकान लगाकर बैठा था। उसके सामने मिठाइयों के थाल लगे हुये थे। उसी समय एक ब्रजवासी चले आये दुकान की चमक दमक देखकर खड़े हो गये। लालाजी ने कहा क्या चाहिये। ब्रजवासी बोले लाला पहिले तुम खाना शुरु करो, आपका मलमत का कुरता बेलदार टोपी माथे का बिन्दा बता रहा है कि आप भोजन को तैयार है पर आप इन मिठाइयों को खाते क्यों नही हो। दुकानदार बोला इनको खाकर क्या अपना घर उजाड़ना है। ब्रजवासी बोले अच्छा ऐसी बात है तो तुम अपन घर मत उजाड़ो लाओ मुझे खिला दो मेरा घर उजड़ जाने दो। उसी समय एक और ब्रजवासी आ गये।

बोले लाला एक रुपये की मिठाई तोल दो। लाला ने तुरन्त तोल दी। ब्रजवासी वहीं खड़े होकर खाने लगे उसी समय दूसरे बोले अच्छा तो हमको भी इतनी तोल दे। बिना तोले किसी को नहीं देते हो। लाला ने मिठाई तोल दी रुपया मांगा सोई जो मिठाई खा चुके वह बोले मेरे रुपये को मत भूल जाना। अब तो दुकानदार से विवाद होने लगा। ग्राहक बोले भाई तेरा सबसे झगड़ा होता है वह ब्रजवासी जी कह रहे है मेरा रुपया मत भूला जाना।

त्याग से ही सफलता मिलती है

एक पण्डित बड़े सन्तोषी एवं त्यागी थे । यदि उनके पास थोड़ा भी धन संचय हुआ और उन्होंने परोपकार में लगाया कथा वार्ता कहते थे जो मिलता उससे प्रसन्न रहते थे ।

एक बार वह एक राजा के पास गये । बोले हम कथा प्रवचन करते है आप भी चार दिन का सत्संग करा दीजिये । राजा ने कहा महाराज यहां कौन आयेगा और तुम को क्या मिलेगा । पण्डित ने कहा हमको कुछ नहीं चाहिये इसकी आप चिन्ता न करें । राजा ने कहा यदि पीछे आपने झगड़ा किया । अतः सुनिये हम एक रुपया भेंट करेंगे । पण्डित ने कहा हमको स्वीकार है । कथा प्रारम्भ हुई तथा भेंट में एक रुपया मिला । पंडित चार दिन तक एक हलवाई के भोजन करते रहे । कथा समाप्त होने पर एक रुपया मिला । उसे लेकर हलवाई की दुकान पर गये । भाई तुम्हारे कितने पैसे हुये । हलवाई बोला पांच रुपया अब तो पण्डित जी बड़े चिन्तित हुये । बोले भाई हम को तो एक रुपया मिला है । इसे तुम रखलो और हमारी भागवत की पुस्तक रखलो । हम घर जाकर चार रुपया भेज देंगे । इस पर हलवाई उनकी सच्चाई से प्रसन्न हो गया उसने चार रुपया पंडित की पुस्तक पर रख कर पुस्तक दे दी । पण्डित जी अपने घर आ गये ।

राजा ने सोचा कि पण्डित जी ने चार दिन कथा कही और मैंने उनको एक रुपया दिया ।

उनने कहाँ खाया पीया होगा । राजा को बड़ा पश्चाताप हाने लगा । उसने अपने मन्त्री एवं पुरोहित से परामर्श किया । उनने

कहा अब उस पण्डित का तो पता नही कहाँ का था और कहां गया आप एक काम करें कुछ गुप्त दान कर दीजिये । राजा की समझ में यह बात आ गई । उसने एक बड़ी घीया मंगायी और उसमें कुछ अशर्फियां भरकर एक अभ्यागत को दे दी । वह ब्राह्मण उसे लेकर अपने घर गया पत्नी ने कहा यह क्या लाये हो इसका मैं क्या करूँगी । थोड़ा अन्न लाओ जिससे खाना बनाऊँ । वह बेचारा उसे लेकर बाजार में बेचने गया । वहां भाग्य से उस हलवाई का नौकर साग सब्जी खरीदने आया था उसने वह खरीद लिया । हलवाई उदार हृदय था । उसने नौकर से कहा कुछ सब्जी लाया है । उसने कहा जी कई साग लाया हूँ एक बड़ा घीया भी लाया हूँ । हलवाई बोला अच्छा एक काम करो घीया को तथा थोड़ा आटा सीदा किसी पण्डित को दे आओ नौकर सीधा लेकर चला सोई भाग्य से वही कथा वाले पण्डित जी मिल गये । उसने वह घीया पण्डित को दे दिया ।

पण्डित जी एवं पण्डितानी ने देखा उस घीया में अशर्फियां भरी है । अब तो पण्डित जी का त्याग से ही भाग्योदय हो गया था ।

यहां राजा ने नौकर से कहा तुमने घीया किसको दिया उसका पूरा पता लगाओ ।

नौकर अभ्यागत पण्डित के पास गया । उसने कहा भाई मैं उस घीया का तो आटा ले आया नौकर उसके घर गया । जिसने घीया खरीदा था ।

वह बोला मैं तौ अपने मालिक को दे आया पर मालिक ने उसको कथा वाले पण्डित के घर भिजवा दिया था । हमारा मालिक उन पण्डित जी से उनके सनेह त्याग से प्रसन्न है वह उनकी कुछ न कुछ खान पान की सेवा करता रहता है । महाराज का

नौकर पण्डित जी के घर गया तथा घीया के साग की वार्ता करने लगा। पण्डित जी ने तब बताया भाई उस घीया में अशर्फियां निकली है।

यह सब बात नौकर ने राजा को बतलाई उसी समय राजा ने पण्डित जी को बुलवाया तथा उनको और भी दान देकर प्रसन्न किया। राजा कहने लगा पण्डित मैंने ऐसा कोई त्यागी अपने जीवन में नहीं देखा आप तथा आपके त्याग को धन्यवाद देता हूँ।

बस अधर्म के आते ही मनुष्य पाप कर्म में लग गये और यमलोक में जाने लगे धीरे धीरे धर्मराज के नगर की आबादी बढ़ने लगी, धर्मराज बड़े परेशान हो गये। वह अधर्म से कहने लगे तुम यहां से भाग जाओ, अब मेरे यहां स्थान नहीं है। अधर्म भयभीत होकर ब्रह्मा जी के पास गया। ब्रह्मन् मुझे कथा वार्ता सत्संग में तू कैसे रहेगा। तुम शंकर के पास चले जाओ वह तुमको स्थान देंगे। अब तो विचारा अधर्म शंकर के पास गया। शंकर नू पूछा नू कौन है यहाँ कैसे आया हे अधर्म ने कहा भगवन मै अधर्म हूँ।

शंकर तो उसका नाम सुनकर ही क्रोधित होकर बोले। अरे अधर्म मेरे आश्रम में तेरा कोई काम नहीं। पर अधर्म जब वहां से नहीं हटा तब शंकर ने अपना त्रिशूल सम्भाला शंकर के त्रिशूल को देखकर अधर्म भाग कर विष्णु की शरण में आ गया। वहां आकर रोने लगा प्रभु मेरा काई सहारा नहीं है मै आपकी शरण हूँ। धर्मराज ने कह दिया अब मेरे यहां तुम्हारा कोई काम नहीं तथा ब्रह्मा ने कह दिया मेरे आचार विचार में तेरा निर्वाह नहीं होगा। जब मै शंकर के पास गया तो वहाँ पर प्राण संकट में पड़ गये। नारायण मै अअब कहा जाऊँ मै अब कहां जाऊँ मै आपकी शरण हूँ। हे शरणागत वत्सल मुझे बचाओ मुझे बचाओं। अधर्म की करुण पुकार सुनकर करुणा सागर भगवान बोले। अधर्म डरो मत

मै तुम्हारी रक्षा करूँगा।

तुम एकादशी के दिन अन्न में रहा करो। जो एकादशी को अन्न खायगा वह अधर्म का भागी बनेगा। यही कारण है कि एकादशी को अन्न नही खाना चाहिए। एकादशी का व्रज ही नरको से उद्धार करता है। तथा एकादशी में अन्न खाने वाला खाना नरकों में जाता है।

प्रत्यक्ष पति के सामने चित्र का महत्व नही

एक पतिव्रता स्त्री थी उसके पति परदेश जा रहे थे। उस समय पत्नी ने कहा मै आपके बिना कैसे रहूँगी, तब पति ने अपनी प्रिया के लिये अपना फोटो दे दिया और कहा तू इसकी पूजा करना। पतिदेव तो चले गये वह पत्नी अपने पति के फोटो का निरन्तर पूजन करती रही। कुछ समय बाद पतिदेव आ गये तब उसे बड़ी चिन्ता हो गई अब मै किसका पूजन करूँ। यह फोटो पति से मिला है और पति भी आगये। अब किसकी पूजा करनी चाहिए। गोपियां भगवान श्री कृष्ण से कह रही है आप ही इसका उत्तर दीजिये उस पतिव्रता को अब किसका पूजन करना चाहिये। भगवान ने कहा गोपियो अब तो उसे प्रत्यक्ष पति का पूजन करना चाहिये। गोपियां बोली तब प्रभु आप हमको पतिव्रत धर्म की कथा सुनाकर क्यों भटका रहे हो जब आप प्रत्यक्ष पति है तब हम अप्रत्यक्ष हांड मांस के बने इन पुरुषों की सेवा करें। स्वामी आपके मुख से ही समाधान हो गया है।

कथा का ढोंग

एक स्त्री नित्य कथा सुनने जाया करती थी वह कथा में बैठी-बैठी रोया करती थी । सब लोग समझाते पर उसकी हिचकी बंध जाती थी । सभी श्रोता यह समझते है कि यह भक्तन है ।

पण्डित जी भी ऐसा ही समझते कि यह भक्तन है । एक दिन वह कथा सुनने नही आई तब तो पंण्डित जी उसके घर गये बोले देवी कल तू कथा सुनने नही आई । हमारे श्रोताओं मे एक तू ही ऐसी भक्तन है जो कथा में अश्रु बहाती रहती है उस स्त्री ने कहा पण्डित जी महाराज मै आपकी कथा के प्रेम नहीं रोती । मेरा तो एक दौहित्र था । वह आपके बसना पोथी के वस्त्र के रंग के समान रंग का ही कपड़ा पहनता था वह मर गया मै उसकी याद में रोया करती हूँ ।

पण्डित जी ने अपना माथा ठोका कि यह थोथी भक्ति हाय रे । सो भाई सदा सच्ची भक्ति करे बनावटी भक्ति ले डूबा भक्ति है ।

उपकार उतना ही अच्छा जिसमें अपनी हानि न हो

जिसमें अपनी हानि न हो उतना ही उपकार करना ठीक है दो देश के राजा परस्पर मित्र थे एकबार दोनों मित्रों ने प्रतिज्ञा की हमारे जो सन्तान होगी लड़का या लड़की तब हम तुम सम्बन्ध कर लेंगे । एक राजा के लड़की हुई भाग्य से दूसरे के भी लड़की

हुई। दूसरे ने अपनी लड़की को लड़का बना कर रक्खा कि मै इसकी लड़की से विवाह कर अच्छा पैसा ले लूँगा।

सम्बन्ध हो गया विवाह अब विदा का समय आया अभी तक उस रहस्य को किसी ने न जाना। राज भान अपने लड़के की विदा में देरी करने लगा। कितने ही मुहूर्त निकाल दिये। लड़की वाला जल्दी कर रहा है। लड़का वाला उसे टाल रहा है। लड़की भी बड़ी परेशान मेरे पिता ने लालच में यह क्या किया मैं अपने को कब तक छिपा सकूंगी। अन्त मे विदा का दिन आ गया। गौना करके लड़का बहू को लेकर चल तो दिया पर बड़ी चिन्ता में रास्तें रुक-रुक कर जा रहा है। रास्तें मे एक प्रेत रहता था। वह बहु को पकड़ने आया तब नकली लड़का बोला ले तू मुझे खाले मै तो यही चाहता हूँ। प्रेत ने इसका कारण पूछा तब उसने सुनाया कि मै लड़की हूँ पिता ने द्रव्य के लोभ से मुझे लड़का बनाकर रक्खा अब तै विदा करके जा रहा हूँ अच्छा है रास्तें में ही मै रह जाऊँ। प्रेत बोला चिन्ता मत करे मेरा पुरुष पना लेजा काम होने पर मुझे दे जाना। प्रेत तो लड़की हो गया और वह लड़की लड़का बनकर ससुराल पहुंचा बड़ी खातिर हुई वह तो ससुराल में रम गया।

इधर प्रेत स्त्री बना उसकी प्रतीक्षा कर रहा है कि मेरा उसके आने से उद्धार होगा। पर वह प्रेत भी स्त्री रूप में रमण करने लगा वह तो गर्भवती हो गई। कुछ समय बाद वह नकली राजकुमार लौट कर प्रेत के पास अया। प्रेत ने कहा भाई तेने बहुत दिन लगया दिये ले अपनास्त्री पना मेरा पुरुष पना दे। राजकुमार ने देखा यह तो गर्भवती है वह बोला भाई जैसा रूप लिया है वैसा ही रूप देना है। अब तू तो गर्भवतीहै मै इस रूप का क्या करुंगा। यह कहकर राजकुमार अपने घर चला गया। उपकार भी सोच विचार के करना जिसमें अपनी हानि न हो।

दक्षिणा के बिना यज्ञ सफल नही होता

यज्ञ दक्षिणा के बिना सफल नहीं होता है। एक समय राजा युधिष्ठर ने या किया उसमें ब्राह्मणों ाक सोने के पात्र में भोजन कराया गया। एक ब्राह्मण गरीब था। उसने सोने का पात्र चुरा लिया। जब वह अपने घर ज़ाने लगा। तब उसे पकड़ लिया। उसका मुकदमा चला राजा बलि के दरबार में उसकी हाजिरी हुई। महाराज बलि ने पूछा आपने युधिष्ठर के यश्र में सोने कापात्र चुराया है। ब्राह्मण ने स्वीकर किया। राजा बलि ने पूछा आपने ऐसा काम क्यों किया। ब्राह्मण ने कहा मैं तो राजा के यहाँ अच्छे अच्छे पदार्थों का भोजन कर अया था। पर मेरे घर में एक भी अन्न का दाना न था ऐसी अवस्था में चुरा लाया था कि इसे बेचकर घर में आटा सब्जी ले जाऊँगा बलि राज ब्राह्मण की सच्ची दयनीय अवस्था देखकर बोले आज से ब्राह्मण भोजन कराने वाले को दक्षिणा जरूर देंगे। जो यज्ञ में दक्षिणा नही देगा, उसका यज्ञ सफल न होगा। अतः दक्षिणा अवश्य देनी चाहिये।

(हत यज्ञम दक्षिणा)

कथा ऊँचे बैठकर नही सुननी

एक बार भगवान श्री कृष्ण चन्द्र कुरुक्षेत्र में अपने मित्र अर्जुन को गीता ज्ञान दे रहे थे । उस समय हनुमान जी भी ध्वजा पर बैठकर गीता ज्ञान सुन रहे थे । जब अठारह अध्याय की कथा हो गई । उस समय हनुमान जी उतर कर आये और उनने कृष्ण चन्द्र का पूजन किया । कथा सुनने के बाद वक्ता का पूजन करना तो जरूरी है । अन्यथा उस शास्त्र के सुनने का फल नही मिलता । जब हनुमान जी ने कहा प्रभु मैंने आपका गीतामृत सुना है अब पूजा करूँगा । भगवान को बड़ा दुःख हुआ और बोले तुम पिशाच हो जाओ । कभी भी ऊँचा बैठकर कथा नही सुननी इससे मनुष्य पिशाच बन जाता है । हनुमान जी भगवान के चरणामें में गिर कर क्षमा याचना करने लगे । तब भगवान ने अवधि बता दी कि इतने दिन में तुम्हारा उद्धार हो जायेगा उस पिशाच अवस्था में ही हनुमान जी ने गीता पर एक भाष्य लिखा है । वह पैशाची टीका कहलाती है । इस प्रकार गीता की बहुत सी टीका प्रकाशित हुई है तात्पर्य यह है कि कथा सदा व्यासासन से नीचे बैठकर सुननी चाहिये ।

घर में विरोध क्यों रहता है

एक वृद्ध विद्वान् पण्डित जी को नव विवाहित स्त्री मिलती और वह पण्डित को नमस्कार करती तब पण्डित जी कहते है । बेटी सुखी हो तुम्हारी शादी हो गई ससुराल वाले अच्छे मिले है तब वह स्त्रियां हाथ जोड़कर कहती है पण्डित जी सब आपका

आशीर्वाद है । पण्डित जी कहते अच्छा बेटी सुखी रहो ।

एक बार पण्डित जी ने एक स्त्री से ऐसा ही प्रश्न किया था पर उस स्त्री ने कहा पण्डित जी यदि मे दुखी हूँ तब आप क्या कर कसते है । पण्डित जी ने कहा हम उसका साधन बता सकते है । स्त्री ने कहा महाराज जी घर मे विराध रहता है तथा पैसा हाथ मे नही आता है । पण्डितजी ने कहा मै समझ गया तुम्हारी सास एवं पति से नहीं बनती तो बैठी सास से विराध रहना तो स्वाभाविक है कारण सासों को एक हरि भक्त का शाप लग रह है । देखो एक व्याध था वह बड़ा हरि भक्त था उसके आचार विचार रहन सहन नियम एवं उसकी हरि भक्ति से सभी प्रभावित थे । उसको साधु व्याध कहते थे । व्याध होने के कारण मांसाहारी था तथापि वह आचार वान था । उसके एक लड़की थी उसका नाम अर्जुनी था । उसकी शादी एक अच्छे परिवार में हुई थी । उसका ससुर एवं पति भी व्याध की प्रतिष्ठा को जानते थे । अतः समघी का मान करते थे । पर सास से अर्जुनी का कभी-कभी विरोध हा जाता था । एक दिन विरोध अधिक हो गया । तथा सास ने एक गलत शब्द कह दिया कि आखिर तू है ता कसाई की बेटी । अर्जुनी को यह बात असह्य लगी जो उसके पिता को वह हत्यारा कह रही है । अर्जुनी अपने पिता व्याध के पास गई और उसने सब बातें बताई कहने लगी पिता जी मेरी सास आपको हत्यारा कसाई बताती है । व्याध ा ने कहा बेटी वह स्त्री जाति है उसकी चिन्ता मत करो हम उसके पति को समझायेगें । एक दिन व्याध अपने समधी के घर पहुंच गये । समधी ने उनका बड़ा सन्मान किया जमाई ने भी उनका आदर किया ।

समधी ने कहा आपको भोजन तैयार कराता हूँ । भोजन में आपको कौन सी वस्तु रुचिकर होगी समधी जमाई सास अर्जुनी

सब बैठे हुये है और अर्जुनी के ससुर भोजन की कह रहे है। समधी बोला यह गेहूँ शुद्ध रक्खे है इनमें से आपको कुछ बनवा दूँ। भक्त व्याध बोला भाई तुम गेहूँ खाते हो हाय हाय कितनि जीवों की रोज हत्या करते हो गेहूँ के प्रत्येक कण मे जीव है।

मै तो केवल कुटुम्ब पालन को एक ही जीव की हत्या करता हूँ। आप तो बहुत जीवों का नाथ करते हो। आप अपनी बहू से पूछो कि मै हत्यारा हू या आ हत्यारे है। भक्त व्याध की बात सुनकर सब लज्जित हो गये। सास बड़ी शर्मिन्दा हुई। भक्त व्याध बोल सास बहू का तो झगड़ा सदा होता रहेगा। पण्डित जी कहते है बेटी सास से झगड़ा होना तो स्वाभाविक है। पर दूसरी बात जो की पैसा हाथ नही लगता। इससे मालूम होता है तू अपने पति की सेवा में कमी नहीं करती है। दूख पत्नी को सदा अपने पति से पहिले उठना चाहिये। गृह कार्य पूर्ण होने पर सबके बाद सोना चाहिये पति की आवश्यक वस्तु उसके समय पर तैयार रखना चाहिये। उसके मनकी बात को समझना चाहिये सदा उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये। उसके विरुद्ध कोई काम नहीं करना उसके माता पिता का आदर करना उनके कथनानुसार अपनी परम्परा के अनुसार चलना ऐसी पतिव्रजा स्त्रियों के घर में कभी विरोध नही रहता बेटी विरोध का कारण सेवा की कमी है। यदि तू इस प्रकार चलेगी तो पैसे की कमी नही रहेगी। प्रत्येक स्त्री को यह समझना चाहिये। मुझे अब इस घर से काम है मुझे इनके अनुसार चलना है। माता पिता से शिकायत करने से तो और भी विरोध बढ़ेगा अत: स्वयं सबका अपने अनुकूल बनाये।

आने वाली वस्तु को कोई नही रोक सकता

एक ब्राह्मण कहा करता था कि मै लक्ष्मी को अपने पास नहीं आने दूँगा । कोई कुछ देता तो लेता नही था । भोजन मात्र में ही प्रसन्न रहता था । कोई उसके सन्तोष से प्रसन्न होकर उसका विशेष सम्मान करता था उसमें से भोजन मात्र ही उठाता थ । आवक बहुत थी पर उसने लक्ष्मी का बहिष्कार कर दिया एक दिन लक्ष्मी जी उससे स्वप्न में बोली 'ब्राह्मण देव अब मै आपके घर आ रही हूँ । ब्राह्मण बोला मेरी इच्छा के बिना कैसे आ सकती है । लक्ष्मी ने कहा अब तुझसे रोका जाय तो रोकना । ब्राह्मण बोला लक्ष्मी बड़े जोरदार शब्दों में कह गई है पर मै भी देखता हूँ वह कैसे आती है । उसी समय घर से निकला और सीधा राजभवन में गया उसको रास्तें मेंरोका भी पर वह किसी के रोकने से न रुका । उसने भवन में जाकर राजा के एक तमाचा जमाया कि इस अपराध में मै पकड़ा जाऊँगा तथा कारागार मे बन्द हो जाऊँगा वह लक्ष्मी कैसे आयेगी ।

पर आने वाली लक्ष्मी का भी प्रभाव देखिये । जैसे इसने राजा के तमाचा जमाया कि महाराज का मुकुट नीचे गिरगया राजसेवक उसको पकड़ने आये पर उस समय क्या हुआ कि उस मुकुट में से एक सर्प निकला जिसे देखकर राजा भयभीत हो गया और बोला अरे इस ब्राह्मण को छोड़ दो इसने आज मेरी जान बचाई है । अन्यथा यह सर्प मुझे छस जाता । इसको इच्छानुसार धन दीजिये । ब्राह्मण कहता है मुझे धन नही चाहिये मुझे कारागार

चाहिये पर उसको बात को कौन सुनता उसका तो सन्मान हा रहा है कल ही उसको एक बड़ी जागीर मिलने वाली है । रात को लक्ष्मी जी फिर स्वप्न में बोली ब्राह्मण देव अब तुम मुझे रोक सकते हो ब्राह्मण बोला हाँ तुझे कभी आने न दूँगा । अभी कल का दिन दूर है । दूसरे दिन वह ब्राह्मण फिर राजभवन में गया आज तो उसने एक बड़े राजा का अपमान किया । उस राज की टांग पकड़कर फर्श पर घसीट लाया । तब सेवकों ने उसे घेर लिया तथा बांध लिया । र उस समय भी लक्ष्मी की विजय हुई जिस सिंहासन पर महाराज बैठे थे भाग्य से उसी समय सिंहासन का छत्र टूट कर गिर पड़ा राजा देखकर चकित रह गया । अपने सेवकों से बोला भाइयों इस ब्रह्मण को छोड़ दो ।

इसने मेरे आज प्राणों की रक्षा की है । यदि यह मुझे सिंहासन से न घसीटता तो आज छत्र के नीचे दब जाता । इस ब्राह्मण को कल आधा राज्य दे दिया जाय । ब्राह्मण ने बड़े प्रयत्न किये कि लक्ष्मी को न आने दूँगा पर आने वाली वस्तु रुक नहीं सकती । ब्राह्मण लक्ष्मी की विजय मान गया । देवी तुझे न कोई आने से रोक सकता है न कोई जाने से रोक सकता है ।

ईश्वर सब जगह रहता है

जीव तथा ईश्वर सब जगह विद्यमान है वह दोनों एक साथ रहते है । इतना बड़ा सम्बन्ध होते हुये भी जीव ईश्वर को देख नही सकता । जब कि ईश्वर भीतर भी बस रहा है और बाहर भी बस रहा है पर ऐसा क्यों होता है जो मनुष्य पास की वस्तु को भी नहीं देख सकता । इसका कारण माया है उसने इसको अन्धा बना दिया

है । उसमें विलासता एवं वासना का परदा छाल दिया है । जैसे एक पुरुष घर के अन्दर बैठा है और दरवाजे पर एक चिक पड़ी हुई है । भीतर वाला सब देख रहा है पर बाहर वाला उसको नहीं देख सकता । कारण उसकी आंखों पर माया की विलासता का परदा पड़ा हुआ है यह है इन्द्रियों का पट जाल । जब तक यह विलासता का परदा नहीं हटेगा तब तक उस ईश्वर के दर्शन कैसे मिल सकते है । इसी प्रकार ईश्वर बैठा हुआ है पर वह जीवन उसे साथ रहकर भी उसको नहीं देख सकता । यह माया का वासना रूपी परदा है जब तक वासना विद्यमान है तब तक साथ में रहते भी उस ईश्वर के दर्शन दुर्लभ है ।

एक महात्मा के पास एक पारस मणी थी । किसी का पता चल गया । वह पुरुष महात्मा का शिष्य बनकर उसकी सेवा करेन लगा । महात्मा जी उसकी सेवा से सन्तुष्ट थें ।

एक दिन बोले बच्चा हम तुमसे प्रसन्न है तुम क्या चाहते हो । चेला बोला गुरु जी आपके पास पारस मणि है । उसे आप मुझे दे दीजिए । आपके पास तो वह किसी काम में नहीं आती मेरे काम में आ जायगी । महात्मा बोला अच्छा हम तुमको दे देंगे । हम गंगा स्नान कर आते है । महात्मा जी तो चले गये पर शिष्य को सन्तोष नहीं हुआकि महात्मा देगा या नहीं । उसने उनकी कुटिया की तलाशी ले डाली । पर कहीं पारस मणि का पता नहीं लगा । जब महात्मा जी लौटकर आये । तब शिष्य बोला गुरु जी आपने वह पारस मणि कहां छिपा कर रख छोड़ी है । मैने आपकी पूरी झोपड़ी देख डाली पर कहीं वह नही मिली । महात्मा बोले-बच्चे यह सामने लोहे के डिब्बे में रक्खी है, हमारे पास कोई छिपाने का स्थान नहीं है । शिष्य बोला जी वह लोहे का डिब्बा तो मेरी नजर में भी है पर इसमें कैसे रह सकती । यदि इसमें है तो इसको भी

सोने का हो जाना था । महात्मा जी ने डिब्बा खोला और उसको कपड़े में लिपटी हुई पारस मणि दिखा दी पर उसके हृदय में शंका हो रही है कि यह डिब्बा सोने का क्यों नहीं हुआ । महात्मा जी ने समझाया बच्चे इसके ऊपर कपड़े का आवरण चढ़ा हुआ था कैसे बन सकता है । देखो इस प्रकार ईश्वर और जीव एक साथ रहते हुए भी वह जीव, जीव ही जबना हुआ है कारण उस पर भी वासना का आवरण है । जब तक जीव का वासना काआवरण न हटेगा तब तक वह ईश्वर को नहीं देख सकता । वाह्य आवरण विलासता है । जो हाथ, पावं, नाक, मुख से खोटे आचरण करना । आभ्यन्तर आवरण वासना है जो किसी भी वस्तु की चाहना रखना । इन आवरणों के हठते ही ईश्वर जीव मिल जाते है । जीव की ईश्वर से मिलने की तड़फ दूर हो जाती है । अत: वह पुरुष जिस उद्देश्य से आया है उसे भूल गया महात्मा को संगति से उसको हृदय के आवरण खुल गये । जो उसे ईश्वर एवं जीव के सम्बन्ध का ज्ञान मिला ।

ब्राह्मण की निन्दा न करे युग के समान सब वर्ण हैं

राजा भोज के राज्य में विद्वानों का बड़ा सन्मान होता था उनकी सभा में नो रत्न ब्राह्मण रहते थे । विद्यान ब्राह्मणों से राजा की बड़ी प्रीति थी तथा स्वयं भी विद्वान् था ।

एक समय एक ब्राह्मण परिवार उसकी राजधानी में आया उसने राजधानी में प्रवेश होने की स्वीकृति मांगी और अपना नाम सरस्वती परिवार बताया था राजा भोज सुनकर प्रसन्न हुआ और

उसने एक लोटा मे पानी भरकर उनके पास परीक्षा के लिए भेजा परिवार के प्रधान ने उस पानी में चीनी डालकर लोटा वापिस कर दिया। राजा समझ गया, सरस्वती परिवार विद्वान है। मैने परीक्षा के लिए पानी भर कर भेजा कि जिस प्रकार इस लौटे में पानी नहीं आ सकता, उसी प्रकार हमारी राजधानी में अब कोई दूसरा नहीं समा सकता। पर विद्वान पण्डित ने यह चीनी डालकर यह उत्तर दिया इस पानी में जैसे चीनी घुल मिलकर रह सकती है। उसी प्रकार हम आपकी राजधानी में घुलमिलकर रह सकते है। अब राजा ने सरस्वती परिवार मे आकर एक-एक से प्रशन किया। और उसका सुमुचित उत्तर पाया। राजा ने पिता से कहा संसार में तीन वस्तु ही सार है वृद्ध ने कहा सत्संग करना काशी में रहना तथा हरि चिन्तवन न करना। राजा ने लड़के से कहा संसार में दो वस्तु ही सार है। लड़कमे ने कहा विष्णु क्षीर सागर में रहते है तथा शंकर हिमालय पर रहते है। राजा ने पुत्र वधू से कहा संसार में मृग लोचन ही सार है। पुत्र वधू ने कहा कि जिसकी कृक्षि से भोज जैसे राजा ने जन्म लिया है राजा भोज उनके उत्तर सुनकर प्रभावित हुआ।

राजा का सन्तोष तो हो गया फिर भी जहां वह सरस्वती परिवार का बालक सन्ध्या कर रहा था उस सरोवर पर आप भी सन्ध्या करने पहुंच गया उसकी सन्ध्या विधि देखी और उस बालक की ओर पानी डालने लगा। बालक भी राजा की हरकत देख कर उसकी ओर कंकड़ फेंकने लगा। राजा बोला तू सरस्वती परिवार का बालक है मेरे प्रश्नों को नहीं समझा देख मेरा पानी फेंकने का यह प्रश्न है कि पहिले ब्राह्मण अगस्त्य चुल्लू में समुद्र को पी गये तू इस सरोवर के पानी को ही पीकर दिखा दे। ब्राह्मण बालक बोला महाराज मे इसी का उत्तर दे रहा हूँ कि पहिले क्षत्रिय ऐसे

हुए कि जिनने समुद्र पर पत्थरों को तैरा कर पुल बना दिया आप इन कंकड़ों किो ही तैरा दें। राजा उत्तर सुनकर आश्चर्य चकित रह गया। बालक ने का महाराज यह युग का प्रभाव है न पहिले जैसे ब्राह्मण और न पहले जैसे शूद्र अत: किसी की निन्दा नही करनी चाहिये भोज राजा लज्जित हो गये और उस सरस्वती परिवर का सन्मान करके अपने राज्य में ले गया उसको ज्ञान हुआ किसी की निन्दा नही करना।

राम भक्त हनुमान

हनुमान जी के अनेक नाम एवं चरित्र है। १-हनुमान, २-शंकर सुवन ३-केशरी नन्दन ४-पवन तनय आंजनेय आदि। शिव पार्वती दोनों अपने आश्रम में बैठे थे। शिवजी ने कहा पार्वती देख मेरे स्वामी अवतार धारण कर रहे है। रावण का वध करने को मै भी उनकी सहायता करने युद्ध में जाऊँगा। पार्वती ने कहा भोलानाथ रावण तो आपका भक्त है। उसने अपने शिर काटकर भेंटकर दिये थे अब आप उसे मारेंगे। शंकर शंकर जी ने कहा देवी मै ग्यारह रूप में रहता हूँ रावण ने मेरे दस रूप की सेवा की पर एक रूप की अवहेलना की है अत: उस अंश से अवतार लेकर अपने स्वामी राम की सेवा करूँगा। शंकर का तेज जब मोहिनी रूप देखकर गिरा था तब उस तेज को पत्र पुटक में रखकर सप्तर्षियों ने अंजना के कान में डाल दिया था वही तेज रुद्रावतार शंकर सुवन कहाया। पुंजक स्थली नाम की सुन्दरी अप्सरा एक मुनि के शाप से वानरी हुई उसका नाम अंजना था वह केशरी वानर राज की पत्नी थी केशरी सुमेरु पर राय करते थे। अंजना

उनकी प्रियतमा पत्नी थी। वानर राज केशरी और अंजना एक दिन मनुष्य रूप धारण करके शिखर पर विहार कर रहे थे।

उस समय पवन देव उसके सौन्दर्य को देखकर मोहित हो गये इससे पवनदेव ने उसका स्पर्श किया साधु चरिता अंजना ने देखा मेरे शरीर को कौन दुरात्मा स्पर्श करना चाहता है मै अपने पति व्रत धर्म से उसे नष्ट भस्म कर दूँगी। पवनदेव उस सती साध्वी की बात सुनकर बोले देवी मैंने तुम्हारा पतिव्रत नष्ट नही किया है। तुम अपने मन के सन्देह को दूर करो। मैंने मानसिक संस्पर्श किया है। इससे तुम्हारे से पुत्र होगा वह शक्ति पराक्रम में मेरे समान होगा भगवान का भक्त होगा तथा बल वृद्धि में अनुपमेय होगा। मै उसकी रक्षा करूँगा वह पवन पुत्र केशरी नन्दन कहायेगा उसे आंजनेय कहेंगे अंजना के पुत्र आंजनेय जबबाल रूप में अकेले सो रहे थे उस समय उनको क्षुधा लगी पर माता पास में न थी ऐसी अवस्था में प्रातः बाल सूर्य के लाल पिण्ड को देख उसी को फल या भक्ष पदार्थ समझकर वह बालक बड़े वेग से सूर्य के पास पहुंच गया उस दिन राहु भी सूर्य की ओर बढ़ रहा था। इन हनुमानके वेग बल को देखकर भयभीत हो गया उससे सभी बातें इन्द्र भी बिना सोचे समझे राहु का पक्ष स्वीकार कर राहु की सहायता में आंजनेय पर अपना वज्र छोड़ दिया जिससे हनुमान की ठोडी पर आघात हुआ ओर वह गिर पड़े। पवन देव अपने पुत्र की दशा देखकर अपने पुत्र को उठाकर एक गुफा में जाकर बैठ गये।

पवनदेव के न रहने से संसार मे हाहाकर मच गया। सभी देवता पवन देव के पास जाकर बोले हे पिवन देव तुम्ही तो सबके जीवन रूप हो। आप के पुत्र का अपराध बिना समझे हो गया है।

ब्रह्माजी ने वरदान दिया आपका पुत्र अजर अमर होगा

इसका हनु ठोड़ी पर वज्र लगा है पर यह हनुमान होगा । इस प्रकार सभी देव गणों ने इनको वरदान दिये । हनुमान जी बल बुद्धि विद्या विवेक आदि गुणों से तत्काल भूषित हो गये । पवन देव प्रसन्न हो गये । केशरी एंव अंजना अपने पुत्र के प्रभाव को देखकर पुलकित हो रही है कालान्तर में वह शंकर सुवन शंकर के पास पहुंच गया । कारण शंकर अपने स्वामी के जन्म (श्रीराम जन्म) के समाचार सुनकर उनके दर्शनों को लालायत हो रहे थे । उनकी इच्छा से ही हनुमान जी शंकर के पास पहुच गये । शंकर जी पहचान गये और एक मदारी का रूप धारण कर उस सुन्दर छोटे से वानर से बच्चा को लेकर महाराज दशरथ के दरबार में पहुंच गये । उस बन्दर मदारी की डुमडुमी सुनकर दरबार में भीड़ लग गई । राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न भी यह सुनकर भोजन छोड़कर बन्दर का तमाशा से भरा हुआ है डुमडुमी के साथ वह बन्दर नाच रहा है । मदारी जो कहता है बन्दर वही करता है ।

मदारी बोला राम को नमस्कार करो बन्दर ने हाथ जोड़ कर नमस्कार यिा । मदारी बोला राज का जामा पकड़ लो बन्दर उछल कर दशरथ के पास पहुंच गया उनका जामा पकड़ लिया । बालक उस को तंग करते तो बन्दर घुर्राता उनको पकड़ने को चलता वह तो मदारी के दशारे पर चलता था मदारी ने कहा जमूडे गुरु जी कहां बैठे है तुमने उनको प्रणाम नहीं किया वह जमूड़ा भीर सभा में गुरु वशिष्ठ के पास पहुच गया उनको चरण पकड़ कर बैठ गया । राजा दशरथ बोले भाई कलाकार जैसा तुम्हारा व्यक्तित्व ओजपूर्ण है वैसा ही आपका यह वानर है अत्यन्त चतुर है ।

मदारी ने डमरू बजाया रस्सी खीची वह जमूड़ा नाचने लगा कभी एक पैर से खड़ा हो जाता और डुबकी सी लेता था, श्रीराम जी उस कपि पर मुग्ध हो गये ओर पिता जी की गोदी में बैठकर

धीरे-धीरे बोले पति जी इस कपि को मुझे दिला दो । पिता जी बोले बेटा यह कोई व्यापारी नहीं है यह तो तमाशा दिखाने वाला है यह इसको नहीं देगा ।

रामजी तो मचल गये मैं इस बन्दर को अवश्य लूँगा । मन्त्री जी राम की इच्छा देखकर मदारी से बोले अरे भाई श्रेष्ठ कलाकार तुम्हारे इस नटखट कपि को हमारे बड़े राजकुमार चाहते है ।

तुम इसके बदले में जो चाहो वह कीमत लेलो । कपि तो यह सुनकर हर्षित हो गया । मदारी बोला मन्त्री जी कीमत तो पीछे बताऊँगा पहिले राम जी इसे पसन्द कर लं यह कहकर मजूड़े की रस्सी राम को पकड़ा दी रामजी ने रस्सी खोल दी और उसको उंगली से ही खड़ा कर लिया और वह नाचने लगा। स्वामी को मैं तुझे सौपता हूँ ऐसा कहकर मदानी अन्तर्धान हो गया । और कपि सुखपूर्वक रामभवन में रहने लगा । जब रामजी विश्वामित्र के साथ तपोवन जाने लगे तब उनने उस रुद्रावतार कपि को एकान्त में समझाया अब तुम किस कन्धा राजधानी मे चले जाओ मैं तुमको ऋष्य मूक पर मिलूँगा । तब रुद्रावतार शंकर सुवन हनुमान चले गये और अपने स्वामी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे ।रामजी शबरी को दर्शन देकर जब ऋऋष्य मूक पर आये तब हनुमान जी ने राम की सुग्रीव से मित्रता कराई तथ अपने स्वामी की सेवा में लग गये ।

सीता जी के समाचार लाना समुद्र पर सेतु बनाना दुष्टों का संहार करना संजीवनी लाकर लक्ष्मण जी का सचेत करना रमा के साथ अयोध्या में आना और सदां उनकी सेवा में रहना । एक दिन जब राम जी ने सीता को मुक्ता हार पहनाया तथा और सब को रत्न देकर प्रसन्न किया सीता ने मुक्ता हार हाथ में लेकर श्रीराम की ओर देखा । राम जी ने काह सीता तुम जिसको चाहो उसको

दे दो। सीता ने वह हार हनुमान जी को दे दिया। हनुमान जी ता
यह सोच रहे थे मेरे हाथों में श्रीसीता राम के चरण रहेंगे। इस बहु
मूल्य हार से उनको प्रसन्नता नही हुई। सभी सभासद सग्रीव
जाम्ववान अंगद आदि हनुमान के सौभाग्य की प्रशंसा कर रहे है
पर हनुमान जी उदास बैठे है। उनने हार की एक मणि दांतों से
तोड़कर देखी पर उसमें कुछ नही मिला फिर दूसरी मणि को तोड़ा
उसको भी देखा पर उसमें भी कुछ नही मिला। साासद कह रहे
है यह तो निरा बन्दर हो रहा यह क्या जाने मणियों का स्वरूप
किसी की पूछने की हिम्मत भी नही होती कि तुम ऐसा क्यों कर
रहे हो। अन्त में विभीषण महाराज ने अंजना नन्दन से श्री
हनुमानजी से कहा इन मणियों को आप क्यों नष्ट कर रहे। आपके
ऊपर तो पूर्ण कृपा है कैसा कीमती हार मिला है। हनुमान जी ने
कहा मै। यह देखता हूँ कि इनके भीतर रामनाम या राम रूप है या
नही।विभीषण बोले हनुमान जी आप अनौखी बात करते है कहीं
मणियों में भी झाँकी मिलती है आपके इस पहाड़ जैसे शरीर में भी
झाँकी मिलना असम्भव है। हनुमान जी ने कहा विभीषण राज यदि
इस शरीर में मेरे स्वामी की झांकी नहीं है तो यह व्यर्थ है ऐसा
कहकर अपना हृदय खोल कर दिखाया उसमें सभी ने साक्षात्
सीताराम को सिंहासन पर विराजमान देखा एक साथ सब बोले
राम भक्त हनुमान की जय राम भक्त हनुमान की जय। भक्तराज
हनुमान श्रीराम के दरबार में राम भक्ति का दर्शन कराकर श्रीराम
चरणों में ही निवास करने लगे।